वर्ष-प्रबोध

खेमराज
श्रीकृष्णदास
प्रकाशन

वर्षप्रबोध

अर्थात्

नूतन संवत्सर शुभाशुभ फल प्रबोध

चौमूं, जयपुर निवासी

श्रीहनूमान शर्मा द्वारा

हिन्दीटीकासहित

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण- सन् १९९९ सम्वत् २०५६

मूल्य २५ रुपये मात्र

सर्वाधिकार
प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

भूमिका

स्वार्थ, और परमार्थ दोनों के लिये ज्योतिष शास्त्र बहुत ही अच्छा है। इसके फलित ग्रंथों में से नित्य व्यवहार उपयोगी बातें ढूँढकर उनका अभ्यास किया जाय तो वह मनुष्य घर ही में बैठा हुआ धनी मानी और परोपकारी हो सकता है किन्तु एक बात के लिये अनेक ग्रन्थों का अभ्यास किया जाय तब सफलता प्राप्त होती है और ऐसा करने के लिये आजकल के प्रायः 'निरुद्यमी' निरुत्साही, निराश्रयी, निरायुषी लोग कहां तक ऐसे कामों में तन, मन, धन लगा सकते हैं अतएव ऐसे ही लोगों के उपकार के लिये श्रीमेघविजय महाशय ने 'वाराहीसंहिता' आदि कई एक संहिताओं से सामग्री इकट्ठी करके यह **'वर्षप्रबोध'** बहुत ही उत्तम निर्माण किया था और इसमें खेती करनेवालों के उपयोगी, व्यापारियों के उपयोगी तथा धनग्राही अथवा परोपकारी पंडितों के लिये उपयोगी कई बातों का अच्छा संग्रह किया था किन्तु कालान्तर के कारण अथवा दुर्लभता से यह संग्रह छिन्न भिन्न होकर खंडित हो गया। और सद्व्यवस्था रूप से अब कहीं मिलता भी नहीं है। यद्यपि हिन्दीटीका सहित एक मिलता है किन्तु वह ऐसा है मानों खुले पत्रों की पुस्तक आंधी में उड़ गई हो और उसी को ढूंढकर विना नम्बर देखे ही ज्यों की त्यों छाप दी हो, क्योंकि उसमें एक ही विषय के दस दस अंगों में से आठ आठ अंग जाते रहे हैं और कई एक विषय इधर के उधर छिन्न भिन्न होकर खंडित हो रहे हैं। संभवतः इसी कारण से विद्वानों के उपयोग में यह ग्रन्थ विशेष नहीं आता है। अतएव इन सब गड़बड़ाध्यायों को देखकर ही मैंने अब इस ग्रन्थ का फिर से संग्रह किया है और जहां जहां जो जो कुछ त्रुटियां अशुद्धियां न्यूनता वा लोम विलोम थीं, उन सबको काट छांट फेरबदल और संमिश्रण करके इसे यथासाध्य सांगोपांग-सद्व्यवस्था और सर्वोपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। जो जो विषय इसमें अदल बदल लोम विलोम और खंडित हो गये थे उन सबको क्रमपूर्वक सिलसिलेवार लगाकर खंडित अंगों को और और ग्रन्थों के आधार से पूर्ण किया है। और इसमें से जो अंग जाते रहे थे उनके सैंकड़ों श्लोक अन्य ग्रन्थों से लेकर इसमें लगा दिये हैं, विशेषकर पंचांग बनानेवालों की उपयोगी भविष्यफल सम्बन्धी सब सामग्री इसमें संयुक्त कर दी है। अतएव अब यह ग्रन्थ व्यापार करनेवालों, खेती करनेवालों, पंचांग बनानेवालों, वर्षा आदि देखनेवालों और शुभाशुभ बतलानेवालों को अवश्य ही लाभदायक हो सकता है। आशा है विद्वान् लोग इस सम्मार्जित कुसुमोपहार को स्वीकार करने में संकोच नहीं करेंगे। मैंने अब इस ग्रन्थ का सर्वाधिकार 'श्रीवेंकटेश्वर प्रेस' के मालिक सेठ खेमराजजी को दे दिया है अतएव इसे अन्य कोई छापने का दुःसाहस न करे इति शुभम्।

हितैषी—
हनूमान शर्मा, जयपुर सिटी

विषयानुक्रमणिका

सं०	विषय	पृ०
	(१) पूर्वभाग प्रथमस्थल	
१	मंगलाचरण	१
	संवत् लाने की रीति	३
	प्रभवादि लाने की रीति	४
	प्रभवादि साठ संवत्सरों के नाम	"
	प्रभवादि संवत्सरों का फल	५
२	संवत्सर का अंग और फल	१६
३	संवत् के राजा आदि का विचार और फल	१६
	वर्ष के राजा का फल	१७
	वर्ष के मंत्री का फल	१८
	सस्येश का फल	२०
	धान्येश का फल	२१
	मेघेश का फल	२२
	रसेश का फल	२४
	नीरसेश का फल	२६
	फलेश का फल	२७
	धनेश का फल	२८
	दुर्गेश का फल	३०
४	नौ मेघोंका आनयन और फल	३१
५	द्वादश नागों का आनयन और फल	३४
६	कई प्रकार के मेघों का वर्णन	३६
	मेघों के बुलाने और विसर्जन करने की विधि	३८
७	आर्द्रा प्रवेश में तिथियों का फल	४०
	आर्द्रा प्रवेश में वारों का फल	४२
	" " " नक्षत्रों का फल	४४
	" " " योगों का फल	४८
	आर्द्रा प्रवेश में समय का फल	५२
	" " " लग्न का निरीक्षण	५३
८	जगल्लग्न का विचार	५३
	वर्ष के जन्मलग्न का विचार	५४
९	रोहिणी के निवास का ज्ञान और फल	५९
	समय निवास का ज्ञान और फल	६०
१०	वर्ष के स्तंभ का ज्ञान और फल	६१
	समय के मुहूर्त और विशेष बात	६२
११	अगस्त्य का उदयास्त लानेकी विधि	६२
	अगस्त्योदयास्त फल	६२
१२	गुरुदय मानीय वर्ष	६४
	गुरुदय मानीय वर्षों का फल	६४
१३	वर्ष-धान्य-तृण-तेज आदि चालीस पचास बातोंके विज्ञा लानेकी विधि और उनके उदाहरण	६६
१४	लाभ खर्च जानने की क्रिया	६९
	(२) पूर्व भाग द्वितीयस्थल	
१	खेचरचार अर्थात् सूर्यादिकों के चलने फिरने उदयास्त होने आदि का विस्तृत विचार और फल	७०
	सूर्यचार	"
	प्रतिसूर्य वर्णन	७१
	इन्द्रधनुष	"
	परिवेष	७२
	संक्रांति फल	७३

सं०	विषय	पृ०
	संक्रांति के समय वर्तमान मास का फल	७६
	संक्रांति के समय वार का फल	"
	संक्रांति विषयक विशेष फल	८४
	संक्रांति से वर्ष का शुभाशुभ	"
	प्रसंगवश अन्य प्रकार से शुभाशुभ ज्ञान	८८
	२ चन्द्रचार	८८
	चन्द्रमा की आकृति तथा शृङ्ग	९१
	चंद्रोदय राशि फल	९२
	चंद्र के दक्षिणोत्तर का उदय फल	९२
	३ प्रसंगवश सूर्य चंद्र के ग्रहण का विचार	९४
	ग्रहण कैसे होता है	"
	चैत्रादि मासों में ग्रहण होने का फल	९५
	सूर्यादि वारों में ग्रहण होने का फल	९६
	राशियों पर ग्रहण होने का फल	९८
	नक्षत्रों पर ग्रहण होने का फल	१००
	मंगलचार	१०२
	अश्विनी आदि नक्षत्रों पर मंगल के होने का फल	१०३
	राशियों पर उदय होने का फल	१०५
	अस्तविचार	१०६
	५ बुधचार	१०७
	अश्विन्यादि पर बुध के होने का फल	१०७
	उदय होने का फल	१०९
	अस्त होने का फल	११०
	६ गुरुचार	
	राशिगत गुरु का विस्तृत फल	१११
	बृहस्पति के वक्र का विचार	१२५
	नक्षत्रभोग का विचार	१२९
	विशेषफल	१३१
	उदय राशि का फल	१३२
	उदय के महीनों का फल	१३३
	अस्तफल	१३४
	७ शुक्रचार	
	शुक्रोदय के महीनों का फल	१३५
	शुक्रोदय राशियों का फल	१३६
	नक्षत्र गत फल	"
	अस्त राशि फल	१३९
	देवादि गण में उदय होने का फल	१४०
	शुक्रास्त से देश विशेष में वर्षज्ञान	१४२
	८ शनिचार	
	राशिस्थ फल	१४४
	उदय फल	१४६
	अस्त फल	१४९
	विशेष विचार	१५०
	९ राहुचार	
	राशिगत राहु फल	१५०
	१० केतुचार	
	केतु के उदय होने का लक्षण	१५५
	अश्विन्यादि में उदय होने का फल	"
	अनेक प्रकार के केतुओं का विशेषवर्णन	१५८
	पूर्वभाग समाप्त	
	(३) उत्तरभाग प्रथमस्थल	
	१ उत्पात निरूपण	१५९
	उत्पातों के भेद और विशेष फल	१६१
	२ मण्डल विचार	
	आकाशी मण्डल	१६३
	अग्नि मण्डल	"
	वायु मण्डल	१६५
	जल मण्डल	"
	पृथ्वी मण्डल	१६७
	मण्डलों का विशेष फल	"
	३ पवनविचार	१६९
	किस मास की कौन तिथि को किस समय कैसी पवन क्या फल करेगी इसका विचार	१६९

सं०	विषय	पृ०
	अनेक प्रकार की पवनों का वर्णन	१७०
	प्रत्येक ऋतुकी पवनोंका विवरण फल	१७०
	पवन और बादलों का मिश्रित फल	१७०
	आषाढी पूर्णिमा का वायु विचार	१८१
	होली के दिन की वायु का विचार	१८५
	(४) उत्तर भाग का द्वितीय स्थल	
	१ वर्षा का विचार	१८५
	गर्भ लक्षण (जल का तौल)	१८६
	प्रत्येक मास में होनेवाले प्रतिदिन के गर्भ का विस्तृत वर्णन	१८८
	२ साल भर के गर्भ तथा वर्षाकारक अनेक योग	१८९
	३ वर्षाकारक बिजलियों का वर्णन	२११
	प्रसंगवश संध्या परिवेष वायु आदि की गति तथा प्रमाण वर्णन	"
	संध्या परिवेष रज प्रतिसूर्य इन्द्रधनुष वायु बिजली वज्रपात मेघ गर्जन इनका कहां तक प्रभाव पहुंचता है और कहां तक कितना फल होता है इसका वर्णन	२१२
	बिजली के चमकने का बहुविध फल	"
	बिजली के अनेक रंगो के फल	"
	४ ग्रहोंके संयोगसे वर्षा होनेका योग	२१३
	५ प्रश्न के विशेषयोग से वर्षा होने का ज्ञान	२१७
	६ शीघ्र वर्षा होने के बहुविध लक्षण	२१७
	७ तत्काल वर्षा होने का ज्ञान	२२२
	८ वर्षा संबधी और बातों का ज्ञान	२२४
	गन्धर्वनगर,इंद्रधनुष, प्रतिसूर्य रज, केतु निर्घात, उल्कापात और दिग्दाह इनका लक्षण	२२४
	(५) उत्तरभाग तृतीयस्थल	
	१ अधिकमास निर्णय	२२६
	१ अधिमासों का फल	२२७
	२ तिथियों के घटने बढ़ने का फल	२३०
	३ महीनों में होनेवाले वारों का फल	२३१
	४ तेजी मंदी जाननेका विस्तृत विचार	२३६
	तेजीमंदी करनेवाले तिथि वार और नक्षत्रों से उत्पन्न हुए सालभर के अनेकों योग जिनसे सब वस्तुओं की महगाई तथा सस्ती होने का सुगमता से ज्ञान	२३६
	५ ग्रहों के योग से तेजी मंदी का विचार	२५७
	ग्रहों से अश्विनी आदि नक्षत्रों का वेध और उससे होने वाली पृथक् पृथक् तेजी मंदी का ज्ञान	२५८
	६ संवत्सर के अच्छे बुरे होने के कारणों का वर्णन	२६९
	अक्षय तृतीया परीक्षा	२७१
	आषाढ़ी पूर्णिमा से सब धान्यादि के न्यूनाधिक होने का ज्ञानोपाय, उस दिन किस वस्तु को कैसे तौलनी चाहिये इसका वर्णन	२७२
	तौलने की तराजू और उसका साधन	२७३
	पृथ्वी पर खड़े हुए अनेक भांति के पुष्पलता आदि से सवत्सर का शुभाशुभ ज्ञान, किस फल पुष्पादि के अधिक होने से कौन वस्तु अधिक उत्पन्न होगी	२७५
	कागकी चेष्टाओंसे शुभाशुभका ज्ञान	२८०
	गौ की चेष्टाओं से शुभाशुभ का ज्ञान	२८१

ग्रन्थ समाप्त

श्रीः

वर्षप्रबोधः

हिन्दीटीकासहितः

श्रीगणेशाय नमः

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बध्नता
स्रष्टुं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धराम् ।
पार्वत्या महिषासुरप्रमथने सिद्धादिभिर्मुक्तये
ध्यातः पञ्चशरेण विश्वजितये पायात्स नागाननः ॥१॥

"मंगलाचरण" त्रिपुरासुर को मारने के लिये शिवजी ने; छल से बलि को बाँधने के समय भगवान् ने, त्रिभुवन की सृष्टि करने के समय ब्रह्मा ने;-पृथ्वी को धारण करने के समय शेष ने;-महिषासुर को मारने के समय पार्वती (देवी) ने;-मुक्ति साधन के समय सिद्धों ने और संसार को जीतने के समय कामदेव ने जिसका ध्यान किया, वह नागानन (गणेश) हमारी रक्षा करें॥१॥

यश्चैत्रशुक्लप्रतिपत्सु धीमान् शृणोति वार्षीयफलं पवित्रम् ।
भवेद्धनाढ्यो बहुसस्यभोगी जह्याच्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम् ॥२॥

जो बुद्धिमान् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर का पवित्र फल सुनता है वह धनाढ्य और बहुत अन्न वाला होता है। तथा उसके शरीर की सालभर की पीड़ायें दूर हो जाती है।।२।।

शाकस्य श्रवणात् सुपुण्यजननं संवत्सरस्याढ्यतां
राज्ञो राजकुले जयो विजयते मंत्रीफलं बुद्धिदम् ।
धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा
सस्यं सर्वसुखं च वत्सरफलं संभृण्वतां सिद्धिदम् ।।३।।

शाके को सुनने से पुण्य होता है, संवत्सर से सम्पत्तिवान् होता है, संवत् के राजा का फल सुनने से राजकुल में विजय होती है, मंत्री का फल बुद्धि देता है, धनाधिप से धान्य होता है, रसाधिप से रस मिलते हैं; तथा क्षेत्र (खेती आदि) में ज्ञान बढता है और सस्येश से सर्व सुख मिलते हैं इस कारण सिद्धि के देनेवाले संवत्सर के फल को अवश्य सुनना चाहिए।।३।।

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्ध्वजारोपणं
स्नानं मंगलमाचरेद्द्विजवरैः कुर्य्यान्मनोवाञ्छितम् ।
ग्राह्या रौप्यसुवर्णरत्नमणयो वृद्धादिभिः पूजये-
च्छ्रोतव्यं द्विजवर्यभाषितफलं श्रेयस्करं पुण्यदम् ।।४।।

जब नवीन संवत् बदले तब अपने मकान को लीप पोतकर ध्वजा रोपना चाहिये, और स्नानादि मंगलाचरण करके चांदी-सोना, रत्न-मणि आदि यथायोग्य लेकर बड़े बूढों सहित अच्छे पढे लिखे ब्राह्मणों का पूजन करके कल्याणकारक पुण्यदायी संवत् का फल सुनना चाहिये।।४।।

पञ्चांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दं
सन्तोष्यानेकदानैः परमसुखयुतोभोजयित्वान्नमिष्टम्

शृण्वन्गीतादिवाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं संक्रमेत्
क्रीडंस्त्रीभिश्च सार्द्धं निशमपि च नरो यावदब्दं सुखी स्यात् ।।५।।

पंचांग में जो गणेशजी हैं उनका ब्राह्मणों सहित पूजन करके अनेक दानों से उनको सन्तोष देकर फल फूल मिठाई आदि का भोजन कराके संवत् का फल सुनना चाहिये और उस दिन गीत वाद्यादि करके रात्रि को स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करना चाहिये। ऐसा करने से वह मनुष्य बारह मास तक सुखी रहता है।।५।।

(पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः । मरीचहिंगुलवणजीरकेण च संयुतम् । अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये ।।)

संवत्सरानयनप्रकारः*

शके च पंचाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि । रेवाया उत्तरे तीरे संवन्नाम्नातिविश्रुतः ।।६।।

---

* "गतानि वर्षाणि शकेन्द्रकालाद्धतानि रुद्रैर्गुणयेच्चतुर्भिः । नवाष्टपञ्चाष्ट-युतानि कृत्वा विभाजयेच्छून्यशरागरामैः ।।१।। फलेन युक्तं शकभूपकालं संशोध्य षष्टया विषयैर्विभज्य । युगानि नारायणपूर्वकाणि लब्धानि शेषाः क्रमशः समाः स्युः ।।२।।"

संवत्सर लाने की दूसरी विधि यह है कि शाके को दो जगह लिखकर एक जगह में ११ से गुणके ४ से गुणे और ८५८९ में जोड़कर ३७५० का भाग दे (जो अंक आवै सो वर्ष फिर से शेष को १२ से गुणकर ३७५० का भाग दे। लब्ध दिन-फिर शेष को ६० से गुणकर ३७५० का भाग दे लब्ध घटी और फिर शेष को ६० से गुणकर ३७५० का भाग दे जो लब्ध हो सो पल जानना। फिर इन सबको) दूसरी जगह के शके में मिलाकर ऊपर के अंक में ६० का भाग दे जो शेष अंक रहे उसको संवत् प्रभवादि गत जानना। और नीचे जो मासादि हैं वह वर्तमान के गतमासादि जानना। उनको १२ में घटावे सो भोग्य मासादि जानना। यथा—शके १८३९ को ११ से गुण किया तो २०२२९ हुए, इनको ४ से गुणा ८०९१६ हुए इनमें ८५८९

नीम के कोमल पत्ते तथा फूल लेकर उनमें मिर्च, हींग, लवण, अजमादो और जीरा मिलाकर संवत्सर दिन सर्व रोगों की शांति के लिये खाना चाहिये "संवत् लाने की रीति" शके में एक सौ पैंतीस १३५ जोड़ने से विक्रम संवत् होता है। यह रेवा के उत्तर तीर में संवत्नाम से विख्यात है॥६॥

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ॥ शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥७॥

"प्रभवादि संवत्सर लाने की रीति–" वर्तमान विक्रम संवत के अंकों में नौ जोड़कर साठ का भाग देने से जो बचें वह प्रभवादि संवत्सर जाना–यथा १ से प्रभव २ से विभव इत्यादि॥७॥

प्रभवादिसम्वत्सराः

प्रभवो विभवः शुक्लो प्रमोदोथ प्रजापतिः ॥ अंगिराःश्रीमुखो भावो युवा धाता तथेश्वरः ॥८॥ बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा ॥ चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवोव्ययः ॥९॥

"प्रभवादि के नाम" प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद, प्रजापति, अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा, धाता, ईश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी, विक्रम वृषभ, चित्रभानु, सुभानु, तारण, पार्थिव और व्यय यह २० संवत् ब्रह्मा की बीसी के हैं॥८॥९॥

मिलायें, ८९५०५ हुए, इनमें ३७५० का भाग दिया तो २३ लब्ध हुए, शेष को बारह-तीस-साठ-साठ से क्रम से गुणकर प्रत्येक में ३७५० का भाग दिया तो १०।१२।२८।४८ हुए। उपरोक्त २३ को शके १८३९ में मिलाकर ६० का भाग दिया तो २ शेष रहे। अतः विभव गत और नीचे के अंक जो १०।१२।२८।४८ हैं, ये वर्तमान शुक्ल के गत मास हुए, इनको १२ में घटाये तो १।१७।३१।१२ भोग्य मासादि हुए। यह मेषार्क समय के जानने चाहिये। विशेष 'बृहत्संहिता' में देखो।

सर्वजितसर्वधारीचविरोधीविकृतिः खरः ।
नंदनोविजयश्चैवजयोमन्मतदुर्मुखौ ॥१०॥
हेमलम्बीविलम्बीचविकारीशर्वरीप्लव-
शुभकृच्छोभनः क्रोधविश्वावसुपराभवौ ॥११॥

सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृति, खर, नंदन, विजय, जय, मन्मथ, दुर्मख, हेमलंब, विलम्ब, विकारी, शर्वरी, प्लव, शुभकृत्, शोभन, क्रोधी, विश्वासु और पराभव यह २० संवत् विष्णु की बीसी के हैं॥१०॥११॥

प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधकृत् ।
परिधावीप्रमादीच आनंदोराक्षसोनलः ॥१२॥
पिंगलः कालयुक्तश्चसिद्धार्थीरौद्रदुर्मतिः ।
दुंदुभीरुधिरोद्गारीरक्ताक्षः क्रोधनः क्षयः ॥१३॥

प्लवंग, कीलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत्, परिधावी, प्रमादी, आनन्द, राक्षस, नल, पिंगल, काल, सिद्धार्थ, रौद्र, दुर्मति, दुंदुभी, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्ष, क्रोधन और क्षय यह २० संवत् शिव विंशति के हैं॥१२॥१३॥

निरीतिः सकलोदेशः सस्यनिष्पत्तिरुन्नता ।
स्वस्थिताभूभुजाः सर्वेप्रभवेसुखिनोजनाः ॥१४॥

"प्रभवादिका फल"–प्रभव संवत् में ईतिभय (टिड्डी आदि) नहीं रहे, खेती की उपज अच्छी हो। सब राजा लोग प्रसन्न रहें और मनुष्य सुखी हों॥१४॥

दंडनीतिपराभूपाः बहुशस्यार्घबष्टयः ।
विभवाब्देखिलालोकाः सुखिनोनिरवैरिणः ॥१५॥

विभव सवत्सर में राजा लोग दंडनीति बाले हों, अन्न तथा वर्षा बहुत हो और सम्पूर्ण मनुष्य निर्वैर होकर सुख से रहें॥१५॥

शुक्लाब्देनिखिलालोकाः सुखिनः स्वजनैः सह ।
राजानोयुद्धनिरताः परस्परजयैषिणः ।।१६।।

शुक्ल वर्ष में स्वजनों सहित सब लोक सुखी रहें और परस्पर में जय की इच्छा रखते हुए राजा लोग युद्ध में लगे रहे।।१६।।

प्रमोदाब्देप्रमोदन्तेराजानोनिखिलाजनाः ।
वीतरोगावीतभया ईतिशत्रुविनाशकाः ।।१७।।

प्रमोद वर्ष में राजा प्रजा सब आनन्दित रहें। रोग और भय दूर हों तथा इति और शत्रु का नाश हो।।१७।।

नचलन्त्यखिलालोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन ।
अब्देप्रजापतेर्नूनंबहुसस्यार्घवृष्टयः ।।१८।।

प्रजापति वर्ष में सब लोक अपने अपने मार्ग को कुछ भी नहीं छोड़े और अन्न सस्ता तथा वर्षा निश्चय हो।।१८।।

अन्नाद्यंभुज्यते शश्वज्जनैरतिथिभिः सह ।
अंगिराब्देखिलालोका भूपाश्चकलहोत्सुकाः ।।१९।।

अंगिरा वर्ष में अतिथियों के साथ लोग निरन्तर अन्नादि का भोजन करें। और सब लोक तथा राजा लोग कलहोत्सुक हों।।१९।।

श्रीमुखाब्देखिलाधात्रीबहुसस्यार्घसंयुता ।
अध्वरेनिरताविप्रा वीतरोगाविवैरिणः ।।२०।।

श्रीमुख वर्ष में सम्पूर्ण पृथ्वी बहुत अन्न से संयुक्त हो और ब्राह्मण लोग यज्ञ करने में निरत रहें तथा रोग और वैर से वर्जित हों।।२०।।

भावाब्देप्रचुरारोगामध्याः सस्यार्घवृष्टयः ।
राजानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजनाः ।।२१।।

भाव वर्ष में रोग बहुत हों, अन्न मध्यम हो और राजा लोग युद्ध में लगे रहें तो भी अन्य जन सुखी रहें।।२१।।

प्रभूतपयसोगावः सुखिनः सर्वजन्तवः ।
सर्वकामक्रियासक्तोयुवाब्देयुवतीजनः ॥२२॥

युवा वर्ष गायें बहुत दूध दें, सब जीव सुखी रहें और स्त्रियां कामकेली में आसक्त हों॥२२॥

धातृवर्षेखिलाःक्ष्मेशाः संग्रामेसक्तमानसाः ।
संपूर्णाधरणीभातिबहुसस्यार्धवृष्टिभिः ॥२३॥

धाता वर्ष में सब राजा लोग लड़ाईयों में आसक्त मन हों। और सम्पूर्ण पृथ्वी बहुत अन्न तथा वर्षा से सुशोभित हो॥२३॥

ईश्वराब्देखिलाञ्जन्तूनधात्रीधात्रीवसर्वदा ।
पोषयत्यखिलाँल्लोकान्नात्रकार्यांविचारणा ॥२४॥

ईश्वर वर्ष में पृथ्वी सम्पूर्ण जीवों का माता की भाँति पोषण करे। अर्थात् घास फूस अन्न फल फूल और रस कस आदि लोकोपयोगी सभी वस्तुएं उत्पन्न हों॥२४॥

बहुधाजायतेवृष्टिर्बहुधाख्यस्य वत्सरे ।
विविधैर्धान्यनिचयैः संपूर्णाचाखिलाधरा ॥२५॥

बहुधा वर्ष में वर्षा बहुत हो और कई भाँति के अन्न से सम्पूर्ण पृथ्वी पूर्ण हो॥२५॥

नमुंचतिपयोवाहः कुत्रचित्प्रचुरंजलम् ।
मध्यमावृष्टिरर्थश्चनूनमब्देप्रमाथिनि ॥२६॥

प्रमाथी वर्ष में बादल, कहीं भी अधिक जल नहीं छोड़ें, अर्थात् मध्यम वर्षा हो॥२६॥

विक्रमाब्देधराधीशाविक्रमाक्रान्तमूर्तयः ।
सर्वत्रसर्वदामेघामुंचन्तिप्रचुरंजलम् ॥२७॥

विक्रम वर्ष में राजा लोग बड़े बलवान् हों। और सब जगह सदैव बहुत जल वर्षे॥२७॥

वृषभाब्देखिलाःक्ष्मेशायुद्धचन्तेवृषभा इव ।
मत्ताःप्रसक्ताविप्रेन्द्रायजन्तेसततंसुरान् ।।२८।।

वृषभ वर्ष में राजा लोग बैलों की भाँति बहुत युद्ध करें। और ब्राह्मण लोक सदैव देवताओं की पूजन करने में लगे रहें।।२८।।

चित्रार्थवृष्टिसस्याद्यैर्विचित्रानिखिलाधरा ।
निराकुलाखिलालोकाश्चित्रभानोश्चवत्सरे ।।२९।।

चित्रभानु वर्ष में विचित्र वर्षा और अन्न धन से पृथ्वी पूर्ण हो और लोक में आकुलता नहीं रहे।।२९।।

सुभानुवत्सरेभूमौभूमिपानांचविग्रहः ।
जायतेघोररूपेणसर्वभूतभयंकरः ।।३०।।

सुभानु वर्ष में पृथ्वी पर राजाओं में घोर रूप से विग्रह रहे जिससे सब डर जायं।।३०।।

कथंचिन्निखिलालोकास्तरंतिप्रतिपत्तनम् ।
रोगशोकसमावेगात्कूरेतारणकाब्दके ।।३१।।

तारण वर्ष में लोग रोग-शोक-संकट आदि से कठिनता से पार हो सकें।।३१।।

पार्थिवाब्देचराजानः सुखिनः स्युर्भृशंजनाः ।
बहुभिः फलपुष्पाद्यैर्विविधैश्चपयोधरैः ।।३२।।

पार्थिव वर्ष में राजा लोक प्रसन्न रहें, प्रजा सुखी रहें और विविध फल पुष्पादि से पृथ्वी संयुक्त हो।।३२।।

व्ययाब्देनिखिलालोकाबहुव्ययपराभृशम् ।
उद्विग्नादुःखभारेणभूमिभीतिश्चसर्वदा ।।३३।।

व्यय वर्ष में सब लोग बहुत व्यय करें और उद्वेगित तथा दुःखित रहे (यहां तक ब्रह्म विंशति का फल हुआ)।।३३।।

सर्वजिद्वत्सरेसर्वेजनास्त्रिदशसंनिभाः ।
राजानोविलयंयांतिवीरसंग्रामभूमिषु ॥३४॥

सर्वजित् संवत् में सब लोक तो स्वर्ग की समान सुखी रहें और राजा लोग युद्ध में प्राण त्याग करें॥३४॥

सर्वधार्यब्दकेभूपाः प्रजापालनतत्पराः ।
प्रशान्तवैराः सर्वत्रबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥३५॥

सर्वधारी वर्ष में राजा लोग प्रजापालन में तत्पर रहें और सब जगह सुख शांति रहे॥३५॥

शीतलादिविकारः स्याद्बालानांतस्कराजनाः ।
अल्पक्षीरास्तथागावोविरोधश्चविरोधिनि ॥३६॥

विरोधी वर्ष में बालकों को शीतला का विकार हो, चौर बहुत हों गायों में दूध कमी हों और मनुष्यों में विरोध हो॥३६॥

मुष्णन्तितस्करालोकंविकृतिप्रकृतिस्तथा ।
विकाराअल्पवृष्टिविकृतेब्देप्रजारुजः ॥३७॥

विकृत वर्ष में चोरी अधिक हों, प्रकृति में विकृत (विकार) हो, वर्षा कम हो और रोग अधिक हों॥३७॥

स्वल्पावृष्टिः स्वल्पधान्यंखण्डवृष्टिर्नृपक्षयः ।
छत्रभङ्गः प्रजापीडाखरेऽब्देखरताजने ॥३८॥

खर वर्ष में स्वल्प वृष्टि-स्वल्प धान्य-खण्ड, वर्षा-नृप, क्षय-छत्र भंग और प्रजा पीड़ा हो॥३८॥

सुभिक्षंसुखिनोलोकाव्याधिशोकविवर्जिताः ।
नन्दनंचधनैर्धान्यैर्नन्दनेवत्सरेभवेत् ॥३९॥

नन्दनवर्ष में सुख, सुभिक्ष, शोक नाश और धन धान्य हों॥३९॥

युध्यंतेभूभृतोऽन्योन्यंलोकानांचधनक्षयः ।
दुर्भिक्षंचक्वचित्स्वस्थंबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥४०॥

विजय वर्ष में राजा लोग परस्पर युद्ध करें, लोकों के धन का क्षय हो, दुर्भिक्ष पड़े, कहीं स्वस्थता हो और बहुत अन्न तथा वर्षा हो॥४०॥

जयमंगलघोषाद्यैर्धरणीभातिसर्वदा ।
जयाब्देधरणीनाथासंग्रामेजयकांक्षिणः ॥४१॥

जय वर्ष में जय मंगल घोषादि से पृथ्वी सुशोभित रहे। और धरणीनाथ संग्राम में जय की इच्छा करे॥४१॥

मन्मथाब्देजनाः सर्वेतस्काराअतिलोलुपाः ।
शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधरा ॥४२॥

मन्मथ वर्ष में सब लोग चौर तथा अधिक लोभी हों और चावल ईख, गेंहू तथा जौओं से पृथ्वी पूर्ण हो॥४२॥

दुर्मुखाब्देमध्यवृष्टिरीतिचौराकुलाधरा ।
महावैरामहीनाथावीरवारणवाजिभिः ॥४३॥

दुर्मुख वर्ष में वर्षा मध्यम हो, ईति और चौरों से पृथ्वी आकुल रहे तथा राजाओं में और हाथी घोड़ों में महा वैर रहे॥४३॥

हेमलम्बेत्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
भातिभूर्भूपतिक्षोभः खड्गविद्युल्लतादिभिः ॥४४॥

हेमलम्ब वत्सर में ईति भीति हो, अन्न वर्षा मध्यम हों, पृथ्वी सुन्दर हो, राजाओं में क्षोभ हो और बिजली चमकें॥४४॥

विलंबिवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः ।
प्रजापीडात्वनर्थत्वंतथापिसुखिनोजनाः ॥४५॥

विलंब वर्ष में राजाओं में परस्पर विरोध बढ़े। प्रजा में पीड़ा तथा अनर्थ हो तो भी मनुष्य सुखी रहें।।४५।।

विकार्यब्देखिलालोकाः सरोगावृष्टिपीड़िताः ।
पूर्वसस्यफलंस्वल्पंबहुलंचापरंफलम् ।।४६।।

विकारी वर्ष में सब लोग रोग तथा वृष्टि से पीड़ित हों। और पूर्व सस्य (जौ, गेंहू) तथा फल आदि कम हों और परसस्य (जाड़े के अन्न) फल अधिक हों।।४६।।

शर्वरीवत्सरेपूर्णाधरासस्यार्धवृष्टिभिः ।
जनाश्चसुखिनःसर्वेराजानःस्युर्विवैरिणः ।।४७।।

शर्वरी वर्ष में अन्न और वर्षा से पृथ्वी पूर्ण हो। मनुष्य सुखी रहें और राजाओं में परस्पर विशेष वैर हो।।४७।।

प्लवाब्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिः प्लाविता भवेत् ।
रोगाकुलात्वीतिभीतिः सम्पूर्णवत्सरेफलम् ।।४८।।

प्लव वर्ष में वर्षा बहुत हो। और लोक रोगाकुल तथा ईतिभासी से दुःखित हों।।४८।।

शुभकृद्वत्सरेपृथ्वीराजतेविविधोत्सवैः ।
आतंकचोराभयदाराजानःसमरोत्सुकाः ।।४९।।

शुभकृत् वर्ष में पृथ्वी पर नानाप्रकार के उत्सव हों। चौर डरते रहें और राजाओं के युद्ध की इच्छा बढ़े।।४९।।

शोभनेवत्सरेधात्रीप्रजानांरोगशोकदा ।
तथापिसुखिनोलोकाबहुसस्यार्धवृष्टयः ।।५०।।

शोभन वर्ष में पृथ्वी प्रजा को रोग शोक देवें। तो भी अधिक अन्न वृष्टि होने से लोग सुखी रहें।।५०।।

क्रोध्यब्देत्वखिलालोकाः क्रीधलोभपरायणाः ।
ईतिदोषेगसतंतमध्यसस्यार्घवृष्टयः ।।५१।।

क्रौधीवर्ष में सब लोक क्रोध लोभ में परायण हों। शीघ्र ही ईति भय हो और अन्न जल मध्यम हों।।५१।।

अब्देविभ्वावसौशश्वद्घोररोगाकुलाधरा ।
सस्यार्घवृष्टयोमध्याभूपालानातिभूतयः ।।५२।।

विभ्वावसु वर्ष में पृथ्वी घोर रोगों से आकुल हो। अन्न जल मध्यम हों। और राजा लोगों के तहसीलें (कर आदि के रुपये) भी कम आवें।।५२।।

पराभवाब्देराज्ञः स्यात्मसमरः सहशत्रुभिः ।।
आमयक्षुद्रसस्यानिप्रभूतान्यल्पवृष्टयः ।।५३।।

पराभव वर्ष में राजालोग शत्रु के साथ युद्ध करें। रोग हो तथा थोड़ा अन्न हो और वर्षा भी कम हो। (यह विष्णुविंशति के वर्षों का फल है)।।५३।।

प्लवंगाब्देमध्यवृष्टीरोगचौराकुलाधरा ।
अन्योन्यसमरेभूपाः शत्रुभिर्हृतभूमयः ।।५४।।

प्लवंग वर्ष में वर्षा मध्यम हो, रोग चोरों से पृथ्वी आकुल हों, राजा लोग परस्पर में युद्ध करके शत्रु से भूमि हरण करें।।५४।।

कीलाब्देत्वीतिभीतिश्चप्रजाक्षोभनृपाह्वयौ ।
तथापिवर्धतेलोकः समधान्यार्घवृष्टिभिः ।।५५।।

कील वर्ष में ईति भीति हो, पृथ्वी में राजाओं के संग्राम से क्षोम हो तो भी अच्छी वर्षा होने से धान्य सस्ता हो और लोग बढ़ें।।५५।।

सौम्याब्देनिखिलालोकाबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ।
विवैरिणोधराधीशाविप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥५६॥

सौम्य वर्ष में सब लोकों में बहुत अन्न जल हों। राजा लोग निर्वैर हों और ब्राह्मण लोग यज्ञ करने में तत्पर हों॥५६॥

साधारणाब्देवृष्ट्यर्द्धंभयंसाधारणंस्मृतम् ।
विवैरिणोधराधीशाः प्रजाः स्युः स्वच्छचेतसः ॥५७॥

साधारण वर्ष में आधी वर्षा हो, साधारण भय हो। राजा लोग निर्वैर हों और प्रजा स्वच्छचित्त (निष्कपट) हो॥५७॥

विरोधकृद्वत्सरेतुपरस्परविरोधिनः ।
सर्वेजनानृपाश्चैवमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥५८॥

विरोधकृत् वर्ष में परस्पर विरोध बढ़ै। और अन्न जल कम हों॥५८॥

भूपाहवो महारोगोमध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
दुःखिनोजन्तवः सर्वेवत्सरेपरिधाविने ॥५९॥

परिधावी वर्ष में राजाओं में युद्ध हों, रोग हो, मध्यम अन्न हो और सब जीव दुःखी रहें॥५९॥

प्रमाथीवत्सरेतत्रमध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
प्रजाःकथंचिज्जीवन्तिसमात्सर्याः क्षितीश्वराः ॥६०॥

प्रमाथी वर्ष में जल अन्न मध्यम हों, प्रजा में रोग पीड़ा हो और राजाओं में मत्सरता हो॥६०॥

आनन्दाब्देऽखिलालोकाःसर्वदानन्दचेतसः ।
राजानःसुखिनःसर्वेबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥६१॥

आनन्द वर्ष में सब लोक आनन्दयुक्त रहें। राजा सुखी हों और अन्न जल अच्छे हों॥६१॥

स्वस्वकार्येरताः सर्वेमध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
राक्षसाब्देऽखिलालोकाराक्षसाइवनिष्क्रियाः ।।६२।।

राक्षस वर्ष में सब लोक अपने अपने कामों में लगे रहते हैं। सस्यार्घ वृष्टि मध्यम हो। और राक्षसी क्रिया में लोग लगे रहें।।६२।।

नलाब्देमध्यसस्यार्घवृष्टिभिः प्रवराधरा ।
नृपसंक्षोभसंजाता भूरितस्करभीतयः ।।६३।।

नल वर्ष में जल अन्न मध्यम हो। पृथ्वी अच्छी प्रतीत हो। राजाओं में क्षोभ रहे और चोरों का भय अधिक बढ़े।।६३।।

पिंगलाब्देत्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
राजानोविक्रमाक्रांताभुंजंतेशत्रुमेदिनीम् ।।६४।।

पिंगल वर्ष में ईति भीति हो, अन्न जल मध्यम हो और राजा लोग अपने बल के प्रभाव से शत्रुओं की पृथ्वी का भोग करे।।६४।।

वत्सरेकालयुक्ताख्येसुखिनः सर्वजंतवः ।।
सन्त्यथापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः ।।६५।।

काल वर्ष में सब मनुष्य सुखी रहें और अन्न अधिक हों किन्तु रोग फैले।।६५।।

सिद्धार्थवत्सरेभूयोज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः ।
सकलावसुधाभातिबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ।।६६।।

सिद्धार्थ वर्ष में प्रजा ज्ञान वैराग्य से युक्त हो। सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रसन्नता रहे। और जल अन्न अच्छे हों।।६६।।

रौद्रेब्देनृपसंभूतक्षोभक्लेशसमन्विते ।
सततंत्वखिलालोकामध्यसस्यार्घवृष्टयः ।।६७।।

रौद्र वर्ष में राजाओं में क्षोभ हो तथा क्लेशसंयुक्त हो और अन्न जल मध्यम हों।।६७।।

दुर्मत्यब्देखिलालोकाभूपादुर्मतयस्तदा ।
तथापिसुखिनः सर्वेसंग्रामाः सन्तिचेदपि ।।६८।।

दुर्मति वर्ष में राजाओं की दुर्मति (खोटी बुद्धि) हो और युद्ध आदि हों तो भी प्रजा सुखी रहे।।६८।।

सर्वसस्ययुताधात्रीपालिताधरणीधरैः ।
पूर्वदेशविनाशःस्यात्तत्रदुंदुभिवत्सरे ।।६९।।

दुंदुभि वर्ष में पृथ्वी पर सब तरह के अन्न उत्पन्न हों-राजा लोग प्रजा की पालना करें। और पूर्व देश का विनाश हो।।६९।।

आहवेनिहताःसर्वेभूपारोगैस्तथाजनाः ।
यथाकथंचिज्जीवन्तिरुधिरोद्गारिवत्सरे ।।७०।।

रुधिरोद्गारी वर्ष में राजा लोग तो युद्धादिकों में फँस कर मरें और प्रजा रोगादि से मरे। किन्तु कुछ बचे भी रहें।।७०।।

रक्ताक्षिवत्सरेसस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा ।
प्रेक्षंतेसर्वदाऽन्योन्यंराजानोरक्तलोचनाः ।।७१।।

रक्ताक्षी वर्ष में अन्न की वृद्धि हो, वर्षा अनुत्तम हो। और राजा लोग एक दूसरे को लाल आंख करके देखें।।७१।।

क्रोधनेमध्यवृष्टिः स्यात्पूर्वदेशेचवृष्टयः ।
सम्पूर्णमितरत्सर्वेभूपाः क्रोधपरायणाः ।।७२।।

क्रोधी वर्ष में वर्षा मध्यम हो, पूर्व देश में वर्षा हो और सब राजा परस्पर में क्रोधित रहें।।७२।।

कर्पासगंधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशनम् ।
क्षीयमाणाश्चापिनराजीवन्तिक्षयवत्सरे ।।७३।।

क्षय वर्ष में कपास, गंध, तेल, गन्ना, शहद और अन्न इनका नाश हो।

और मनुष्य भी दुबले पतले जीवित रहें। (यह शिव विंशति के वर्षों का फल है) ॥७३॥

इति षष्टिसंवत्सरफल समाप्त।

(२) अथ संवत्सरशरीरफलम्

कृत्तिकाद्वितीयं देहं वत्सरस्य प्रकीर्तितम् ।
पूर्वाषाढाद्वयं नाभिः सार्पं हृत्कुसुमं मघा ॥७४॥

(२) "संवत्सर का अङ्ग और फल"-कृत्तिका और रोहिणी यह दो नक्षत्र संवत् के देह हैं पूर्वाषाढ और उत्तराषाढ यह दोनों नाभिके हैं। श्लेषा हृदय और मघा पुष्प हैं॥७४॥

निपीडिते पापखगेन देहे वातामवातानलभीनृदेहे ।
नाभ्यां भयं क्षुज्जनितं नराणां बालादिपुष्पे हृक्ष्ये न धान्यम्॥

इति संवत्सरशरीरफलम्

यदि देह के नक्षत्रों पर पापग्रह हो तो नृदेह में वायुभय हो। नाभि के नक्षत्रों पर पापग्रह हों तो क्षुधा जनित भय हो। हृदय में नक्षत्रों पर पाप ग्रह हों तो धान्य भय हो। और पुष्प के नक्षत्रों पर पापग्रह हों तो बालादिकों को दुःख हो॥७५॥

(३) अथ राजादिफलविचारः (राज्ञः फलम्)

(चैत्रशुक्लप्रतिपदि यो वारो भूपतिर्मतः ।)
सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गौषुजनेषु पीडा ।
स्वल्पं सुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौराग्निबाधा निधनं नृपाणाम्॥

(३) "संवत् के राजा आदि का विचार और फल"-संवत्सर का राजा"-(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जो वार हो वही वर्ष का राजा होता है।) यदि संवत् का राजा सूर्य हों तो फल कम लगें-वर्षा कम हो-गायों

के दूध भी कम रहे-मनुष्यों में पीड़ा हो, धान्य कम हो, वृक्षों में फल कम लगैं, चौर तथा आग की बाधा हो और राजाओं का नाश हो।।७६।।

चन्द्रे नृपे मंगलशोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम् ।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम् ।।

वर्ष का राजा चन्द्रमा हो तो लोगों के शुभमंगल हों, वर्षा बहुत हो, खेतियां अच्छी हों, मनुष्यों में सुख रहे, राजाओं का उदय हो और लोगों की सब व्याधियां दूर हों।।७७।।

भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिवविग्रहं च ।
दुःखं प्रजाव्याधिवियोगपीडा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः ।।

यदि मंगल राजा हो तो वह्निभय, जनक्षय, चोरों से आकुलता राजाओं में और प्रजा में व्याधि वियोग पीड़ा आदि का दुःख हो और मेघ कम वर्षे।।७८।।

बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्यविवाहमङ्गलम् ।
प्रकुर्वते दानदयां जनोपि स्वस्थं सुभिक्षं धनधान्यसङ्कुलम्।।७९।।

वर्ष का राजा बुध हो तो पृथ्वी सजल हो, घर घर में विवाहादि मंगल हों, दान दया की व्यवस्था बढ़े और स्वास्थ्य वृद्धि तथा धन धान्य के बाहुल्य से सुभिक्ष हो।।७९।।

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्चधेनवः।
यजन्तिविप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते ।।८०।।

बृहस्पति राजा हो तो उपयोगी जल वर्षे, गायें अच्छा दूध दें, ब्राह्मण लोग होम यज्ञादि में निरत रहें और सब लोगों में बड़े बड़े उत्सव होते रहें।।८०।।

शुक्रस्य राज्ये बहुसस्यसंकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः ।
फलन्ति वृक्षा बहुगोप्रसूतिर्वसुन्धरापार्थिवसौख्यसंयुता ।।८१।।

शुक्र राजा हो तो खेतियां बहुत उपजे, नदियां बड़ी वेग से बहें, वृक्षों में फल बहुत लगें, गायें अधिक ब्यावें और पृथ्वी पार्थिव सौख्य संयुक्त हो।।८१।।

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गदतस्कराद्यैर्भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्।।८२।।

वर्ष का राजा शनि हो तो एक ही बार वर्षा हो, रोगबाहुल्य से लोग दुःखित हों, राजाओं में युद्ध हों, चोरी डकैती आदि अधिक बढे और लोग भूखे मरते हुए डुलते फिरें।।८२।।

(मंत्रीफलम्)

(मेषसक्रांतिवारेशो भवेत्सोपि चभूपतिः)
नृपभयं गदतोपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनादि महीतले ।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः ।।८३।।

"मंत्री फल"-(मेष संक्रान्ति के दिन जो बार हो वही उस वर्ष का मंत्री अथवा सेनापति होता है।) यदि सूर्य मन्त्री हो तो, राजा, रोग और चौरों का भय बढ़े, पृथ्वी पर धन धान्य अधिक हों। और रसों का संग्रह तथा समर्घता हो।।८३।।

शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुखमण्डिता ।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशिसुशोभिताः ।।८४।।

चन्द्रमा मन्त्री हो तो, वर्षा अधिक हो, अन्न बहुत हो लोग सुखी रहें। और अन्य प्रकार के सुखों की भी वृद्धि हो।।८४।।

अवनिजो ननु मंत्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिजवेदना ।
जनपदेषु जयंसुखसंचयंनबहुगोषुपयो द्विजकर्म च ।।८५।।

यदि मंगल मन्त्री हो तो लोग बीमारियों से दुःखी हों-किन्तु गायों के दूध अधिक होने से लोग सुखी भी रहें॥८५॥

शशिसुतेशुभमंत्रिसमागतेस्वपतिनारमते मदनक्रियाम् ।
बहुधनबहुवादिसमन्वितंयवमसूरचणान्नमहर्घताम् ॥८६॥

यदि वर्ष में बुध मन्त्री हो तो, स्त्रियां अपने पतियों के साथ मर्दन क्रिया में रत हों। बहुत धन हो और जौ मसूर तथा चने इनकी महँगाई हो॥८६॥

विविधधान्ययुताखलुमेदिनीप्रचरतोयधनामुदिता भवेत् ।
नृपतयो जनपालनतत्पराः सुरगुरौ ननुमंत्रिसमागते ॥८७॥

यदि बृहस्पति मन्त्री हो तो पृथ्वी पर कई प्रकार के अन्न अधिक उत्पन्न हों। वर्षा बहुत वर्षे और राजालोग मनुष्यों का पालन करें॥८७॥

भृगुसुतेननुमंत्रिपदंगतेशलभमूषकमूषकरौहिषः ।
भवति धान्यसमर्घतयामलंजनपदेषुजलं सरितोधिकम् ॥८८॥

शुक्र मन्त्री हो तो शलभा (टीड़ी) और मूसे आदि का भय रहे। धान्य सस्ता हो, जल अधिक वर्षे तथा कुछ रोग पीड़ा हो॥८८॥

रविसुतेयदिमंत्रिणिपार्थिवाविनयसंरहिताबहुदुःखदाः ।
नजलदाजलदाजनतापदाजनपदेषु सुखंधनंक्वचित् ॥८९॥

शनि मन्त्री हो तो राजाओं में नम्रता न रहने से लोगों को वे दुःख दाई रहें मेघों से जल नहीं गिरे और मनुष्यों में कुछ भी सुख धन नहीं हो॥८९॥

(सस्येशफलम्)

कर्कसंक्रांतिवारेशः सस्यपः परिकीर्तितः ।
सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्वं धान्यं समर्घं बहवोपि चौराः ।
युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहुभूतहाश्च ॥९०॥

"सस्येश फल।"-(कर्क संक्रान्ति के दिन जो वार हो वही सस्येश होता है।) यदि सूर्य सस्येश (अन्न का मालिक) हो तो चौरों की अधिकता से

धान्य महँगा हो। राजाओं में युद्ध हो, जल बहुत वर्षे, अन्न भी कम हो प्राणियों की हानि हो।।९०।।

सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयो मुञ्चति गोपगोधुक् ।।
देवद्विजाराधनतत्परा नृपा धरा भवेद्धान्यधनौघपूर्णा ।।९१।।

यदि चन्द्रमा सस्येश हो तो प्रजा सुखी रहे-जल अच्छा वर्षे, गायें दूध दें। राजा लोग देवद्विजों का आराधन करें और पृथ्वी धन धान्य से बहुत पूर्ण हों।।९१।।

प्रथमधान्यपतौधरणीसुतेगजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि ।
प्रभवदोबहुरोगघनोजलंनसमसौख्यकरंतुषधान्यहृत् ।।

मंगल सस्येश हो तो हाथी, घोड़े, गधे, ऊँट और गाय, बैलों में रोग हों, जल नहीं वर्षे और तुष धान्य (जौ गेहूं चावल) आदि की खेती नष्ट हों।।९२।।

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम् ।
द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदाप्रथमसस्यपतौ सति बोधने ।।९३।।

बुध सस्येश हो तो बादलों में जल अच्छा गिरे, सुख समृद्धि हो, किसी प्रकार का उपद्रव नहीं हो। और ब्राह्मण लोग वेद पाठ करें।।९३।।

कणपतौसुरराजपुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः ।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहुनि वसूनि वै।।

यदि बृहस्पति सस्येश हो तो वेद विहित मार्ग के प्रचार से सौख्य हों। वर्षा बहुत हों, अन्न तथा रस गोरस दूध आदि भी बहुत हों।।९४।।

शुक्रोयदाधान्यपतिर्धरायांमेघोजलंवर्षतिशोभनं प्रियम् ।।
गोधूमशालीक्षुधनं प्रियंगुवृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि ।।९५।।

शुक्र सस्येश हो तो शुभ और प्यारी वर्षा हो। गेहूं चावल, ईख, धन और प्रियंगु यह अच्छे हों और वृक्षों में सुखदाई पुष्प लगें।।९५।।

रविसुतेयदिधान्यपतौजंनानृपतिभिः परिपीडितविग्रहाः ।
गदभयंतुषधान्यहरंसदादुरितवादविवादयुतानराः ।।९६।।

यदि शनि सस्येश हो तो लोग राजभय से पीड़ित रहें। तथा रोग भय भी हो। जौ गेंहू आदि की खेतियां खराब हों और मनुष्य खोटे वाद विवाद में लगे रहें।।९६।।

धान्येशफलम्

(धनुः सक्रान्तिवारेशो धान्येशः परिकीर्तितः ।
सस्येशः पूर्वधान्येशः पश्चाद्धान्यपतिस्त्वयम् ।।१।।)
पश्चाद्धान्याधिपेसूर्येपश्चाद्धान्यंतदानहि ।
विग्रहंभूभृतांधान्यंमहर्घंज्वरपीड़नम् ।।९७।।

"धान्येश फल"-(धन की संक्राति के दिन जो वार हो वही धान्येश होता है। धान्य भी अन्न का नाम है और सस्य भी अन्न ही का नाम है किन्तु गर्मी में जो जौ, गेहूँ आदि होते हैं वह सस्य में समझे गये हैं और जाड़े में मोठ, मूंग बाजरी आदि होते हैं वह धान्य में समझे गये हैं।) धान्याधिप सूर्य हो तो पश्चाद्धान्य (पीछे बाला धान्य) नहीं हो, राजाओं में विग्रह हो, धान्य महँगा हो और ज्वरादि की पीड़ा हो।।९७।।

चन्द्रेधान्याधिपेजातेप्रजावृद्धिः प्रजायते ।
गोधूमाः सर्षपाश्चैवगोषुक्षीरंतदाबहु ।।९८।।

चन्द्रमा धान्याधिप हो तो प्रजा में उत्पत्ति अधिक हो। गेहूँ, सरसों और गौ दुग्ध अधिक हों।।९८।।

भूमिजेग्रीष्मधान्येशेग्रीष्मधान्यमहर्घकम् ।
शालीक्षुघृततैलादिमहर्घाणिभवन्ति च ।।९९।।

मंगल धान्याधिप हो तो ग्रीष्म धान्य महँगा हो और चावल, ईख, घी और तैलादि महँगे हों।।९९।।

बुधधान्याधिपेमेघाजलंमुञ्चंतिवैभृशम् ।
सैन्धवेलाटदेशेचमाधवोल्पंचवर्षति ।।१००।।

यदि बुध धान्याधिप हो तो जल बहुत वर्षे और सिन्धु तथा लाट देश में वर्षा कम हो।।१००।।

गुरौधान्यपतौ याते यवगोधूमशालयः ।
पच्यन्तेसर्वदेशेषुयज्वानोब्राह्मणादयः ।।१०१।।

यदि बृहस्पति धान्याधिप हो तो गेहूँ तथा चावल अधिक हो और ब्राह्मण लोग यजन याजन करने में तत्पर रहैं।।१०१।।

भृगौपश्चिमधान्येशे पश्चाद्धान्यं न पच्यते ।
सस्यंसमर्घतांयातिस्वल्पंक्षीरंगवामपि ।।१०२।।

धान्याधिप शुक्र हो तो पश्चाद्धान्य (जाड़े की खेतियां) नहीं पकें। अन्न सस्ता हो और गायों में दूध कम हों।।१०२।।

निर्धनाः क्षितिभुजोरणादराः सस्यमल्पमतिरोगिणोनराः ।
नैववर्षतिलजलंसुरेश्वरः स्याद्यदांत्यकणपः शनैश्चरः ।।१०३।।

यदि शनैश्चर धान्याधिप हो तो रणादरी राजा लोग निर्धन हों, अन्न कम हो। मनुष्य रोगी हों और इन्द्र जल नहीं वर्षावें।।१०३।।

(मेघेशफलम्)

(आर्द्राप्रवेशेयोवारोमेघेशः परिकीर्तितः)

जलदपेयदिवासरपेतदासरसिवैरमतेजनतारसम् ।
यवचणेक्षुनिवारसुशालिभिः सुखचयंसुलभंभुवि वर्तते।।१०४।।

"मेघेश फल।"- (आर्द्रा प्रवेश के दिन जो वार हो वही मेघेश होता है) यदि मेघेश सूर्य हो तो जौ-चने ईख-नीवारु (ओईरी) और चावल आदि अच्छे उत्पन्न हों और पृथ्वी पर सुख संचय वर्तमान रहे।।१०४।।

शशिनितोयदपेयदिगोमहिष्यजखरादिषुदुग्धरसंतदा ।
फलवतीधनधान्यवतीधराविविधभोगवतीननुभामिनी ।।१०५।।

यदि चन्द्रमा मेघेश हो तो गौ, भैंस, छेरी, गधी, आदि के दूध अधिक हों। पृथ्वी पर खेतियों में अन्न भी अधिक हों और वृक्षों में फल भी अधिक लगें और सब सुखभोग मिले।।१०५।।

अवनिजेजलदस्यपतौभुविश्रुतिविचारविहीनधरामराः ।।
क्वचिदपिप्रचुरंजलमल्पकंक्वचिदपिप्रशमंबहुतापदम् ।।१०६।।

मंगल मेघेश हो तो ब्राह्मण लोग वेद विचार से हीन हों। कहीं वर्षा कम और कहीं अधिक हो।।१०६।।

अमृतरश्मिसुतेयदिवारिपेबहुजलंतुषधान्यरसादिकम् ।
द्विजवरायजनोत्सुकचेतसोविविधसौख्ययुताधरणीतदा।।१०७।।

बुध मेघेश हो तो जल बहुत वर्षे, जौ गेहूँ की खेती अच्छी हों, ब्राह्मण लोग यजन (प्रयोगादि) करने में उत्सुक हों और पृथ्वी विविध सौख्यसम्पन्न हो।।१०७।।

गुरुरपिप्रियवृष्टिकरः सदाखिलविलासवतीधरणीतदा ।
श्रुतिविचारपरानरपालकारससमृद्धियुताखिलमानवाः ।।१०८।।

बृहस्पति मेघेश हो तो उत्तम वर्षा हो, पृथ्वी पर सब भांति के सुख विलास हों। राजा लोग वेदमार्ग (श्रुति स्मृतियों के धर्माचरण) का विचार रखें। और सब लोग रस समृद्धि से युक्त हों।।१०८।।

भृगुसुतोजलदस्यपतिर्यदाजलमुचोजलदादिविशोभनाः।।
धननिधानयुताद्विजपालकानृपतयो जनतासुखदायकाः ।।१०९।।

शुक्र मेघेश हो तो बादलों से अच्छा जल वर्षे। ब्राह्मणपालक राजा लोग धन के निधान हों। और मनुष्यों को सुख दें।।१०९।।

रविसुते जलदस्यपतौभवेद्विरलवृष्टिवतीवसुधा तदा ।
मनसितापकरोनृपतिः सदाविविधरोगरता जनतामता।।११०।।

यदि शनि मेघेश हो तो पृथ्वी पर विरली (शायद) वर्षा हो। राजा लोग मन में सन्ताप करें और लोग कई प्रकार के रोगों से पीड़ित रहें।।११०।।

(रसेशफलम्)

तुलासंक्रान्तिदिवसेयोवारः स रसाधिपः ।
रसपतौतरणीधरणोतदाविरसभागरताल्पपयोधरा ।
वसनतैलघृतप्रियमानवाः सुखेरसंनभुनक्ति महीपतिः।।

"रसेश फल।" (तुल संक्रांति के दिन जो वार हो वह रसेश होता है) यदि सूर्य रसेश हो तो रस दूध आदि कम हों, वस्त्र-तैल-घी इनकी अत्यन्त न्यूनता हो और राजाओं को सुख नहीं मिले।।१११।।

यदिविधौरसपेभुविमानवोनवनवांयुवती बुभुजे प्रियाम् ।
जलधराबहुवारिधिधायकारसवतीधनधान्यवतीमही ।।११२।।

चन्द्रमा रसेश हो तो मनुष्य नवीन २ प्राणप्रिय प्रियाओं का भोग करें। बादलों से बहुत पानी वर्षे और पृथ्वी रसवती तथा धनधान्यवती हो।।११२।।

यदिधरातनयो रसपोभवेन्नरसराशियुता जनता शुभा ।
नरपतिर्विषमोजनतापदोनजलदोबहुवृष्टिकरोभुवि ।।११३।।

यदि मंगल समेश हो तो मनुष्यों को रसराशि नहीं मिले, राजाओं का वर्ताव प्रजा के अनुकूल नहीं हो, बादलों से वर्षा भी कम गिरे।।११३।।

रसपतौद्विजराजसुतेमहीसुलभधान्यघृतादियुता जनाः ।
प्रमुदिता वरनायकपालिताबहुजलाखिलदेशसुरक्षिता।।११४।।

बुध रसेश हो तो धान्य घी सुलभ हों और मनुष्य उनसे युक्त रहें। नायक (श्रेष्ठ पुरुष) प्रसन्न रहें और जल बहुत हो तथा देश सुरक्षित रहें।।११४।।

यदिगुरूरसपोजनसौख्यदः कमलवन्तिसरांसि तृणानिच ।
जनपदाद्विजपूजनतत्परागजसुवाजिरथोष्ट्रयुतानृपाः ।।११५।।

यदि बृहस्पति रसेश हो तो शरीरसुख मिले, तृणादि की उत्पत्ति अच्छी हो। जनपद ब्राह्मणों की सेवा करें और राजा लोग हाथी घोड़े ऊँट रथादि से युक्त रहें।।११५।।

यजनयाजनकोत्सवकोत्सुकाजनपदाजलतोषितमानसाः।
सुखसुभिक्षसुमोदवतीधराधरणिपा हतपापगणप्रियाः ।।११६।।

शुक्र रसेश हो तो लोग यजन याजन तथा उत्सवादि करने में उत्सुक रहें। और उनके मन सन्तुष्ट रहें। पृथ्वी सुख-सुभिक्ष तथा आनन्दवती हो और राजा लोग निष्पापी हों।।११६।।

रविसुते रसपेरससंक्षयोनजलदागददाभ्रपयोधराः ।
अजगवांगजवाजिखरोष्ट्रहाजनपदेषुनरा न रसैर्युताः ।।११७।।

शनैश्चर रसेश हो तो रसों का नाश हो बादलों से पानी के बदले रोग वर्षे। छेरी-गाय-हाथी-घोड़े, गधे और ऊंट इनका नाश हो और मनुष्यों में निरसता रहें।।११७।।

(नीरसेशफलम्)

(नक्रसंक्रांतिवारेशो नीरसेशः प्रकीर्तितः।)

नीरसाधिपतौसूर्येताम्रचन्दनयोरपि ।
रत्नमाणिक्यमुक्तादेरर्घवृद्धिः प्रजायते ।।

"नीरसेश फल।"-(मकर संक्रांति के दिन जो वार हो वह नीरसेश होता है यदि सूर्य नीरसेश हो तो तांबा, चन्दन, रत्न, माणिक्य और मोती आदि की अर्घ वृद्धि हो।।११८।।

शुक्लवर्णादिवस्तूनांमुक्तारजतवाससाम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेतशशांकेनीरसाधिपे ।।११९।।

चन्द्रमा नीरसेश हो तो सफेद रंग की वस्तुएँ-तथा मोती चांदी और वस्त्र इनकी अर्घ वृद्धि हो अर्थात् यह सस्ते हों।।१९९।।

नीरसेशोयदाभौमः प्रवालरक्तवाससाम् ।
रक्तचंदनताम्राणामर्घवृद्धिर्दिनेदिने ।।१२०।।

मंगल नीरसेश हो तो मूँगदाल, वस्त्रलाल, चन्दन, तांबा और ऐसी ही अन्य वस्तुओं की दिन दिन अर्घ वृद्धि हो।।१२०।।

चित्रवस्त्रादिकंचैवशंखचंदनपूर्वकम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेतनीरसेशोबुधोयदि ।।१२१।।

बुध नीरसेश हो तो छींट के कपडे और शंख चंदन आदि सस्ते हों।।१२१।।

हरिद्रापीतवस्तूनिपीतवस्त्रादिकंचयत् ।
नीरसेशोयदाजीवः सर्वेषांप्रीतिरुत्तमा ।।१२२।।

बृहस्पति नीरसेश हो तो हल्दी, पीले, वस्त्र, पीले रंग की वस्तु यह सब सस्ते हों और मनुष्यों में प्रीति बढें।।१२२।।

कर्पूरागरगन्धानांहेममौक्तिकवाससाम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेतनीरसेशोभृगुर्यदि ॥१२३॥

शुक्र नीरसेश हो तो कपूर, अगर, गंध, सुवर्ण, मोती और कपड़े यह सस्ते हों॥१२३॥

अयः पिंडादिलोहानांकृष्णवस्त्रादिवस्तुनाम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेतमन्देनीरसनायके ॥१२४॥

शनि नीरसेश हो तो पिण्डाकारलोह आदि तथा काले वस्त्रादि की अर्घ वृद्धि हो॥१२४॥

(फलेशफलम्)

(मीनसंक्रांतिवारेशः फलेशः परिकीर्तितः।)

द्रुमवतीवरपुष्पवतीधराप्रमुदिताफलभोगविशेषता ।
बहुजलंजलदोभुविमुंचति क्वचिदपिप्रमितं फलपो रविः ॥

"फलेश फल"-(मीन संक्रांति के दिन जो वार हो वह फलेश होता है।) सूर्य फलेश हो तो अनेक प्रकार के फल पुष्प और वृक्षों से पृथ्वी आनन्दित हो और वर्षा अच्छी हो॥१२५॥

यदिविधुः फलपोद्रुमराशयः फलयुतावलिभिः कुसुमैर्युताः ।
द्विजमुखावरभोगसमन्वितानृपतयोनयनाटनतत्पराः ॥१२६॥

चन्द्रमा फलेश हो तो वृक्षों में फल तथा बेलों में फूल बहुत लगें। ब्राह्मणों को अच्छे भोजन मिलें और राजा लोग न्यायी तथा भ्रमणशील हों॥१२६॥

फलपतिर्यदिभूतनयोभवेन्नबहुपुष्पफलान्वितपादपाः ।
गदभयान्वितदेशजनास्तदानृपतयोबहुविग्रहकारकाः ॥१२७॥

मंगल फलेश हो तो वृक्षों में फल फूल कम लगें। मनुष्यों में रोग भय हो और राजाओं में विग्रह हो॥१२७॥

यदिबुधेफलपेफलमुत्तमंजलधराजलराशिमुचस्तदा ।
बहुतृणंकुसुमैः कमलैर्युतंजनपदोजनसौख्यमुदान्वितः ॥१२८॥

बुध फलेश हो उत्तम फल हों, बादल जल बहुत छोड़ें, घास फूल कमल और पुष्प यह बहुत हों और मनुष्य सुख तथा आनन्द से युक्त रहें॥१२८॥

सुरगुरुः फलनायकतांगतोगतभयावनराशिमहाद्रुमाः ।
यजनयाजनकोत्सवमन्दिराः श्रुतिविचारपराद्विजपूर्वकाः ॥

बृहस्पति फलेश हो तो वन में वृक्ष बहुत हों, भय नहीं हो, घर घर में पूजा पाठ हों और ब्राह्मण तथा पण्डित लोग देव विचार में तत्पर रहें॥१२९॥

यदि फलस्यपतौभृगुजेधरामृदुकुमारमहीरुहराशयः ।
बहुफलानरनाथसुभोगदाद्विजवराः श्रुतिपाठपरायणाः ॥१३०॥

शुक्र फलेश हो तो पृथ्वी पर कोमल घास फूल फल आदि हों और राजाओं को उत्तम भोग मिले और पण्डित लोग वेद पाठ परायण हों॥१३०॥

यदिशनिः फलपः फलहा भवेज्जनितपुष्पगणस्य दमःसदा ।
हिमभयंवरतस्करजन्तुभीर्जनपदो गदराशिमहाकुलः ॥१३१॥

शनि फलेश हो तो फल हानि हो, वृक्षों में पुष्प निष्फल हों। हिम (बर्फ) का भय हो और चौरादि का भय हो तथा मनुष्यों में बीमारी बढे॥१३१॥

(धनेशफलम्)

(कन्यासंक्रांतिदिनपोधनेशःपरिकीर्तितः)
द्रविणपे यदिवासरपेतदावणिजतोबहुद्रव्यसमागमः ।
गजतुरंगमेषखरोष्ट्रतोधनचयंलभतेक्रयविक्रयात् ॥१३२॥

"धनेश फल"–(कन्या संक्रांति के दिन जो वार हो वह धनेश होता है।) सूर्य धनेश हो तो हाथी, घोड़े, गधे और ऊँट इनके व्यापार से बहुत धनलाभ हो।।१३२।।

धनपतिर्मृगलाञ्छनकोयदारसचयक्रयविक्रयतो धनम् ।
वसनशालिसुगंधरसंबहुद्रविणतैलयुतंनृपसौख्यदम् ।१३३।।

चन्द्रमा धनेश हो तो क्रय विक्रय में धनसंग्रह हो। और वस्त्रशाली-सुगंध-तैल और घी इनमें लाभ हो, तथा राजाओं को सुख मिले।।१३३।।

असममौल्यकरोधरणीसुतः शरदितापकरस्तुषधान्यहृत् ।
सहसिमासिभवेद्विगुणंतदानरपतिर्जनशोकविधायकः ।।१३४।।

मङ्गल धनेश हो तो तेजी मन्दी की अदला बदली बहुत हो, जौ गेहूँ की खेती का नाश हो, मार्ग मास में विक्रय करने से संग्रहीत वस्तु में दुगुना लाभ रहे और राजा शोकदाई हो।।१३४।।

द्रविणपो हिमरश्मिसुतोयदाविविधसंग्रहवस्तुफलार्थदा ।
द्विजवराजययज्ञसुसंयुताः कृषिविशेषविशेषितमानसाः ।।१३५।।

बुध धनेश हो तो कई प्रकार की वस्तुओं का संग्रह लाभदायक हो। पंडित लोग जप यज्ञादि करें। और कृषक लोग खेती विशेष करें।।१३५।।

सुमनसांचगुरुर्द्रविणाधिपोवणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः ।
फलितपुष्पितभूमिरुहाः सदाविविधद्रव्ययुताभुविमानवाः ।।

बृहस्पति धनेश हो तो लोग निष्पापी हों, वणिज वृत्ति करनेवाले सुखी रहें। वृक्षों में फल पुष्प लगें और मनुष्य कई भांति के धन द्रव्य से युक्त हों।।१३६।।

द्रविणपोभृगुजोद्रविणैर्युताः समधनासकलाननुमानवाः ।
समसुखाः क्रयविक्रयजीविनोनृपतयो जनपालनतत्पराः ॥१३७॥

शुक्र धनेश हो तो सब मनुष्य समान धनवान् हों। सुख भी समान मिलें। और क्रय विक्रय में लाभ हो तथा राजा लोग पालन करें॥१३७॥

द्रविणपेरविजेविरलंधनंगदरताधरणीपतयः सदा ।
अधनतांवणिजः कृषिजीविनोद्विजवराः परपीडनमानसाः॥

शनि धनेश हो तो लोगों के पास धन नहीं रहे, राजा लोग रोगी रहें। वाणिज्य करनेवाले तथा खेती करनेवाले निर्धन हों और पंडित लोग पराई पीड़ा से दुःखी रहें॥१३८॥

(दुर्गेशफलम्)

(सिंहसंक्रान्तिवारेशोदुर्गेशः कथितोबुधैः)

नयविशेषकरस्तरणिस्तदागतभयानरराजपुरोगमाः ।
समधिकोनतदानृपजोन्यजः स्वपथजंव्रजतांनभयंक्वचित् ॥१३९॥

"दुर्गेश फल"-(सिंह संक्रांति के दिन जो वार हो वह गढ़पति होता है। (सूर्य दुर्गेश हो तो राजा न्याय करें, राजद्वार में जानेवाले निर्भय हों, राजवर्गी तथा अन्य सब समान रहें। और अपने नियत मार्ग में चलनेवालों को कुछ भी भय नहीं हो॥१३९॥

गढपतिः शशलाञ्छनकोयदा नृपसुराज्यविलासितपौरजाः ।
बहुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नखरा वरवर्णितविग्रहाः ॥१४०॥

चन्द्रमा दुर्गेश हो राजा सुराज्य करें, प्रजाआंनद करे, ईख तथा गोरस भोगियों को धनलाभ हो और श्रेष्ठ लोगों में विग्रह हो॥१४०॥

अवनिजोगढनायकतांगतोविविधदुःखवियोगसमन्वितः ।
जनपदेषुजनाः क्रयविक्रयेभयविशेषतयानफलंक्वचित् ॥१४१॥

मंगल दुर्गेश हो तो लोगों को कई प्रकार से दुःख मिले। लेन देन में लोगों को बहुत भय हो और फल भी कम लगें।।१४१।।

विषमसाम्यसुखंशशिजेप्रभौभवतिराष्ट्रजनेषु विशेषताम् ।
शशिसुतयदिकोटकपालकेपथिषुद्रव्यवतांनभयंक्वचित्।।१४२।।

बुध दुर्गेश हो तो शहरी लोगों को सम विषम सुख मिले और धनवानों को रास्ते में भी कुछ भय नहीं हो।।१४२।।

सुरगुरौगढपेनयशोभितानरवरानरपाः करपालिताः ।
गिरिषुवैनगरेषुसमंसुखंसुखमतिद्विजशस्त्रवतोऽनिशम् ।।

बृहस्पति दुर्गेश हो तो राजा लोग न्याय पूर्वक लोकों की पालना करें, और शहर तथा जंगल में समान सुख मिले तथा द्विज सशस्त्र हों।।१४३।।

नगरदेशविशेषपतिर्यदाभृगुसुतोबहुसौख्यकरो मतः ।
विनयवाणिजगेहसमः सुखोनगवनेनिकटेपिचदूरतः ।।१४४।।

शुक्र दुर्गेश हो तो नराधिपों को तथा देशाधिपों को सुख हो, वाणिज्य में तथा घर में सम सुख मिले, पर्वत और वन दूर से ही समीप दीखें।।१४४।।

रविसुतेगढपालिनिविग्रहे सकलदेशगताश्चलिताजनाः ।
विविधवैरिविशेषितनागराः कृषिधनं शलभैर्मुषितंभुवि।।

शनि दुर्गेश हो तो दुनिया में इतने विग्रह उत्पन्न हों कि जिनसे लोग चल विचल हो जायँ। नागरिक लोगों में नाना भाँति के वैर बढ़ें। और खेती के धन में टिड्डी तथा चूहों से बहुत हानि हो।।१४५।।

(४) अथ मेघानयनं तत्फलं च

शाकेष्टगुणितेनन्दैर्भाजिते शेषतो घनः । आवर्तएकशेषेस्यात्संवर्ताख्योद्विशेषके ।।१।। त्रिशेषे पुष्करो द्रोणश्चतुः शेषेप्रकीर्तितः ।

कालनाम!पंचशेषेट्शेषेनीलकः स्मृतः ।।२।। वरुणः सप्तशेषेस्याद्वा-युरष्टावशेषके । नवशेषेतमोऽसमक्रमान्मेघानवस्मृताः ।।३।।)

(४) "नौ मेघों का लाना" (वर्तमान शाके के आठ से गुण कर नौ का भाग देने से जो शेष बचे वह मेघ होता है। यथा एक शेष रहे तो 'आवर्त', दो शेष बचें तो 'संवत्' तीन शेष हों तो 'पुष्कर', चार शेष हों तो 'द्रोण', पांच हों तो 'काल' छः रहे तो 'नीलक', सात रहें तो 'वरुण', आठ हों तो 'वायु' और नौ शेष रहें तो 'तम्' नाम मेघ होता है।।)

विनाशनंशालियवादिकानांतथैवकार्पासघृतादिकानाम् ।
घनोयदावर्तकनामधेयः स्वल्पंजलं स्याद्धनिनाम्पायः।।१४६।।

जिस संवत् में 'आवर्त' नाम मेघ हो उसमें जौ, चावल, गैंहूं, चने, कपास, घी और तैल आदि का नाश होता है और जल भी कम वर्षता है।।१४६।।

कामाधिक्यंस्वल्पताधर्मकार्येपृथ्वीपालास्तत्परा नान्यकार्ये ।।
संवर्ताख्योनीरदः स्याद्धियत्रप्रांचो वायुर्वातिसर्वत्रतत्र ।।१४७।

संवर्त नाम मेघ हो तो काम अधिक हो, धर्म कार्य में कमी हो, राजा लोग अन्य कामों में तत्पर नहीं हों, वर्षा हो और सर्वत्र पूर्वी वायु चले।।१४७।।

नैव कंदफलमूलविवृद्धिर्जायते विविधपातकवृद्धिः ।
रोगतोजनकृशत्वमनल्पंपुष्करेजलधरे जलमल्पम् ।।१४८।।

जिस वर्ष में पुष्कर नाम मेघ हो तो कंद मूल फल इनकी वृद्धि नहीं हो, कई भांति पापों की वृद्धि हो। रोगपीड़ा से लोग दुबले हो और वर्षा कम हो।।१४८।।

महीशाः स्वसंपतिवृद्धचासमेताः समस्तामहीभूरिधान्येनयुक्ता ।
यदाजायतेद्रोणनामापयोदस्तदा देवराजो भवेत्सत्पयोदः ।।

द्रोण मेघ हो तो राजा लोगों के खजाने भरपूर रहें। संपूर्ण पृथ्वी पर भी धन धान्य अधिक हों। और इन्द्रदेव जल भी उत्तम वर्षावें।।१४९।।

रोगतोविकलतावपुष्पतांस्यान्मिथः कलहताक्षमाभृताम् ।
कालनामजलदोदयोयदानैववर्षति जलंवृषातदा ।।१५०।।

काल नाम मेघ हो तो अच्छे आदमी रोग पीड़ा से व्याकुल हो, राजाओं में परस्पर कलह हो। और वर्षा भी कम हो।।१५०।।

सत्पयोदिशतिगोकुलपूर्णावस्त्रताखिलमहीपरिपूर्णा ।
नीलनाम्निजलदेजलवृष्टिर्जायतेसकलमानवतुष्टिः ।।१५१।।

नील नाम मेघ हो तो गायें अच्छा दूध दें। रूई कपास आदि अधिक हों। वर्षा अच्छी हो और लोग सब संतुष्ट रहे।।१५१।।

अग्निहोत्रकरणादराद्विजाः स्युः सदाधिकमुदोखिलाः प्रजाः ।
अर्णवेणसहितंमहीतलंवारुणेजलधरे भवेदलम् ।।१५२।।

वरुण मेघ हो तो अग्निहोत्री ब्राह्मणों का आदर हों, प्रजा में सदैव आनंद रहे। और वर्षा भी अच्छी अनुकूल हो।।१५२।।

नैवांबुवृष्टिंकुरुतेसुरेशः समस्तधान्यांबरकण्यनाशः ।
धराधरःस्याद्यदिवायुनामाजनव्रजस्तर्हि विहीनधामा ।।

वायु मेघ हो तो इन्द्र जल की वर्षा नहीं करे, सब धान्यों का नाश हो। और सब वस्तुओं के संकोच से लोक विहीनधान (घरहीन) हो जायँ।।१५३।।

रोगाधिक्यंजायतेनीरशेषश्चौराधिक्यंनैवधान्यस्यपोषः ।
यस्मिन्वर्षेस्यात्तमोनाममेघस्तस्मिन्दुःखं प्राप्नुयाल्लोकसंघः ।।

और तम नाम मेघ हो तो रोग अधिक हो, जल की न्यूनता रहे, चौर अधिक हों, धान्यं का पोषण नहीं हो, और लोग अनेक प्रकार से दुःखित रहें।।१५४।।

(५) अथ द्वादशनागानयनं तत्फलं च

(शाकेद्वाभ्यांयुतः सूर्यैर्भक्तः शेषांकतः फणी ।
सुबुध्नाख्योनन्दसारीकर्कोटाख्यः पृथुश्रवः ।।१।।
वासुकिस्तक्षकाख्यः स्यात्कंबलोश्वतरस्तथा ।
हेममालीनरेन्द्राख्योवज्रदंष्ट्रोवृषाभिधः।।२।।)

(५) 'द्वादश नागों का फल''–(शाके में दो जोड़कर बारह का भाग देने से जो शेष बचे सो नाग होता है। १ बचे तो 'सुंबुध्न' २ बचें तो 'नन्दसारी', ३ बचें तो 'कर्कोटक', ४ बचें तो 'पृथुश्रव', ५ बचें तो 'वासुकी', ६ बचें तो 'तक्षक', ७ बचें तो 'कंबल', ८ बचें तो 'अश्वतर', ९ बचें तो 'हेममाली', १० बचें तो 'नरेन्द्र', ११ बचे तों 'वज्रदंष्ट्र' और १२ बचें तो 'वृष' नाम नाग होता है।)

सुबुध्ननामसहितोभुजंगोजायतेतदा ।
नृणांसुबुद्धिकर्तास्यान्मध्यवृष्टिप्रदायकः ।।१५५।।

जिस वर्ष में सुबुध्न नाम नाग हो उस वर्ष में मनुष्यों की बुद्धि अच्छी हो और वर्षा मध्यम हो।।१५५।।

यस्मिन्वर्षेनागराजोनंदसार्यभिधानकः ।
तस्मिन्वर्षेमहावृष्टिंकुरुतेनन्दतेजनः ।।१५६।।

नंदसारी नाग राजा हो तो वर्षा बहुत भारी हो और मनुष्य आनन्दित हों।।१५६।।

यदाकर्कोटनामाचजायतेपवनाशनः ।
तदानांबुददातीन्द्रोमरणंस्यान्महीपतेः ।।१५७।।

कर्कोटक नाग हो तो वर्षा नहीं हो, राजाओं की मृत्यु हो॥१५७॥

पृथुश्रवाभुजंगेन्द्रोजायतेयत्रवत्सरे ।
तत्रकीलालमल्पंस्यात्सस्यहानिरसंशयम् ॥

पृथुश्रव नाग हो तो वर्षा कम हो और अन्न की हानि हो॥१५८॥

उदेतियत्रवत्सरेसवासुकिर्भुजंगमः ।
प्रभूतधान्यदायकः सुवृष्टिकारकस्तथा ॥१५९॥

जिस वर्ष में वासुकी नाम नाग हो तो उस वर्ष में अच्छी खेती होने योग्य उत्तम वर्षा हो॥१५९॥

तक्षकाभिधनागेन्द्रोजायतेयत्रवर्षके ।
तत्रमध्यमवृष्टिः स्याद्वग्रहानृपतेर्मतिः ॥१६०॥

तक्षक नाग हो तो वर्षा मध्यम हो और राजाओं में विग्रह हो॥१६०॥

यदैवकंबलाभिधोभुजंगमः प्रजायते ।
तदास्तिमध्यमंजलंसमस्तधान्यमुत्तमम् ॥१६१॥

जिस वर्ष में कंबल नाग हो उस वर्ष में भी जल कम वर्षे और अन्न कम हो॥१६१॥

यस्मिन्नब्देभुजंगेन्द्रोजायतेश्वतराभिधः ।
नववर्षतिजलंव्रजीतदासस्यंविनश्यति ॥१६२॥

अश्वतर नाग हो तो जल नहीं वर्षे और अन्न की खेतियां सूख जायँ॥१३२॥

हेममालिनिनागेन्द्रेजायतेत्वखिलामही ।
समस्तधान्यसंपूर्णाप्रभूतजलवृष्टितः ॥१६३॥

हेममाली नाग हो तो बहुत वर्षा से संपूर्ण पृथ्वी पर समस्त धान्य पैदा हो।।१६४।।

यत्रसंवत्सरेनागोनरेन्द्रोनामतः शुभः ।
तदास्यान्निखिलापृथ्वीप्रभूतजलपूरिता ।।१६४।।

नरेन्द्र नाग हो तो पृथ्वी वर्षा के जल से पूर्ण हो।।१६४।।

यत्रसंवत्सरेनागोवज्रदंष्ट्राभिधानकः ।
तदांबुवर्षणं नैव सर्वसस्यविनाशनम् ।।१६५।।

वज्रदंष्ट्र नाग हो तो उस वर्ष में जल नहीं वर्षे और खेती सूख जाय।।१६५।।

यदावृषाभिधानस्यभुजंगाख्योयदाभवेत् ।
तदासस्यादिकाल्पत्वंसुतरामीतितोभयम् ।।१६६।।

जिस वर्ष में वृष नाम नाग राजा हो उस वर्ष में अन्न कम हो और ईतिभय हो।।६६६।।

(६) अथ मेघानां विशेषवर्णनम्

ईश्वर उवाच–शृणु देवियथातथ्यं वर्णरूपं तु यादृशम् ।
मंदरोपरिमेघास्तेराजानोदशकीर्तिताः ।।१६७।।

(६) 'प्रसंगवश यहां अन्य मेघों का वर्णन भी लिखते हैं।" शिव पार्वती को कहते हैं कि हे देवि! मैं तुमको मेघों का यथार्थ वर्ण रूप कहता हूं सो सुनो। मेघों के दश राजा तो मंदर पर्वत पर रहते हैं।।१६७।।

कैलासेदशविक्षेपाः प्राकारे कोटजे दश ।
उत्तरे दश राजानः शृंगवेरे तथा दश ।।१६८।।

दश कैलास में–दश कोटज प्राकार में–दश राजा उत्तर में और दश शृंगवेर में रहते हैं।।१६८।।

पर्यंते दशा राजानो दशैव हिमवन्नगे ।
गंधमादनशैले च राजानो दशवारिदाः ।।१६९।।

दश राजा पर्यंत में– दश हिमालय पर्वत में और मेघों के दश राजा गंधमादन पर्वत पर रहते हैं।।१६९।।

अशीतिमेघा विख्याताः कथितास्तव पार्वति ।
दिग्भागे च विदिग्भागे प्रत्येकं दश नीरदाः ।।१७०।।

हे पार्वति! इस भांति यह सब अस्सी मेघ हैं सो तुमको कहे हैं। दिशा और विदिशाओं में भी दश दश मेघ रहते हैं।।१७०।।

उन्नमय्य प्लावयंति मर्त्यलोके जलैर्महीम् ।
कमलेष्टदले वृष्टचै प्रतिष्ठाप्य पयोधरान् ।।१७१।।

वे जब उदय होते हैं तब मृत्युलोक की पृथ्वी को जल से भर देते हैं। (अतः अब उनके उदय होकर यत्रेच्छ जल वर्षाने का उपाय कहते हैं।) अनुष्ठान भूमि में विधिसहित अष्टदल कमल बनाकर उसके बीच में मेघों की स्थापना करे।।१७१।।

धूपदीपैश्च कुसुमैर्नैवेद्यैः परिपूजयेत् ।
सिंहको विजयश्चैवलंबकोथजयद्रथः ।।१७२।।
धूम्रश्च शिखरो भद्रो मातंगो वरुणस्तथा ।
त्रिलोचनपतिश्चैव मेघाः प्राच्या अमी दश ।।१७३।।

और उनका वेदोक्त मंत्रों से आवाहन करके पुष्प–धूप–दीप– और नैवैद्य आदि से पूजन करे। उनमें सिंहक—विजय—लंबक—जयद्रथ—धूम्र—शिखर—भद्र–मातंग—वरुण—और त्रिलोचन यह दश मेघ पूर्वदिशा के हैं। अतः इनका पूर्व में स्थापन पूजन करे।।१७२।।१७३।।

आनंदः कालदंष्ट्रश्च शूकरो वृषभस्तथा ।
मृगोनीलो भवः कुंभो निकुंभोमहिषस्तथा ।।१७४।।

आनंद, कालदंष्ट्र, शूकर, वृषभ, मृग, नील, भव, कुंभ, निकुंभ और महिष यह दश मेघ दक्षिण दिशा में रहते हैं। अतः इनका दक्षिण में पूजन करे।।१७४।।

दशमेघादक्षिणस्यांप्रायोमीवृष्टिकारिणः ।
कञ्जरः कालमेघश्चपुनर्वैकालकांतकः ।।१७५।।
दुंदुभिर्मेखलः सिंधुर्मकरश्छत्रगस्तथा ।
पश्चिमायाममीमेघादशवर्षाविधायिनः ।।१७६।।

कुंजर, काल, मेघ, कालक, अन्तक, दुंदुभि, मेखल, सिंधु, मकर और छत्र यह दश मेघ पश्चिम दिशा में रहते हैं। अतः इनका पश्चिम में पूजन करें।।१७५।।१७६।।

मेघनादोथनृपतिस्त्रिलोचनसुधाकरौ ।
दंडिनश्चसितालश्चत्रैकालिकजलस्तथा ।।१७७।।
वृषभोपिचगन्धर्वोविधुमासिकएवच ।
गकरोदशमेघाः स्युरुत्तरस्यांप्रवर्षिणः ।।१७८।।

और मेघनाद, त्रिलोचन, सुधारक, दंडी, सिताल, त्रैकालिक, जल वृषम, गंधर्व, विधुमासिक और गकर यह दश मेघ उत्तर दिशा में जल वषति हैं। अतः इनका उत्तर दिशा में पूजन करे।।१७७।।१७८।।

ओंकारोनाम्निमूर्तिश्चमयूरः कंदिकस्तथा ।
बिंदुकांतिश्चकरणोहेमकांतिश्चपर्वतः ।।१७९।।
गैरिकाह्वयकोमेघाः स्वर्गलोकेव्यवस्थिताः ।
दिव्यमेघाश्चसप्तैतेसर्वांगसुखदायिनः ।।१८०।।

ओंकार, मयूर, कन्दिक, विंदुकांति, करण, हेमकांति और गैरिक यह दिव्य सात मेघ स्वर्गलोक में स्थित रहते हैं। अतः इनका मण्डल के मध्य में पूजन करे॥१७९॥१८०॥

दशमेघाः श्वेतवर्णादशैवलोहितास्तथा ।
दशपीताः स्वर्णवर्णादशधूम्राः प्रकीर्तिताः ॥१८१॥

दश मेघ, श्वेत, दश लाल, दश पीले और दश धूम्र वर्ण के हैं॥१८१॥

अथमंत्रंप्रवक्ष्यामियेनमंत्रेणआहिस्ताः ।
आगच्छन्तिधरादेवाः कुर्वन्त्येकार्णवांमहीम् ॥१८२॥

अब मेघों के आवाहन के मन्त्र को कहते हैं जिससे मेघ आकर पृथ्वी को जल से समान कर देवें॥१८२॥

ॐ ह्रींमेघदूत्यैनमः आगच्छ २ स्वाहा ।
ॐ मेघदूतीकमलोद्भवायनमः आगच्छ २ स्वाहा ।
ॐ ह्रीं महानिलराजहिमन्निवासिनेआगच्छ २ स्वाहा ।
ॐ ह्रीनंदिकेश्वररायजठनिवासिनेमेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा॥

जपोस्यदशसाहस्रोदशांशोहोमएवच ।
पुष्पैश्चधवलैरक्तैः करवीरसमुद्भवैः ॥१८३॥
ततः पुष्पैः सुगन्धाढचैरर्चयेन्मेघसप्तकम् ।
दद्याच्चैववनेगत्वा मेघानावाहयेद्बुधः ॥१८४॥

ॐ हीं मेघदूत्यै० इत्यादि पांचों मन्त्रों में प्रत्येक के दस दस हजार जप करके इनके दशांश का होम करे। और सफेद तथा लाल कनेर के पुष्पों से अथवा अन्य सुगन्धित पुष्पों से पूजन करके वन में जाकर मेघों का आवाहन करे॥१८३॥१८४॥

शिवालयेतडागेवापुनर्मेघान्विसर्जयेत् ॥१८५॥ (इति)

और फिर विसर्जन करना हो तो शिवालय में अथवा तालाब पर जाकर उसका विसर्जन करे॥१८५॥

(७) आर्द्राप्रवेशेतिथ्यादिफलम्

प्रतिद्विवसेभानोर्यदार्द्रायांप्रवेशनम् ।
नृणांगृहेगृहेतर्हिभवेन्मंगलवर्द्धनम् ॥१८६॥

(७) "आर्द्रा प्रवेश में तिथ्यादि का फल"-(सूर्य जब आर्द्रा नक्षत्र पर आता है तब उस समय जो तिथि वारादि हों उनका फल भी संवत्सर के शुभाशुभ फल में उपयोगी होता है। (प्रतिपदा तिथि के दिन सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आवे तो घर घर में मंगलकार्य बढ़ते हैं॥१८६॥

भानोर्यदिद्वितीयायांभवेदार्द्राप्रवेशनम् ।
तर्हिस्यात्सर्वधान्यानांवस्त्रादीनांविवर्धनम् ॥१८७॥

द्वितीया तिथि में सूर्य आर्द्रा पर आवे तो सब धान्य तथा वस्त्रादि सस्ते होते हैं॥१८७॥

भास्करस्ययदार्द्रायांतृतीयांप्रवेशनम् ।
ईतिभीतिर्भवेत्तर्हितस्करादिविवर्धनम् ॥१८८॥

तृतीया में सूर्य आर्द्रा में आवे तो ईतिभीति हो और चौरभय बढ़े॥१८८॥

गणपतितिथ्यांस्मरहरधिष्णये। यदिरविवेशोध्रुवमशुभंस्यात्॥

चतुर्थी में सूर्य आर्द्रा में आवे तो निश्चय अशुभ होता है॥१८९॥

पंचम्यांरौद्रनक्षत्रंप्रयातियदिभानुमान् ।
सर्वेषांप्राणिनांतर्हिफलंस्यादुत्तमोत्तमम् ॥१९०॥

पञ्चमी का आर्द्रा प्रवेश हो तो सब प्राणियों को उत्तमोत्तम फल होता है॥१९०॥

षष्ठ्यामार्द्राप्रवेशश्चेज्जायतेपद्मिनीपतेः ।
तर्हि द्रविणसंपत्त्यानराणांप्रचुरं सुखम् ॥१९१॥

छठे का हो तो सम्पत्ति अधिक बढे, तथा मनुष्यों को प्रचुर सुख हों॥१९१॥

भास्करोभास्करतिथौयदार्द्रायांप्रवेशनम् ।
करोतितर्हिलोकानांसततं क्षेममुत्तमम् ॥१९२॥

सप्तमी को आर्द्रा प्रवेश हो तो लोक में उत्तम क्षेम रहे॥१९२॥

यदिस्यादष्टमीतिथ्यामार्द्रानक्षत्रगोरविः ।
सस्यानांवाससांमूल्यंस्वल्पवृष्टिर्नसंशयः ॥१९३॥

अष्टमी को हो तो अन्न वस्त्रादि का मूल्य बढ जाय और वर्षा कम हो॥१९३॥

सूर्यस्यशिवनक्षत्रप्रवेशेनवमीतिथौ ।
तर्हिस्यात्समताभीतरेवमाहुर्मनीषिणः ॥१९४॥

नवमी का हो तो भय में समानत हो॥१९४॥

सूर्यस्यरुद्रसंवेशोयदिस्याद्दशमीतिथौ ।
नानाविधानिकार्याणिमंगलानिदिनेदिने ॥१९५॥

दशमी का हो तो प्रतिदिन नाना प्रकार के मंगल कार्य हों॥११५॥

एकादश्यांतिथौसूर्योरौद्रभंयातिचेत्तदा ।
संकलंधनधान्यादिसुभिक्षंजायतेध्रुवम् ॥१९६॥

एकादशी को हो तो सम्पूर्ण धन धान्य निश्चय सस्ते

हों।।१९६।।

द्वादश्यांशिवनक्षत्रंप्रविष्टश्चेद्दिवाकरः ।
नानाविधंशुभंतर्हिजनः प्राप्नोतिनिश्चितम् ।।१९७।।

द्वादशी का हो तो मनुष्यों को नाना प्रकार के शुभफल मिलें।।१९७।।

दिवाकरस्यरौद्रक्षेप्रवेशेचत्रयोदशी ।
तिथिर्यदिस्यात्तत्तिथ्यांजायतेर्घजलंतदा ।।१९८।।

त्रयोदशी में हो तो तिथि की स्थिति के अनुसार समर्घं महर्घ तथा जल वृष्टि हो।।१९८।।

दिवाकरस्यरौद्रर्क्षेप्रवेशेचचतुर्दशी ।
समस्तधान्यवासांसिमहर्घाणिभवंतिहि।।१९९।।

चतुर्दशी का हो तो सम्पूर्ण धान्य और सब तरह के कपड़े महँगे हों।।१९९।।

पौर्णमास्यांदिनेशश्चेदार्द्रानक्षत्रगोभवेत् ।
प्रजानांतर्हिविविधाः संपूर्णाः स्युर्मनोरथाः ।।२००।।

पूर्णिमा तिथि में आर्द्रा प्रवेश हो तो प्रजा के सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हों।।२००।।

अमायांषड्विनीनाथरौद्रनक्षत्रगोयदि ।
भूमिपानांविनाशः स्यात्तस्कराणामुपद्रवः ।।२०१।।

और यदि अमावस में आर्द्रा पर सूर्य आवे तो राजाओं का नाश तथा चोरों का उपद्रव हो।।२०१।।

वारफलम्

दिनपतिवारेपशुपतिधिष्ण्ये।दिनपतिवेशेसतिपशुनाशः।।२०२।।

"वारफल" – रविवार के दिन सूर्य आर्द्रा पर आवें तो पशुओं का

नाश हो॥२०२॥

शशिधरवारेस्मरहरधिष्ण्ये ।
दिनकरवेशेसतिहिसुभिक्षम् ॥२०३॥

सोमवार को आवे तो सुभिक्ष हो॥२०३॥

भानोर्वेशः पृथ्वीसूनोर्वारेरौद्रेधिष्ण्येचेत्स्यात् ।
शस्त्राघातात्पृथ्वीशानां निःसंदेहंमृत्युस्तर्हि ॥२०४॥

मंगलवार को आवे तो राजाओं की शस्त्रघात से निश्चय मृत्यु हो॥२०४॥

बुधस्यवासरेरौद्रेधिष्ण्येभानुः प्रयाति चेत् ।
तर्हिब्राह्मणजातीनां कल्याणं भूरिवर्तते ॥२०५॥

बुधवार को आर्द्रा प्रवेश हो तो ब्राह्मण जाति का बहुत कल्याण हो॥२०५॥

सुरराजगुरोर्वारेद्युमणिर्यदि रौद्रगः ।
सर्वेषांतर्हिजंतूनांद्रव्यवृद्धचासुखंबहु ॥२०६॥

बृहस्पतिवार को हो तो सब जीवों को सुख मिलें तथा द्रव्य की वृद्धि हो॥२०६॥

दैत्यराजगुरोर्वारेयदिस्याद्रौद्रगोरविः ।
तर्हिशान्तिश्चपुष्टिश्चतुष्टिः प्रतिदिनंनृणाम् ॥२०७॥

शुक्रवार को हो तो मनुष्यों में प्रतिदिन शान्ति-पुष्टि से तुष्टि हो॥२०७॥

शनैश्चरस्यवारेचेद्रविराद्रांगतोयदि ।
कृशतातर्हिलोकानांनितांतंमंदबुद्धिता ॥२०८॥

और शनिवार को आर्द्रा प्रवेश हो तो लोक दुबले अधिक हों तथा बुद्धि भी कम हो॥२०८॥

नक्षत्रफलम्

रविरार्द्राप्रवेशेचेद्दात्रभंदिनभंभवेत् ।
अश्वादिपशुसंघस्यवृद्धिः स्यान्मंगलानि च ।।२०९।।

"नक्षत्रफल"—आर्द्रा प्रवेश के समय अश्विनी नक्षत्र हो तो घोड़े आदि पशु समूह में वृद्धि तथा मंगलवृद्धि हो।।२०९।।

अर्कस्यरौद्रसंवेशेभरणीचंद्रभंयदि ।
तर्हिस्याद्रोगबाहुल्यंशुभंनैवकदाचन ।।२१०।।

भरणी नक्षत्र हो तो रोगबाहुल्य हो और शुभ कुछ नहीं हो।।२१०।।

कृत्तिकायदिचांद्रर्क्षमीशधिष्ण्यंगतेरवौ ।
अग्न्यादिकभयंभूरितर्हिस्यादंबुवर्षणम् ।।२११।।

कृत्तिका हो तो आग का भय अधिक हो तथा जलवृष्टि हो।।२११।।

रोहिणींचद्रनक्षत्रेभानुरार्द्रागतोयदि ।
सर्वधान्यविनिष्पत्त्यासंतोषोखिलदेहिनाम् ।।२१२।।

रोहिणी हो तो सब धान्य उत्पन्न हों और सब प्राणियों को संतोष मिले।।२१२।।

यदिरौद्रंप्रविष्टोर्कोमृगांकेमृगगेसति ।
धान्यांबरघृतादीनांप्राबल्यंतर्हिजायते् ।।२१३।।

मृगशिर हो तो धान्य, वस्त्र और घी यह बहुत हों।।२१३।।

रौद्रनक्षत्रगेचंद्रे रौद्रभंयातिचेद्रविः ।
सकलाःप्राणिनस्तर्हि रौद्रकर्मप्रकुर्वते ।।२१४।।

आर्द्रा प्रवेश के दिन आर्द्रा हो तो सब प्राणी रौद्रकार्य—(धाड़े, डकैती, मार, काट आदि) करें।।२१४।।

अर्कस्यरौद्रसंवेशेयदिचांद्रपुनर्वसु ।
अभिवृद्धिः समस्तानांसस्यानांतर्हिनिश्चयात् ॥२१५॥

पुनर्वसु हो तो सब सस्यों की अवश्य अभिवृद्धि हो॥२१५॥

दिनर्क्षेपुष्यनक्षत्रेरौद्रेव्रजतिचेद्रविः ।
तदाजलप्लुताभूमिः सर्वधान्यसमन्विता ॥२१६॥

पुष्य नक्षत्र हो तो जल बहुत वर्षे और सब धान्योंसे पृथ्वी संयुक्त रहे॥२१६॥

सार्पभंदिभंचेत्स्यादर्कस्यार्द्राप्रवेशने ।
दारुणंकर्मलोकानांभवेत्सौख्यविनाशनम् ॥२१७॥

आश्लेषा हो तो लोग बड़े खोटे काम करें और सब सुखों का नाश हो॥२१७॥

रौद्रंविशतिचेद्भानुः पितृभेचन्द्रसंयुते ।
अल्पवृष्टिस्तदाज्ञेयाकंदमूलादिकाल्पता ॥२१८॥

मेघा हो तो वर्षा कम हो और कंद मूल फल भी कम हों॥२१८॥

भगभेसतिचन्द्रर्क्षेजायतेरौद्रगोरविः ।
तदाभूमिभृतांकीर्तिः प्रत्यहं भाग्यवर्धनम् ॥२१९॥

पूर्वाफाल्गुनी हो तो राजाओं की कीर्ति प्रतिदिन अच्छी बढ़े॥२१९॥

यदिरौद्रगआदित्येचन्द्रभेयमदैवते ।
तदासस्याभिवृद्धिः स्यात्पुत्रपौत्रयुतोजनः ॥२२०॥

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो अन्न की वृद्धि हो और लोग बेटे पोतों से युक्त हों॥२२०॥

हस्तनक्षत्रगेचन्द्रेरौद्रनक्षत्रगोयदि ।
सवितास्यात्तदासर्वेसस्यसौख्यसमन्विताः ।।२२१।।

हस्त हो तो सब लोक सब धान्यों से संयुक्त रहें।।२२१।।

सवितायदिरौद्रर्क्षेव्रजेच्चित्रागतेविधौ ।
तदाचित्राणिधान्यानिसर्वदैवशुभंभवेत् ।।२२२।।

चित्रा हो तो मोठ—मूंग—उड़द आदि अन्न उत्पन्न हों और सब प्रकार के शुभ हों।।२२२।।

भास्करोरौद्रगश्चेत्स्यान्मारुतेदिनभेसति ।
धनधान्यसमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिर्दिनेदिने ।।२२३।।

स्वाती हो तो धनधान्य की तथा धर्म कर्म की दिन दिन वृद्धि हो।।२२३।।

विशाखायदिचांद्रर्क्षे भानोरार्द्राप्रवेशने ।
तदानिखिलरोगाणांविनाशोजायतेध्रुवम् ।।२२४।।

विशाखा हो सब रोगों का निश्चय नाश हो।।२२४।।

शशांकसहितेमैत्रेशिवभंयातिचेद्रविः ।
सर्वलोकाश्चभूपाश्चसंतुष्टाः स्युस्तदाभृशम् ।।२२५।।

अनुराधा हो सब लोक तथा राजाओं में संतोष रहे।।२२५।।

इन्द्रभेचंद्रसंयुक्तेसवितारौद्रगोयदि ।
तदासकललोकानांजायतेप्रचुरंभयम् ।।२२६।।

ज्येष्ठा हो तो सब लोगों को बहुत भय हो।।२२६।।

चंद्राक्रांतेनिर्ऋतिभेयदार्द्रारविसंयुता ।।
भयंनानाविधंपुंसांकृशत्वंरोगवृद्धिदा ।।२२७।।

मूल नक्षत्र हो तो पुरुषों को कई प्रकार के भय हों और रोग वृद्धि दुबलापन हो।।२२७।।

आर्द्राचेद्रविणायुक्तातोयभेदिनभेसति ।
तर्हिसर्वेमहीपालाः परस्परविरोधिनः ॥२२८॥

पूर्वाषाढ हो तो सब राजाओं में परस्पर विरोध हो॥२२८॥

वैश्वभेचंद्रसंयुक्तेरौद्रभंयदिसूर्ययुक् ।
तदानराः स्वकर्माणिकुर्वंतेमंगलान्विताः ॥२२९॥

उत्तराषाढ हो तो मनुष्य अपने अपने काम करें तथा मंगल युक्त हों॥२२९॥

श्रवणेचंद्रसहितेरविणारौद्रभंयदि ।
सहितंस्यात्तदालोकाः पुत्रसौख्यसमन्विताः॥२३०॥

श्रवण नक्षत्र हो तो लोग पुत्रसौख्य से संयुक्त रहें॥२३०॥

सवितुः शिवनक्षत्रप्रवेशसमयेभवेत् ।
वासवंयदिचांद्रर्क्षंतदाबहुफलादिकम् ॥२३१॥

घनिष्ठा हो तो फल बहुत हों॥२३१॥

शशिनावारुणेयुक्तेरविणाशिवदैवतम् ।
यदिस्यात्सहितंतर्हिजलपूर्णावसुंधरा ॥२३२॥

शतभिशे हो तो पृथ्वी पर जल बहुत हो॥२३२॥

पूर्वाभाद्रपदाधिष्ण्येरजनीपतिसंयुते ।
यद्यर्कोरौद्रभंयातितदासर्वेसुखोदयाः ॥२३३॥

पूर्वाभाद्रपद हो तो सब सुखों का उदय हों॥२३३॥

चांन्द्रहिर्बुध्न्यनक्षत्रेरौद्रंचेदर्कवेशनम् ।
तदासर्वाणिकार्याणिसिद्धिंयान्तिनृणांसदा ॥२३४॥

उत्तराभाद्रपद हो तो मनुष्यों के सब काम सिद्ध हों॥२३४॥

शशिभृतिपौष्णेसतियदिरोद्रम् ।
प्रविशतिभानुर्नरपतिनिधनम् ॥२३५॥ (इति)॥

और आर्द्रा प्रवेश के समय रेवती नक्षत्र हो तो राजा की मृत्यु हों।।२३५।।

योगफलम्

प्रथमजयोगेत्रिनयनधिष्ण्ये ।
यदिरविवेशोबहुवसुसस्यम् ।।२३६।।

"योगफल"-विष्कम्भ योग में आर्द्रा प्रवेश हो तो अन्न बहुत हो।।२३६।।

प्रीतियोगेविद्यमानेसत्यर्कोयदिरौद्रगः ।
सर्वावसुमतीतर्हिसलिलेनपरिप्लुता ।।२३७।।

प्रीति योग में हो तो सम्पूर्ण पृथ्वी जल से व्याप्त हो।।२३७।।

आयुष्मत्संज्ञकेयोगेयदिभास्वाञ्छिवर्क्षगः ।
तर्हिसर्वेमहीपालाः सुचरित्रानिरामयाः ।।२३८।।

आयुष्मान् में हो तो सब राजा लोग रोग रहित स्वच्छ चरित्री हों।।२३८।।

सौभाग्यनामकेयोगेरौद्रगश्चेद्दिवामणिः ।
सौभाग्यारोग्यतावाप्तिस्तर्हिस्यात्सर्वदेहिनाम् ।।२३९।।

सौभाग्य योग में आर्द्रा प्रवेश हो तो सब देहधारियों को सौभाग्य तथा आरोग्य मिले।।२३९।।

सतिशोभनयोगेचेद्रौद्रगः पद्मिनीपतिः ।
शोभनंकर्मकुर्वन्तितर्हिसर्वेजनानृपाः ।।२४०।।

शोभन में हो तो सब लोग तथा राजा शुभ काम करें।।२४०।।

अतिगंडाख्ययोगेचेद्रादर्यातिदिवाकरः ।
परस्परंयुद्धंचतर्हिकुर्वन्तिभूमिपाः ॥२४१॥

अतिगण्ड में हो तो राजा लोक के परस्पर में युद्ध करें॥२४१॥

सुकर्मनामयोगकेयदीशभंरविर्व्रजेत् ।
तदासमस्तभूसुराः सुकर्मकर्तुमुद्यताः ॥२४२॥

सुकर्मा में हो तो सम्पूर्ण ब्राह्मण लोक अच्छे कामों के करने में उद्यत (तैयार) हों॥२४२॥

सतिधृतियोगेयदिदिवसेशः ।
प्रविशतिरौद्रंभवतिसुभिक्षम् ॥२४३॥

धृति में हो तो सुभिक्ष हो॥२४३॥

योगेशूलाभिधानेचेद्रौद्रंयातिदिवाकरः ।
शूलादिकैर्महारोगैः पीडात्यंतंतदानृणाम् ॥२४४॥

शूल में हो तो मनुष्यों में शूल पीड़ा (पाँशू का दर्द अथवा उदरशूल आदि) अधिक हों॥२४४॥

गण्डयोगेवर्तमानेरौद्रंयातिचभास्करः ।
तदा तुष्टानि कर्माणि कुर्वंतिनिखिलाजनाः ॥२४५॥

गण्ड में हो तो सब लोग प्रसन्नता के काम करें॥२४५॥

तरणिर्यदिरौद्रर्क्षंप्रविशेद्वृद्धियोगके ।
पुत्रपौत्राभिवृद्धिः स्यात्तर्हियज्ञादिकर्मच ॥२४६॥

वृद्धियोग में आर्द्रा प्रवेश हो तो पुत्रपौत्रादि की वृद्धि हो ओर यज्ञादि कर्म हों॥२४६॥

सतिध्रुवाख्येयोगेचेद्रौद्रगः स्यादहर्पतिः ।
जनाजनेशाः सर्वेपि नैव चंचलमानसाः ॥२४७॥

ध्रुव योग में हो राजा प्रजा दोनों उदासीन रहें।।२४७।।

व्याघातनाम्नि योगेचेद्रविणाक्रांतमीशभम् ।
तदाजनानां सर्वेषां दुर्भिक्षात्प्राणनाशनम् ।।२४८।।

व्याघात योग में हो दुर्भिक्ष अकाल से सब मनुष्यों का नाश हों।।२४८।।

रवेरार्द्राप्रवेशस्यसमयेयदिहर्षणः ।
सर्वधान्यादिसंवृद्धचाप्राणिनांहर्षसंभवः ।।२४९।।

हर्षण में हो तो सब अन्न सस्ते होने से प्राणियों के हर्ष बढें।।२४९।।

वज्राभिदानयोगेचेत्तपनोरौद्रगोभवेत् ।
तर्हिभूपालकलहः क्वचित्स्याज्जलवर्षणम् ।।२५०।।

वज्र में हो तो राजाओं में कलह हों और कहीं कहीं वर्षा हों।।२५०।।

मार्तंडः सिद्धियोगेचेत्कुर्याद्रौद्रप्रवेशनम् ।
धनधान्यांबरादीनांवृद्धिः स्यात्तर्हिरोगदः ।।२५१।।

सिद्धि योग में हो तो धन धान्य वस्त्रादिकों की वृद्धि हों और रोग हो।।२५१।।

व्यतिपाताभिधेयोगेरविरार्द्रागतोयदि ।
तर्हिराज्ञोजनानांचनिश्चयेनधनक्षयः ।।२५२।।

व्यतिपात में हो तो राजा प्रजा दोनों का धननाश हो।।२५२।।

वरीयान्वर्तमानश्चेद्रवेरार्द्राप्रवेशने ।
अल्पवृष्टचखिलंधान्यंकंदमूलादिदुर्लभम् ।।२५३।।

वरीयान् में हो तो कम वर्षा होने से कंद मूल फल धान्यादि दुर्लभ हों।।२५३।।

परिघेसतियोगेचद्युमणिः शिवभंव्रजेत् ।
तदाधर्मार्थयोर्नाशोराजानः परिपीडिताः ।।२५४।।

परिघ में हो तो धर्म अर्थ इन दोनों का नाश हो और राजा पीड़ित रहे।।२५४।।

शिवयोगेशिवर्क्षेचद्व्रजेद्दिवसनायकः ।
सदाचारताः सर्वेसदामांगल्यभागिनः ।।२५५।।

शिव योग में हो तो सब लोग सदाचारी रहें और मंगल भोगी हों।।२५५।।

सिद्धियोगेसहस्रांशौशिवनक्षत्रयायिनि ।
ओदनानांहिकार्याणांसिद्धिसम्पादकंबहु ।।२५६।।

सिद्धि योग में हो तो बहुत से ओदन कार्य भले प्रकार सिद्ध हो।।२५६।।

अंशुमान्रौद्रनक्षत्रंसाध्ययोगेप्रयातिचेत् ।
असाध्यमपिसाध्यंस्यात्कार्यंतर्हिवपुष्मताम् ।।२५७।।

साध्य में हो तो असाध्य कार्य भी सिद्ध हो जायँ।।२५७।।

शुभयोगेदिनेशश्चेन्नक्षत्रंधूर्जटेर्व्रजेत् ।
तर्हिकीलालवृष्टिः स्यात्सर्वेसंतुष्टमानसाः ।।२५८।।

शुभ में हो तो अच्छी वर्षा हो और उससे सब संतुष्ट हों।।२५८।।

शुक्लयोगेदिनकरेकृतरौद्रागमेसति ।
जलवर्षणयोगेनधान्याद्युपचयोभवेत् ।।२५९।।

शुक्ल योग में हो तो जल वर्षने से खेती अच्छी उत्पन्न हो।।२५९।।

ब्रह्माभिधानयोगेचेन्नलिनीशः शिवर्क्षगः ।
जलंचसकलंधान्यंमध्यमंतर्हिजायते ।।२६०।।

ब्रह्म योग में हो तो जल तथा धान्य सब मध्यम हों।।२६०।।

ऐंद्राभिधानयोगेचेद्विरोचनसमन्वितः ।
त्रिलोचनस्यनक्षत्रंतदानींजलवर्षणम् ।।२६१।।

ऐंद्र में हो तो जल वर्षे।।२६१।।

सतिवैधृतियोगेचेत्तरणिः शिवधिष्ण्यगः ।।
सर्वेषामपिजन्तूनांतदाव्याधिभयंभवेत् ।।२६२।।

और वैधृति योग में आर्द्रा प्रवेश हो तो सब जीवों को व्याधि भय हो।।२६२।।

समयफलम्

सूर्योदयेरोगकरीस्मृतार्द्राघटीद्वयेविग्रहरोगयोगः ।
मध्याह्नकालेकृषिनाशनायधान्यंमहर्घंचतृणस्य नाशः।।२६३।।

'समय फल'–सूर्योदय के समय आर्द्रा प्रवेश होने से रोग हों, दो घड़ी दिन चढे होने से विग्रह हो, दुपहरी में होने से खेती का नाश हो, धान्य महँगा हो और घास का नाश हो।।२६३।।

संध्यास्थितार्द्राकुरुतेसुभिक्षंरात्रौस्थितासर्वसुखायलोके ।
भोगप्रदत्तेखलुमध्यरात्रेः पूर्वसुखंदुःखमतोऽपरत्र ।।२६४।।

सन्धि में हो तो सुभिक्ष हो, रात्रि में हो तो सब लोगों को सुख हो, मध्यरात्रि (आधी रात) में हो तो भोग प्रदान करें और आधी से पूर्व भाग में सुख तथा पर भाग में हो तो दुःख हो।।२६४।।

आर्द्राप्रवेशे लग्नम्

रौद्रप्रवेशेतरणिर्विधुश्चेत्त्रिकोणसंस्थोथचतुष्टयस्थः ।
जलर्क्षगोवाशुभवीक्षितोवाधान्यंप्रभूतंनिखिलंतदानीम्

"आर्द्रा प्रवेश का लग्ननिरीक्षण" यदि आर्द्रा प्रवेश की लग्नकुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा नौवे पाँचवें हों अथवा पहले—चौथे—सातवें—दशवें स्थान में हो—या जल राशि में हों और शुभ ग्रह उनको देखते हों तो सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न हों॥२६५॥

(८) जगल्लग्नविचारः

चैत्रमासेपुनः प्राप्तेलोकानांहितहेतवे ।
मेषसंक्रांतिवेलायांलग्नंशोध्यंशुभाशुभम् ॥२६६॥

(८) "जगल्लग्नविचार"—जब नवीन संवत्सर आवे तब उसमें मेष संक्रान्ति के समय का लग्न स्थापन करके संसार के हित के निमित्त उसका शुभाशुभ विचार करे॥२६६॥

यदाशुभग्रहैर्दृष्टंलग्नंस्यात्तुतदाशुभम् ।
धनधान्यादिसंपूर्णसर्ववर्षंशुभावहम् ॥२६७॥

यदि उस लग्न (जगल्लग्न)को शुभ ग्रह देखते हों तो शुभ होता है। और उस वर्ष में धन धान्यादि सम्पूर्ण वस्तु अच्छी उत्पन्न होती है॥२६७॥

भावाद्वादशतेमासाः सौम्याः क्रूराग्रहाः पुनः ।
तेषुमासेषुदेवेशिफलंज्ञेयंशुभाशुभम् ॥२६८॥

जगल्लग्नमें जो तनु आदि बारह भाव होते हैं उन्हीं बारहों भावों को चैत्रादि बारह मास मानकर सौम्य और क्रूर ग्रहों की स्थिति के अनुसार फल देखकर उन महीनों का शुभाशुभ जाने॥२६८॥

मेषप्रवेशलग्नेवायदिस्याद्वर्षजन्मनि ।
सप्तमस्थोयदापापोधान्यजातंविनाशयेत् ॥२६९॥

मेष प्रवेश लग्न (वर्ष जन्मलग्न—अथवा जन्मलग्न) में सातवें पापग्रह हों तो—खड़ी खेती का नाश करते हैं॥२६९॥

धनेव्ययेचसौम्यश्चकेन्द्रवामेषसंक्रमे ।
स्वर्क्षेशुभेसुहृद्दृष्टः सुभिक्षंव्यत्ययोऽन्यथा ॥२७०॥

यदि उसमें दूसरे बारहवें अथवा केन्द्र में सौम्य ग्रह हों और स्वगृही हों तथा मित्र ग्रहों की उन पर दृष्टि हो तो सुभिक्ष होता है। अन्यथा दुर्भिक्ष होता है॥२७०॥ इति।

वर्षलग्नविचारमाह

चैत्रशुक्लेपुनः प्राप्तेलोकानांहितहेतवे ।
प्रतिपल्लग्नवेलायांलग्नेशोध्यंशुभाशुभम् ॥२७१॥

" अब संवत्सर के जन्मलग्न का फल कहते हैं।" जब फिर चैत्र शुक्ल से नवीन वर्ष आरंभ हो तब संसार की शुभकामना के निमित्त उस दिन जिस समय प्रतिपदा लगे उस समय का लग्न लगाकर उसमें शुभाशुभ शोधना चाहिये। अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा प्रारंभ होने के समय अमावस जितनी घड़ी हो उसी को इष्ट मानके उस पर लग्न लगा देना चाहिय॥२७१॥

मेषलग्नेतुपुर्वस्यांदुर्भिक्षंराजविग्रहः ।
दक्षिणस्यांसुभिक्षंस्याद्बह्वधान्यरसाचभूः ॥२७२॥

यदि उस समय मेष लग्न हो तो उस वर्ष में पूर्व में राजविग्रह तथा दुर्भिक्ष हो, दक्षिण में बहुत धान्य और सुभिक्ष हो॥२७२॥

धान्यानांविक्रयेलाभः पूर्णमेघमहोदयः ।
घृततैलादिवस्तूनांपण्यानांचमहर्घता ॥२७३॥

धान्य बेचने से लाभ हो, मेघ बहुत वर्षे, घीतैलादि महंगे हों।।२७३।।

उत्तरस्यांसुभिक्षंस्याद्राज्ञामुद्वेगकारणम् ।
मध्यदेशेमहावृष्टिर्निष्पत्तिर्धान्यसन्ततेः ।।२७४।।

उत्तर में सुभिक्ष हो, राजाओं में उद्वेग हो, मध्य देश में महावर्षा और धान्य उपजे।।२७४।।

वृषेपिपश्चिमेकालः पूर्वस्यांराजविग्रहः ।
उदग्धान्यार्द्धनिष्पत्तिर्दक्षिणस्यांविकालतः ।।२७५।।

वृषलग्न हो तो पश्चिम में काल, पूर्व में राजविग्रह, उत्तर में आधी उपज और दक्षिण में काल पड़े।।२७५।।

मिथुनेबहुलंयुद्धंपूर्वस्यांधान्यनष्टता ।
उदग्दक्षिणयोर्मेघाबहवोधान्यसंग्रहः ।।२७६।।

मिथुन लग्न हो तो युद्ध बहुत हो पूर्व में खेती बिगड़े, उत्तर दक्षिण में वर्षा और धान्य बहुत हो।।२७६।।

पश्चिमायांस्वल्पमेघाश्छत्रभंगश्चविग्रहः ।
मध्यदेशेर्द्धनिष्पत्तिश्चतुष्पदसरोगता ।।२७७।।

पश्चिम में कम वर्षा तथा छत्रभंग हो, मध्यदेश में आधी उत्पत्ति और पशुओं में रोग हो।।२७७।।

कर्केसुखंतुपूर्वस्यामुत्तरस्यांतुविग्रहः ।
स्याच्चासनबलंयावद्दुर्भिक्षंपश्चिमेदिशि ।।२७८।।

कर्क में पूर्व में सुख, उत्तर में दुःख तथा आसन बल और पश्चिम में दुर्भिक्ष हो।।२७८।।

सिंहलग्नेदक्षिणस्यांदंष्ट्राभयमुदीर्यते ।
धान्येसमर्घतामासषट्कंयावद्धनंमहत् ।।२७९।।

सिंह में दक्षिण में दाढ़भय, धान्य में समर्घता और छः मास तक महाधन की प्राप्ति हो।।२७९।।

पश्चिमायां धातुवस्तुफलादीनांमहर्घता ।
उत्तरस्यांमहावृष्टिः सुखंराज्येप्रजासुच ।।२८०।।

पश्चिम में धातु की वस्तु और फल महँगे हों, उत्तर में महावृष्टि और राजा प्रजा में सुख हो।।२८०।।

पूर्वस्यामर्द्धनिष्पत्तिः श्रेयोग्रेमासपञ्चकात् ।
मध्यदेशेराजयुद्धंमासपञ्चकमुद्धृतम् ।।२८१।।

पूर्व में आधी उपज हो, आगे पांच मास में कल्याण हो, मध्य देश में ५ मास राजयुद्ध रहे।।२८१।।

कन्यायांसुस्थिराप्राच्यांघृतेमहर्घतामता ।
मंजिष्ठादिसमर्घत्वंयावन्मासत्रयंभवेत् ।।२८२।।

कन्या में पूर्व में स्थिरता, घी की महँगाई और ३ मास मंजीठ आदि सस्ते हों।।२८२।।

मारिर्दक्षिणदेशेस्यात्तथा वंगेप्युपद्रवः ।
लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहोन्नसमर्घता ।।२८३।।

दक्षिण में मरी पड़े, बंगाल में उपद्रव हो। पश्चिम में लोक विग्रह और अन्न महँगा हो।।२८३।।

चतुष्पदसुखं प्राच्यामुदीच्यां राजंविग्रहः ।
मध्यदेशेप्रजाभङ्गः समर्घत्वंघृतेपुनः ।।२८४।।

फिर चौपायों में सुख, पूर्वोत्तर में राजविग्रह, मध्य देश में प्रजाभंग और घी की सौंधाई हो।।२८४।।

तुलालग्नेमध्यदेशेछत्रभंगश्चविग्रहः ।
धान्यस्यविक्रयः प्राच्यांछत्रभंगमुपद्रवः ।।२८५।।

तुला में मध्यदेश में विग्रह तथा छत्रभंग हो। पूर्व में भी छत्रभंग और उपद्रव हो।।२८५।।

दुर्भिक्षं बहुलो वायुः स्वल्पमेघप्रवर्षणम् ।
पश्चिमायांमहायुद्धं दंष्ट्राभयमहर्घता ।।२८६।।

दुर्भिक्ष हो वायु बहुत चले वर्षा कम हो पश्चिम में महायुद्ध हो और दाढ़भय तथा महँगाई हो।।२८६।।

दक्षिणस्यां सुखं लोके दुर्भिक्षं चोत्तरापथे ।
मासद्वयंपश्चिमायां किंचिंदुत्पातसंभवः ।।२८७।।

दक्षिण में सुख, उत्तर में दुर्भिक्ष और पश्चिम में दो मास कुछ उत्पात हो।।२८७।।

वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकम् ।
उदीच्यामर्द्धनिष्पत्तिः समर्घा धातवस्तदा ।।२८८।।

वृश्चिक में पश्चिम में नौ मास दुर्भिक्ष, उत्तर में आधी उत्पत्ति और धातुओं की समर्घता हो।।२८८।।

पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखं मासत्रयं जने ।
पश्चात्सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते ।।२८९।।

पूर्व में राजाओं में विग्रह, मनुष्यों में ३ मास दुःख पीछे सुख और मध्यदेश में धान्यनाश हो।।२८९।।

दक्षिणस्यां देशभंगो भावीवर्षे प्रजायते ।
धातूनां विक्रयः कार्यः परतो मासपंचकात् ।।२९०।।

दक्षिण में भावी वर्ष में देशभंग हो और पांच मास पीछे धातुविक्रय में लाभ हो।।२९०।।

धनुर्लग्ने तूत्तरस्यांपूर्वस्यां च सुखं नृणाम ।
दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्यदेशे सरोगता ।।२९१।।

धन लग्न में उत्तर, पूर्व में सुख हो, मध्यदेश में प्रबल वर्षा से दुर्भिक्ष तथा रोग हो।।२९१।।

पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकात् ।
दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित्पीडा चतुष्पदे ।।२९२।।

पश्चिम में पांच मास में घी धान्य सस्ते हों, दक्षिण में सुख रहे, किन्तु चौपायों को कुछ पीड़ा हो।।२९२।।

मकरे च महोत्पातमुत्तरस्यां नृपक्षयः ।
वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम् ।।२९३।।

मकर में उत्तर में बड़े उत्पात तथा नृपक्षय हो और १ वर्ष तक अच्छी उत्पत्ति तथा सुख हो।।२९२।।

मध्यदेशेर्द्धनिष्पत्तिः किंचिद्धान्यमहर्घता ।
अकालेमेघवृष्टिः स्याल्लाभोधान्यस्यविक्रयात् ।।२९४।।

मध्य देश में आधी उत्पत्ति हो, कुछ धान्य महँगा हो, अकाल में मेघ वर्षे और धान्यविक्री में लाभ हो।।२९४।।

कुंभे सुखानि पूर्वस्यामुदग्दुर्भिक्षसंभवः ।
हाहाकारः पश्चिमायां भवेद्धान्यमहर्घता ।।२९५।।

कुंभ में पूर्व में सुख, उत्तर में दुर्भिक्ष और पश्चिम में धान्य की महँगाई से हाहाकार हो।।२९५।।

दक्षिणेविग्रहश्चैव मध्यदेशे महासुखम् ।
मीनलग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोन्नसंग्रहः ।।२९६।।

दक्षिण में विग्रह और मध्य देश में सुख हो। और मीन लग्न में दक्षिण में सुख हो।।२९६।।

मध्यदेशे धान्यनाशश्छत्रभंगः क्वचिद्भवेत् ।
एवं द्वादशधा लग्नं ज्ञेयं वत्सरजन्मनि ।।२९७।।

इति वर्षजन्मलग्नम्

मध्य देश की खेती नष्ट हों और कहीं छत्रभंग भी हो। इस प्रकार वारह लग्नों से वर्ष का जन्म लग्न देखना चाहिए।।२९७।। (इति)

(९) अथ रोहिणीवासज्ञानम्

मेषार्कदिननक्षत्रादब्धौयुग्मंतटेद्वयम् ।
गिरावेकंद्वयंसंधौसाभिजिद्गणनाभवेत् ।।२९८।।

(९) "रोहिणी वास ज्ञान"-समुद्र चक्र में मेष संक्रांति के दिन जो नक्षत्र हो उससे आरंभ करके दो-दो नक्षत्र समुद्रों में, दो दो तटों में, एक एक पर्वतों पर और दो दो संधियों में इस प्रकार अभिजित् सहित अट्ठाईसों नक्षत्र स्थापन करे।।२९८।।

यदापयोनिधिस्थलेगतोविरंचिभंतदा ।
अतीववर्षणंभवेत्समस्तधान्यवर्द्धनम् ।।२९९।।

उनमें जिस जगह रोहिणी नत्रक्ष पड़ा हो वहीं रोहिणी निवास जानना। यदि 'समुद्र' में रोहिणी हो तो अत्यंत वर्षा होती है और सब धान्य बढ़ते हैं।।२९९।।

यदिविधिधिष्ण्यपतिततटस्थम् । शुभजलवृष्टिर्धनकणवृद्धिः ।।

यदि तट में रोहिणी हो तो शुभ वर्षा हो और अन्न धन की वृद्धि हों।।३००।।

रोहिणीनामनक्षत्रपर्वतस्थंयदाभवेत् ।।
वृष्टिहानिस्तदाज्ञेयासर्वसस्यविनाशनम् ।।३०१।।

यदि पर्वत पर रोहिणी हो तो वर्षा नहीं हो और सब खेतियां सूख जायँ।।२०१।।

संधिसंस्थंयदाब्राह्मभंजायते । खंडवृष्टिस्तदासर्वधान्याप्तयः ।।

यदि सन्धि में रोहिणी हो तो खण्ड वृष्टि हो किन्तु खेती सूखे नहीं।।३०२।।

("समय निवास"-रोहिणी निवास समुद्र में हो तो समय निवास माली के घर, सन्धि में हो तो वैश्य के घर, पर्वत में हो तो कुम्हार के घर और तट में हो तो धोबी के घर जानना। "समय वाहन" चैत्र शुक्ल, प्रतिपदा को सूर्यादि वारों में जो वार हो उनमें सूर्य में अश्व, चं० मृग०, मं० वृषभ, बु० सिंचाण, बृ० चातक, शु० दादुर और श० हो तो भैंसा वाहन होता है।)

अथ रोहिणीचक्रम्

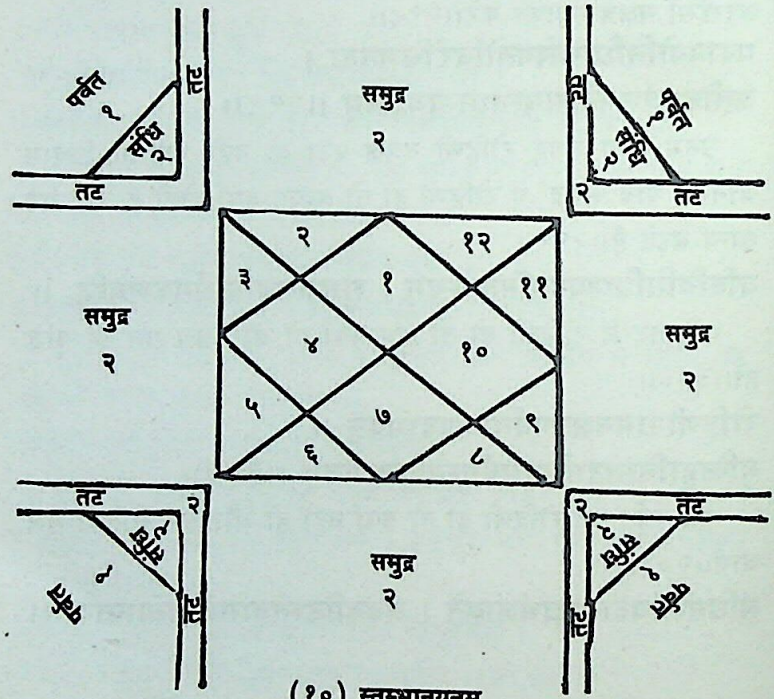

(१०) स्तम्भानयनम्

(१०) स्तम्भानयनम्

चैत्रेसितप्रतिपदिरेवत्यांबहुलजलम् ।
वैशाखशुक्लप्रतिपद्भरण्यांतृणसंभवः ॥३०३॥

(१०) "स्तम्भ ज्ञान"-(संवत् में चार स्तंभ देखे जाते हैं जिस वस्तु का स्तंभ हो उसी वस्तु के आधिक्य से वह संवत् व्यतीत होता है। जितने स्तंभ अधिक हों उतना ही अच्छा, जितने कम हों उतना ही मध्यम और कुछ भी स्तंभ न हो तो संवत् खराब होता है।) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र हो तो 'जल का स्तंभ' होता है। उस संवत् में जल अधिक वर्षता है। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी हो तो 'तृण का स्तंभ " होता है उससे घास अधिक होता है॥३०३॥

ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदिमृगेवातः शुभोभवेत् ।
आषाढशुक्लप्रतिपद्यादित्योधान्यसंभवः ॥३०४॥

ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर हो तो 'वायु का स्तंभ' होता है। उस वर्ष में वायु अधिक चलता है। और आषाढ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु हो तो 'अन्न का स्तंभ' होता है। उस वर्ष में अन्न बहुत उत्पन्न होता है। (यदि जिस वर्ष में वह चारों स्तंभ हों तो वह वर्ष सबके लिये आनंददायक हो सकता है। और चारों ही न हों तो वह वर्ष दुःखदाई हो सकता है॥३०४॥ (इति)

(११) अगस्त्योदयास्तानयनम् । तत्फलं च ।

पलभाष्टगुणिताष्टसप्ततितमेहीनंकृत्वाशेषेत्रिंशता भक्तेयल्लब्धंसराशिः शेषमंशकलातुल्ये अगस्त्यास्तः । पुनः पलभाष्टगुणिताष्टनवतिमितेंकेयुक्तंकृत्वात्रिंशताभक्तंयल्लब्धंसराशिः यच्छेषंतदंशकलामिते अगस्त्योदयः ॥३०५॥

("समय मुहूर्त।"-बारहों महीनों की संक्रान्तियों के मुहूर्त जोड़कर इकट्ठे लिखे वही समय के मुहूर्त होते हैं। (१) बारह महीनों की सब तिथियां जोड़ कर टूटी हुई तिथि घटाने से "समय दिन होते हैं" किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को रविवार हो वह "दशमी रवि" कहाते हैं, जिस वर्ष में ऐसे दशमी रविवार अधिक हों वे शुभ समझे जाते हैं। ऐसे दशमी रविवारों की कुल सब घड़ी जितनी अधिक हों वह शुभ हैं।")

(११) "अगस्त्य का उदयास्त लाने की विधि"-पलभा को ८ से गुण कर ७८ अठहत्तर में घटावे जो शेष रहे उसमें ३० का भाग दे जो लब्ध हो वह सूर्य राशि और जो शेष हो वह अंश कला जानना, सूर्य के उन राशि अंश कला के तुल्य अगस्त्य अस्त होता है यथा-पलभा ५।५८ को ८ से गुणे ४७।४४ हुए। इनको ७८ में घटाये ३०।१६ शेष रहे। इनमें ३० का भाग दिया तो १।०।१६ ; आये अतः वृषके० अंश १६ कला पर अगस्त्यास्त जानना। और उसी अष्ट गुणित पलभा को ९८ अठानवें में जोड़कर ३० का भाग देने से जो लब्धि हो वह राशि और जो शेष हो वह अंश कला होते हैं। सूर्य के उन राशि अंश कला के तुल्य में अगस्त्य का उदय होता है। यथा-अष्टगुणित पलभा ४७।४४ को ९८ में जोड़ने से १४५।४४ हुए। इनमें ३० के भाग से ४ लब्धि हुई यह राशि और २५।४४ शेष रहे यह अंश कला। सूर्य के इन राशि अंश काल के प्रमित अगस्त्य का उदय होता है। (सूर्य के उक्तांश और इष्टांशों में जो अंतर हो उसमें सूर्य गति का भाग देने से उदयास्त के, दिन घटी पल लब्ध होते हैं। यथा-अस्त में सूर्य के इष्टांश १।०।१।२७ प्रोक्तांश १।०।१६ अंतरघटी १४।३३ रवि गति ५७।४० का भाग देने से लब्ध ०।१५।८ यह "राजपूताना पंचांग" में सं० १९७४ ज्येष्ठ, कृष्ण ८ सोमवार को

१५ घड़ी ८ पल गये पीछे अगस्त्यास्त हुआ। और इसी प्रकार द्वितीय भाद्रपद कृष्णैकादशी बुध को ८ घडी १९ पल पर अगस्त्य का उदय हुआ।)।।३०५।।

रात्रावुदयनंश्रेष्ठंनेष्टंश्चास्तंगमोमुनेः ।
दिवसेस्तंगमः श्रेष्ठोनेष्टश्चाभ्युदयस्तदा ।।३०६।।

"अगस्त्योदयास्त फल"-रात्रि में अगस्त्यमुनि का उदय श्रेष्ठ और अस्त नेष्ट होता है। एवं-दिन में अस्त श्रेष्ठ और उदय नेष्ट होता है।।३०६।।

यद्युदेतिदिनेप्राप्तः पीताब्धिर्मुनिपुंगवः ।
दुर्भिक्षंरौरवंघोरंराष्ट्रभंगंतदादिशेत् ।।३०७।।

यदि दिन में अगस्त्य उदय हो तो घोर दुर्भिक्ष तथा राज्यभंग हो।।३०७।।

रवौवापूर्वफाल्गुन्यांप्राप्तेचैवाष्टमेऽहनि ।
अगस्तेरुदयोलोकेनशुभायक्वचिन्मते ।।३०८।।

यदि पूर्वाफाल्गुनी पर सूर्य आने से आठवें दिन उदय हो तो भी अच्छा नहीं।।३०८।।

कृत्तिकायांरवौजातेसप्तमेवाष्टमेहनि ।
ऋषेरस्तंगतिः श्रेष्ठादिवसेयदिजायते ।।३०९।।

यदि कृत्तिका पर सूर्य आने से सातवें आठवें दिन अगस्त्य ऋषि का दिन में अस्त हों तो श्रेष्ठ होता है।।३०९।।

यद्यगस्तेरुदयनेवर्षाहर्षायजायते ।
सर्वधान्यस्यनिष्पत्तिर्नचेद्भिक्षापिदुर्लभा ।।३१०।।

यदि अगस्त्य के उदय होने पर वर्षा हो तो हर्ष उत्पन्न करती है। और सब प्रकार की खेतियां भी उत्पन्न होती हैं। और वर्षा न हो तो

भिक्षा भी दुर्लभ हो जाती है।।३१०।। (इति)

(१२) अथ गुरूदयमानेन वर्षज्ञानम्

स्यादूर्जादिषुमासेषुवह्निभादिद्वयंद्वयम् ।उपांत्यपंचमांत्येषु-नक्षत्राणांत्रयंत्रयम् ।।अस्मिन्नभ्युदितोजीवस्तन्नक्षत्राख्यवत्सरः

(१२)"गुरूदयमान का वर्ष"-जिस समय गुरु उदय हो उस समय वह जिस नक्षत्र पर हो और उस नक्षत्र का जो महीना हो वही महीना गुरुदय मान से वर्ष कहाता है। यथा-कृत्तिका-रोहिणी पर गुरु हो तो 'कार्तिक संज्ञक वर्ष होता है। मृ० आ० पर हो तो मार्गशीर्ष पु० पु० से पौष। आश्लेषा मघा से माघ। पू० उ० ह० से फाल्गुन। चि० स्वाती से चैत्र। वि० अनु० से वैशाख ज्ये० मू० से ज्येष्ठ। पू० उ० से आषाढ। श्र० ध० से श्रावण। श० पू० उ० से भाद्रपद। और रे० अ० भ० से आश्विन संज्ञक वर्ष होता है।।३११।।

गुरूदयमानीयवर्षफलम्

सत्यात्पीडाकार्त्तिकेवर्षेवह्निगावोपजीविनाम् ।
शस्त्राग्नेश्चभयंवृद्धिः पुष्पकौसुंभजीविनाम् ।।३१२।।

"इन वर्षों का फल"-इस प्रकार से आया हुआ कार्तिक वर्ष हो तो सुनार-भड़भूजे और ग्वालों को शस्त्र तथा अग्नि के घातादि की पीड़ा हो और पीले तथा लाल पुष्प बेचनेवालों की वृद्धि हो।।३१२।।

मार्गवर्षेत्वल्पवृष्टिः सस्यहानिरनेकधा ।
राजानोयुद्धनिरताअन्योन्यवधकांक्षिणः ।।३१३।।

मार्गशीर्ष वर्ष हो तो वर्षा कम हो-खेती नष्ट हों और परस्पर में मार डालने की इच्छा करके राजा लोक युद्ध में फँसें।।३१३।।

पौषेब्देसुखिनः सर्वेगुरुपूजारताजनाः ।
क्षेत्रंसुभिक्षमारोग्यंवृष्टिः कृषकसम्मता ।।३१४।।

पौष नामक वर्ष हो तो सब लोग सुखी रहें, बड़ों की तथा गुरु की पूजा में रत रहें। खेती अच्छी होने से सुभिक्ष और आरोग्य हो तथा कृषकों की इच्छानुसार वर्षा हो।।३१४।।

माघेसंपत्करोब्दः स्यात् सर्वभूतहितोदयः ।
सम्यग् वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षं च प्रजायते ।।३१५।।

माघ वर्ष हो तो सब प्राणियों के हित का उदय हो और वर्षा भले प्रकार से वर्षे।।३१५।।

फाल्गुनाब्दे चौरभीतिः स्त्रीणां दुर्भगता भृशम् ।
क्वचिद्वृष्टिः क्वचित्सस्यं क्वचिद्भीरीतयः क्वचित्

फाल्गुन वर्ष हो तो चौरभय, स्त्री दुर्भग, कहीं वर्षा, कहीं अन्न और कहीं ईति, कहीं भय हो।।३१६।।

चैत्राब्देभूभुजः स्वच्छाः स्त्रीषुचाल्पप्रजाभवेत् ।
अल्पवृष्टिः स्वल्पधान्यंप्रजानांव्याधितोभयम् ।।३१७।।

चैत्र में राजा स्वच्छ, स्त्री स्वल्पप्रजा, वर्षा कम, खेती न्यून और प्रजा में व्याधि हो।।३१७।।

वैशाखेब्देतुराजानोधर्ममार्गरताः क्षितौ ।
क्षेमंसुभिक्षमारोग्यंद्विजाश्चाध्वरतत्पराः ।।३१८।।

वैशाख वर्ष में राजा लोग धर्ममार्ग में चलें, पृथ्वी पर क्षेम, आरोग्यता और सुभिक्ष हो तथा ब्राह्मण लोग यज्ञादि में तत्पर रहें।।३१८।।

ज्येष्ठाब्देधर्ममार्गस्थाः पीड्यन्तेसत्क्रियापराः ।
नचवर्षतिवैदेवोभवेत्सस्यविनाशनम् ।।३१९।।

ज्येष्ठ वर्ष में अच्छे काम करनेवाले तथा धर्मात्मा लोग पीड़ित रहें। वर्षा नहीं वर्षे और खेतियां सूख जायँ।।३१९।।

आषाढाब्देतुराजानः सर्वदाकलहोत्सुकाः ।
क्वचिदीतिः क्वचद्भीतिः क्वचिद्वृद्धिर्जलंक्वचित् ।।३२०।।

आषाढ में राजा लोग सदैव कलह करने में इच्छित रहें। कहीं ईति, कहीं भीति, कहीं वृद्धि और कहीं वर्षा हो।।३२०।।

श्रावणाब्देधराभातित्रिदशस्पर्द्धिमानवैः ।
धरापुष्पफलैर्युक्तापरिपूर्णाध्वरादिभिः ।।३२१।।

श्रावण वर्ष में पृथ्वी ऐसी शोभित हो कि जिससे इन्द्रपुरी भी ईर्षा करे। पृथ्वी पर कई प्रकार के फल पुष्प बहुत उत्पन्न हों और यज्ञादि से परिपूर्ण रहे।।३२१।।

अब्देभाद्रपदेवृष्टिः क्षेमारोग्यंक्वचित्क्वचित् ।
सर्वसस्यसमृद्धिः स्यान्नाशमेत्यपरंफलम् ।।३२२।।

भाद्रपद वर्ष में कहीं २ वर्षा तथा क्षेम आरोग्य हों। और धान्य वृद्धि तथा फलनाश हो।।३२२।।

अब्देत्वाश्वयुजेत्यर्थंसुखिनः सर्वजन्तवः ।
मध्यमंपूर्वसस्यंस्यात्परिपूर्णंविपच्यते ।।३२३।।

और आश्विन संज्ञक वर्ष हो तो सब प्राणी सुखी रहें। प्रथम धान्य (जौ गेहूँ) कम हों और सब प्रकार से परिपूर्णता हो।।३२३।।

(१३) अथ विंशोपकानयनम्

शाकस्त्रिगुण्योनगभाजितश्चशेषद्विनिघ्नंशरसंयुतं च ।
लब्धंचशाकंचपुनः प्रकल्प्य पूर्वोक्तवत्स्युः खलुविश्वकाख्याः ।।
वर्षाचधान्यंतृणशीततेजो वायुश्चवृद्धिः क्षयविग्रहौच ।।३२४।।

(१३)"विंशोपका"-(अर्थात् सम्वत् में वर्षा आदि कितने विश्वा होगें यह जानने की विधि) शाके को तीन से गुणकर सात का भाग देने से जो शेष रहे उसे दुगुना करके पांच युक्त करे तो वर्षा के विश्वा होते

हैं। आगे पूर्वोक्त लब्धि को शक मानकर फिर उसी प्रकार करे तो धान्य, तृण, शीत, तेज, वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह इनके विश्वा आ जाते हैं।।३२४।।

शाकंचवेदगुणितंसप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषंद्विघ्नंत्रिभिर्युक्तंप्रोक्तंविश्वाख्यसंज्ञकम् ।।३२५।।
क्षुधातृषातथा निद्राचालस्यंचोद्यमस्तथा ।
शान्तिः क्रोधस्तथादंभोलोभोमैथुनमेवच ।।३२६।।
ततस्तुरसनिष्पत्तिः फलनिष्पत्तिरेवच ।
उत्साहः सर्वलोकानांज्ञातव्यंलिखितंबुधैः ।।३२७।।

शाके को चार से गुणकर सात का भाग देने से शेष रहे उसको दुगुना करके तीन मिलाने से क्षुधा, तृषा, निद्रा, आलस्य, उद्यम, शान्ति, क्रोध, दंभ, लोभ, मैथुन, रसनिष्पत्ति, फलनिष्पत्ति और सब लोकों का उत्साह इनके विश्वा जाने जाते हैं।।३२६ से ३२७।।

शकाब्दं वसुभिर्निघ्नंनवभिर्भागमाहरेत् ।
शेषंतुद्विगुणीकृत्यरूपमत्रापियोजयेत् ।।३२८।।
उग्रंपापंचपुण्यंचव्याधिंव्याधिविनाशनम् ।
आचारश्चाप्यनाचारोमरणंजननिरेवच ।
देशस्योपद्रवंस्वास्थ्यंचौराकुलभयंतथा ।।३२९।।

शाके को आठ से गुणकर नौ का भाग देने से जो शेष बचें उनको दुगुना करके एक मिलाने से उग्र, पाप, पुण्य, व्याधि, व्याधिनाश आचार, अनाचार, मरण, जन्म, देशोपद्रव, देशस्वस्थता, चौर भय और चौर नाश इनके विश्वा ज्ञात होते हैं।।३२८।।३२९।।

शकः पञ्चभिः सप्तभिर्गोभिरीशैश्चतुर्धाहतः सप्तभक्तावशिष्टः ।। द्विनिघ्नंत्रिभिर्युक्तमुद्भिज्जरायांडजस्वेदजानांहिविंशोपकाः स्युः ।।३३०।।

शके को चार जगह लिख कर प्रत्येक को पांच से-सात से-नौ से और ग्यारह से गुणकर सबमें पृथक् पृथक् सात का भाग देने से जो शेष रहें उनको दुगुने करके तीन मिलाने से क्रम से उद्भिज (वृक्ष लता वेलि, आदि), जरायुज (मनुष्य तथा गौ आदि पशु), अंडज (पक्षी तथा सर्पादि) और स्वेदज (पसीने में उत्पन्न होनेवाला जूं-खटमल आदि कीड़े) इनके विश्वा मालूम हो जाते हैं।।३३०।।

(पंचाग कर्ताओं के हितनिमित्त यहां हम इनके उदाहरण और देते हैं। यथा-(१) शके १८४० को ३ से गुणा ५५२० और ७ का भाग देने से ७८८ लब्ध और ४ शेष रहे। चार को दुगुने किये ८ और ५ मिलाये तो १३ हुए यह वर्षा १३ विश्वा हुई, आगे लब्ध ७८८ को शक मानकर शेष काम उसी प्रकार करने से धान्य तृण आदि की विश्वा आवेंगे। (२) शके १८४० को ४ से गुण ७३६० कर सात का भाग दिया तो १०५१ लब्धि और शेष ३ रहे शेष ३ को दुगुना करके तीन युक्त किये ९ क्षुधा के विश्वा हुए। इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये। (३) शाके को ८ से गुण १४७२० कर नौ का भाग दिया १६३७ लब्ध हुए। शेष १ को दुगुना करके १ मिलाया ३ हुए यह उग्र के विश्वा हैं। आगे इस प्रकार पापादिके विश्वा आते हैं। और (४) शके १८४० को चार जगह ५।७।९।११ से गुणा तो ९२००। १२८८०।१६५६०।२०२४० हुए इनमें पृथक् पृथक् ७ का भाग देने से २।०।५।३ बचे इनको दुगुने कर ३ जोड़ने से ७।३।१३।९ उद्भिजादि के विश्वा हुए। इनके सिवाय और भी सब वस्तुओं के विश्वा लगाये जाते हैं किन्तु विस्तारभय से यहां नहीं लिखे हैं। "संवत् के विश्वा"-कर्क संक्रांति के दिन जो वार हो उससे जाने जाते हैं। सूर्य हों तो १० चन्द्र हो तो २० मं० हो तो ८ बु० १२ बृ० १८ शु० १८ और शनिवार हो तो ५ विश्वा जानना।

(१४) अथायव्यसाधनम्

स्वस्वामिवर्षाधिपवत्सरैक्यं त्रिघ्नंशराढ्यंतिथिभक्तशेषम् ।
आयोथलब्धिस्त्रिगुणाशराढ्यतिथ्युद्धृताशेषमितोव्ययः स्यात्
(वर्षाणि) षट्सूर्येतिथयश्चन्द्रेह्यष्टौभूमिजकेतथा ।
सप्तदशेंदुपुत्रेचदशभास्करनन्दने ॥३३२॥
एकोनविंशतिर्जीवेराहौद्वादशकंभवेत् ।
एकविंशतिराख्याताशुक्रस्यापितथैवच ॥३३३॥

(इति) वर्षप्रबोध-पूर्वभागे प्रथमस्थलः

(१४) "लाभ खर्च जानने की क्रिया"-राशि के स्वामी के वर्षों और संवत् के राजा के वर्षों को जोड़कर तीन से गुण के पाँच मिलाकर पन्द्रह का भाग देने से जो शेष हो सो लाभ और जो लब्धि हो उसको तिगुनी करके पांच मिलाकर पन्द्रह का भाग देने से जो शेष रहे सो खर्च होता है यथा-राशि मेष इसके स्वामी मंगल के वर्ष ८, राजा शनि के वर्ष १०, इनको जोड़े १८ हुए। तीन से गुने ५४ हुए ५ मिलाये ५९ हुए १५ का भाग दिया १४ शेष रहे यह मेष का लाभ है। फिर लब्धि ३ को तीन से गुणकर पांच मिलाके १५ का भाग दिया तो शेष १४ रहे यह मेष का खर्च हुआ इसी प्रकार सब राशियों में जानना चाहिये। स्मरण रहे कि लाभ खर्च विशोत्तरी और अष्टोत्तरी इन दोनों मतों से लगाया करते रहें सो जिस मत के लगाने हों उसी मत के वर्ष लेने चाहिये। विंशोत्तरी के सू० ६। चं० १०। मं० ७। रा० १८। बृ० १६। शनि १९। बु० १७। शुक्र के २० वर्ष होते हैं। अष्टोत्तरी मत से सूर्य के ६। चं० १५। मं० ८। बु० १७। श० १०। बृ० १९। रा० १२ और शुक्र के २१ वर्ष होते हैं॥३३१॥३३२॥३३३॥

इति श्रीहनूमानशर्मासंग्रहीत संवत्सर फल प्रबोध के पूर्व भाग का स्थल समाप्त।

(१) अत खेचरचारे सूर्यचारः

साम्प्रतमयनंसवितुः कर्कटकाद्यंमृगादितश्चान्यत् ।
उक्ताभावोविकृतिः प्रत्यक्षपरीक्षणैर्व्यनक्ति ।।१।।

(१)"अब खेचरचार में 'सूर्यचार' का विचार लिखते हैं।" वर्तमान में सूर्य के कर्कादि और मकरादि से दक्षिणायन और उत्तरायण यह दो अयन होते हैं। कथित रीति के अभाव को विकृति कहते हैं। अतः प्रत्यक्ष परीक्षित युक्ति प्रकाशित करते हैं।।१।।

दूरस्थचिह्नवेधादुदयेस्तमयेपिवासहस्रांशो ।
छायाप्रवेशनिर्गमचिह्नैर्वामण्डलेमहति ।।२।।

सूर्य के उदयास्त समय में महामण्डल की दूरी के चिह्नों के वेध से अथवा छाया के प्रवेश और निर्गम के चिह्नों से अयनपरिवर्तन का ज्ञान होता है।।२।।

अप्राप्यमकरमर्कोविनिवृत्तोहन्तिसांपरांयाम्याम् ।।
कर्कटमसम्प्राप्तोविनिवृत्तश्चोत्तरांसैन्द्रीम् ।।३।।

यदि सूर्य मकर में बिना पहुँचे ही लौट आवे तो दक्षिण का नाश होता है। और कर्क में बिना पहुँचे ही लौट आवे तो पूर्वसहित उत्तर दिशा का नाश होता है।।३।।

उत्तरमयनमतीत्यव्यावृत्तः क्षेमसस्यवृद्धिकरः ।
प्रकृतिस्थश्चाप्येवंविकृतगतिर्भयकृदुष्णांशुः ।।४।।

यदि उत्तरायण को उलांघ कर सूर्य लौटे तो क्षेम और सस्य (अन्न) वृद्धि करता है। इसी को प्रकृतिस्थ कहते हैं यदि इसमें विकार हो तो भय होता है।।४।।

अमलवपुरवक्रमण्डलः स्फुटविपुलामलदीर्घदीधितिः ।
अविकृततनुवर्णचिह्नभृज्जगतिकरोति शिवंदिवाकरः ।।५।।

यदि सूर्य निर्मल देहवाला-गोल मण्डलवाला-स्पष्ट और बहुतसी निर्मल लम्बी किरणोंवाला हो तथा सूर्य के गोल बिंब में कुछ भी विकार न हो, रंग भी साफ हो और किसी भांति का उसमें कोई चिह्न न हो तो ऐसे सूर्यनारायण जगत् का कल्याण करते हैं।।५।।

असितविचित्रनीलपरुषोजनघातकरः ।
खगमृगभैरवखररुतेश्चनिशाद्यमुखे ।।६।।

यदि सूर्यबिंब काला हो, विचित्र हो, नीला होकर भयंकर दीखता हो और सायंकाल में पक्षी-हिरन-गीदड़े-गधे रोवें तो मनुष्यों का घात करता है।।६।।

दिवसकृतः प्रतिसूर्योजलकृदुद्दक्षिणेस्थितोऽनिलकृत् ।
उभयस्थः सलिलभयंनृपमुपरिनिहन्त्यधोजनहा ।।७।।

"प्रतिसूर्य"-यदि सूर्य का प्रतिसूर्य दीखे (अर्थात् उदयकाल में जो लाल रंग का दूसरी तरफ में एक सूर्य जैसा ही और कुछ दीखा करता है वह) उत्तर में दीखे तो वर्षा होती है। दक्षिण में दीखे तो आंधी तूफान आते हैं। सूर्य के दोनों बाजुओं में दीखे तो जलभय (महावृष्टि) हो सूर्य के ऊपर दीखे तो राजा का नाश और नीचे दीखे तो जननाश होता है।।७।।

सूर्यस्यविविधवर्णाः पवनेनविघट्टिताः कराः साभ्रे ।
वियतिधनुः संस्थनायेदृश्यन्तेतदिन्द्रधनुः ।।८।।

"इन्द्र धनुष"-सूर्य की अनेक रंगों की किरणें पवन से रुक कर बादलवाले आकाश में जो धनुष जैसी दीखती हैं उसी को इन्द्र धनुष कहते हैं।।८।।

विदिगुद्भूतंदिक्स्वामिनाशनंव्यभ्रजंमरककारि ।
पाटलपीतकनीलैः शस्त्राग्निक्षुत्कृतादोषाः ।।९।।

ऐसा इन्द्र धनुष दिशाओं की कोणों में (अग्नि-नैर्ऋत्य-वायु-और ईशान में) दीखे तो तत्सहवर्ती दिशा के राजा का नाश होता है। और यदि विना ही मेघ के इन्द्रधनुष हो तो मरी पड़ती है। पाटल (पाढल के फूल समान) अथवा पीले रंग का या नीले रंग का हो तो शस्त्र-अग्नि-भूखे मरने का भय होता है।।९।।

जलमध्येऽनावृष्टिर्भुविसस्यवधस्तरौस्थितेव्याधिः ।
वल्मीकेशस्त्रभयंनिशिसचिववधाययधनुरैन्द्रम् ।।१०।।

वह इन्द्र धनुष यदि जल के बीच में दीखे तो अनावृष्टि हो-पृथ्वी पर दीखे तो खेती का नाश हो, वृक्ष पर दीखे तो व्याधि हो-बमई पर दीखे तो शस्त्र भय हो और रात्रि में दीखे तो मन्त्री (मुशाहिबों) का वध हो।।१०।।

सूर्येन्दुपरिवेषाणांफलंवक्ष्येस्वयंततः ।
श्वेतवर्णेभवेद्द्रव्यंपीतवर्णेरुजाकरः ।।११।।

"परिवेष"-कभी कभी सूर्य अथवा चन्द्रमा चौतर्फ गोल मण्डल में दिखाई दिया करता है उसको परिवेष अथवा कुँडाला कहते हैं। वह परिवेष सफेद रंग का हो तो देश में धन धान्य हों। पीले रंग का हो तो रोग हों।।११।।

रक्तवर्णेभवेद्युद्धंकृष्णवर्णेनृपक्षयः ।
नीलवर्णेमहावृष्टिर्धूम्रवर्णेवधूसरी ।।१२।।

लाल रंग का हो तो युद्ध हो। काले रंग का हो तो राजा मरे। नीले रंग का हो तो बड़ी भारी वर्षा हो। धूँये के समान हो तो धूसरता हो।।१२।।

स्वल्पेस्वल्पफलंसर्वंबहूनांतुफलंमहत् ।
जलद्रावेमहावृष्टिर्बिंबनाशेनृपक्षयम् ।।१३।।

इनमें यदि न्यूनता हो तो फल में भी न्यूनता और अधिकता हो तो फल में अधिकता हो। यदि उसमें जल कण टपके तो महावृष्टि हो और वह गोलाकार खण्डित हो तो राजा का नाश हो॥१३॥

अथ संक्रातिफलम्

यदैकराशिंपरिभुज्यसूर्योराश्यंतरंयातिनभोविभाभे ।
संक्रांतिसंज्ञंखलुकालमेनमाचक्षतेशास्त्ररहस्यविज्ञाः ॥१४॥

संक्रांति फलबोधकचक्रम्

वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	दिशा
र०	उग्र	घोरा	शूद्रसुखा	पूर्वाह्ण	वि.रा.सु०	पूर्वे
चं०	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्यसुखा	मध्याह्न	वैश्यसुख	पश्चिमे
मं०	चर	महोदरी	चौरसुखा	अपराह्ण	शुद्रसुख	दक्षिणे
बु०	मैत्र	मन्दाकिनी	नृपसुखा	प्रदोष	पिशाचसुख	दक्षिणे
बृ०	ध्रुव	मन्दा	द्विजसुखा	अर्धरात्री	राक्षससुख	उत्तरे
शु०	मिश्र	मिश्रा	पशुसुखा	अपररात्री	नटसुख	पूर्वे
श०	दारुण	राक्षसी	चांडालसुखा	प्रत्यूष	पशुपालसुख	पश्चिमे

"संक्रांति फल-आकाश मण्डल में सूर्य जब एक राशि को भोग कर दूसरी में जाता है। उसी समय को पंडित लोग संक्रांति कहते हैं॥१४॥

मेषे रवौ तुलाचन्द्रे षण्मासे धान्यलाभदः ।
वृषेऽर्के वृश्चिके चन्द्रस्तुर्ये मासेन्नलाभदः ॥१५॥

वह सक्रान्ति जिस समय सूर्य मेषराशि पर आवे उस समय तुलाका चन्द्रमा हो तो छः महीने धान्य लाभ हो। वृषका सूर्य आवे उस समय वृश्चिकका चन्द्रमा हो तो चार महीने का अन्नका लाभ हो॥१५॥

मिथुनेर्के धनुश्चन्द्रस्तिलतैलान्नसंग्रहात् ।
मासैश्चतुर्भिर्लाभाय सक्रूरैश्चेन्न विद्यते ॥१६॥

मिथुन पर सूर्य आवे तब धन का चन्द्रमा हो तो तिल तैलान्न के संग्रहमें चार महीने लाभ हो, क्रूर ग्रह हो तो नहीं हो॥१६॥

कर्केर्के मकरे चन्द्रो दुर्भिक्षं कुरुते जने ।
घोरंयावच्चतुर्मासं दासीकृतधनेश्वरः ॥१७॥

कर्क पर सूर्य आवे तब मकर का चन्द्रमा हो तो घोर दुर्भिक्ष हो, चार महीने तक धनवानों को भी नौकर बना दे॥१७॥

षण्मासाद्द्विगुणो लाभः सिंहेर्के कुम्भचन्द्रतः ।
मीने चन्द्रश्च कन्यार्के छत्रभंगश्च विग्रहः ॥१८॥

सिंह पर सूर्य आवे तब कुम्भ का चन्द्रमा हो तो छः महीने में दुगुना लाभ हो। कन्या पर सूर्य आवे तब मीन का चन्द्रमा हो तो छत्रभंग और विग्रह हो॥१८॥

तुलार्के चन्द्रमा मेषे पंचमे मासि लाभदः ।
वृश्चिकेर्के वृषे चन्द्रे तिलतैलान्नसंग्रहः ॥१९॥
प्रदत्ते द्विगुणं लाभं धान्यं मासद्वयांतरे ।
मिथुनेन्दुर्धनुष्यर्के पंचमासान्नलाभदः ॥२०॥

तुला संक्रांति के समय मेष का चन्द्रमा हो तो पांचवें महीने में लाभ हो। वृश्चिक संक्रांति समय वृष का चन्द्रमा हो तो तिल तैलान्न के संग्रह

से दो महीने में दुगुणा लाभ हो। धनार्क के समय मिथुन का चन्द्रमा हो तो पांच मास में अन्न लाभ हो॥१९॥२०॥

कार्पासघृतसूत्रादेः पंचमे मासि लाभदः ।
मृगेर्केकर्कशीतांशुः पांसुलानांविनाशकः ॥२१॥

कपास-घी-और सूत आदि पांच महीने में लाभ दें। मकर पर सूर्य आवे तब कर्क का चन्द्रमा हो तो कुलटा स्त्रियों का नाश हो॥२१॥

सिंहेन्दुः कुम्भभानौ च तुर्ये मासेन्नलाभदः ।
कन्याचन्द्रेपि मीनेर्कस्तादृशीधान्यसंग्रहात् ॥२२॥

कुंभ संक्रांति के समय सिंह का चन्द्रमा हो तो चौथे मास में अन्न लाभ हो। और मीन राशि पर सूर्य आवे उस समय कन्या पर चन्द्रमा हो तो मक्का, जुआर आदि के संग्रह से चार महीने में लाभ हो॥३२॥

(इति)

नीचे लिखे कोष्ठक में संक्रान्ति के वाहन फल जानना

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	किस्तुघ्न
स्थिति	बैठी	बैठी	खड़ी	सूती	बैठी	खड़ी	बैठी	सूती	खड़ी	सूती	खड़ी
फल	मध्यम	मध्यम	महर्घ	समर्थ	मध्यम	महर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ	समर्घ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिषी	घोटक	कुत्ता	मेढ़ा	वल	कुक्कुट
उपवाहन	गज	अश्व	बैल	मेढा	गर्दभ	ऊँट	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वराह
फल	भय	भय	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	काला	चित्र	कम्बल	नग्न	घनवर्ण
आयुध	भुशुण्डी	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	तलवार	बाण
पात्र	सुवर्ण	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	तीकर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ

भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	पय	दधि	चित्रान्न	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	माटी	गोरोचन	आंवले	हलव	सुरमा	सिन्दूर	अगर	कपूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अन्त्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बैल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्लिका	पाटल	जपा
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	मूंगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	पुन्नाग	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पर्ण	हरित	भूर्जपत्र	सात	पा०श्वेत	नील	कृष्ण	अञ्जन	वल्कल	पांडुर
वय	बाला	कुमारी	गतालका	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	अतिवन्ध्या	पुत्रवती	संन्या०

जिस करण की संक्रांति हो उसके वाहनफल चक्र से समझना और संक्रांति जिस वाहन पर स्थित हो तथा जो वस्तु धारण करे उसी की हानि समझना

स्यात्कार्त्तिकेवृश्चिकसंक्रमाहेसूर्येमहर्घंभुविशुक्लवस्तु ।
म्लेच्छेषुरोगान्मरणायमंदः कुजः परधान्यरसग्रहाय ।।२३।।
लाभस्तुतस्यात्रिगुणस्त्रिमासान्बुधेचपूगादिफलं महर्घम् ।
गुरौचशुक्रेतिलतैलसूत्रकार्पाससूत्रादिमहर्घतास्यात् ।।२४।।

"सक्रांति समय के मास तथा वारफल" (प्रायः व्यापारादि विषय में दीपावली पीछे वर्ष बदलता है अतः इसी अभिप्राय से यहाँ कार्त्तिकादि महीनों के क्रम से फल का उल्लेख हुआ है।) यदि कार्त्तिक महीने में वृश्चिक की संक्रान्ति रविवार को हो तो सफेद वस्तुएं मंहगी हों, म्लेच्छोंमें रोग हों तथा मृत्यु हों। मंगल या शनिवारी हो तो धान्य तथा रस के संग्रह करने से तीन महीने पीछे तिगुना लाभ हो, बुधवार हो तो सुपारी नारियल आदि महँगे हो और बृहस्पति तथा शुक्रवारी हो तो तिल तैल रुई कपास और सूत आदि महँगे हों ।।२३।।२४।।

धनुषितरणिभोगेमार्गशीर्षेर्कभौमोशनिरवियदिंवारश्चौडकर्णाटगौडाः ।
सुरगिरिमलयान्तामालवास्तेषुराज्ञांरणमरणविशेषाद्विग्रहायत्रयोऽमी।।

यदि मार्गशीर्ष में धन की संक्रान्ति के दिन रवि, मंगल, शनिवार हो तो चौल, कर्णाटक, गौड़, देवगिरि (सुमेरुपर्वत) मलय और मालव इन देशों के राजाओं में रण मरण तथा विग्रह विशेष हो।।२५।।

कार्पाससूत्रादितिलाज्यतैलमहर्घतालाभदशासुवर्णात् ।
शैत्यप्रवृद्धिर्भुविसोमवारेकिंचिद्विनाशोप्यतएवधान्ये ।।२६।।

कपास, सूत, तेल, घी और तेल महँगे हों, सुवर्ण में लाभ हो और ठंड अधिक पड़े तथा सोमवार हो तो खेती का कुछ नाश हो।।२६।।

बुधेगुरौवान्नसमर्घतास्याच्छुक्रेपुनर्म्लेच्छजनप्रमोदः ।
पौषेमृगेऽर्केशनिनाभयायप्रभाकृताक्षत्त्रिकुलक्षयाय ।।

वही संक्रान्ति बुध या गुरुवारी हो तो अन्न सस्ता हो, शुक्रवारी हो तो म्लेच्छों को आनन्द दे और पोष में मकर संक्रान्ति शनिवारी हो तो भय तथा क्षत्रिय कुल का क्षय हो।।२७।।

बुधेमुदायुद्धमुशन्तिश्रेष्ठागुरौविरोधस्वकुलेद्विमास्याम् ।
युगन्धरीमल्लमसूरधान्येहिमाद्विनाशश्चणकेपिसोमे ।।२८।।

बुधवारी हो तो प्रसन्नता और युद्ध हो। गुरुवारी हो तो दो महीने तक निजकुल में विरोध रहे। युगंधरी, मल्ल, मसूर और चने इनका उपल वृष्टि में नाश हो और सोमवारी हो तो भी यही फल हो।।२८।।

देवेगुरौवादलएवशुक्रेमाघेऽथकुंभेदिनकृत्प्रसंगे ।
पृथ्वीभयंविग्रहएवघोरंचतुष्पदानामतिशायकष्टम् ।।

माघ में कुंभ की संक्रान्ति के दिन बृहस्पति या शुक्रवार हो तो पृथ्वी पर घोर भय विग्रह हो, चौपायों को अत्यन्त कष्ट हो।।२९।।

मीनेर्केसतिफाल्गुनेशनिवशात्सामुद्रिकार्थक्षयो
भौमेहेन्निसलाभतारणभटासूर्येभटानिष्ठताः ।
तैलाज्यादिरसामहर्घदिवसाश्चन्द्रेजनानांसुखं
शुक्रेचंद्रसुतेसुभिक्षमतुलंरोगप्रयोगोगुरौ ।।३०।।

फाल्गुन में मीन संक्रांति को शनिवार हो तो समुद्रीय द्रव्यों (सींप–मोती–शंखादि) का नाश हो, मंगल हो तो सोने में लाभ हो, रविवार हो तो शूर वीर रण में जुटें और तेल घी आदि महँगे हों, सोमवार हो तो मनुष्यों को सुख हो, शुक्र बुध हो तो अत्यन्त समर्घता हो और बृहस्पतिवार हो तो रोग का प्रयोग हो।।३०।।

चैत्रेमेषरवौतथाक्षितिसुतेमंदेमहर्घस्थितिर्गोधूमेचणकेतथैव-
शशिनाकार्पासतैलादिषु । जीवः क्षत्त्रियजीवनाशनकरः
शुक्रोऽथवाचंद्रजः सर्ववस्तुमहर्घमेवकुरुतेवैवाहसोत्साहताम् ।३१।

चैत्र में मेष संक्रान्ति के दिन रवि तथा मंगल शनिवार हो तो गेंहूं तथा चनों की महँगाई हो। सोमवार हो तो कपास और तैल आदि महँगे हों। बृहस्पतिवार हो तो क्षत्रियों का नाश हो और शुक्र तथा बुधवार हो तो सब वस्तुएँ महंगी हों किन्तु विवाहादि उत्साह हो।।३१।।

वैशाखेवृषसंक्रमेशनिकुजादित्याहिदुर्भिक्षदा
देशेक्लेशरुचिर्महर्घविधयः प्राप्यानगोधूमकाः ।
कापसिफलवस्तुनीक्षुरसजेमांजिष्ठकेत्यादरः
सोमेधान्यमहर्घताकविगुरूतेषुप्रियाः स्यू रसाः ।।३२।।

वैशाख में वृष संक्रांति शनि रवि कुज वारी हो तो देश में दुर्भिक्ष हो। लोगों की रुचि क्लेश में हो और गेंहू का दाना नहीं मिले, कपास फलवस्तु–ईख के गुड़ सक्कर और मंजीठ इनका आदर हो अर्थात् यह अधिक महँगे हों। सोमवार हो तो धान्य महँगे हो, शुक्र बृहस्पतिवारी हो तो इनके प्रियरस उत्पन्न हों।।३२।।

ज्येष्ठेश्रीमिथुनार्कतः शनिकुजादित्येषुपापाशयो
रोगेग्निज्वलनादिजंभयमपिप्रायोमहर्घाः कणाः ।
संतुष्टो वसुधासुधाकरसुतेवस्तुप्रियंसिंधुज
दुर्भिक्षंशशिजीवभार्गवबलात्सार्वत्रिकंसूत्रताम् ।।३३।।

जेठ में मिथुन संक्रांति के दिन शनि, मंगल, रविवार हों तो पाप फैले, आग लगे रोग बढ़े, भय हो और सब अन्न महँगे हों। बुधवार हो तो लोग प्रसन्न हों, सामुद्रिक वस्तुएँ प्रिय हों और चंद्र गुरु शुक्रवार हो तो सर्वत्र से दुर्भिक्ष दूर हो।।३३।।

आषाढे कर्कसंक्रान्तौक्रूरवारेतिवर्षणम् ।
क्षत्रियाणांक्षयोधान्यंगुरौतुप्रबलोनिलः ।।३४।।

आषाढ में कर्क संक्रान्ति को क्रूर वार हो तो अधिक वर्षा हो, क्षत्रियों

का क्षय हो, धान्य हो और गुरुवार हो तो हवा अधिक वेग से चले।।३४।।

सोमेसौम्येतथाशुक्रेजलस्थानंभुवस्तलम् ।
धान्यंसमर्घतांयातिपरदेशाज्जनेसुखम् ।।३५।।

सोम, शुक्र, बुधवारी हो तो पृथ्वी पर जल हो, धान्य सस्ते हों और विदेशी लोग सब सुखी हों।।३५।।

सिंहेर्केश्रावणेभौमेशनौवार्वाहवृष्टये ।
तुषधान्यविनाशायवायुः पीडाकरोरवौ ।।३६।।

श्रावण में सिंह संक्रान्ति के दिन शनि भौमवार हो तो वर्षा हो, तुष धान्य का नाश हो, रविवारी हो तो वायु पीड़ाकारक हो।।३६।।

समर्घमाज्यंदेवेज्येऽगुरुतैलमहर्घता ।
सोमेशुक्रेबुधेछत्रभंगकृल्लोकतोषदः ।।३७।।

बृहस्पतिवारी हो तो घी सस्ता हो, तेल महँगा हो। सोम, शुक्र, बुधवारी हो तो छत्रभंग हो किंतु संसार को संतोष मिले।।३७।।

कन्यार्कतोभाद्रपदेल्पवृष्टिः शनेर्जने स्याद्बहुधान्यनाशः ।
कुजाद्रुजाद्याबहुधेतयोवावृष्टिस्तदाल्पातिमहर्घतान्ने ।।३८।।
भादवा में कन्या की संक्रान्ति के दिन शनिवार हो तो अल्प वृष्टि से धान्यनाश हो, मंगलवारी हो तो रोगादि हों, ईतिभय हो और अल्प वृष्टि से महँगाई हो।।३८।।

जीवेन्दुशुक्रज्ञपराक्रमेण क्रमेण सौख्यं न बहुश्रमेण ।
अमुद्रसामुद्रकसूपयुद्धं किंचिद्विनाशोपि च पश्चिमायाम्

बृहस्पति सोम तथा शुक्रवारी हो तो क्रम से, पराक्रम से ही सौख्य हो, विशेष परिश्रम से नहीं हो। और राजाओं में अमुद्र तथा सामुद्र युद्ध होने से पश्चिम में कुछ नाश हो।।३९।।

आश्विने रवितुलाधिरोहणे भास्करोद्विजगवादिदुःखदः ।
राज्यविग्रहकरः शनैश्चरः सर्पिषः खलु महर्घतां वदेत्।।४०।।

और आश्विनमें यदि तुला संक्रान्तिके दिन रविवार हो तो ब्राह्मण तथा गायों को दुःख हो। शनिवार हो तो राजाओं में विग्रह करे और सरसों महँगी हो।।४०।।

बहुधा बहुधान्यसंभवाद्वसुधापूर्णसुधा बुधाश्रयात् ।।
गुरुणातिसमर्घमन्नकं शशिना वा भृगुसूनुना तथैव ।।४१।।

बुधवार हो तो पृथ्वी पर अनेक प्रकार के धान्य बहुत हों और गुरु-चन्द्र-शुक्रवार हो तो अन्न सस्ता हो।।४१।।

चैत्रमासस्य संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
तदा धान्यस्य निष्पत्तिर्लोके बहुतरं सुखम् ।।४२।।

"सक्रांति समय की वर्षा का फल"—यदि चैत्र के महीने की संक्रांति को मेघ वर्षे तो अन्न अच्छा उत्पन्न होता है तथा लोक में बहुत सुख होता है।।४२।।

वैशाखज्येष्ठसंक्रान्तौवृष्टिर्मिश्रफलाभवेत् ।
अर्घं महर्घं ज्ञातव्यं दुर्भिक्षं नैवमादिशेत् ।।४३।।

वैशाख और ज्येष्ठ की संक्रान्ति को वर्षा होने से मिला हुआ फल होता है। कभी तेजी और कभी मन्दी हो, दुर्भिक्ष नहीं हो।।४३।।

यदि स्याज्ज्येष्ठपंचम्यांवृषसंक्रमणादनु ।
दिनद्वयान्तर्जलदस्तदासुभिक्षनिर्णयः ।।४४।।

यदि जेठ की पंचमी को वृष संक्रान्ति से दो दिन भीतर जल वर्षे तो सुभिक्ष हो।।४४।।

आषाढे चैव सक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
व्याधिरुत्पद्यते घोरः श्रावणे शोभनं तदा ।।४५।।

आषाढ़की संक्रांति को मेघ वर्षे तो घोर व्याधि उठती है।।४५।।

श्रावणेचैवसंक्रांतौयदिवर्षतिवारिदः ।
अनन्तधान्यहानिः स्याद्भवेन्मेघमहोदयः ।।४६।।

श्रावणकी संक्रान्तिको वर्षा होतो धान्यकी अत्यन्त हानि हो।।४६।।

मासे भाद्रपदे प्राप्ते संक्रान्तौ यदि वर्षति ।
बहुरोगाकुलो लोक आश्विने शोभनं पुनः ।।४७।।

भादवेकी संक्रांतिको वर्षा हो तो बहुत रोगोंसे व्याकुल हों।।४७।।

आश्विनस्यापि संक्रान्तौ दृष्टे मेघमहोदये ।
राजयुद्धं प्रजाः स्वस्थाधान्यैरापूर्यते जगत् ।।४८।।

आश्विन् की संक्रांति को वर्षा हो तो राज्य में युद्ध, प्रजा में सुख और पृथ्वी धान्य से पूर्ण हो।।४८।।

कार्त्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ यदि वर्षति ।
मध्यमं कुरुते वर्षं पौषमासे सुभिक्षकृत् ।।४९।।

कार्तिक और मार्गशीर्ष की संक्रान्ति को वर्षे तो मध्यम हों, पौष में सुभिक्ष हो।।४९।।

पौषमासस्य संक्रान्तौ यदा मेघमहोदयः ।
बहुक्षीरास्तदा गावो वसुधा बहुधान्यदा ।।५०।।

पौष की संक्रांति को वर्षा हो तो गायों के दूध बहुत हों और अन्न भी बहुत हों।।५०।।

माघमासे च संक्रान्तौ यदि वर्षति वारिदः ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं गेहगेहे महोत्सवम् ।।५१।।

माघकी संक्रांतिको वर्षा हो तो सुभिक्ष,क्षेम,आरोग्य,उत्सव हो।।५१।।

फाल्गुने चैत्रसंक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
विचित्रं जायते सस्यं माधवज्येष्ठयोरपि ।।५२।।

फाल्गुन की संक्रांति को वर्षा हो तो वैशाख ज्येष्ठ में विचित्र धान्य हो।।५२।।

संक्रांतेः विशेषफलम्

कार्त्तिके फाल्गुने मार्गे चैत्रे श्रावणभाद्रयोः ।
संक्रमेष्वशुभः षट्सु यदि वर्षति वारिदः ।।५३।।

'संक्रांति विषयक विशेष फल'–कार्तिक फाल्गुन, मार्गशीर्ष, चैत्र, श्रावण, भाद्रपद इन संक्रातियोंके दिन वर्षा हो तो अशुभ होती है।।५३।।

पौषे माघे च वैशाखे ज्येष्ठाषाढाश्विनेषुच ।
संक्रांतौ वर्षति घनः सर्वदैव सुशोभनः ।।५४।।

और पौष, माघ, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ और आश्विन इन महीनों की संक्रातियों के दिन वर्षा हो तो सब प्रकार से शुभ है।।५४।।

नन्दायां मेषसंक्रांतिरल्पवृष्टिकरी मता ।
भद्रायां राजयुद्धायजयायां व्याधये नृणाम् ।।५५।।
रिक्तायां पशुघातायपूर्णायांधान्यवर्द्धिनी ।
इत्येतद्बालबोधोक्तं बहुशास्त्रेषु संमतम् ।।५६।।

मेष संक्रान्ति नन्दा तिथि में हो तो कम वर्षा हो। भद्रा में हो तो राजयुद्ध हो। जया में हो तो मनुष्यों में व्याधि हो। रिक्ता में हो तो पशुघात हो। और पूर्णा में हो तो धान्यवृद्धि हो।।५५।५६।।

चैत्रेशनौत्रयोदश्यां यदिमीनेर्कसंक्रमः ।
वत्सरः स्यात्तदानिन्द्यः सद्योधान्यार्थनाशनः ।।५७।।

चैत्र की तेरस शनिवार को यदि मीन संक्रान्ति हो तो वह वर्ष निन्द्य तथा शीघ्र ही धान्य और द्रव्य का नाश करता है।।५७।।

यद्दिने यार्कसंक्रांतिस्तद्राशौतद्दिनेशशि ।
जन्मवेधादयोनेष्टः श्रेष्ठः स्वसुहृदांगृहे ॥५८॥

जिस दिन सूर्य संक्रांति हो उस दिन उसी राशि पर चन्द्रमा हो तो यह जन्मवेध से नेष्ट होता है और मित्र के घर में हो तो श्रेष्ठ होता है। (एक राशि योग प्रायः अमावस को आता है।) ॥५८॥

यस्मिन्वारेस्तिसंक्रांतिस्तत्रैवामाभिधातिथिः ।
लोकेखर्परयोगोयंजीवधान्यादिनाशकः ॥५९॥

जिस दिन संक्रांति हो और उसी दिन अमावस तिथि हो तो यह खर्पर योग जीव तथा धान्यादि का नाशक है॥५९॥

मेषकर्कमकरेर्कसंक्रमे क्रूरवारसहितेजलंनहि ।
धान्यमल्पतरमेववत्सरेविग्रहोविपुलरोगतस्कराः ॥६०॥

मेष–कर्क–मकर की संक्रातियों को क्रूर वार हों तो जल नहीं हो। धान्य कम हो और उस वर्ष में चोर तथा रोगादि और विग्रह बहुत हो॥६०॥

शनिःस्याद्यसंक्रान्तौ द्वितीयायांप्रभाकरः ।
तृतीयायांकुजोयोगः खर्पराख्योतिकष्टकृत् ॥६१॥

प्रथम संक्रांति को शनि–दूसरी को सूर्य और तीसरी को मंगलवार हो तो यह खर्पर योग कष्टकारी होता है॥६१॥

संक्रांन्तिः स्याद्यदापौषेरविवारेणसंयुता ।
धान्यस्यद्विगुणंमूल्यंतदाप्राहुर्महाधियः ॥६२॥

पौष की संक्रांति रविवारी हो तो महाबुद्धिवाले धान्य का दुगुना मूल्य कहते हैं॥६२॥

शनौत्रिगुणतामूल्येमङ्गलेचचतुर्गुणम् ।
समानंबुधशुक्राभ्यांमूल्यार्घगुरुसोमयोः ॥६३॥

यदि वही संक्रान्ति शनिवारी हो तो तिगुना और मंगलवारी हो तो चौगुना मूल्य होता है। और यदि बुध शुक्रवार हों तो समान भाव तथा गुरु चन्द्रवार हो तो आधा मूल्य होता है।।६३।।

शनिभानुकुजेवारेबहवः संक्रमा यदाः ।
तदामहर्धमनिलंकुर्वतेरोगविग्रहम् ।।६४।।

यदि शनि–रवि–कुज वारी बहुत सी संक्रांतियां बराबर आवें तो महंगाई बढ़े तथा रोग विग्रह हो।।६४।।

मीनमेषान्तरेष्टस्यांमंगलेधान्यसंग्रहात् ।
द्विस्त्रिश्चतुर्गुणालाभइत्युक्तंपूर्वसूरिभिः ।।६५।।

मीन और मेषकी संक्रांतिके बीचमें अष्टमी मंगलवार आवे तो धान्य संग्रह करने से दुगुना–तिगुना ही क्या चौगुना तक लाभ होता है।।६५।।

कुम्भमीनांतरेष्टम्यांनवम्यांदशमीदिने ।
रोहिणीचेत्तदावृष्टिरल्पमध्यादिकाक्रमात् ।।६६।।

कुम्भ और मीन की संक्रांतिके बीचमें अष्टमी,नवमी या दशमी को रोहिणी हो तो क्रम से स्वल्प-मध्य और अच्छी वर्षा हो।६६।।

माघेकृष्णदशम्यांचेन्मकरेर्कः प्रवर्तते ।
धान्यसंग्रहणाल्लाभंतदाषाढेकरोत्ययम् ।।६७।।

माघ कृष्ण दशमी को यदि मकर संक्रान्ति हो तो धान्य के संग्रह से आषाढ में लाभ हो।।६७।।

सूर्योदयेपिविशतीजगतोविपत्त्यै
मध्यंदिनेसकलधान्यविनाशहेतुः ।
संक्रांतिरस्तसमयेधनधान्यवृद्धचै
क्षेमंसुभिक्षमवनेः कुरुतेनिशीथे ।।६८।।

यदि कोई भी संक्रांति प्रातःकाल में हो तो जगत् में विपत्ति हो। दुपहरी में हो तो सब धान्यों का नाश हो। सायंकाल हो तो धन धान्य की वृद्धि हो और अर्ध रात्रि में हो तो पृथ्वी पर सब प्रकार से क्षेम कुशल और सुभिक्ष हो।।६८।।

संक्रांतिनाडचात्तिथिवारऋक्षधान्याक्षरंवह्निहरेत्तुभागम् ।
संक्रांतिनाडीनवमिश्रिताचसप्ताहता पावकभाजिताच
एकेसमर्घंद्वितयेच साम्यंशून्येमहर्घंमुनयोवदन्ति ।।७०।।

"संक्रान्ति से गणितागत शुभाशुभ जानने की विधि"–संक्रांति की घड़ी तथा वर्तमान तिथि वार नक्षत्र की संख्या और किसी भी अन्न के नाम के अक्षर यह सब जोड़ कर तीन का भाग दे। यदि एक बचे तो सस्ता-दो बचे तो समान-और शून्य बचे तो तेज हो।।६९।। दूसरे प्रकार से इसी भांति संक्रांति की घड़ियों में नौ मिलाकर सात से गुण के तीन का भाग देने से एक बचे तो समर्घ, दो बचे तो साम्य और शून्य बचे तो महर्घ जानना।।७०।।

दिनंयोगंचनक्षत्रंसंक्रान्तेर्गृह्यतेघटी ।
चतुर्गुणसप्तभक्तंपण्डितस्तद्विचारयेत् ।।७१।।
शून्येभयंक्षयंरोगमेकेनंद्वितयेरसः ।
त्रयेरोगश्चतुर्षुस्याद्वस्त्रमाहर्घ्यमुज्जवलम् ।।७२।।

संक्रांति की घड़ी तथा दिन और नक्षत्र की संख्या को जोड़कर चौगुने करके सात का भाग दें। यदि शून्य बचे तो भय–क्षय–और रोग हो, १ बचे तो अन्न, दो बचे तो रस, तीन बचे तो रोग, चार बचे तो उजले वस्त्रों की महँगाई। (पाँच बचें तो क्षय और छः बचे तो रोगादि हों) ।।७१।।७२।।

प्रसंगादन्यप्रकारेण शुभाशुभज्ञानम्

आदित्याद्वारगणनात्प्रतिपत्प्रमुखातिथिः ।
अश्विन्यादिचनक्षत्रंसमील्यद्विगुणीकृतम् ।।७३।।
त्रिभिर्भागद्वयंशेषं सुभिक्षमादिशेद्बुधः ।
शून्येभवतिदुर्भिक्षमेकशेषेशुभंवदेत् ।।७४।।

"प्रसंगवश वर्ष शुभाशुभ ज्ञानोपाय कहते हैं।"–किसी भी दिन अकस्मात् कोई वर्ष के शुभाशुभ का प्रश्न करे तो उस दिन जो वार, तिथि और नक्षत्र हों उनकी संख्या को जोड़कर दुगुनी करे और तीन का भाग लगावे , यदि एक शेष बचे तो शुभ, दो शेष बचे तो भी शुभ और शून्य शेष रहे तो दुर्भिक्ष जानना।।७३।।७४।।

(२) अथ चन्द्रवारः

नित्यमधस्थस्येन्दोर्भाभिर्भानोः सितंभवत्यर्धम् ।
स्वच्छाययान्यदसितंकुभस्थेवातपस्थस्य ।।७५।।

(२) "चन्द्र चार"–सूर्य से नीचे रहनेवाले चन्द्रमा का आधा भाग सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है। और आधा भाग घाम में अपनी ही छाया से (घड़े की भांति) काला रहता है।।७५।।

सलिलमयेशशिनिरवेर्दीधितयोमूर्च्छितास्तमौनैशम् ।
क्षपयन्तिदर्पणोदरनिहताइवमन्दिरस्यांतः ।।७६।।

जैसे कांच के ऊपर सूर्य का प्रतिबिंब पड़ कर अंधियारे घर में भी उसके द्वारा भीतर घुसकर अंधेरा दूर करता है वैसे ही जलमय चन्द्र पर सूर्य किरणें गिरकर रात्रि के अंधकार को दूर करती हैं।।७६।।

त्यजतोर्कतलं शशिनः पश्चादवलम्बतेयथाशोक्लच्यम्।
दिनकरवशात्तथेन्दोः प्रकाशतेऽधः प्रभृत्युदयः ।।७७।।

सूर्य का निचला भाग छोड़ते छोड़ते चन्द्रमा का पश्चिम भाग सूर्य की किरणों के वश से जितना सफेद (चमकीला) होता जाता है, नीचे वह उतना ही प्रकाशित होता जाता है। शुक्ल पक्ष की द्वितीया से उसका प्रकाश आरम्भ होने से उसके गोले का उस दिन बहुत ही कम अंश दीखने में आता है। उसे चंद्र शृंग कहते हैं।।७७।।

वक्रोलिद्वितये सिंहे शूलाभः कन्यकाद्वये ।
मीनत्रये दक्षिणोच्चश्चन्द्रः शेष समाकृतिः ।।७८।।

उदय होने के दिन वृश्चिक और धन का चन्द्रमा हो तो टेढ़ा, कन्या, मिथुन का हो तो शूल की समान, मीन, मेष, वृष का दक्षिण ओर से ऊंचा और कर्क, सिंह, तुला मकर कुम्भ का हो तो दोनों शींग समान होते हैं।।७८।।

विग्रहं हि समे चन्द्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ।
व्याधिचौरभयं शूले सुभिक्षं चोत्तरोन्नते ।।७९।।

समान (बराबर) चन्द्रमा हो तो विग्रह हो, दक्षिणोन्नत हो तो तेजी हो, शूल समान हो तो चोरभय तथा व्याधि हो और उत्तर शृंग ऊँचा हो तो धान्यादि सस्ते हों।।७९।।

सिंहे मेषद्वये रक्तः श्यामो मकरकुंभयोः ।
तुलाकर्कालिषु श्वेतः पीतः शेषेषु शीतगुः ।।८०।।

सिंह-मेष-वृष का चन्द्रमा हो तो लाल, मकर कुंभ का हो तो काला, तुल-कर्क, वृश्चिक का हो तो सफेद और शेष पीला रंग रहता है।।८०।।

अरुणः शीतलकिरणः करोति रसहानिरुग्ररणमरणम् ।
पीतो रोगनियोगं करकादिभयं पुनः कालः ।।८१।।

लाल रंग का चन्द्र दीखे तो रस हानि और उग्र युद्ध में मरण होता है। पीला हो तो रोग फैलाता है और करकादि भय करता है।।८१।।

सूर्येन्दुजांगारकसौरिभार्गवाः प्रदक्षणं यांति यदा हिमद्युतेः ।
तदा सुभिक्षं धनवृत्तिरुत्तमा विपर्यये धान्यधनक्षयादि ।।८२।।

सूर्य, बुध, मंगल शनि और शुक्र ये यदि चन्द्रमार्ग से दहने चलें तो सुभिक्ष होता है–धन वृत्ति उत्तम होती है और बायें चले तो धन धान्य का नाश होता है।।८२।।

दृश्यते यदि न रोहणीयुतश्चन्द्रमा नभसि तोयदावृते ।
रुग्भयं महदुपस्थितं तदा भूश्च भूरिजलसस्यसंयुता ।।८३।।

यदि बादलों से ढँके हुए आकाश में रोहिणी युक्त चन्द्रमा नहीं दीखे तो बड़ा रोगभय उपजता है तथा पृथ्वी जल पूर्ण होती है।।८३।।

यद्दिनेगोकुलक्रीडातद्दिनेभ्युदितेविधौ ।
तदात्रीणिविनश्यन्तिप्रजागावोमहीपतिः ।।८४।।

जिस दिन गोकुलक्रीडा (गोवर्द्धन लीला) हो उसी दिन चन्द्रदर्शन हो तो प्रजा गौ और महीपति इन तीनों का नाश होता है।।८४।।

ज्येष्ठस्यान्तेप्रतिप दिसूर्यस्यास्तंविलोकयेत् ।
द्वितीयांवीक्ष्यतेचन्द्रोगतमुत्तरदक्षिणम् ।।८५।।

जेठ सुदी प्रतिपदा को सायंकाल के समय द्वितीया आ गई हो तो चन्द्रमा देखे और उसके उत्तर दक्षिण का विचार करे।।८५।।

सुभिक्षमुत्तरदिशिविपरीतन्तुदक्षिणे ।
तत्साम्येमध्यमंवर्षंज्येष्ठान्तेतद्वदेवहि ।।८६।।

यदि उत्तर शृंगोन्नत हो तो सुभिक्ष और दक्षिणोन्नत हो तो दुर्भिक्ष होता है–समान हो तो मध्यम जानना।।८६।।

उत्तरेणग्रहाणांतुचंद्रचारोभवेद्यदि ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंविग्रहोनात्रवत्सरे ॥८७॥

यदि उत्तर में उदय हो तो उस वर्ष में सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य होता है॥८७॥

पञ्चतारग्रहायत्रसोमंकुर्वंतिदक्षिणे ।
भौमेचराजमारिः स्याज्जनमारिश्चभार्गवे ॥८८॥

यदि पांचो तारे (मं० बु० बृ० शु० श०) चन्द्र को दाहिनी बाजू करके चलें तो उनमें मंगल के जाने से राजमारी और शुक्र के जाने से जनमारी होती है॥८८॥

बुधेसक्षयंविद्याद्गुरौकुर्यान्निदारुकम् ।
शनौवर्षक्षयंकुर्यान्मासेमासेविलोकयेत् ॥८९॥

बुध के जाने से रस क्षय, गुरु से जल वृष्टि और शनि से वर्ष का क्षय होता है। अतः महीने की महीने चन्द्र देखना चाहिये॥८९॥

चित्रानुराधाज्येष्ठाचकृत्तिकारोहिणीतथा ।
मघामृगशिरारामूलंतथाषाढविशाखयोः ॥९०॥
एतेषामुत्तरामार्गेयदाचरतिचन्द्रमाः ।
सुभिक्षंक्षेमवृद्धिश्चसुवृष्टिर्जायतेतदा ॥९१॥
ऐतेषांदक्षिणेमार्गेयदाचरतिचन्द्रमाः ।
क्षयंगच्छन्तिभूनाथादुर्भिक्षं च भयंपथि ॥९२॥

चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, रोहणी, मघा, मृगशिर, मूल, पूर्वाषाढ और विशाखा इनके उत्तर मार्ग से यदि चन्द्रमा चले तो सुभिक्ष, क्षेम, वृद्धि और वर्षा हो। तथा इनके दक्षिण मार्ग से चले तो राजाओं का क्षय, दुर्भिक्ष और मार्गभय हो॥९०॥९१॥९२॥

चन्द्रोदयेमेषराशौग्रीष्मधान्यमहर्घता ।
वृषेमाषतिलागुरुतुषधान्यमहर्घता ।।९३।।

"उदयफल" मेष राशि का चन्द्रमा उदय हो तो जौ गेंहूं की महंगाई हो, वृष का हो तो उड़द-तिल और तुष धान्य तेज हों।।९३।।

कार्पाससूत्रधान्यादिमहर्घंमिथुनेस्मृतम् ।
अनावृष्टिः कर्कराशौसिंहेधान्यमहर्घता ।।९४।।

मिथुन का हो तो कपास–सूत धान्यादि महँगे हों, कर्क का हो तो अनावृष्टि हो और सिंह का हो तो धान्य महँगा हो।।९४।।

चतुष्पदविनाशोपिराज्ञामन्योन्यविग्रहः ।
द्विजादिपीडाकन्यायांतुलाक्रयणकंप्रियम् ।।९५।।

कन्या का हो तो चौपायों का नाश हो, राजाओं में विग्रह हो और ब्राह्मणों को पीड़ा हो। तुल का चन्द्रमा उदय हो तो व्यापारी समान प्यारा हो।।९५।।

वृश्चिकेधान्यनिष्पत्तिर्धनुर्मकरयोः शुभम् ।
कुंभेचणकमाषादितिलानांनाशइष्यते ।।९६।।

वृश्चिक में धान्य की पैदावारी–धन मकर में शुभ और कुम्भ में चने, उड़द तथा तिलों का नाश हो।।९६।।

मीनेसुभिक्षमारोग्यंफलंद्वादशराशिजम् ।
एवंज्ञेयंद्वितीयायांनियमेप्यत्रभावनात् ।।९७।।

और मीन राशि में चन्द्रोदय हो तो सुभिक्ष तथा आरोग्य हो। यह बारहों राशियों का फल प्रत्येक मास की द्वितीया को नियम से देखना चाहिये।।९७।।

चन्द्रेऽस्तेमेषराशिस्थेसर्वधान्यमहर्घता ।
वृषेचचणिकापीडामृत्युश्चौरभयंजने ।।९८।।

"अस्त फल" मेष राशि का चन्द्रमा अस्त हो अर्थात् अमावस्या के दिन मेष का चन्द्रमा हो तो सब धान्य महँगे हों, वृष में अस्त हो तो चणिक पीड़ा मृत्यु और चौर भय हो॥९८॥

मिथुनेष्वतिवृष्टिः स्याद्बीजवापेनपुष्टये ।
कर्कटेप्यतिवृष्टिः स्यात्सिंहेधान्यमहर्घता ॥९९॥

मिथुन में अति वर्षा होने से बोया हुआ बीज पुष्ट नहीं हो। कर्क में अति वर्षा हो और सिंह में अन्न महँगा हो॥९९॥

कन्यायांखण्डवृष्टिश्चसर्वधान्यसमर्घता ।
तुलायामल्पवृष्टिः स्याद्देशभंगो भयंपथि ॥१००॥

कन्या में खण्ड वृष्टि हो, सर्व धान्य महँगे हों, तुला में अल्प वर्षा हो और देश भंग तथा मार्ग भय हो॥१००॥

वृश्चिकेमध्यमंवर्षंग्रामनाशोप्युपद्रवात् ।
सुभिक्षंधनुषाधान्यैर्मकरेधान्यपीडनम् ॥१०१॥

वृश्चिक में मध्यम वर्षा हो और उपद्रव से ग्राम नाश हो। धन में धान्य से सुभिक्ष हो और मकर में धान्य पीड़ा हो॥१०१॥

कुंभेऽल्पवृष्टिर्धान्यानिमहर्घाणिप्रजाभयम् ।
सुखसंपत्तयोमीनेमासंयावदिदंफलम् ॥१०२॥

कुंभ में अल्प वर्षा हो, धान्य महँगा हो, प्रजा में भय हो। और मीन राशि में चन्द्रमा का अस्त हो तो सुख संपत्ति हो। ऊपर जो शृंगोन्नति तथा उदयास्त फल कहा है यह केवल उसी मास भर होता है॥१०२॥

वैशाखेयदिवाज्येष्ठउत्तरस्यांविधूदये ।
बहुधाधान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥१०३॥

वैशाख में वा जेठ में उत्तर में चन्द्रोदय हो तो धान्य की बहुत उत्पत्ति हो और वर्षा अच्छी हो।।१०३।। (इति)

(३) अथ सूर्यचन्द्रग्रहणविचारः

बहुफलं जपदानहुतादिके स्मृतिपुराणविदः प्रवदन्ति हि ।
सदुपयोगि जने सचमत्कृति ग्रहणमिन्द्विनयोः कथयाम्यतः।।

(३) "प्रसंग वश यहीं पर सूर्य चन्द्र ग्रहण का विचार लिखते हैं।" स्मृति और पुराणों के जाननेवाले कहते हैं कि ग्रहण में जप दान और होमादि करने से बहुत फल मिलता है और सदुपयोगी जनों में चमत्कृति करता है अतएव सूर्य और चन्द्रमा ग्रहण कहते हैं।।१०४।।

भूच्छायां स्वग्रहणे भास्करमर्कग्रहेप्रविशतीन्दुः ।
प्रग्रहणमतः पश्चान्नेन्दोर्भानोश्चपूर्वार्धात् ।।१०५।।

सूर्य ग्रहण में सूर्य के आड़ा चन्द्रमा आता है और चन्द्रग्रहण में चन्द्रमा के पृथ्वी आड़ी आ जाती है। इसी से ग्रहण होता है और इसी कारण पश्चिम् दिशा से चन्द्रग्रहण और पूर्व से सूर्य ग्रहण का आरम्भ नहीं होता।।१०५।।

एवमुपरागकारणमुक्तमिदंदिव्यदृग्भिराचार्यैः ।
राहुःकारणमतिमन्नियुक्तः शास्त्रसद्भावः ।।१०६।।

दिव्य दृष्टिवाले आचार्यों ने तो ग्रहण का यही कारण बतलाया है किन्तु लोग जो राहु को कारण मानते हैं यह शास्त्र का केवल सद्भाव मात्र है।।१०६।।

योऽसावसुरोराहुस्तस्य वरो ब्रह्मणाऽयमाज्ञप्तः ।
आप्यायनमुपरागे दत्त हुतांशेनतेभविता ।।१०७।।

क्योंकि पुराणों में लिखा है कि राहु नामक असुर को ब्रह्माजी ने ऐसा वर दिया था कि "ग्रहण के समय जो लोग होमादि करेंगे उसी के

अंश से तुम्हारी तृप्ति होगी–" वास्तव में राहु तमोमय है और चन्द्र को पृथ्वी की छाया तथा सूर्य को चन्द्र छाया आच्छादित करती है यह भी तमरूप है अतएव इनके साथ राहु सबंध उपयुक्त हो सकता है।।१०७।।

सूर्याचन्द्रमसौर्ग्रहः शुभकरो मार्गे तथा कार्त्तिके
पौषधान्यमहर्घताजनभयं वर्षं पुरो मध्यमम् ।
माघेवाञ्छितवृष्टिरन्नविगमः स्यात्फाल्गुनेदुःखकृत्-
चैत्रेचित्ररुगादिलेखकमहापीडा समामध्यमा ।।१०८।।

मार्गशीर्ष तथा कार्तिक में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो शुभ करता है। पौष में धान्य की महँगाई, मनुष्यों को भय और अगले वर्ष को मध्यम करता है। माघ में हो तो वांछित वृष्टि और अन्न करता है। फाल्गुन में हो तो दुःख करता है। चैत्र में हो तो रोग तथा लेखकों को महापीड़ा देता है और वर्ष मध्यम होता है।।१०८।।

वैशाखे तिलतैलमुद्गकुरुतेकार्पासकंनाशये-
ज्ज्येष्ठेऽवर्षणधान्यनाशनकरं स्याद्भाविवर्षंशुभम् ।
आषाढेक्वचिदेववर्षतिघनोरोगोऽन्नलाभः क्वचिद्
वृक्षेभ्यःफलानिहंतिसहसावर्षंशुभसंभवेत् ।।१०९।।

वैशाख में ग्रहण हो तो तिल तेल मूंगा और कपास इनका नाश करता है। जेठ में अवर्षण धान्यनाश और भावी वर्ष शुभ करता है। आषाढ़ में हो तो कहीं कुछ वर्षा हो, कहीं रोग हो, कहीं अन्न लाभ हो और वृक्षों से अकस्मात् फल गिर पड़े तथा वर्ष शुभ भी हो।।१०९।।

गर्भाःश्रावणकेऽम्बगर्दभभवास्तूर्णंचतत्फल्गुतां
स्त्रीगर्भान्विनिहंतिभाद्रपदकेसौख्यंसुभिक्षंजने ।

कुर्यादाश्विनकेऽथसूर्यशशिनोरेकत्रमासेग्रह
द्वंद्वंचेन्नरनायकाबहुबलायुद्धचंतिकोपोत्कटाः ॥११०॥

श्रावण में ग्रहण हो तो घोड़ियों के, गधियों के और स्त्रियों के गर्भ बहुत गिरें। भाद्रपद में हो तो सौख्य तथा सुभिक्ष हो। और आश्विन में एक ही मास में सूर्य चन्द्र के दोनों ग्रहण हों तो कोप से उखड़कर राजा लोग द्वंद युद्ध बहुत करें॥११०॥

कदाचिदधिकेमासेग्रहणंचंद्रसूर्ययोः ।
सर्वराष्ट्रभयंभंगः क्षयंयांतिमहीभुजः ॥१११॥

यदि अधिकमास में चन्द्र सूर्य ग्रहण हो तो राष्ट्रभंग और राजाओं का क्षय हो॥१११॥

रवेर्ग्रहाच्चपक्षांतेयदिचन्द्रग्रहोभवेत् ।
तदादर्शनिनांपूजाधर्मवृद्धिर्महोदयः ॥११२॥

सूर्य के १५ दिन पीछे ही चंद्रग्रहण हो तो शास्त्रकारों की पूजा, धर्म की वृद्धि और बड़ों का उदय हो॥११२॥

क्रूरसंयुक्तसूर्येन्द्वोर्ग्रहणेनृपतिक्षयः ।
राष्ट्रभंगइतिप्राहुर्महाप्राज्ञामुनीश्वराः ॥११३॥

सूर्य चंद्र ग्रहण क्रूर ग्रह संयुक्त हो तो राजाओं का क्षय और राज्यभंग हो॥११३॥

रविवारेग्रहेवर्षंमध्यमंधान्यसंग्रहः ।
राजयुद्धंचदुर्भिक्षंघृतास्तैलविक्रयाः ॥११४॥

रविवार को ग्रहण हो तो धान्य का संग्रह तथा वर्षा मध्यम हो, राजयुद्ध हो, दुर्भिक्ष हो और घी तथा तेल महँगे हो॥११४॥

सौमेऽर्द्धग्रहणेराजाग्रहोऽन्नस्यमहर्घता ।
लाभस्तैलघृतादिभ्योभौमेवह्निभयंभवेत् ॥११५॥

सोमवार को हो तो अन्न महँगा हो, तेल घी आदि मे लाभ हो, मंगल को हो तो अग्निभय हो।।११५।।

भौमवारेग्रहेभानोरन्योन्यनृपतिक्षयः ।
इन्दोर्ग्रहेचकार्पासपूतसूत्रमहर्घता ।।११६।।

मंगलवार को सूर्यग्रहण हो तो राजाओं की क्षति हो और चंद्रग्रहण हो तो अच्छे सूत की महँगाई हो।।११६।।

बुधेपूंगरक्तवस्त्रसंग्रहोलाभदायकः ।
गुरौरीतिरक्तवस्तुतैलगंधादिलाभदम् ।।११७।।

बुधवार को हो तो नारियल सुपारी और लाल वस्त्र इनका संग्रह लाभदायक होता है और गुरुवार को हो तो सब लाल वस्तु तथा तेल गंधादि लाभदायक होते हैं।।११७।।

शुक्रेसुभिक्षंमांगल्यंसर्वलोकशुभंकरम् ।
शनौयुगंधरीलाभः श्यामवस्तुमहर्घता ।।११८।।

शुक्रवार को हो तो सुभिक्ष—मंगलकारी और सबको शुभकारी होता है। और शनिवार को ग्रहण हो तो युगंधरी से लाभ तथा काली वस्तुएँ महँगी होती हैं।।११८।।

पीतरक्तवस्त्रताम्रवृषभादिकसंग्रहे ।
मासद्वयेतस्यलाभइत्युक्तंज्ञानिभिः पुरा ।।११९।।

पीले लाल वस्त्र तथा तांबा और बैल आदि के संग्रह से दो मास में लाभ होता है।।११९।।

अर्द्धोर्द्धमासिकेलाभस्त्रिभागश्चत्रिमासिके ।
चतुर्भागश्चतुमसिऽस्तमितेवर्षसंभवः ।।१२०।।

अर्द्ध ग्रहण में आधे मास में—तीन भाग में तीन मास में—चार भाग ग्रहण में चार मास में और सम्पूर्ण ग्रहण में अथवा अस्तमित मे वर्ष भर

में लाभ होता है॥१२०॥

ग्रहणाद्येचसर्वस्मिन्नुत्पातेप्रबलोयदा ।
पश्चात्संज्ञाततोघोररिष्टभंगतदादिशेत् ॥१२१॥

ग्रहण के आद्य में यदि सब उत्पात प्रबल हों तो पीछे वर्षा होने से घोर अरिष्ट दूर हो जाते हैं॥१२१॥

एवमुत्पातरहितेअस्मिन्नुदकयोनिकाः ।
जीवाः पुद्गलकाद्दश्यास्तद्देशेवृष्टिरुत्तमा ॥१२२॥

यदि उत्पात नहीं हो तो जलजन्तु बहुत होते हैं और वृष्टि उत्तम होती है॥१२२॥

उपरागो यदा मेषे पीडचतेऽयं तदा जनः ।
काम्बोजांध्रिकिराताश्च पांचालाश्चतिलङ्गकाः ॥१२३॥

"राशि फल" मेष का ग्रहण हो तो काम्बोज किरात पांचाल और तैलँग देश के मनुष्यों को पीड़ा हो॥१२३॥

वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः ।
महान्तो मनुजा ये च तेषां पीडा गरीयसी ॥१२४॥

वृष राशि पर ग्रहण हो तो गोप पशु राहगीर और बड़े आदमी इनको पीड़ा हो॥१२४॥

सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रासो मिथुने च वरांगनाः ।
पीडचन्ते बाह्लिका लोका यमुनातटवासिनः ॥१२५॥

मिथुन राशि पर सूर्य या चंद्र ग्रहण हो तो बाह्लिक तथा यमुना तट निवासी लोगों को और स्त्रियों को पीड़ा हो॥१२५॥

कर्कटे ग्रहणे पीड़ा गर्दभानां च जायते ।
आभीरबर्बराणां च पीडा च महती मता ॥१२६॥

कर्क का ग्रहण हो तो गधों को पीड़ा हो। आभीर और बर्बर जाति को पीड़ा हो।।१२६।।

सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः ।।१२७।।

सिंह का ग्रहण हो तो वनवासियों को पीड़ा हो तथा राजाओं को और राजतुल्य अन्य जनों के धन का क्षय हो।।१२७।।

कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुटाशालिजातिषु ।
कवीनां लेखकानांच गायकानां धनक्षयः ।।१२८।।

कन्या पर ग्रहण हो तो त्रिपुट-तथा शालि जातियों में पीड़ा हो और कवियों, लेखकों तथा गवैयों के धन का क्षय हो।।१२८।।

तुलायामुपरागे च दशार्णवककाहवः ।
मरुतश्चापरान्त्याश्च पीडयन्ते यतिसाधवः ।।१२९।।

तुल में ग्रहण हो तो दशार्णव-काहव-मरुत तथा अपरान्तर्वर्तीय लोगों को पीड़ा हो। और यति तथा साधुओं को पीड़ा हो।।१२९।।

वृश्चिके ग्रहणे दुःखं सर्वजातेः प्रजायते ।
यदुवरस्यं मंद्रस्य चौलयौधेयकस्य वा ।।१३०।।

वृश्चिक का ग्रहण हो तो सब जातियों को दुःख हो और यदुवर, मंद्र, चौल तथा यौधेय जातियों को दुःख हों।।१३०।।

यदोपरागश्चापेस्यात्तदावंत्याश्च वाजिनः ।
विदेहमल्लपांचालाः पीडयन्ते भिषजो विशः ।।१३१।।

धन का ग्रहण हो तो उज्जैन वासियों में, घोड़ों में-विदेह-मल्ल और पांचाल वासियों में पीड़ा हो तथा वैद्यों में, वैश्य में पीड़ा हो।।१३१।।

मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादिनाम् ।
स्थविराणांनटानां च चित्रकूटस्यसंक्षयः ॥१३२॥

मकर का ग्रहण हो तो नीच मंत्रवादियों का, स्थविरों (वृद्धों) का, नटों का और चित्रकूट निवासियों का क्षय हो॥१३२॥

कुम्भोपरागेपीडच्यन्तेगिरिजाः पश्चिमाजनाः ।
तस्कराद्विरदाभीराः प्रजानांदुःखदायकाः ॥१३३॥

कुंभ पर ग्रहण हो तो पश्चिम के पर्वतवासियों को पीडा हो और तस्कर, द्विरद (दो दाँतों वाले) तथा आभीर इनसे प्रजा को दुःख हो॥१३३॥

मीनोपरागेपीडच्यन्तेजलद्रव्याणिसागराः ।
जलोपजीविनोलोकाभविद्यांयेचपण्डिताः ॥१३४॥

और मीन राशि पर ग्रहण हो तो सामुद्रिक जलद्रव्य महंगे हों और जलोपजीवी (नाव वाले-जहाजी-तथा तैरने वालों) को भय हो॥१३४॥

अश्विन्यां पीडितायां स्यान्मुद्गादीनांमहर्घता ।
भरण्यांश्वेतवस्त्रेभ्यो लाभं मासत्रये भवेत् ॥१३५॥

"नक्षत्र फल"-अश्विनी नक्षत्र में ग्रहण होने से मूंग महँगे हों। भरणी में सफेद वस्तुओं से ३ मास में लाभ हो॥१३५॥

कृत्तिकायां हेमरूप्यप्रवालमणिमौक्तिकम् ।
संगृहीतं लाभदायि मासे च नवमे स्मृतम् ॥१३६॥

कृत्तिका में सोना, चांदी, मूंगा, मणि, मोती इनको खरीदने से नौ मास में लाभ हो॥१३६॥

रोहिण्यां सूत्रकार्पाससंग्रहो लाभदायकः ।
दश मासान्तरे प्रोक्तः सोमवेधो न चेदिह ॥१३७॥

रोहिणी में सूत कपास का संग्रह दश मास में लाभ दे किन्तु चंद्र वेध न हो।।१३७।।

मृगशीर्षेपि मंजिष्ठा लाक्षाः क्षारः कुसुम्भकम् ।
महर्घं दशमासान्ते लाभदं च यथोचितम् ।।१३८।।

मृगशिर में मजीठ, लाख, खार, कसूंभा यह महँगे होकर १० मास में लाभ दें।।१३८।।

घृतं महर्घमार्द्रायां लाभदं मासपंचके ।
तैलाल्लाभः पुनर्वस्वोर्मासः पंचकतः परम् ।।१३९।।

आर्द्रा में घी महंगा होकर ५ मास में लाभ दे और पुनर्वसु में तेल ५ मास में लाभ दे।।१३९।।

पुष्ये मासैस्त्रिभिर्लाभोभवेद्गोधूमसंग्रहे ।
आश्लेषायां तु मुद्गेभ्यः प्राप्तिः स्यान्मासपंचके ।।१४०।।

पुष्य में गेहूँ का संग्रह तीन मास में लाभ दे आश्लेषा में ५ महीने में मूंगों में लाभ हों।।१४०।।

मघाचतुष्टे चोलाचणकः खलु तुष्टये ।
चित्रायां च युगन्धर्याः लाभोमासद्वयात्यये ।।१४१।।

मघा से चार नक्षत्रों में चौले, चणे चार मास में लाभ दें। चित्रा में युगंधरी २ मास में लाभ दे।।१४१।।

त्रिपंचनवभिर्मासैः स्वातौ लाभस्ततस्तथा ।।
विशाखायां कुलित्थेभ्यः षण्मासे लाभसंभवः ।।१४२।।

स्वाती में ३-५ नौवें महीनें में अन्न में लाभ हो। विशाखा में ६ मास में कुलथी में लाभ हो।।१४२।।

राधायां कोद्रवाल्लाभो मासैर्नवभिराप्यते ।
ज्येष्ठायां गुडखण्डादेः पंचमासे धनोदयः ।।१४३।।

अनुराधा में कोदौं में नौ मास में लाभ हो; ज्येष्ठा में गुड खांड में ५ मास में धन मिले।।१४३।।

तंडुलेभ्यस्तथामूलेपूषायांश्वेतवस्त्रतः ।
उषायां श्रीफलात्पू गात्सर्वत्रमासपञ्चकम् ।।१४४।।

मूल में चावलों में, पूर्वाषाढ़ में श्वेत वस्त्र में और उत्तराषाढ में नारियल आदि में लाभ हो। इन सबमें पाँच महीने पीछे लाभ जानना।।१४४।।

श्रवणे तुवरीलाभो धनिष्ठायां तु माषतः ।
चणकेभ्योऽपिवारुण्यां तेभ्यः पूभानिपीडने ।।१४५।।

श्रवण में तूअर में, घनिष्ठा में उड़दों में, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद में चणों में लाभ हों।।१४५।।

लाभस्त्रिमासिनिर्दिष्टमुभाभ्यांलवणादितः ।
मासषट्काद्भवेल्लाभो रेवत्यांमुद्गमाषतः ।।१४६।।

उत्तराभाद्रपद में लवण में ३ मास में लाभ हो और रेवती में ग्रहण हो तो ६ महीने में मूंग के संग्रह से लाभ हो।।१४६।। (इति)

(४) भौमविचारः

शीतपीडाश्विनीभौमेतुषधान्यमहर्घता ।
द्विजपीडाभरण्यादेर्नाशः स्यादतिशीघ्रगे ।।१४७।।

(४)"मंगल चार"-अश्विनी नक्षत्र पर मंगल हो तो तुष धान्य महँगे हों और भरणी पर हो तो ब्राह्मणों को पीड़ा हो तथा उनका शीघ्र नाश हो।।१४७।।

सर्वदेशेग्रामपीड़ा धान्यानांच महर्घता ।
कृत्तिकायांदेशभंगोपीडा तापसआश्रमे ।।१४८।।

कृत्तिका पर हो तो सब देशों में तथा गाँवों में पीडा हो, धान्य महँगा

हो, देश भंग हो और तपस्वियों के आश्रमोंमें पीड़ा हो।।१४८।।

वृक्षपीडाश्वापदानांरोगः स्याद्रोहिणीकुजे ।
महर्घतापि कार्पासिवस्त्रेसूत्रेविशेषतः ।।१४९।।

रोहिणी पर मंगल हो तो वृक्षों में रोग, चौपायों में पीड़ा, कपास वस्त्र और सूत की महँगाई हो।।१४९।।

कार्पासनाशः प्रबलंसुभिक्षंमृगेकुजेभूर्जलपूरितेव ।
वृष्टिश्चरौद्रेदितिजेतिलानांनाशोविनाशोमहिषीकुलस्य ।।

मृगशिर पर मंगल हो तो पृथ्वी जल से पूरित हो जाय और कपास की खेती नष्ट हो जायँ। आर्द्रा पर हो तो वृष्टि हो और पुनर्वसु पर हो तो तिलों का नाश तथा भैंसों का विनाश हो।।१५०।।

पुष्येकुजेचौरभयंविरोधाच्छुभंनकिंचिन्नृपनिर्बलत्वम् ।
सार्पेल्पवृष्टिर्बहुधान्यनाशोदुर्भिक्षमेवोरगदंशभीतिः ।।१५१।।

पुष्य पर हो तो चौर भय हो, विरोध से अशुभ हो, और राजा कमजोर हों। श्लेषा पर हो तो बहुत वर्षा से धान्य नाश हो, दुर्भिक्ष हो और साँपों का भय अधिक हो।।१५१।।

पैत्र्येनवृष्टिस्तिलमाषमुद्गविनाशनंदुर्लभतान्यधान्ये ।
स्याद्योनिजे चेत्क्षितिजेल्पवृष्टिः प्रजासुपीडागुरुतैलमूल्यम् ।।

मघा पर हो तो वर्षा न होने से उड़द मूंग और तिलों का नाश हों अन्य धान्य दुर्लभ हों। पूर्वाफाल्गुनी पर हो तो अल्प वर्षा हो, प्रजा में पीड़ा हो और तैल का मूल्य बढ़ जाय।।१५२।।

तथोत्तरायांजलवृष्टिरोधाच्चतुष्पदे पीड़नमश्वमूल्यम् ।
हस्तेकुजेल्पांबु च तुच्छधान्यंघृतंगुडो वा लवणं महर्घम् ।।

उत्तरा फाल्गुनी पर हो तो वर्षा के अवरोध से चौपायों में पीड़ा हो, घोड़ो का मूल्य बढो और हस्त पर मंगल हो तो जल कम हो, तुच्छ

धान्य हो, घृत गुड और नमक महँगे हो।।१५३।।

चित्राकुजे तीव्ररुजोतिपीड़ा शालीष्टगोधूममहर्घतापि ।
स्वातावनावृष्टिरथद्विदैवे कार्पासगोधूममहर्घभावः ।।१५४।।

चित्रा पर मंगल हो तो तीव्र रोग पीड़ा हो। चावल तथा गेंहूँ महँगे हों। स्वाती पर हो तो अनावृष्टि हो, विशाखा पर हो तो कपास और गेहूँ का भाव महँगा हो।।१५४।।

मैत्रे सुभिक्षं पशुपक्षिपीडा ज्येष्ठाकुजे स्वल्पजलं च रोगाः।
मूले द्विजक्षत्रियवर्गपीडा महर्घता वा तुषधान्यराशेः ।।

अनुराधा पर हो तो सुभिक्ष हो, पशु पक्षियों को पीड़ा हो, ज्येष्ठा पर मंगल हो तो जल कम हो, रोग हो। मूल पर मंगल हो तो क्षत्रियों में पीड़ा हो, तुष धान्य महँगा हो।।१५५।।

पूषाकुजे भूरिजलाः पयोदा गावोऽल्पदुग्धा वसुधान्नपूर्णा।
महर्घता शालितिलाज्यमाषेष्वग्रेपि तत्पूर्ववदेव भावम्।।

पूर्वाषाढ पर हो तो जल बहुत हों, गायें दूध कम दें, पृथ्वी अन्न से पूरित हो। शालि, तिल, घी, और उड़द महँगे हों, उत्तराषाढ पर हो तो भी यही फल हो।।१५६।।

श्रुतौ च रोगा बहुधान्ययोगो भूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च ।
स्याद्वासवे वासववत्समृद्धिर्धान्यं समर्घं गुडशर्करादि।।

श्रवण पर मंगल हो तो रोग हो, धान्य का योग न हो, पीछे वर्षा हो। धनिष्ठा पर हो तो इन्द्र की भांति समृद्धि हो, धान्य सस्ता हो और गुड शक्कर भी सस्ते हों।।१५७।।

स्युर्वारुणे कीटकमूषकाद्यास्तथापि धान्यानि बहूनि भूम्याम्।
पूभामहीजे तिलवस्त्रसूत्रकार्पासपूगादिमहर्घता वा ।।१५८।।

शतभिषा पर मंगल हो तो कीड़े और मूष अधिक हों, तो भी

खेतियां बहुत हों। पूर्वाभाद्रपर हो तो तिल, वस्त्र, कपास, सुपारी आदि महँगे हों।।१५८।।

दुर्भिक्षेमेवोत्तरभाद्रिकायां वर्षा न मेघोन्नयनेपि किंचित् ।
सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्णे नरेषु रोगा बहुधान्यलक्ष्मीः।।

उत्तराभाद्र पर हो तो दुर्भिक्ष हो-वर्षा तथा अन्न नहीं हो। और रेवती नक्षत्र पर मंगल हो तो सुभिक्ष हो, मनुष्यों में रोग हो और अन्न लक्ष्मी बहुत हो।।१५९।।

मेषेभूमिसुतोदयेचचपलामाषास्तिलाः स्युः प्रिया,
नाशः स्याच्चवृषाचतुष्पदकुलेयुग्मेन्नदुः प्राप्यता ।
वैश्यानां बहुपीडनंशशिगृहे वृष्टचातिधान्योदयः ,
सिंहे शालिमहर्घता द्विजरुचः कन्योदये भूपतेः ।।१६०।।

"उदय फल"-मेष राशि में मंगल का उदय हो तो तिल और उड़द प्रिय हों (अर्थात् महंगे हों) वृष में हो तो चौपायों का नाश हो। मिथुन में हो तो दुष्प्राप्यता हो। कर्क में हो तो वैश्यों को बहुत पीड़ा हो, धान्य का उदय हो, सिंह में हो तो चावल महँगे हों और कन्या में उदय हो तो ब्राह्मणों तथा राजाओं में रोग हो।।१६०।।

धान्यानिभूयांसि तुलोदये स्युः कन्याद्वये तेन सुभिक्षमेव ।
चौराग्निभीतिर्नृपदुष्टनीतिर्निष्पत्तिरन्नस्य तु वृश्चिकस्थे ।।

तुल में हो तो धान्य बहुत हों (कोई का मत है कि कन्या मिथुन में सुभिक्ष हो,) वृश्चिक में हो तो चौर तथा अग्नि का भय हो राजाओं की नीति खोटी हो और अन्न की उत्पत्ति हो।।१६१।।

धनुषि रसातलवृष्टिः शालिगुडादेर्महर्घतामकरे ।
पश्चिमधान्यविनाशो वर्षाप्यतिशायनीदेशे ।।१६२।।

धन में हो तो पातालवृष्टि हो, मकर में हो तो चावल तथा गुडादि

की महर्घता हो और पश्चिम धान्य (मूँग मोठ तिल बाजरी) का नाश हो, वर्षा अधिक हो।।१६२।।

कुम्भेतीडागमात्पीडा यदि वा मूषकादिना ।
मीने कुजोदयो नैव वर्षादुर्भिक्षसाधनम् ।।१६३।।

कुम्भ में हो तो टीडी के आने से पीडा हो, अथवा मूषक वृद्धि हो। और मीन राशि पर मंगल का उदय हो तो वर्षा नहीं हो और दुर्भिक्ष का साधन हो।।१६३।।

अथ अस्तविचारः

मंगलास्तगमान्मेषेपाषाणानां महर्घता ।
तृणादेः खलुवस्तूनांसुभिक्षंस्वस्थतावृषे ।।१६४।।

"अस्त फल"-मेष राशि में मंगल का अस्त हो तो पत्थरों की महँगाई हो। वृष में अस्त हो तो घास फूल चारे की सस्ती हो।।१६४।।

युग्मेतिवृष्टिः कर्कस्थे तस्मिन्भूधान्यशून्यता ।
सिंहेश्वखरयोः पीडाचतुष्पदमहर्घता ।।१६५।।

मिथुन में हो तो अति वर्षा हो, कर्क में हो तो पृथ्वी पर अन्न की शून्यता करे। सिंह में हो तो घोड़े तथा गधों को पीड़ा करे और चौपाये महँगे हों।।१६५।।

कन्याद्वये महर्घाः स्युर्गोधूमाश्रणका यदा ।
अलौसुभिक्षनृपभीर्धनुर्महर्घशालिकृत् ।।१६६।।

कन्या तथा तुल में हो तो गेहूँ और चणे महँगे हों,। वृश्चिक में राजभय तथा सुभिक्ष हो और धन में चावल महँगे हों।।१६६।।

तुषधान्यागरुरस्तद्वन्मकरेविपुलंजलम् ।
चौरवह्निभयंदेशेकुम्भेराजसुविग्रहः ।।१६७।।

मकर में तुष धान्य तथा अगर महँगे हों, जल बहुत गिरे। कुभ में हो तो चौर तथा अग्नि का भय हो, राजाओं में विग्रह हो।।१६७।।

मीने कुजास्तंगमनान्नवनागाकुलाः प्रजाः ।
बहुप्रजासुभिक्षेणसोत्सवः शुभलक्षणः ।।१६८।।

और मीन में मंगल का अस्त हों तो अन्न की तेजी हो, सर्पों से व्याकुलता हो, बालकों का जन्म अधिक हों, सुभिक्ष हो, उत्सव हों और शुभ लक्षण हों।।१६८।।

अथ बुधचारः

बुधेश्विन्यां तु पीडचन्ते गोधूमश्च यवादयः ।
इक्षुदुग्धरसादीनांसमर्घचघृतादिषु ।।१६९।।

(५) "बुधचार"-अश्विनी में बुध हो तो जौ गेहूँ में रोग हो। ईख, दूध, रस और घी आदि सस्ते हों।।१६९।।

बुधभरण्यांमातंगपीडाचाण्डालनाशनम् ।
तीव्ररोगाद्धान्यवस्तुमहर्घंलोकवैरतः ।।१७०।।

भरणी पर बुध हो तो हाथियों को पीड़ा हो, चाण्डालों का नाश हो, तीव्र रोग हो, धान्य महँगे हों और वैर बढै।।१७०।।

कृत्तिकायां बुधे विप्रपीडा मेघाल्पता जने ।
अन्नमल्पज्वरंबाधा क्वचिद्विग्रहकारणम् ।।१७१।।

कृत्तिका में बुध हो तो ब्राह्मणों को पीड़ा हो, मेघ कम हो, अन्न अल्प हो मनुष्यों में ज्वरपीड़ा हो और कहीं कुछ बखेड़ा खड़ा हो।।१७१।।

रोहिण्यांज्ञे च कार्पासतिलसूत्रमहर्घता ।
मृगशीर्षेसुभिक्षंस्याद्वातवृष्टिर्महीयसी ।।१७२।।

रोहिणी में बुध हो तो कपास, तिल, सूत महँगे हों। मृगशिर में हो तो

सुभिक्ष हो, वायु से वर्षा हो।।१७२।।

गोधूमतिलमाषादिसमर्घंसुखिनोजनाः ।
आर्द्रायावृष्टिरतुलाग्रहपाताप्रवाहतः ।।१७३।।

आर्द्रा में हो तो वर्षा अधिक हो, गेहूँ तिल उड़द सस्ते हों, मनुष्य सुखी रहें। और ग्रहपात तथा पवन प्रवाह हो।।१७३।।

पुनर्वसौबालपीडाकापासिसूत्रमंदता ।
जनेषुसर्वसंयोगः पुष्येराज्ञांभयंजयः ।।१७४।।

पुनर्वसु में बुध हो तो बालकों को पीड़ा हो, कपास सूत मंदा हो, पुष्य में हो तो सब लोगों का संयोग हो। राजाओं में भय हो। तथा जय हो।।१७४।।

आश्लेषायांमहावृष्टिस्तुषधान्यसमुद्भवः ।
मघाबुधेल्पवृष्टिश्चधान्यनाशः प्रजाभयम् ।।१७५।।

आश्लेषा में हो महावृष्टि हो, तुष धान्य उत्पन्न हों। मघा में बुध हो तो वर्षा कम हो, धान्य नाश और प्रजा में भय हो।।१७५।।

पूफायांनृपसंग्रामः क्षेत्रबाधान्नमंदता ।
उफायांतुमाषमुद्गाद्यल्पनिष्पत्तिमादिशेत् ।।१७६।।

पूर्वाफाल्गुनी में हो तो राजाओं में युद्ध हो, क्षेत्र बाधा हो, अन्न मँदा हो,। उत्तराफाल्गुनी में हो तो उड़द मूंग कम उत्पन्न हों।।१७६।।

हस्तेबुधेसुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदाः ।
चित्रायांगणिकाशिल्पिद्विजपीडाल्पवर्षणम् ।।१७७।।

हस्त में बुध हो तो सुभिक्ष हो धान्य निरोग रहे। चित्रा में हो तो वर्षा कम हो और वेश्या तथा शिल्पी लोग और ब्राह्मणों में पीडा हो।।१७७।।

स्वातौबुधेमंदवृष्टिशाखायांसुभिक्षता ।
व्याधिर्भयंचदुर्भिक्षंकिंचित्कुत्रापिजायते ॥१७८॥

स्वाती में बुध हो तो मन्द वर्षा हो, विशाखा में हो तो सुभिक्ष हो। कहीं व्याधि भय और दुर्भिक्ष भी हो॥१७८॥

सुभिक्षमनुराधायांपक्षिपीडाप्रजासुखम् ।
ज्येष्ठायामिक्षुशाल्याज्यमहर्घताश्वरोगिता ॥१७९॥

अनुराधा में सुभिक्ष हो, पशुओं में पीडा हो, मनुष्यों को सुख हो। और ज्येष्ठ में हो तो ईख, शाली-और घी महँगे हों तथा घोड़ों में रोग हो॥१७९॥

मूलेपक्षिपशूनांचबालपीडाविजायते ।
धान्यंमंदचपूषायांव्याधिर्ग्रीष्मेपिवर्षणम् ॥१८०॥

मूल में हो तो पशु पक्षी और बालकों में पीडा हो। पूर्वाषाढ में हो तो धान्य मन्दा हो और ग्रीष्म में व्याधि तथा वर्षा हो॥१८०॥

उषायांसस्यनिष्पत्तिरष्टवर्षशिशुक्षयः ।
श्रुतौगुडातसीधान्यचणकेषुहिमाद्भयम् ॥१८१॥

उत्तराषाढ में हो तो अन्न की उत्पत्ति हो, आठ २ वर्ष के बालकों का नाश हो। श्रावण में हो तो गुड़ अलसी और चणे आदि धान्य में बर्फ ओले गिरने का भय हो॥१८१॥

वासवेतुगवांपीडावारुणेशूद्ररोगता ।
दुर्भिक्षमथपूभायांक्षेममारोग्यतास्मृता ॥१८२॥

धनिष्ठा में गायों को पीडा हो। शतभिषा में शूद्रों में रोग हो। पूर्वाभाद्रपद में हो तो दुर्भिक्ष हो और क्षेम तथा आरोग्य हो॥१८२॥

उभायांनृपतिक्लेशआरोग्यंपशुपक्षिणाम् ।
रेवत्यांनंदनंचन्द्रोमहर्घंकुंकुमाद्यपि ॥१८३॥

उत्तरा भाद्रपदमेंमें हो तो राजाओं में क्लेश तथा पक्षियों में आरोग्यता हो। और रेवती में बुध हो तो कुंकुम आदि महंगे हों ॥१८३॥

मेषेबुधस्योदयोतोगवादिचतुष्पदानांमहतीहपीडा ।
तीडादिनाधान्यमहर्घता च वृषेतिवृष्टिर्मिथुनेन वर्षा॥

"उदय फल"- मेष में बुध का उदय हो तो गाय बैल आदि चौपायों को बड़ी भारी पीड़ा हो टीडी आदि से धान्य महँगा हो। वृष में हो तो वर्षा अधिक हो और मिथुन में उदय हो तो वर्षा नहीं हो॥१८४॥

कर्केसुखंसिंहपदेचतुष्पान्म्रियेतकन्या बहुधान्यसौख्यम् ।
भूकंपयुद्धादि तुलोदितेज्ञेतथाष्टमेराजभयंसुभिक्षम् ॥१८५॥

कर्क में सुख हो, सिंह में चौपायों की मृत्यु हो, कन्या में बहुत धान्य सुख हो। तुल में उदय हो तो भूकंप तथा युद्धादि हों और वृश्चिक में उदय हो तो राजभय तथा सुभिक्ष हो॥१८५॥

धनुर्बुधस्याभ्युदयात्सुखानिमृगेमही धान्यरसादिपूर्णा ।
कुम्भेतिवायुः पथिभिश्रमीनेदुर्भिक्षपक्षोयदिवातिवृष्टिः ॥

धन में बुधोदय हो तो सुख का उदय हो, मकर में हो तो पृथ्वी धान्य तथा रस से पूर्ण हो। कुम्भ में हो तो मार्ग में हवा बहुत चले और मीन में बुध का उदय हो तो अति वृष्टि से दुर्भिक्ष हो॥१८६॥

मेषेबुधास्तेभुवनेसुभिक्षंचतुष्पदांनाशकरंवृषास्तम् ।
राज्ञांतुपीडामिथुनेकर्केऽनावृष्टयेमृत्युभयंच चौराः ॥१८७॥

"अस्त फल"-मेष राशि में बुध का अस्त हो तो सुभिक्ष हो। वृष में

उदय हो तो चौपायों का नाश हो। मिथुन में हो तो राजाओं का पीड़ा हो। और कर्क में हो तो अनावृष्टि तथा मृत्युभय और चौर भय हो।।१८७।।

तथैवसिंहेल्पजलंचकन्याबुधास्ततश्चौरभयातिवृष्टिः ।
क्रयाणकानांचमहर्घतायैतुलाप्यलिधातुमहर्घतायै ।।१८८।।

सिंह में अस्त हों तो वर्षा कम हो, कन्या में हो तो चौर भय तथा अतिवृष्टि हो। और तुला में हो तो व्यापारी वस्तु महँगी हों तथा वृश्चिक में हो तो धातु महँगे हों।।१८८।।

राज्ञांभयंधन्विनिरोगचारोमृगेल्पलाभो व्यवसायिलोके ।
कुंभेतिवायुर्हिमदग्धवृक्षा मीनेन्नधानानृपवर्गपीड़ा ।।१८९।।

धन में हो तो राजाओं में भय हो। रोग का प्रचार हो। मकर में हो तो व्यापारियों को कम लाभ हो। कुम्भ मे हो तो हवा बहुत चले और हिम (ठंढ) से वृक्ष जल जायँ तथा मीन में बुध का अस्त हो तो राज्यवर्ग में पीड़ा हो।।१८९।।

(६) अथ गुरुचारः

मेषराशौयदाजीवश्चैत्रसम्वत्सरस्तदा ।
प्रबुद्धोनामजलदः वर्षाचसर्वतोमुखी ।।१९०।।

(६)"गुरुचार विचार"-मेघ राशि में बृहस्पति हो तो उसे चैत्र सम्वत् सर जानना उसमें प्रबुद्ध नाम का मेघ चारों ओर जल वर्षाता है।।१९०।।

सुभिक्षंविग्रहोराज्ञांसमर्गंवस्त्रकर्पटम् ।
हेमरूप्यंतथाताम्रंकार्पासंचप्रवालकम् ।।१९१।।

सुभिक्ष होता है राजाओंयें विग्रह रहता है। वस्त्र-कपीठ, सोना, चाँदी, तांबा, कपास और मूंगे यह सस्ते होते हैं।।१९१।।

अश्वपीडामहारोगोद्विजानांकष्टसंभवः ।
मासत्रयेफलमिदंपश्चाद्भाद्रपदेपुनः ।।१९२।।

घोड़ो में महा रोग से पीड़ा और ब्राह्मणों को कष्ट यह फल तीन महीने से रहता है।।१९२।।

गोधूमशालिमाषाणामाज्यस्याग्रेसमर्घता ।
दक्षिणस्यामुत्तरस्यांखण्डवृष्टिः प्रजायते ।।१९३।।

फिर भादवें में गेहूं-चावल, घी, उड़द इनकी सस्ती होती है। और दक्षिण उत्तर में खण्ड वृष्टि होती है।।१९३।।

दक्षिणोत्तरयोर्देशेछत्रभंगोपिकुत्रचित् ।
दुर्भिक्षमपिषण्मासाआश्विनेफाल्गुनेतथा ।।१९४।।

दक्षिणोत्तर देश में कहीं छत्रभंग भी हो सकता है। आश्विन से फाल्गुन तक छः मास का दुर्भिक्ष हो।१९४।।

पश्चात्सुभिक्षंद्वौमासौमेघावैस्युर्जलप्रदाः ।
कार्तिकेमार्गशीर्षेचकार्पासान्नमहर्घता ।।१९५।।

पीछे दुर्भिक्ष हो तो दो मास वर्षा हो कार्तिक मार्गशीर्ष में कपास तथा अन्न महँगा हो।।१९५।।

भेदपाठेराज्यपीडा देशभंगोभवेद् ध्रुवम् ।
लोकाः सरोगादुर्भिक्षंपौषेरसमहर्घता ।।१९६।।

भेदपाठ में राज्य पीडा तथा देश भंग हो पौष में लोग रोगी हों इसकी महँगाई हो।।१९६।।

वाणिज्येसंशयोलाभेवैशाखेगुर्जरेरणः ।
छत्रभंगस्तथाषाढेश्रावणेचभयंपथि ।।१९७।।

वैशाख में व्यापार लाभ में संशय रहे गुर्जर देश में रण हो तो छत्रभंग हो और श्रावण में मार्ग भय हो।।१९७।।

अब्दमध्येयदाजीवः क्रमाद्राशित्रयंस्पृशेत् ।
तदासुभटकोटीभिः प्रेतपूर्णावसुंधरा ॥१९८॥

(वर्ष के बीच में) यदि बृहस्पति तीन राशियों को स्पर्श करे तो योद्धाओं की कोटी का नाश हो तथा पृथ्वी प्रेतों से पूर्ण हो॥१९८॥

वृषराशौयदाजीवोवैशाखोवत्सरस्तदा ।
नंदशालोभवेन्मेघः सर्वधान्यसमर्घता ॥१९९॥

वृषराशि में बृहस्पति हो तो उसे वैशाख वत्सर जानना। उसमें नंदशाल नामक मेघ वर्षा करता है और सब रस सस्ते होते हैं॥१९९॥

वैशाखेआश्विनेमासेस्त्रीणांरोगाश्चदन्तिनाम् ।
अश्वानांचमहापीडागृहवैरंपरस्परम् ॥२००॥

वैशाख और आश्विन में स्त्री और हाथियों को पीड़ा हो परस्पर विरोध हो॥२००॥

गोधूमशालिचणकामुद्गामाषास्तथातिलाः ।
महर्घाः श्रावणेज्येष्ठेमेघानांनमहाजलम् ॥२०१॥

गेहूँ, चावल, चने, मूंग, उडद, तिल यह श्रावण तथा जेठ में महँगे होते हैं। वर्षा कम हो॥२०१॥

शृंगालकेमालवेचउत्पातोराजविग्रहः ।
देशभंगाद्घृयंशून्यंघृतधान्यमहर्घता ॥२०२॥

शृंगाल मालवा इनमें उत्पात हो राजाओं में विग्रह हो देश भंग हो, घी और धान्य थोड़े कम बिके॥२०२॥

आषाढेश्रावणेवर्षानवर्षाभाद्रपादके ।
अश्वरोगश्चतुष्पादनाशः पीडागमः क्वचित् ॥२०३॥

आषाढ श्रावण में वर्षा हो भादवें में खींच हो। चौपायों में रोग हो। और चौपाये मरें।।२०३।।

मिथुने संगते जीवे ज्येष्ठाख्यो वत्सरो भवेत् ।
बालानां दोषमभ्धानां खण्डवृष्टिस्तदावदेत् ।।२०४।।

मिथुन में बृहस्पति आवे तो ज्येष्ठ वर्ष होता है। उसमें बालकों तथा घोड़ो में पीड़ा हो खण्ड वृष्टि हो।।२०४।।

कर्कोटकस्तथा मेघो वर्षते नात्र संशयः ।
तस्करैः पीड्यते लोकः पापोपहतमानसैः ।।२०५।।

उस समय में कर्कोटक नाम मेघ वर्षा करता है। लोग चोरों से पीडित हो।।२०५।।

पश्चिमायां सिधुदेशे वायव्ये चोत्तरादिशि ।
चित्रा विचित्रा जायन्ते रोगपीडोत्तरापथे ।।२०६।।

पश्चिम में सिंधु देश में वायव्य में और उत्तर दिशा में चित्र विचित्र वर्षा हो तथा रोग पीडा हो।।२०६।।

श्वेतवस्त्रं तथा कांस्यं कर्पूरं चंदनादिकम् ।
मंजिष्ठं नारिकेलं च पूगी स्वर्णं च रूप्यकम् ।।२०७।।
मासो वै पंचकं यावत् समर्घं चैत्रतो भवेत् ।
पश्चान्महर्घंपूर्वोक्तधान्यानां च समर्घता ।।२०८।।

सफेद वस्त्र तथा काँसी कपूर चंदन मजीठ नारियल सुपारी सोना और चाँदी यह चैत्र तक पांच महीने सस्ते होकर फिर महँगे हों।।२०७।।२०८।।

श्रावणे तुमहत्कष्टंमहिषीणांचहस्तिनाम् ।
पूर्वाग्नियाम्यनैर्ऋत्यामीशानेसुभिक्षता ।।२०९।।

श्रावण में भैंस और हाथियों को बड़ा कष्ट हो और पूर्व, आग्नेय,

दक्षिण ईशान इन दिशाओं के देशों में सुभिक्ष हो।।२०९।।

राजास्वस्थः प्रजाबुद्धिः सुभिक्षंमंगलंभुवि ।
समर्घंतैलखण्डादिशर्कराधातवोपिच ।।२१०।।

राजा लोग स्वस्थ रहें, प्रजा में वृद्धि हो, सुभिक्ष हो, पृथ्वी पर मंगल हों। तेल-खांड-शक्कर और धातु सस्ते हों।।२१०।।

शुंठीमरीचपिप्पल्योमञ्जिष्ठोजातिकोशलः ।
महर्घमे तद्वस्तुस्यात् फाल्गुनेधान्यसंग्रहः ।।२११।।

सोंठ, मिर्च, पीपल, मँजीठ, जायफल, कंकोल यह महँगे हों और फाल्गुन में धान्य संग्रह लाभदायक हो।।२२१।।

कर्केगुरुस्तदाऽऽषाढेवासरस्तत्रजायते ।
पूर्वदक्षिणयोर्मेघः मध्यमः कंबलाभिधः ।।२१२।।

कर्क राशि का बृहस्पति हो तो उसको आषाढ वर्ष कहते हैं। उसमें कंबल नामक मेघ दक्षिण और पूर्व से वर्षा करते हैं।।२१२।।

महर्घं सर्वधान्यानांकार्तिकेफाल्गुनेतथा ।
पश्चिमायांसिंधुदेशेवायव्येचोत्तरादिशि ।।२१३।।
क्षयश्चतुष्पदानांस्याद्दुर्भिक्षंमृगसैन्यकम् ।
हेमरूप्यंतथाताम्रंपट्टसूत्रंप्रवालकम् ।।२१४।।
मौक्तिकंद्रव्यमन्नादिलोकोक्त्यालोकविक्रयः ।
मंजिष्ठाश्वेतवस्त्राणांसमर्घंस्यान्नसंशयः ।।२१५।।

कार्तिक-और फाल्गुन में सब धान्य तेज हों, पश्चिम सिंधु देश वायव्य-उत्तर दिशा इनमें चौपायों का नाश हो, हरिणों को दुःख हो, दुर्भिक्ष हो। सोना, चांदी-ताम्बा, रेशम, मूंगा, मोती, द्रव्य, और अन्न यह लोकोक्तियों (बड़े सस्ते-बड़े अच्छे इत्यादि बातें बनाने) से बिकें। और मंजीठ तथा श्वेत वस्त्र सस्ते हों।।२१३ से २१५ तक।।

गोधूमशालितैलाज्यंलवणंशर्करापुनः ।
माषामहर्घाजायन्तेपापकर्मरतोजनः ॥२१६॥

गेहूँ, चावल, तेल, घी, नमक, शक्कर, उड़द यह महँगे हो और मनुष्य पाप करें॥२१६॥

पट्टसूत्रंवस्त्राणिजातीफललवंगकम् ।
मरिचंशीतकालेथसंग्राह्यवैवणिग्जनैः ॥२१७॥

रेशमी वस्त्र, जायफल, लौंग और मिर्च यह जाड़े में व्यापारियों को संग्रह करनी चाहिये॥२१७॥

वैशाखज्येष्ठयोर्लाभोद्विगुणस्तस्यविक्रयात् ।
वर्षाकाले महावर्षासर्वधान्यसमर्घता ॥२१८॥

इन वस्तुओं को वैशाख जेठ में बेचने से दूना लाभ हो वर्षा ऋतु में बहुत वर्षा होने से खेतियां बहुत हों॥२१८॥

सिंहेजीवेश्रावणाख्यंवत्सरेवासुकिर्घनः ।
बहुक्षीरघृतागावोजलपूर्णाचमेदिनी ॥२१९॥

सिंह राशि पर बृहस्पति आवे तब उसको श्रावण वर्ष कहते हैं। उसमें वासु की मेघ वर्षता है गायें घी दूध बहुत देती हैं और पृथ्वी जल से पूर्ण हो जाती है॥२१९॥

देवब्राह्मणपूजास्यान्नराणांमान्यतासताम् ।
रोगाविवादश्चान्योन्यंचतुष्पदमहर्घता ॥२२०॥

उस समय में देव ब्राह्मणों की पूजा हो और सत्पुरुषों का मान हो। रोग विवाद हो और चौपायों की तेजी हो॥२२०॥

गोधूमतिलमाषाज्यशालीनांचमहर्घता ।
सुवर्णरूप्यताम्रादेः प्रवालानांसमर्घता ॥२२१॥

गेंहूँ, तिल, उड़द, घी चावल, सोना, रूपा, तांबा और मूंगे महँगे

हो।।२२१।।

सुभिक्षंसर्पदंशश्चमेघोप्याषाढभाद्रयोः ।
श्रावणेवृष्टिरल्पैवसुकालः कार्तिकेमतः ।।२२२।।

सुभिक्ष हो, कहीं सर्प बाधा हो आषाढ और भादवे में अच्छी वर्षा हो श्रावण में कम वर्षा हो और कार्तिक में सुकाल हो।।२२२।।

कन्याभोगेगुरोर्जातिमेघनामतमस्तमः ।
भाद्रसम्वत्सरस्तत्रसप्तमासाश्चरौरवम् ।।२२३।।

जब कन्या राशि पर बृहस्पति आवे तो उसे भाद्रपद वर्ष कहते हैं। उसमें तमनाम मेघ वर्षता है और सात महीने दुःख रहता है।।२२३।।

ततः परंसुभिक्षंस्यात्कार्तिकान्माधवावधं ।
धान्यसंग्रहणेलाभोद्विगुणोभाद्रमासजः ।।२२४।।

इसके पीछे कार्तिक से लेकर वैशाख तक सुभिक्ष रहता है। इस अवसर में धान्य संग्रह करने से भादवें में दूना लाभ होता है।।२२४।।

चतुष्पदानांपीडापि गोधूमाः शालिशर्कराः ।
तैलंमाषामहर्घाणि गुडादीक्षुरसस्तथा ।।२२५।।

उस वर्ष में चौपायों में पीड़ा हो, गेहूँ, धान्य, शक्कर, तेल, उड़द, ईख और गुड़ यह महँगे हो।।२२५।।

शूद्राणामंत्यजानांचकष्टंसौराष्ट्रमण्डले ।
खण्डवृद्धिर्दक्षिणस्यामुत्पातोम्लेच्छमण्डले ।।२२६।।

तथा शूद्र और अन्त्यजों को कष्ट हो। सौराष्ट देश में कष्ट दक्षिण में खण्ड वृष्टि और म्लेच्छ देश में उत्पात हों।।२२६।।

भेदपाटे भृगालेचपरचक्रभयंरणः ।
सर्पदंशोवह्निभयंमेघोल्पश्चरसेल्पता ।।२२७।।

भेदपाट और शृगाल देश में शत्रु से भय और युद्ध हो। साँपों के काट खानेकी तथा अग्निकी शिकायतर रहे। मेघ और रस कम हों।।२२७।।

मरुदेशेछत्रभंगश्चैत्रेवामाधवेभवेत् ।
गोधूमघृततैलानिमहर्घाणिसमादिशेत् ।।२२८।।

चैत्र वा वैशाखमें मरु देशमें छत्रभंग हो। गेहूँ घी तेल महँगे बिकें।।२२८।।

वस्त्रकम्बलधातूनामन्नादेश्चसमर्घता ।
धान्यसंग्रहआषाढेभाद्रेलाभश्चतुर्गुणः ।।२२९।।

वस्त्र कम्बल धातु यह सस्ते हों और आषाढ में धान्य संग्रह करने से भादवे में चौगुणा लाभ हो।।२२९।।

गुरोस्तुलायांमेघाख्यः तक्षकोवत्सरोऽश्विनः ।
तदातिवृष्टिर्मंजिष्ठानालिकेरसमर्घता ।।२३०।।

यदि गुरु तुल राशि पर आवे तो वह आश्विन नाम का वर्ष होता है उसमें तक्षक मेघ अत्यन्त वृष्टि करता है। और मंजीठ तथा नारियल महँगे होते हैं।।२३०।।

अन्योन्यराजयुद्धानिसमर्घत्वाज्यतैलयोः ।
मार्गशीर्षतथापौषेद्वयेधान्यस्यसंग्रहः।
लाभः स्यात्पंचमेमासेमार्गात्प्रारभ्यचैत्रतः ।
छत्रभंगस्ततोराजविग्रहः क्वापिमंडले ।।२३२।।

राजाओं में अन्योन्य युद्ध हो घी तेल सस्ते हों। यदि मंगसिर और पौष में धान्य संग्रह करे तो पांचवें महीने (चैत्र या वैशाख में) लाभ हो। और कहीं छत्रभंग तथा राजाओं में विग्रह हों।।२३१।।२३२।।

उत्पातोमरुदेशेस्यान्मार्गेचौरभयंतथा ।
कोटजेसलमेवादौपरचक्रगमोमतः ।।२३३।।

मारवाड़ में उत्पात हों तो मंगसिर में चोर भय हो। कोट और जैसलमेर आदि में परचक्र हो।।२३३।।

रसक्रयाणकादीनांसंग्रहेणचतुर्गुणः ।
लाभश्चतुर्थकेमासेधातूनांचमसमर्घता ।।२३४।।

रसादिकों के संग्रह से चौथे मास में लाभ हो तथा धातु सस्ते हों।।२३४।।

वृश्चिकस्थेगुरौसोममेघः कार्तिकमासतः ।
सम्वत्सरः खण्डवृष्टिर्धान्यमल्पंभयंमहत् ।।२३५।।

वृश्चिक का बृहस्पति हो तब कार्तिक वर्ष होता है उसमें सोम मेघ वर्षता है। खण्ड वर्षा होती है और खेतियां कम पैदा होती हैं। तथा भय अधिक होता है।।

गृहेपरस्परंवैरमष्टौमासानसंशयः ।
भाद्राश्विनकार्तिकाख्यास्त्रयोमासामहर्घता ।।२३६।।

लोगों के घरों में आठ महीने तक परस्पर वैर भाव रहता है। भाद्रपद आश्विन कार्तिक इन तीनों में महँगाई होती है।।२३६।।

हेमरूप्यंकांस्यताम्रतिलाज्य श्रीफलादिषु ।
महर्घंगुडकार्पासलवणश्वेतवस्त्रकम् ।।२३७।।

सोना, चांदी, कांसी, तांबा, तिल, घी, श्रीफल, गुड़, कपास, लवण और सफेद वस्त्र यह महँगे होते हैं।।२३७।।

महिषीवृषभाह्यश्वाः समर्घामध्यमंडले ।
पीडास्यान्म्लेच्छलोकानांमहोत्पातश्चसंभवेत् ।।२३८।।

भैंस, बैल, घोड़े, यह मध्य प्रदेश में सस्ते होते हैं। और म्लेच्छ लोगों में पीड़ा होती है तथा बड़े उत्पात रहते हैं।।२३८।।

देशभंगोप्यल्पवृष्टिः स्त्रीणामपिचदुःखिता ।
मरौतथानागपुरेदेशेक्लेशाकुलाः प्रजाः ॥२३९॥

देशभंग अल्प वृष्टि तथा स्त्रियों को दुःख होता है। मरु देश तथा नागपुर की प्रजा क्लेशों में आकुल होती है॥२३९॥

धनेगुरौहेममालीमेघसम्वत्सरस्तथा ।
मार्गशीर्षेदिव्यवृष्टिः स्त्रीणांपीडागृहेगृहे ॥२४०॥

धन का बृहस्पति हो तो मार्गशीर्ष संवत्सर होता है उसमें हेममाली मेघ वर्षता है और घर घर में स्त्रियों को पीड़ा होती है॥२४०॥

पूर्वकालेभवेद्धान्यंगोधूपशालिर्शकराः ।
कार्पासश्चप्रवालानिकांस्यलोहंघृतंत्रपु ॥२४१॥
हेमरूप्यमहर्घाणितिलास्तैलंगुडस्तथा ।
पूगीफलंश्वेतवस्त्रंसमर्घंचक्वचिद्भवेत् ॥२४२॥

पूर्वकाल में धान्य, गेहूँ, चावल, शक्कर अधिक हों और कपास, प्रवाल, कांसी, लोह, घी, सीसा, सोना, चांदी यह महँगे हों तथा तिल तेल, गुड़, सुपारी श्वेत वस्त्र यह कुछ सस्ते हों॥२४१॥२४२॥

मार्गशीर्षात्पुनर्ज्येष्ठंवयावद्घृतमहर्घता ।
महिषीवाजिधेनूनांमंजिष्ठायामहर्घता ॥२४३॥

मंगसिर से लेकर जेठ तक घी महंगा हो और भैंस, घोड़े, गौ, मंजीठ महँगे हो॥२४३॥

मार्गशीर्षेतथापौषेमंजिष्ठाहिंगुमौलिकम् ।
जातीपूगीफलंचैवप्रवालानांमहर्घता ॥२४४॥

मगशिर तथा पौष में मँजीठ हींग, मोती, जायफल, सुपारी और

प्रवाल महँगे हो।।२४४।।

चतुष्पादादिकार्पाससंग्रहोरसमाषकान् ।
तल्लाभः सप्तमेमासेंप्रोक्तोव्यक्तश्चतुर्गुणः ।।२४५।।

चौपाये आदि तथा कपास संग्रह करने से सात महीने पीछे चौगुणा लाभ होता है।।२४५।।

गुरौमकरगेमेघोजलेन्द्रः पौषवत्सरः ।
चतुष्पदक्षयोभूम्यांदुर्भिक्षंनिर्जलोजनः ।।२४६।।

जब गुरु मकर राशि में आवे तब पौष वर्ष होता है उसमें जलेन्द्रमेघ वर्षता है। वह चौपायों का नाश और पृथ्वी पर दुर्भिक्ष तथा मनुष्यों को निर्जल कर देता है।।२४६।।

उत्तरेपश्चिमेदेशेखण्डवृष्टिः कदापिच ।
पूर्वस्यांदक्षिणेचैवदुर्भिक्षंराज्यविग्रहम् ।।२४७।।

उत्तर तथा पश्चिम देशों में खण्ड वृष्टि और पूर्व दक्षिण में राज विग्रह तथा दुर्भिक्ष करता है।।२४७।।

पापबुद्धिरतालोकाहाहाभूताचमेदिनी ।
जलतैलाज्यदुग्धान्नरक्तवस्त्रेमहर्घता ।।२४८।।

लोग पापबुद्धिरहित हो जाते हैं। और पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता है। जल, तेल, घी, दूध, अन्न और लाल वस्त्र यह महँगे हो जाते हैं।।२४८।।

उत्तमामध्यमाः सर्वेसर्वभक्षणतत्पराः ।
क्षत्त्रियाणांछत्रभंगोम्लेच्छानांचततः क्षयः ।।२४९।।

उत्तम मध्यम सब ही सर्वभक्षी हो जाते हैं और क्षत्रियों का छत्रभंग तथा म्लेच्छों का क्षय होता है।।२४९।।

चैत्राश्विनाषाढमासास्त्रयोमहर्घहेतवः ।
पश्चाद्धान्यंसुभिक्षंस्यात्प्रजापीडादितस्कराः ।।२५०।।

चैत्र आषाढ़ और आश्विन इन तीनों महीनों में अन्न तेज रहके पीछे सस्ता हो तथा प्रजा में पीड़ा और चौर भय हो।।२५०।।

हेमरूप्यंताम्रलोहंकर्पूरंचन्दनादिकम् ।
महर्घंनर्मदातीरे अन्यदेशेशुभंभवेत् ।।२५१।।

सोना, चांदी, तांबा, लोह, कपूर और चन्दन आदि नर्मदा किनारे महंगे हों और अन्यत्र शुभ हों।।२५१।।

मेघेमालवकेदेशेभंगोवर्षानभूयसी ।
व्याधयोबहुलारूप्यधातूनांचमहर्घता ।।२५२।।

मालव देश में भंग हो और बहुत वर्षा नहीं हो, व्याधियां बहुत हों तथा चांदी महँगी हो।।२५२।।

भेदपाटे चकटकेमार्गशीर्षेपिपौषके ।
महाजनानांपीडापिच्छत्रभंगोमहाभयम् ।।२५३।।

भेदपाट और कटक में मंगशिर पौष में बड़े लोगों को पीड़ा हो छत्रभंग तथा भय हो।।२५३।।

देशग्रामपुरादीनांविध्वंसोयुद्धसंभवः ।
शालयोयवगोधूमामहर्घाः स्युस्तथारसाः ।।२५४।।

देश ग्राम पुरादि में विध्वंसक युद्ध हो। और चावल, जौ, गेंहू यह महँगे हो।।२५४।।

कुंभेगुरौवज्रदंशोमेघोमाघादिवत्सरः ।
सुभिक्षंजायतेतत्रऋषिदेवद्विजार्चनम् ।।२५५।।

कुम्भ का बृहस्पति हो तो माघ वर्ष होता है उसमें वज्रदंश मेघ वर्षता है। उसमें सुभिक्ष होता है और ऋषि देवता तथा ब्राह्मणों की।

पूजा होती है।।२५५।।

कांस्यंचपित्तलंलोहंमंजिष्ठात्रपुकांचनम् ।
एषांमासत्रयंयावत्समार्घत्वंप्रजायते ।।२५६।।

कांसी, पीतल, लोह, मंजीठ, सीसा, सोना इनका ३ मास तक सस्तापन रहे।।२५६।।

माघफाल्गुनचैत्रेषुरोगामासत्रयेमताः ।
महर्घलवणोलोकेमरौधान्यमहर्घकम् ।।२५७।।

माघ–फाल्गुन–चैत्र में रोग हो। नमक महँगा तथा मरु देश में धान्य महँगा हो।।२५७।।

चैत्रवैशाखयोः सिंधुदेशेकटकचालकः ।
वस्त्रकंबलहिंगूनांमहर्घत्वंप्रजायते ।।२५८।।

चैत्र वैशाख में सिंधु देश में कटक तथा चालक प्रदेश में वस्त्र कंबल हींग महंगे हों।।२५८।।

कार्तिकेआश्विनेरोगाश्छत्रभंगोमहद्भयम् ।
रसकार्पासवस्त्राणांसर्वत्रस्यान्महर्घता ।।२५९।।

कार्तिक आश्विन में रोग हों, छत्रभंग तथा महाभय हो। और रस कपास वस्त्र यह सर्वत्र महंगे हों।।२५९।।

श्रावणेवाभाद्रपदेधान्यंसंगृह्यतेयदा ।
पौषेस्याद्द्विगुणोलाभः युगंधर्याश्चविक्रयात् ।।२६०।।

यदि श्रावण भादवें में धान्य संग्रह करे तों पौष में दुगुना लाभ हो तथा युगंधरी के विक्रय से भी लाभ हो।।२६०।।

मीनेगुरौफाल्गुनेस्याद्वत्सरः संभवोघनः ।
खण्डवृष्टिर्महर्घाणिसर्वधान्यानिभूतले ।।२६१।।

मीन के बृहस्पति में फाल्गुन संवत्सर होता है उसमें संभव मेघ

वर्षता है। खण्ड वृष्टि होती है और सब धान्य महंगे होते हैं।।२६१।।

विविधारोगपीडाचदेशान्तरेव्रजेज्जनः ।
मासानांपंचकंयावद्भयंराजविरोधतः ।।२६२।।
पश्चात्सुखंसुभिक्षंच शालिगोधूमशर्कराः ।
तिलतैलगुडानांचमहर्घत्वंसमीरितम् ।।२६३।।

कई प्रकार की रोगपीड़ा से लोग देशान्तर में चले जाय। और राज विरोध से पांच महीने भय रहे। पीछे सुख तथा सुभिक्ष हो। शाली, गेंहूं, शक्कर, तिल, गुड़, यह महंगे हों।।२६२।।२६३।।

मञ्जिष्ठानारिकेलानांश्वेतवस्त्रंचदन्तकाः ।
कर्पूरलवणाज्यानांमहर्घत्वंप्रजायते ।।२६४।।

मजीठ, नारियल, श्वेत वस्त्र, हाथीदांत, कपूर, नमक और घी महंगे हों।।२६४।।

पौषेक्लेशसमुत्पत्तिस्तथाफाल्गुनचैत्रयोः ।
मरुदेशेमहापीडादुर्भिक्षंतत्रजायते ।।२६५।।

पौष में क्लेश उत्पन्न हो तथा फाल्गुन और चैत्र में मरुदेश में महापीड़ा तथा दुर्भिक्ष हो।।२६५।।

चतुष्पादानांमरणंवैशाखज्येष्ठयोर्भवेत् ।
आषाढे श्रावणेधान्यंघृततैलमहर्घता ।।२६६।।

वैशाख जेठ में चौपायों का मरण और आषाढ श्रावण में धान्य तथा घी तेल महंगे हों।।२६६।।

श्रावणस्योत्तरेपक्षेमहावर्षाप्रजायते ।
घृतंसमर्घंभाद्रपदेशुभावाश्विनकार्तिकौ ।।२६७।।

श्रावण शुक्ल में महावर्षा हो, भादवे में घी सस्ता हो और आश्विन कार्तिक में शुभ हो॥२६७॥

समर्घास्तिलकार्पासाश्छत्रभंगस्ततोर्बुदे ।
मार्गशीर्षेतथापौषेउत्पातोमरुमण्डले ॥२६८॥

तिल, कपास, सस्ते हों, आबू में छत्रभंग हो और मगशिर पौष में मारवाड़ में उत्पात हो॥२६८॥ (इति)

अथ वक्रीविचारः

मेषराशिगतोजीवोयदास्यान्मीनसङ्गतः ।
तदाषाढश्रावणयोर्गोमहिष्यः खरोष्ट्रकाः ॥२६९॥
एतेमहर्घतांयांतिमासद्वयंनसंशयः ।
पश्चाद्भाद्रपदेमासेआश्विनेहेममहेश्वरि ॥२७०॥

"वक्री विचार"– मेष का बृहस्पति वक्री होकर मीन पर आ जायं तो आषाढ श्रावण में गाय, भैंस, गधे, और ऊंट यह दो महीने निःसंदेह महंगे हो, पीछे हे पार्वती! भादवा आसोज में सस्ते हों॥२६९॥२७०॥

चन्दनंकुसुमंवापियेचान्येपिसुगंधयः ।
तैलपण्यानिसर्वाणिमासद्वयंमहर्घता ॥२७१॥

चन्दन, पुष्प तथा और भी सुगन्धवाली वस्तुएं और तैलादि सब दो मास महंगे हों॥२७१॥

वृषराशिगतेजीवेवक्रीस्यान्मासपंचके ।
वृषभादिचतुष्पादैस्तुलाभाण्डेमहर्घता ॥२७२॥

वृप का बृहस्पति वक्री हो तो पांच महीने बैल आदि चौपाये तथा तौल के बिकनेवाले पदार्थ और वर्तने महंगे हों॥२७२॥

संग्रहः सर्वधान्यानांमासाष्टकेमहर्घता ।
श्रीःश्रावणेभाद्रपदेआश्विनेकार्तिकेतथा ।।२७३।।
तत्परंसर्वधान्यानांचतुष्पादांविशेषतः ।
विक्रयाद्विगुणोलाभः त्रिगुणस्तुचतुष्पदे ।।२७४।।

सब धान्यों का संग्रह किया जाय तो लाभ हो क्योंकि आठ महीने महंगाई रहे। श्रावण, भादवा, आसोज और कार्तिक के पीछे सब धान्य तथा विशेषकर चौपाये बेचने से दुगुणा लाभ हो और चौपाया में तिगुणा लाभ हो।।२७३।।२७४।।

मिथुनस्थः सुरगुरुः विकारंकुरुतेयदा ।
अष्टमासीभवेत्क्रूराचतुष्पदमहर्घता ।।२७५।।

मिथुनका गुरु वक्री हो आठ महीने चौपाये महँगे हों।।२७५।।

मार्गशीर्षादयोमासाः सुभिक्षंवसनंभुवि ।
लोकःसर्वोभवेत्स्वस्थोदुर्भिक्षंक्वचिदादिशेत् ।।२७६।।

मार्गशीर्षादि महीनों में वस्त्रादि सस्ते हों। सब लोगों का स्वास्थ्य अच्छा रहे तथा कुछ दुर्भिक्ष हो।।२७६।।

कर्कराशिगतोजीवोयदावक्रीभवेत्तदा ।
दुर्भिक्षंजायतेघोरंराजानोयुद्धतत्पराः ।।२७७।।

जब कर्क का बृहस्पति वक्री हो तो घोर दुर्भिक्ष हो तथा राजाओं में युद्ध हो।।२७७।।

राष्ट्रभंगविजानीयाद्वैरोपद्रवसंकुलम् ।
रसादिसर्वसंयोगोघृततैलादिखंडकम् ।।२७८।।
कार्पासादीनिवस्तूनिलाभंदद्युर्नसंशयः ।
मार्गादिमासाः सप्तैवसर्वधान्यमहर्घता ।।२७९।।

बैर के उपद्रव से राष्ट्रभंग हो, रसादि सब वस्तु घी तेल खांड औ

कपास आदि में निस्संदेह लाभ हो और मार्गशीर्षादि सात महीनों में सब धान्य तेज रहें।।२७८।।२७९।।

सिंहराशिगतोजीवोविकारंकुरुतेयदा ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंसर्वलोकेप्रसन्नता ।।२८०।।

सिंह का बृहस्पति वक्री हो तो सुभिक्ष हो–क्षेमारोग्य हो और सब लोग प्रसन्न रहें।।२८०।।

सर्वधान्यंचसंगृह्यतुलभाण्डानियानिच ।
गतेषुनवमासेषुपश्चाद्विक्रयमादिशेत् ।।२८१।।

सर्व धान्यों का संग्रह करना चाहिये और वर्तनों का संग्रह करना चाहिये। नौ महीने रखकर पीछे वेचने से लाभ होता है।।२८१।।

कन्याराशिगतोजीवो विकारंकुरुतेयदा ।
सूक्ष्मश्चैवभवेल्लाभोपुण्यकर्मवशात्पुनः ।।२८२।।

कन्याका बृहस्पति वक्री हो तो पुण्यके प्रभावसे कुछ लाभ हो।।२८२।।

तुलाराशिगतोजीवोविकारंकुरुतेयदा ।
बहुभाण्डसुगन्धीनिकार्पासलवणानिच ।।२८३।।
समर्घाणिभवन्त्येवमार्गशीर्षव्यतिक्रमे ।
दशमासात्ययेलाभोद्विगुणस्तत्रसंभवेत् ।।२८४।।

तुल का गुरु वक्री हो तो बहुत बर्तन, सुगन्ध, कपास, नमक, यह सस्ते हों, मार्गशीर्ष के बाद दस महीने से पीछे दूना लाभ हो।।२८३।।२८४।।

वृश्चिकंयदिसंप्राप्यवक्रयांति बृहस्पतिः ।
अन्नस्यसंग्रहस्तत्रधान्यादेस्तुविशेषतः ।।२८५।।

यदि वृश्चिक का बृहस्पति वक्री हो तो अन्न का तथा विशेषकर धान्य का संग्रह करना चाहिये।।२८५।।

कार्पासस्यघृतादेर्वामागशीर्षेचविक्रये ।
द्विगुणोजायतेलाभस्तदासंग्रहकारिणः ॥२८६॥

संग्रह करनेवालों को कपास तथा घी आदि मगशिर में बेचने से दुगुना लाभ हो॥२८६॥

धनूराशिगतोजीवः करोतिवक्रतायदा ।
अचिरेणैवकालेनसर्वधान्यसमर्घता ॥२८७॥

धन का बृहस्पति वक्री हो तो बहुत ही जल्दी सब धान्य महँगे हो जाते हैं॥२८७॥

गोधूमचणकादीनिधान्यानिक्रय्यकाणिच ।
समर्घाण्यन्यवस्तूनिगुडश्चलवणादिकम् ॥२८८॥

गेहूं,चने आदि बेचनेके धान्य और गुड़ लवणादि सस्ते हों॥२८८॥

चैत्रादिसंग्रहस्तेषांमार्गशीर्षादिविक्रयः ।
सर्वाणिलाभंलभतेमासैकादशकात्यये ॥२८९॥

इनका चैत्रादि में संग्रह करके मार्गशीर्षादि में बेचने से सबही में लाभ होता है॥२८९॥

मकरस्थो यदा जीवः करोति वक्रगामिताम् ।
आरोग्यंकुरुतेधान्यंसमर्घंनात्रसंशयः ॥२९०॥

मकर का बृहस्पति वक्री हो तो आरोग्यता करे और धान्य सस्ता हो॥२९०॥

कुंभराशिगते जीवः करोति यदि वक्रताम् ।
आरोग्यंसर्वस्वस्थत्वंराज्ञांश्रीर्जयसंभवः ॥२९१॥

कुंभ का बृहस्पति वक्री हो तो आरोग्यता करे, सब स्वस्थ रहें और राजाओं को विजयश्री मिलें॥२९१॥

सर्वधान्येषुनिष्पत्तिः सर्वधान्यस्यविक्रयः ।
घृतंतैलतुलाभांडंमासाष्टकेचसंग्रहः ॥२९२॥
पश्चाद्विक्रयतोलाभः सुभिक्षंनिर्भयाजनाः ।
पूजागोद्विजदेवानां भवत्येव न संशयः ॥२९३॥

सब धान्य की उत्पत्ति हो, सब धान्यों के विक्रय से लाभ हो। घी तेल तुला और भाण्ड इनका ८ मास संग्रह करके पीछे बेचे तो लाभ हो। सुभिक्ष हो। मनुष्य निर्भय हों और गौ ब्राह्मण तथा देवताओं का निःसंदेह पूजन हो॥२९२॥२९३॥

मीनराशिगतोजीवो वक्रतामुपयातिचेत् ।
धनक्षयस्तदालोकेचौराद्राजापिरोषितः ॥२९४॥

मीन का गुरु वक्री हो तो चौर तथा राजाओं के द्वारा धन का नाश हो॥२९४॥

निराधाराप्रजापीडाग्रहभूतादिदोषतः।
तुलाभांडंगुडःखंडाअर्घंददतिवांछितम् ॥२९५॥

निराधार प्रजा को ग्रह भूतादि दोषों से पीड़ा हो, तुल भाण्ड गुड़ खाण्ड यह इच्छित लाभ दें॥२९५॥

लवणंघृततैलादिसर्वधान्यमहर्घता ।
कार्पासस्यार्घसम्प्राप्तिर्लाभस्तेषांचतुर्गुणः ॥२९६॥

लवण, घी, तैलादि और सब धान्य महँगे हों, कपास भी महँगी हो। इन सब में चौगुना लाभ हो॥२९६॥

अथ नक्षत्रभोगविचारः

कृत्तिकारोहिणीऋक्षेयदातिष्ठेद्बृहस्पतिः ।
मध्यमात्रभवेद्वृष्टिः सस्यंभवतिमध्यमम् ॥२९७॥

"नक्षत्र भोग विचार" यदि कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र पर

बृहस्पति हो तो वर्षा तथा खेती मध्यम हो।।२९७।।

मृगशीर्षेतथार्द्रायांयदितिष्ठेद्बृहस्पतिः ।
सुभिक्षंलभतेसौख्यंवृष्टिजांतसदाजनः ।।२९८।।

मृगशिर और आर्द्रा पर बृहस्पति हो तो सुभिक्ष हों, लोगों को सुख मिले और वर्षा हो।।२९८।।

आदित्यपुष्याश्लेषासुगुरुभोगेप्रसंगिनी ।
अनावृष्टिभयंघोरंदुर्भिक्षंसर्वमण्डले ।।२९९।।

पुनर्वसु पुष्प और श्लेषा पर गुरु हो तो अनावृष्टि से सर्वत्र दुर्भिक्ष हो।।२९९।।

मघाचपूर्वाफाल्गुन्यांयदातिष्ठेद्बृहस्पतिः ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंदेशयोगंबहूदकम् ।।३००।।

मघा और पूर्वा फाल्गुनी पर हो तो देश में सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और बहुत जल हो।।३००।।

उत्तराफाल्गुनीहस्तेगुरौवर्षासुखंजने ।
चित्रायांचतथास्वातौविचित्राधान्यसंपदः ।।३०१।।

उत्तराफाल्गुनी तथा हस्त पर बृहस्पति हो तो वर्षा हो, लोग सुखी रहें, और चित्रा स्वाती पर हो धान्य संपत्ति विचित्र हो।।३०१।।

विशाखायांचराधायांसस्यंभवतिध्ययम् ।
मध्यमैवभवेद्वर्षावर्षं तदपि मध्ययम् ।।३०२।।

विशाखा तथा अनुराधा पर बृहस्पति हो तो अन्न मध्यम हो और वर्षा मध्यम होने से वर्ष भी मध्यम हो।।३०२।।

गुरुज्येष्ठामूलचारेमासद्वयेनवर्षणम् ।
परतःखण्डवृष्टिः स्यान्नृपाणांदारुणोरणः ।।३०३।।

ज्येष्ठा तथा मूल का बृहस्पति हो तो दो मास वर्षा नहीं हो, पीछे

खंड वर्षा हो और राजाओं में दारुण रण हो।।३०३।।

जीवेपूर्वोत्तराषाढयुक्तेलोकसुखंमतम् ।
त्रिमासाज्जायतेवर्षामासमेकंनवर्षति ।।३०४।।

पूर्वोत्तराषाढ में बृहस्पति हो तो लोग सुखी रहें, तीन महीने जल वर्षे और एक मास नहीं वर्षे।।३०४।।

श्रवणेवाधनिष्ठायांवारुणेगुरुसंगमे ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंबहुसस्याचमेदिनी ।।३०५।।

श्रवण धनिष्ठा तथा शतभिषा का बृहस्पति हो तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य हो और पृथ्वी पर खेतियाँ बहुत उत्पन्न हों।।३०५।।

पूर्वोत्तराभाद्रपदयोरनावृष्टिभयादिकम् ।
पौष्णाश्विनीभरणीषुसुभिक्षंधान्यसम्पदा ।।३०६।।

पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद पर गुरु हो तो अनावृष्टि आदि का भय हो। और रेवती, अश्विनी, भरणी पर हो तो सुभिक्ष हो तथा धान्य सम्पदा अच्छी हो।।३०६।।

विशेषफलम्

मृगादिपंचकंचित्राद्वयमेवाष्टकन्तथा ।
नक्षत्रेषुशुभंजीवोशेषेषुशुभमादिशेत् ।।३०७।।

"विशेष फल"-मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा चित्रा, स्वाती, विशाखा, इनका गुरु शुभ होता है।।३०७।।

स्वातिमुख्याष्टकेजीवेत्वश्विन्यादित्रिकेपिच ।
शनिराहुकुजैश्चैवप्रत्येकंसहितोभवेत् ।।३०८।।
सञ्चरतेयदाकालेसुभिक्षंजायतेतदा ।
मृगादिदशकेजीवेधनिष्ठापंचकेथवा ।।३०९।।

भौमादिसहितोगच्छेद्दुर्भिक्षंतत्रजायते ।
एकराशिगतेचैवएकर्क्षेतुमहद्भयम् ।।३१०।।

स्वाति को आदि लेकर आठ नक्षत्रों पर अथवा अश्विन्यादि तीन पर शनि, राहु, मंगल इन सहित बृहस्पति विचरे तो सुभिक्ष होता है। मृगशीर्षादि पांच में तथा धनिष्ठादि ६ में भौमादि सहित बृहस्पति चले तो दुर्भिक्ष हो। एक राशि का गुरु एक ही नक्षत्र पर रहे तो महाभय हो।।३०८।।३०९।।३१०।।

अतिचारगते जीवेवक्रीभूतेशनैश्चरे ।
हाहाभूतंजगत्सर्वंरुण्डमालामहीतले ।।३११।।

बृहस्पति अति चारी (शीघ्र गति वाला) हो और शनैश्चर वक्री हो तो पृथ्वी पर उस समय सब जगत् में हाहाकार मचे और महीतल पर रुण्डमालायें हो।।३११।।

उदयफलम्

मेषेगुरूदयभवात्त्वतिवृष्टिरेवदुर्भिक्षमुत्तममृतिर्वृषभेसुभिक्षम् ।
पाषाणशालिमणिरत्नमहर्घभावः स्वावस्थयाभिथुनके-
गणिकासुपीडा ।।३१२।।

"उदय फल" –मेष में गुरु उदय होने से अतिवृष्टि के कारण दुर्भिक्ष में मरण होता है। वृष राशि में उदय हो तो सुभिक्ष होता है। पाषाण शाली–मणि रत्न मंहगे होते हैं। और मिथुन में उदय हो तो अपनी अवस्था में वेश्याओं में पीड़ा होती है।।३१२।।

स्यात्कर्कटेजनमृतिर्जलवृष्टिरल्पासिंहेतथैवकथितंबहुधान्यलाभः ।
कन्यास्थितस्यचगुरोरुदयेशिशूनांपीडातथैवगणिकासुचवृद्धलोके।।

कर्क में हो तो मनुष्यों की मृत्यु हो, जल वृष्टि कम हो, सिंह में हो तो बहुत धान्य हो, कन्या पर बैठे हुए गुरु के उदय से बालकों को पीड़ा

हो तथा वेश्या और वृद्धों को पीड़ा हो।।३१३।।

काश्मीरचन्दनफलादिमहर्घतास्याल्लाभोमहान्
व्यवहृतौचतुलावलंबे । दुर्भिक्षतालिधनुषोरपिचाल्पवर्षा
लोकेरुजोमकरकेबहुधान्यवृष्टिः ।।३१४।।

तुल के बृहस्पति के उदय होने से कश्मीरी चन्दन तथा फलादि महँगे हों, व्यवहार में लाभ हो। वृश्चिक में दुर्भिक्ष और धन में अल्प वर्षा हो और मकर में रोग तथा बहुत धान्य वर्षा हो।।३१४।।

कुंभेगुरोरुदयतासकलेपिदेशेवृष्टिर्घनेपिचघनेतिमहर्घमन्नम् ।
मीनेल्पवृष्टिरवनीश्वरयुद्धयोगः पीडाजनस्यमरकान्नरकानुरूपा।।

कुम्भ के बृहस्पति के उदय होने से सब देशों में बहुत वर्षा और बहुत महँगाई हो और मीन में उदय होने से राजाओं के युद्ध का योग हो और मनुष्यों में मरकी से नरक समान पीड़ा हो।।३१५।।

मासफलम्

जीवोभ्युदेतियदिकार्तिकमासिवह्निर्लोकेनवृष्टि-
रपिरोगनिपीडनंच । मार्गेपिधान्यविगमंसुखमेवपौषे
नीरोगतासकलधान्यसमुद्भवश्च ।।३१६।।

"मासोदय फल"–यदि कार्तिक में बृहस्पति उदय हो तो वह्नि भय हो, अनावृष्टि हो, रोग पीड़ा हो। मगशिर में हो तो धान्य बाहर बहुत जाय। पौष में सुख हो और नैरोग्यता हो तथा सब धान्य उत्पन्न हों।।३१६।।

माघेतथैवपरतोभुविखण्डवृष्टिश्चैत्रेविचित्रजलवृष्टिरतोपिराधे।
सर्वंसुखजलंनिरोधनमेवशुक्लेऽप्याषाढकेनृपरणान्नमहर्घताच।३१७।।

माघ और फाल्गुन में उदय हो तो खण्ड वृष्टि हो, चैत्र में विचित्र वर्षा, वैशाख में सर्व सुख, ज्येष्ठ में जल की रुकावट और आषाढ में

राजाओं में रण तथा अन्न की महर्घता हो।।३१७।।

आरोग्यंश्रावणेवर्षाबहुलासुखिनोजनाः ।
भाद्रमासेधान्यनाशआश्विनः सुखदः स्मृतः ।।३१८।।

श्रावण में गुरु उदय हो तो आरोग्यता बढ़े, वर्षा बहुत हो, लोग सुखी रहें। भादवे में उदय हो तो धान्य नाश हो और आश्विन में हो तो सुख देवे।।३१८।। (इति)

अस्तफलम्

यद्यस्तमेत्यजगतोगुरुरल्पवृष्टिर्दुर्भिक्षमेवकुरुते वृषभेगुरुःस्यात् ।
तैलंघृतंचलवणंप्रभवेन्महर्घंमृत्युस्तथाल्पजलदोमिथुनेस्तमास्ते।।

"अस्त फल"–यदि मेष राशि पर स्थित हुआ बृहस्पति अस्त हो अल्प वर्षा हो, वृष का अस्त हो तो दुर्भिक्ष करे, मिथुन में हो तो तैल घी लवण की महर्घता हो। मनुष्यों की मृत्यु हो और वर्षा कम हो।।३१९।।

कर्केस्ततोनृपभयंकुशलंसुभिक्षंसिंहेनृणामरणलोकधनादिनाशः ।
कन्यास्ततःसकलधान्यसमर्घतास्यात्क्षेमंसुभिक्षमतुलंजनलोकनाशः।

कर्क का गुरु अस्त हो तो राजाओं में भय हो–कुशल हो–सुभिक्ष हो। सिंह में अस्त हो तो लोक धनादि का नाश हो। कन्या का अस्त हो तो सब धान्य सस्ते हों, क्षेम और सुभिक्ष हो।।३२०।।

पीडाद्विजेषुबहुधान्यसमर्घताचजातेतुलास्तमयनेनयनेषुरोगः ।
राज्ञांभयान्यलिनितस्करलुंठनानिमाषास्तिलाश्चबहवोधनुषास्तमास्ते ।

तुला का अस्त हो तो मनुष्यों का नाश हो, ब्राह्मणों में पीड़ा हो, धान्य की बहुत समर्घता हो। वृश्चिक में हो आंखे दूखने का विकार अधिक फैले। धन में हो तो राजाओं का भय हो, चोरों की लूट, खोस रहे, मकर में अस्त हो तो उड़द तिल अधिक हो।।३२१।।

कुम्भेगुरोरस्तमयात्प्रजायाः पीडापरंगर्भवतीच जाया ।
पीनेसुभिक्षंकुशलंसमर्घंधान्यंघनस्याल्पतयापि पृष्ठेः ॥३२२॥

कुम्भ का गुरु अस्त हो तो प्रजा में और गर्भवती स्त्रियों में पीड़ा हो। मीन का बृहस्पति अस्त हो तो सुभिक्ष हो, कुशल हो, धान्य की समर्घता हो और वर्षा कम हो तो भी धान्य अधिक हो॥३२२॥ (इति)

(७) अथ शुक्रचारः

शुक्रोदयात्फाल्गुनमासिवृद्धिरर्थस्यधान्यादिषुभैक्षवृत्तिः ।
चैत्रेविभूतिर्भुविमाधवेचरणोमहान्वृष्टिरतीवशुक्रे ॥३२३॥

(७) "शुक्र चार"– फाल्गुन में शुक्र का उदय हो तो अर्थ वृद्धि हो, धान्यादि में भैक्ष्यवृत्ति (भीख मंगापन) हो। चैत्र वैशाख में शुक्रोदय हो तो युद्ध अधिक हों और जेठ में उदय हो तो वर्षा अधिक हो॥३२३॥

आषाढमासेजलदुर्लभत्वंचतुष्पदार्तिर्नभसिप्रदिष्टा ।
समृद्धिरन्नस्यतुभाद्रमासेतथाश्विनेसम्पदएवसर्वाः ॥३२४॥

आषाढ में उदय हो तो जल दुर्लभ हो। श्रावण में हो तो चौपायों को दुःख हो, भादवे में हो तो अन्न की समृद्धि और आश्विन में हो तो सब सम्पत्ति हों॥३२४॥

शुभंपरंकार्त्तिकमार्गमासेपौषेमहच्छत्रविभंगएव ।
माघेपितद्वत्सकलंफलंस्यान्नचेत्पराब्दे जलदस्यरोधः ॥३२५॥

कार्तिक और मार्गशीर्ष में उदय हो तो शुभ हो। पौष में हो तो छत्रभंग हो। माघ में उदय हो तो भी सब फल ऐसा ही हो और अगले वर्ष में जल नहीं वर्षे॥३२५॥

मेषेशुक्रोदयेधान्यंमहर्घंरोगसंभवः ।
वृषेधान्यंसमर्घंस्यान्नृपास्तुष्टाः प्रजासुखम् ॥३२६॥

मेष राशि में शुक्र का उदय हो तो धान्य महँगे हो, रोग उत्पन्न हो। वृष में उदय हो तो धान्य सस्ता हो, राजा लोग प्रसन्न रहें और प्रजा में सुख हो।।३२६।।

मिथुनेलोकमरणंगोधूमाबहवोभुवि ।
कर्केतिवृष्टिर्धान्यस्यविनाशंचौरजंभयम् ।।३२७।।

मिथुन में लोकमरण हो, पृथ्वी पर गेंहू अधिक उपजें। कर्क में अतिवृष्टि से धान्य नाश हो और चोरों का भय रहे।।३२७।।

सिंहेपिकर्कवद्वाच्यंकन्यायांनृपपीडनम् ।
स्वल्पावृष्टिस्तुलायोगेसमर्घंधान्यमाहितम् ।।३२८।।

सिंह में भी कर्क की भाँति कहना चाहिये। कन्या में राजपीड़ा हो और स्वल्प वर्षा हो और तुल में धान्य के अधिकता से समर्घता हो।।३२८।।

वृश्चिकेबहुलावृष्टिर्दुर्भिक्षधान्यमल्पकम् ।
धनुष्यवर्षणंधान्यंमहर्घंमकरेतथा ।।३२९।।

वृश्चिक् में बहुत वर्षा हो, धान्य कम होने से दुर्भिक्ष हो। धन और मकर में अवर्षण से धान्य महँगा हो।।३२९।।

कुंभेतिविरलोमेघश्चतुष्पदविनाशनम् ।
मीनेसुभिक्षंलोकानांसुखंमेघमहोदयः ।।३३०।।

कुम्भ में मेघ कहीं कुछ वर्षे, चतुष्पदों का नाश हो और मीन में शुक्रोदय हो तो संसार में सुख तथा सुभिक्ष हो।।३३०।।

शुक्रेश्विन्यांब्राह्मणजातिविरोधो यवास्तिलामाषाः ।
स्वल्पाभरण्यांसंस्थेतुषधान्यमहर्घताचतिलनाशः ।।३३१।।

"नक्षत्र गत फल"–अश्विनी में शुक्र हो तो ब्राह्मण जाति में विरोध हो। जौ, तिल, उड़द, कमहों। भरणीपर हो तो तुष धान्य महँगे हो और

तिलों का नाश हो॥३३१॥

सर्षपमाषाल्पत्वमाग्नेयेसर्वधान्यनिष्पत्तिः ।
रोहिण्यामारोग्यंमृगेमहर्घाणिधान्यानि ॥३३२॥

कृत्तिका पर हो तो सरसों उड़द कम हों और सब धान्य उत्पन्न हों। रोहिणी में आरोग्यता और मृगशिरा में धान्य की महर्घता हो॥३३२॥

रौद्रेऽल्पवृष्टि रन्नमधौसुखंनश्यतिविशेषात् ।
पुष्यदुर्भिक्षभयंचौरः:सार्पेनवर्षास्यात् ॥३३३॥

आर्द्रा में अल्प वृष्टि हो पुनर्वस्तु में अन्न सुख का नाश हो। पुष्य में दुर्भिक्ष भय तथा चौर भय हो और श्लेषा में वर्षा नहीं हो॥३३३॥

मघादित्रितयेकष्टंहस्तेमेघमहोदयः ।
रोगवृष्टिस्तुचित्रायास्वातौक्षेमसुभिक्षता ॥३३४॥

मघा–पूर्वा–उत्तरा में कष्ट हस्त में मेघ का महोदय। चित्रा में रोग वृद्धि स्वाति में क्षेम और सुभिक्ष हो॥३३४॥

तरुदेवविशाखायांतुषधान्यमहर्घता ।
अल्पवृष्टिश्चमैत्रर्क्षेचतुष्पदप्रपीडनम् ॥३३५॥

विशाखा में तुष धान्य की महँगाई और अनुराधा में उदय हो तो अल्प वृष्टि तथा चौपायों को पीड़ा दे ॥३३५॥

द्वारानुसारात्शेषुफलमार्क्षैर्निगद्यते ।
चारानुसाराद्दुर्भिक्षंसुभिक्षंफलमादिशेत् ॥३३६॥

शेष नक्षत्रों का फल द्वारों के अनुसार जानना। और चार के अनुसार सुभिक्ष दुर्भिक्ष का फल [illegible]ना॥३३६॥

भरण्याद्यष्टकेभानांमेघद्वारंभृगोः स्मृतम् ।
मेघवृष्टिः प्रजानंदः समर्घंधान्यमेव च। ।।३७।।

"द्वार विचार"–भरणी को आदि लेकर आठ नक्षत्रों में शुक्र का मेघ द्वार होता है। इसमें मेंघ की वृष्टि प्रजा में आनंद और धान्य की सस्ती होती है।।३३७।।

मेघादिपंचकेशुक्रोधूलिद्वारेभ्युदीर्यते ।
प्रजादुःखंजलंनष्टंतदोपद्रवमादिशेत् ।।३३८।।

मेघादि पांच नक्षत्र में शुक्र का धूलिद्वार होते हैं, इसमें प्रजा को दुःख, जल का नाश और उपद्रव होते हैं।।३३८।।

स्वात्यादिसप्तकेराजद्वारंशुक्रोदयोभवेत् ।
लोकेभयंछत्रपतिक्षयंतत्रनिवेदयेत् ।।३३९।।

स्वाति को आदि लेकर सात नक्षत्रों में शुक्र का राजद्वार होता है। उसमें लोकभय और क्षेत्रपति का क्षय होता है।।३३९।।

श्रुत्यादिसप्तकेशुक्रोदयेलोकसुखंबहु ।
कनकद्वारमादिष्टंसुभिक्षंतत्रनिश्चितम् ।।३४०।।

श्रवणादि सात नक्षत्रों में शुक्रोदय होने से शुक्र का सुवर्ण द्वारा होता है। इसमें लोगों को बहुत सुख मिलता है और निश्चय सुभिक्ष होता है।।३४०।।

पृथ्वीसुखंस्यात्प्रतिपच्चतुष्केचौरोदयः पंचमिका चतुष्के ।
भूपालयुद्धंनवमीचतुष्केदुर्भिक्षवाताद्यसुखंतुशेषे ।।३४१।।

"तिथिफल"–प्रतिपदा आदि ४ तिथियों में शुक्रोदय हो तो पृथ्वी सुखी हो। पंचमी आदि चार में चोरोदय हो। नौमी आदि ४ में भूपालभय हो, द्वादशी आदि शेष में दुर्भिक्ष तथा वातादि का असुख हो।।३४१।।

शुक्रस्यास्तंगमाज्ज्येष्ठेमहावृष्टेः प्रजाक्षयः ।
आषाढेजलशोषः स्याच्छ्रावणेरौरवंमहत् ॥३४२॥

"अस्त फल"–जेठ में शुक्रास्त होने से महावृष्टि से प्रजाक्षय हो आषाढ में जल शोष और श्रावण में महा नरक तुल्य बर्ताव हो॥३४२॥

धनधान्यादिसम्पत्तिर्भवेद्भाद्रपदास्वतः ।
आश्विनेपिसुभिक्षायकार्तिकेवृष्टिहेतवे ॥३४३॥

भादवें में धान्यादि सम्पत्ति अपनी आप हो, आश्विन में सुभिक्ष और कार्तिक में वृष्टि हो॥३४३॥

मार्गशीर्षेभूपयुद्धंप्रजानांसुखसंभवः ।
पौषेमाघेछत्रभंगः फाल्गुनेऽग्निभयंमहत् ॥३४४॥

मार्गशीर्ष में भूपयुद्ध तथा प्रजा में सुख हो। पौष माघ में छत्रभंग और फाल्गुन में महा अग्निभय हो॥३४४॥

षण्मासानपिदुर्भिक्षंचैत्रेवनविनाशनम् ।
कालंतथैववैशाखेपीड़ाकाचिच्चतुष्पदे ॥३४५॥

छः महीने दुर्भिक्ष हो और चैत्र में वन विनाश हो। और वैशाख में अकाल हो तथा चौपायों में कुछ पीड़ा हो॥३४५॥

शुक्लपक्षेयदाशुक्रस्समुदेत्यस्तमेतिवा ।
राजपुत्रसहस्राणांमहीपिबतिशोणितम् ॥३४६॥

यदि शुक्ल पक्षमें शुक्र उदय होकर शुक्लही में अस्त भी हो तो हजार राजपुत्रोंका रुधिर पृथ्वी पर पड़े अर्थात् राजपूतोंमें युद्ध हो॥३४६॥

शुक्रस्यास्तंगमान्मेषेसर्वधान्यमहर्घता ।
वृषेचतुष्पदेपीडाधान्यनिष्पत्तिरल्पिका ॥३४७॥

"राशिफल"–मेष के शुक्र का अस्त हो तो सब धान्य महँगे हों। वृष

का शुक्र अस्त हो तो चौपायों को पीड़ा तथा धान्य की उत्पत्ति कम हो।।३४७।।

मिथुनेवैश्यपीडास्यादल्पवर्षाप्रजाभयम् ।
कर्कटेबहुलावृष्टिर्जायतेनात्रसंशयः ।।३४८।।

मिथुन में वैश्यों को पीड़ा हो, अल्प वर्षा तथा प्रजाभय हो, कर्क में निस्संदेह बहुत वर्षा हो।।३४८।।

सिंहेपीडाभूपवर्गेतथाऽनावृष्टिजंभयम् ।
कन्यायांवैद्यलोकस्यसूत्रधारस्यपीडनम् ।।३४९।।

सिंह में भूपवर्ग में पीड़ा हो और अनावृष्टि का भय हो, कन्या में वैद्य लोगों को तथा सूत्रधार (नटादिकों) को पीड़ा हो।।३४९।।

तुलायांसिंहवत्सर्वंदुर्भिक्षंवृश्चिकेमतम् ।
स्त्रीधान्यनाशोधनुषिमकरेधान्यसंपदः ।।३५०।।

तुला में सिंह की तुल्य हो और वृश्चिक में दुर्भिक्ष हो। धनु में स्त्री तथा धान्यका लाभ और मकरमें धान्यकी सम्पत्ति हो।।३५०।।

द्विजपीडाकुम्भराशौमीनेमेघमहोदयः ।
रोगनाशः प्रजासौख्यंपृथिव्यांबहुमंगलम् ।।३५१।।

कुंभराशि में द्विजपीड़ा हो और मीन राशि पर शुक्र का अस्त हो तो मेघ अच्छा वर्षे तथा रोग नाश–प्रजा सुख और पृथ्वी पर बहुत मंगल हों।।३५१।।

भृगुसुतः कुरुतेभ्युदयंयदासुरगणर्क्षगतः* खलुसिंधुषु ।
सकलगुर्जरकर्वटमंडलेभवतिसस्यविनाशमहारुजे ।।३५२।।

---

* अश्विनी मृगरेवत्यो हस्तपुष्यपुनर्वसु । अनुराधा श्रुतिः स्वातिः कथितो देवतागणः ।।१।। तिस्रःपूर्वोत्तरास्तिस्रः आर्द्रा चैव तु रोहिणी । मरणी च मनुष्याख्यो गणोसौ कथितो बुधैः ।।२।। कृत्तिका च मघाश्लेषण विशाखा शततारका । चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूल रक्षगणः स्मृतः ।।३।।

यदि शुक्र का उदय देव गण के नक्षत्रों में हो तो सिंधु-गुर्जर-और कर्वट देशों में सस्य नाश तथा महारोग हो।।३५२।।

जालंधरेपिदुर्भिक्षंविग्रहोरणसंभवः ।
मनुष्यगणभेशुक्रोदयेसौराष्ट्रविग्रहः ।।३५३।।

मनुष्य गण के नक्षत्रों में शुक्रोदय हो तो जालन्धर में दुर्भिक्ष विग्रह रण संभव और सौराष्ट्र में विग्रह हो।।३५३।।

कालिंगदेशेस्त्रीराज्येमध्यमंवर्षउच्यते ।
मरुस्थलेचदुर्भिक्षंघृतधान्यमहर्घता ।।३५४।।

कलिंग देश में स्त्री राज्य (भूपाल आदि) में मध्यम वर्षा हो। और मारवाड़ में दुर्भिक्ष हो घी और अन्न महँगे हो।।३५४।।

स्वर्णरौप्यंमहर्घंस्यात्पीडागोमहिषव्रजे ।
कार्पासतूलसूत्रादेर्महर्घत्वंप्रजायते ।।३५५।।

सोना, चांदी, महँगे हों गाय भैंसों में पीड़ा हो। कपास रुई सूत आदि भी महँगे हों।।३५५।।

नक्षत्रेराक्षसगणेशुक्रस्याभ्युदयेसति ।
गुर्जरेपुद्गलभयंदुर्भिक्षंद्रव्यहीनता ।।३५६।।

राक्षस गण के नक्षत्रों में शुक्रोदय हो तो गुजरात में और पुंगल में दुर्भिक्ष तथा द्रव्य हानि हो।।३५६।।

पंचवर्णपट्टसूत्रंमूल्येनापिचदुर्लभम् ।
श्रीफलंदुर्लभंमृत्युः श्रेष्ठः पुंसश्चकस्यचित् ।।३५७।।

पंचवर्ण (पंचरगी) पट्टवस्त्र (रेशमी कपड़े) और सूती यह मूल्य पर भी नहीं मिले। तथा श्रीफल मिलना भी दुर्लभ हो और किसी श्रेष्ठ पुरुष की मृत्यु हो।।३५७।।

उत्पातादिषुदेशेषुसिंधुदेशेतिविग्रहः ।
दिनत्रयमवाणिज्यंविग्रहेमालवादिके ।।३५८।।

देश में उत्पात हो सिन्धु देश में अति विग्रह हो। और मालवे में विग्रह में ३ दिन हड़ताल रहे।।३५८।।

अथ शुकास्ततो देशेषुवर्षज्ञानम्

सुरगणेभृगुजास्तगतिर्यदादिवसगुर्जरमालवमण्डले
भवतिदेशेभयंनृपविग्रहः प्रथमतोऽपिचधान्यमहर्घता।।३५९।।
पश्चात्समर्घताकिंचिन्मासमेकंप्रवर्तते ।
खुरासानेमहोत्पातोद्रव्यनाशोऽतिदंडता ।।३६०।।

"अस्त विचार"-यदि देवगण में दिन में शुक्रास्त हो तो गुजरात तथा मालवा में देश भय हो, नृप विग्रह हो और पहले धान्य महँगा होकर पीछे एक महीने तक कुछ सस्ता हो खुरासान मे बड़ा उत्पात हो और अति दण्ड से द्रव्य नाश हो।।३५९।।३६०।।

प्रबलाचलवृष्टिश्चमासषट्कात्परंभवेत् ।
हेमरूप्यमहर्घंत्वंनिद्रालुः सकलोजनः ।।३६१।।

इसके पीछे छः महीने बाद प्रबल जल वर्षा हो। सोना चांदी महँगे हों और सब लोग निद्रालु (सदा सोते ही) रहें।।३६१।।

मरुस्थलेषुदुर्भिक्षंदिल्ल्यांराज्यविवर्तनम् ।
गोपालगिरिदेशेस्यान्मरकोनरकोपमः ।।३६२।।

मरुस्थल में दुर्भिक्ष हो दिल्ली में राज परिवर्तन हो गोपाल गिरि देशों में मरी पड़े।।३६२।।

रोगबाहुल्यमथवापरचक्रपराभवः ।
व्यापारेबहुलालक्ष्मीः सुभिक्षमुत्तरापथे ।।३६३।।

रोग बाहुल्य हो अथवा परचक्र में पराभव हो व्यापार से बहुत धन

और उत्तर में सुभिक्ष हो।।३६३।।

मनुष्यगणशुक्रास्तेवह्निभीरोमपत्तने ।
देशत्रासः कोंकणेऽलटेसिंधौचशून्यता ।।३६४।।

मनुष्य गण में शुक्रास्त हो तो रोमपत्तन में अग्निभय हो। कोंकण में देशत्रास हो, लाट और सिंधुदेश शून्य हों।।३६४।।

दुर्भिक्षमुत्तरेदेशेविग्रहोद्रविडाश्रये ।
गुर्जरेचसुभिक्षंस्याद्वनस्पतिफलोदयः ।।३६५।।

उत्तर देश में दुर्भिक्ष हो, द्रविड़ में विग्रह हो। गुजरात में सुभिक्ष हों और वनस्पति में फल लगें।।३६५।।

मासमेकंमहर्घंस्यात्ततोधान्यसमर्घता ।
घृततैलान्ननिष्पत्तिः पट्टसूत्राणिसर्वतः ।।३६६।।

एक महीने तक धान्य महँगे रहें। घी तैल पट्टसूत्र और अन्न की उत्पत्ति हो।।३६६।।

राजानः सुखिनः सर्वाः प्रजारोगविवर्जिताः ।
सर्वत्रवसतिर्देशेदुर्गेष्वानंदनंदिता ।।३६७।।

राजा लोग सुखी रहें, सब प्रजा रोगवर्जित रहे। देश तथा किलों में रहनेवाले आनंदित रहें।।३६७।।

शुक्रास्तेराक्षसगणेहिंदुदेशेषुविग्रहः ।
खर्प्परेराजयुद्धानिमिश्रदेशेऽन्नविग्रहः ।।३६८।।

राक्षस गण में शुक्र का अन्त हो तो हिन्दु देंशों में विग्रह हो, खर्प्प राज्य में युद्ध और मिश्र देश में अन्न विग्रह हो।।३६८।।

मरुस्थलेसिंधुदेशेदुर्भिक्षंमध्यमं भवेत् ।
यानपात्रविनाशोऽब्धौफिरंगाणांचविग्रहः ।।३६९।।

मरुस्थल में सिंधुदेश में मध्यम दुर्भिक्ष हो। समुद्र में जहाजों तथा

विमानों का विनाश हों और फिरंगियों में विग्रह हो।।३६९।।

विराटढुंढपांचालसौराष्ट्रेषुचरौवरम् ।
तथाराज्यपरावर्त्तोमालवेषुजनक्षयः ।।३७०।।

वैराट ढूंढ़ाड़ पांचाल और सौराष्ट्र देशों में कष्ट हो, राज्य परिवर्तन हो, तथा मालवे के मनुष्यों का क्षय हो।।३७०।।

जीर्णदुर्गेभयंभंगः पत्तनेऽन्नमहर्घता ।
नव्यमुद्राप्रकाशः स्याद्दक्षिणेसुखसंपदः ।।३७१।।

पुराने किलों में टूट पड़ने का भय हो, दुर्भिक्ष हो। नया रुपया चले और दक्षिण में सुख संपदा हो।।३७१।। (इति)

(८) अथ शनिचारः

मेषस्थेभानुपुत्रेत्रिभुवनविदिते यातिधान्यंविनाशं
नूनंतैलंगवंगेहयमुरदलितंविग्रहस्तीव्रएव ।
पातालेनागलोकेदिशिविदिशिगता भीतभीता नरेन्द्राः
सर्वेलोकाविलीनाः शुभफलविहितायाचमानाव्रजन्ति ।।३७२।।

(८) "शनिचार विचार"-मेष का शनि हो तो धान्य का नाश हो तैलँग, वंग, देश में विग्रह हो। और पाताल तथा नाग लोक एवं दिशा विदिशाओं के राजा लोक भयभीत होकर भागते फिरें। तथा अच्छे फल से हीन होकर मनुष्य याचना करते फिरें।।३७२।।

वैरावर्ताजनानांधनसुखहरणंसर्वदेशेमहर्घं
दुःखं वैराग्ययोगः सकलजनमनस्यान्ननाशः पशूनाम् ।
धान्यंसैवार्द्धनाशेरसकससहितंसर्वशून्यं जनाना
मित्येतेसर्वदेशाः परिजनविकलाः सूर्यपुत्रेवृषस्थे ।।३७३।।

वृष का शनि हो तो मनुष्यों में वैर भाव बढ़े, धन सुख का नाश हो, अन्न की सर्वत्र तेजी हो। दुःख वैराग्य और संताप हो पशुओं का नाश,

खेतियां का नाश, रसों की महँगाई और शून्यता यह बातें भी हों और अनेक देशों में व्याकुलता फैलें।।३७३।।

आद्यंकार्पासलोहंलवणतिलगुडाः सर्वदेशेमहर्घा
मंजिष्ठाहेमतारेवृषभहयगजंसर्वधान्यंसमर्घम् ।
सप्तद्वीपेसमुद्रेसुखिजनसहिते सर्वसौख्यंनरेन्द्राः
सर्वत्रायान्तिमेघाःसकलमुनिमतंमैथुनेसूर्यपुत्रे।।३७३।।

मिथुन का शनि हो तो पहले कपास-लोह-लवण-तेल गुड यह सर्वत्र महँगे हों, मँजीठ, सोना, घोड़े, बैल, हाथी सब धान्य सस्ते हों। सातों द्वीपों में समुद्र पर्यन्त निवासियों को सुख मिले, राजाओं को भी सुख प्राप्त हों और वर्षा सर्वत्र अच्छी हो।।३७४।।

रोगानित्यंग्रसन्तिप्रचुरपरिभवोवित्तनाशस्तथैव
कार्येहानिर्विरुद्धैः सकलभयजनैर्देशचिन्ताविषादः ।
आरावोऽम्बुप्रपातैः प्रचलितधरणीसर्वलोकस्यनाशः
सर्वस्मिन्राजयुद्धंपशुधनहरणं कर्कटेसूर्यपुत्रे ।।३७५।।

कर्क का शनि हो तो लोगों को रोज ही रोग खाते रहें, धन का नाश हो, कार्य की हानि हो, सब लोग विरुद्ध रहें, देश में चिन्ता और विषाद फैले। शब्दयुक्त जल वर्षे, भूकम्प अधिक हों, सब लोकों का नाश हो, राजाओं में युद्ध हो और पशु तथा धन का हरण हो।।३७५।।

भूम्यां नाशश्चतुष्पाद्गजहयवृषभैर्युद्धदुर्भिक्षरोगैः
पीडचन्तेसर्वदेशाउदधिपुरपथेदुर्गदेशेषुभंगः ।
म्लेच्छान्तोधान्यभावोधनसुखमवनीशेन्द्रचन्द्रप्रतापः
सर्वेतेयांतिकालेभ्रमतियुगमिदंसिंहगेसूर्यपुत्रे ।।३७६।।

सिंह का शनि हो तो हाथी घोड़े बैलों का नाश हो, युद्ध दुर्भिक्ष और रोगों से लोग पीड़ित रहें। समुद्र के मार्ग के देशों में भंग हो म्लेच्छों से

लोगों को दुःख हो। धान्य भाव अच्छा हो राजाओं को धन सुख मिले उनका प्रताप फैले। और पीछे सब दुःखी होकर भ्रमण करें।।३७६।।

काश्मीरंयातिनाशंहयरवदलितंविग्रहंतत्रकुर्या
द्रत्नस्थंधातुरूप्यंगजहयवृषभंछागलंमाहिषं च ।
मंजिष्ठाकुंकुमाद्यंरसकससहितंयान्तिसर्वेसमर्घं
कन्यायांसूर्यपुत्रेसकलजनसुखंसंग्रहेसर्वधान्यम् ।।३७७।।

कन्या का शनि हो तो काश्मीर का नाश हो घोड़ों में रव (शब्द) पूरित विग्रह हो रत्न धातु चांदी हाथी घोड़े बैल छाली, भैंस, मंजीठ और केशर यह रस कस सहित सब सस्ते हों और सब मनुष्यों को सुख हो तथा धान्य संग्रह लाभदायक हो।।३७७।।

धान्यानां वैमहर्घंनरपुरनगराः क्लेशपूर्णाश्चदेशाः
पृथ्व्यांकम्पमाप्तासकलमुनिवरेदेहपीडापिनित्यम् ।
सर्वेतेयान्तिनाशंनरपुरनगराण्यम्बुदोप्यल्पएव
चक्रावातोजनानांसुखधनरहितः सूर्यपुत्रेतुलायाम् ।।३७८।।

तुल का शनि हो तो धान्य महँगे हो, शहरों वा गावों के मनुष्य क्लेशयुक्त हों। पृथ्वी कम्पित हो सब मुनि श्रेष्ठों में भी देह पीड़ा हो। शहर वा गाँवों के सब मनुष्यों का नाश हो जल बहुत कम वर्षे और मनुष्य सुख तथा धन से हीन रहें।।३७८।।

भूमीशाः क्रोधपूर्णाविषधरमुदिताः पक्षिणांसन्निपातः
सप्तद्वीपप्रकम्पान्नरपतिमरणंयांतिमेधाविनाशनम् ।
वैकल्याद्वचाप्यमानः सकलजनरिपुः सर्वकार्यंनिहंति
सर्वेतेयांतिनाशंसकलगुणविधेर्वृश्चिकेसूर्यपुत्रे ।।३७९।।

वृश्चिक का शनि हो तो राजा लोग क्रोधित रहें सर्पो में हर्ष बढें पक्षियों में युद्ध मचें। सातों द्वीपों में भूकम्पादि हों। राजाओं का मरण

तथा वर्षा का विनाश हो। मनुष्यों में कलह विकल्पता से शत्रुता फैले कामों का नाश हो और गुणवानों का नाश हो।।३७९।।

सप्तद्वीपाः समुद्राः सकलमुनिवनंवायुपूर्णाधरित्री
विप्रावेदांगलीनाजगतिजनसुखं सर्वतोयातिसस्यम् ।
धान्यंचारुप्रभूतं रसकसबहुलंयातिधान्यंप्रसारं
सर्वेषांवाजनानांप्रहसतिवदनंसूर्यपुत्रे धनस्थे ।।३८०।।

धन का शनि हो तो समुद्र के सातों द्वीप और मुनियों को सम्पूर्ण वन की पृथ्वी वायु से पूर्ण हो। ब्राह्मण लोग वेदांग में लीन रहें जगत् में मनुष्य सर्वत्र सुखी रहें खेतियां अच्छी हों अन्न भी अच्छे हों रस कस बहुत हों धान्य फैले और सब मनुष्य प्रसन्न वदन रहें।।३८०।।

रूप्यं ताम्रं सुवर्णं हयगजवृषभं सूत्रकार्पासमूल्यं
सर्वस्मिन्धान्यमात्रं भवति भुवितले सर्वनाशश्च सस्ये ।
पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाभवतिपथिभयं सर्वरोगाद्विनाश
श्चिन्तास्थानं नृपाणां भवतिसति बलेसूर्यपुत्रेमृगस्थे ।।३८१।।

मकर का शनि हो तो चांदी तांबा सोना हाथी घोड़े बैल सूत कपास इन सबका मूल्य धान्य मात्र हो अर्थात् अधिक तेज हो। अन्न का नाश हो। राजा क्रोधित रहें मार्गों में भय रहे सब रोगों का नाश हो और बलवान् राजाओं को भी चिन्ता लगी रहें।।३८१।।

लक्ष्मीप्राकारसौख्यंधनकणसहितं देशसौख्यंनृपाणां
धर्माधर्मौविधत्तेसुखनिरतजनोमेघपूर्णाधरित्री ।
मांगल्यंसर्वलोकप्रभवतिबहुशः सस्यनिष्पत्तिहर्षः
भूमीरम्याविवाहैर्जनसुखसमयः कुंभगे सूर्यपुत्रे ।।३८२।।

कुम्भ का शनि हो तो लक्ष्मी की प्राप्ति सौख्य धन तथा अन्न हो देश में सुख रहे राजा लोग धर्म अधर्म का विधान करते रहें। मनुष्य सुखी

रहें। वर्षा अच्छी हो। सब जगह मंगल हो। खेतियां बहुत हों। पृथ्वी मनोहर रहे और विवाहादि मंगलों से लोग सुखी रहें।।३८२।।

पृथ्वीवैकम्पमात्रंप्रचलतिपवनः कम्पते नागलोकः
सप्तद्विपेषुसिन्धोर्गिरिवरगहने सर्ववृक्षादिहानिः ।।
नाशः पृथ्वीपतीनांजनपदविलयोयान्ति मेघाः प्रणाशं
चक्रावर्तैः समस्तंभ्रमतिजगदिदंमीनगेसूर्यपुत्रे ।।३८३।।

और मीन का शनि हो तो पृथ्वी कम्पित रहे, पवन चले पाताल (अमेरिका) आदि में भूकम्प हो सिंधु तथा पर्वतों में उत्पात हों सब वृक्षादि की हानि हो। राजाओं का नाश हो मनुष्यों का विनाश हो मेघों का अभाव हो और प्रचण्ड पवन से सारा जगत् घूमे।।३८३।।

मेषेशनेरुदयनेजलवृष्टिरुच्चैः सौख्यंजनंवृषभगेतृणकाष्ठकष्टम्।
अश्वेषुरोगकरणंचमहर्घमिक्षुजन्यंगुडादिमिथुनेऽतिसुभिक्षमेव।।

"उदय फल" मेष का शनि उदय हो तो वर्षा बहुत हो लोग सुखी रहें। वृष का उदय हो तो घास तथा काठ का कष्ट हो घोड़ों में रोग करे ईख से पैदा होनेवाले गुड़ादि महँगे हों और मिथुन का उदय हो तो अत्यन्त सुभिक्ष हो।।३८४।।

वृष्टिर्नकर्कगृहगेसरसांचशोषः सर्वत्रमारिभयमाशुजनेषुपीडा ।
पीडागमः क्वचनसिंहगतेशिशूनांनाशप्रकाशनमधार्मिकशासनस्य।।

कर्क का शनि उदय हो तो वर्षा नहीं हो रस सब सूख जायँ सब जगह मारी भय से लोगों में पीड़ा हों। सिंह का उदय हो तो बालकों में पीड़ा हो राजा लोग धर्मशून्य राज करें।।३८५।।

कन्याशनेरुदयताकिलधान्यनाशःपृथ्वीशसंधिरतुलस्तुलयानवर्षा
गोधूमवर्जितमहीतदसौफलंस्यादस्वस्थताधनुषिमानुषजातिरोगम् ।

कन्या का उदय हो तो धान्य नाश हो तुल का उदय हो तो पृथ्वीश

करे वर्षा नहीं हो गेहूँ पृथ्वी पर नहीं रहे और धन में उदय हो तो मनुष्यों का स्वास्थ्य बिगड़े और रोग अधिक हों।।३८६।।

स्त्रीणांशिशोश्चविपदोखिलधान्यनाशःशौरेर्भृगेभ्युदयनेनृपयुद्धबुद्धिः।
नाशश्चतुष्पदकुलेकलशेथमीनेदीनेजनेननुशनेरुदयान्नधान्यम्।।

स्त्री और बालकों में विपत्ति हो और धान्य का नाश हो। यदि मकर का शनि उदय हो तो राजाओं की युद्ध वृद्धि हो और चौपायों का नाश हो। कुंभ अथवा मीन का राशि उदय हो तो मनुष्यों में गरीबी बढे और धान्य नहीं हो।।३८७।।

अथ अस्तविचारः

मेषेस्तंगमनेशनेर्भुविजनेधान्यंमहर्घंवृषे
सर्वत्रापि गवादिपीडनमहोपण्यांगनामैथुने ।
दुःखार्तो पथिकर्कटेरिपुभयं कार्पासधान्यादिषु
दौर्लभ्यं जलदेष्ववर्षणविधिः सिंहेप्रभूतव्यथा ।।

"अस्त विचार"-मेष का शनि अस्त हो तो धान्य तेज हो वृष का अस्त हो तो सब जगह गवादि पशुओं को पीड़ा हो, मिथुन में पण्यांगना (व्यापर की स्त्रियां-वेश्याओं) में पीड़ा हो और बादलों से मेघ नहीं वर्षे सिंह में व्यथा उत्पन्न हो।।३८८।।

धातूनांचमहर्घतान्नविधमः कन्यास्थितावग्रतो
लोकेन्येपितुलाबलेनसततंनिष्पत्तिरानंदतः ।
स्वल्पधान्यमलौजनेनृपभयंपीडापिशल्भादिभि
श्चापेलोकसुखंमृगेपिपवनेऽनावृष्टिनारीमृतिः ।।

कन्या में अस्त हो तो धातुओं की महँगाई हो अन्न भाव तेज हो तुला में हो तो लोगों में आनन्द हो धान्य कम उपजे वृश्चिक में प्राणियों में भय हो और

राजाओं से पीड़ा तथा टीडी आदि की पीड़ा हो। धन में हो तो सुख हो मकर में अस्त हो तो प्रचण्ड पवन चले वर्षा कम हो स्त्रियां अधिक मरें।।३८९।।

कुम्भेशीतभयंचतुष्पदपरिग्लानिश्चहानिर्गवां
मीनेहीनतयाघनस्यनजलंक्वापीहवापीस्थले ।
संतापीनृपतिः स्वधर्मविमुखःपापीजनः पीडया
मंदंमंदसमंसभूपतिरणोमन्देस्तमप्याश्रिते।।३९०।।

कुंभ में शीतभय चौपायों में मन मचलान गायों की हानि और मीन में शनि का अस्त हो तो वर्षा कहीं कहीं कुछ कुछ हो राजा निज धर्म से विमुख होकर दुःख दें पापियों को पीड़ा हो और राजाओं में युद्ध हो।।३९०।।

कन्यायांमिथुनेमीनेवृषेधनुषि वास्थितः ।
शनिः करोतिदुर्भिक्षंराज्ञांयुद्धंपरस्परम् ।।३९१।।

"विशेष फल"-कन्या मिथुन मीन वृष और धन पर शनि स्थित हो तो दुर्भिक्ष करे और राजाओं में परस्पर युद्ध हो।।३९१।।

(९) अथ राहुचारः

यस्मिन्संवत्सरेराहुर्मीनराशौप्रजायते ।
तस्मिन्मासेभयंविद्युद्दुः खकष्टसमागतः ।।३९२।।

(९) "राहु चार"-जिस वर्ष में मीन का राहु हो तो उनके आक्रांत मास में बिजली का भय हो और कष्ट का आगमन होता है।।३९२।।

एवंज्ञात्वाचकर्तव्योयावदन्नादिसंग्रहः ।
संग्रहः सर्वधान्यानांलाभोद्वित्रिचतुर्गुणः ।।३९३।।

इस प्रकार जान कर अन्न का संग्रह किया जाय तो दुगुना तिगुना लाभ हो।।३९३।।

वर्षमेकंतुदुर्भिक्षंरौरवपरिकीर्तितम् ।
प्राप्तेत्रयोदशेमासेसुभिक्षमतुलंभवेत् ॥३९४॥

एक वर्ष तक दुर्भिक्ष रहे और तेरहवां महीना आये पीछे अतुल सुभिक्ष हो॥३९४॥

कुंभेराशौयदाराहुर्दैवाद्भौमोपिसंगतः ।
तदालोक्यविधातव्यः शणसूत्रस्यसंग्रहः ॥३९५॥

कुंभ का राहु और दैव योग से मंगल भी साथ हो तो सण सूत्र का संग्रह करना चाहिये॥३९५॥

भांडानिचसमस्तानिकांस्यादीनिविशेषतः ।
संगृह्यंतेमासषट् कविक्रेतव्यानिसप्तमे ॥३९६॥
लाभश्चतुर्गुणोज्ञेयोभौमराहुद्वयस्थितौ ।
नान्यथेतिचवक्तव्ययावद्भुक्तिस्थताविमौ ॥३९७॥

सब प्रकार के बर्तन विशेष कर कांसीं पीतल के बर्तन संग्रह करके छः महीने रखकर सातवें महीने में बेचें तो चौगुणा लाभ होता है। इसमें कोई झूँठ नहीं है। राहु और मगल की एक स्थिति रहे जब तक यह बात जानना॥३९६॥३९७॥

सैंहिकेयोयदायातिराशिंमकरनामकम् ।
तदासंवीक्ष्यकर्तव्यः पट्टसूत्रस्यसंग्रहः ॥३९८॥
धृत्वामासत्रयंयावत्पट्टसूत्रंयथातथा ।
प्राप्तेचतुर्थकेमासेलाभः स्यात्त्रिकपंचकः ॥३३९॥

राहु मकर राशि पर हो तो उस समय मौका देखकर पट्ट सूत्र संग्रह करके तीन महीने बाद चौथे महीने में बेचे तो तिगुना चौगुना पचगुना लाभ होता है॥३९८॥३९९॥

सैंहिकेयोयदायातिधनराशौक्रमात्ततः ।
महिष्यादेस्तदाकार्यः संग्रहोवसुधातले ।।४००।।
हयानांचगजानांचगर्दभानांविशेषतः ।
लाभश्चतुर्गुणः प्रोक्तोमासेद्वितियपंचमे ।।४०१।।

यदि धन राशि पर राहु हो तो भैंसे और घोड़े तथा हाथी और विशेष कर गधे खरीदकर रखने से दूसरे या पांचवें महीने में चौगुना लाभ होता है।।४०१।।४०२।।

वृश्चिकस्थोयदाराहुर्दैवाद्भौमस्यसंगमः ।
तदाज्ञात्वाचकर्तव्यः संग्रहोघृतवाससाम् ।।४०२।।
पंचमासान्व्यतिक्रम्यषष्ठेकार्योस्यविक्रयः ।
लाभश्चद्विगुणोज्ञेयोनिश्चितंशास्त्रभाषितम् ।।४०३।।

यदि वृश्चिक का राहु हो और दैवयोग से भौम का भी संगम हो जाय तो उस योग को जानकर घी तथा कपड़ों का संग्रह करना चाहिये उनको पांच महीने रखकर छठे महीने बेंचने से निश्चय दुगुना लाभ होता है। यह शास्त्र कहता है।।४०२।।४०३।।

तुलाराशिंयदाराहुः संस्थितः संक्रमेरवेः ।
तदाभवतिदुर्भिक्षंपितुः पुत्रस्यविक्रयः ।।४०४।।
वार्षिकंसंग्रहंकुर्याद्व्रीहीणांचविशेषतः ।
गणकानांतथालोकेलाभः कंबलकांस्यतः ।।४०५।।

तुल राशि का सूर्य संक्रान्ति के दिन राहु बदले तो ऐसा दुर्भिक्ष हो कि जिसमें पिता पुत्र को भी बेच दे। उस समय में वार्षिक संग्रह करना चाहिये तो विशेषकर चावलों का संग्रह करना चाहिये ज्योतिषियों को लाभ होता है और कंबल तथा कांसी से भी लाभ होता है।।४०४।।४०५।।

कन्यागतोयदाराहुः संभवेन्मासपंचके ।
तदाविज्ञायसंग्राह्यधातकीपिप्पलीद्वयम् ॥४०६॥
मासमेकंचसंग्राह्यधातकीपुष्पविक्रये ।
मासद्वयेनपिप्पल्यालाभोभवतिवांछितः ॥४०७॥

कन्या राशि में राहु आवे तो यह देखकर पांच महीने तक धावडचा तथा दोनों पीपल का संग्रह करना चाहिये। एक महीने संग्रह करके दूसरे महीने बेंचने से धायके फूल और पीपलों में मनचाहा लाभ होता है॥४०६॥४०७॥

सिंहराशौक्रमाद्वक्रोयदाराहुः प्रवर्तते ।
अवश्यसंग्रहः कार्यस्तदाचोष्येषुवस्तुषु ॥४०८॥

वक्री राहु सिंह का हो तो चूषने (आचार मुरब्बे आम तथा ईख) की वस्तुओं को अवश्य संग्रह करना चाहिये। उनसे लाभ होता है॥४०८॥

आदौधान्यकमादायशुंठीमरिचपिप्पली ।
जीरकंलवणंसौवर्चलसैंधवखादिरः ॥४०९॥
धृत्वासंवत्सरंयावत्षण्मासान्तेस्यविक्रयः ।
लाभश्चतुर्गुणंतस्ययदिसौम्येनवेध्यते ॥४१०॥

धनियां, सोंठ मिर्च पीपल जीरा और सींधा,खारी तथा संचर लवण इनको इकट्ठे करके छः महीने के पीछे बेंचने से (यदि सौम्य ग्रह न वेधे तो) चौगुना लाभ होता है॥४०९॥४१०॥

कर्कटेतुयदाराहुस्तिष्ठत्येवमहाबलः ।
अवश्यंतस्कराः सर्वेलोकपीडांप्रकुर्वते ॥४११॥

यदि कर्क का राहु हो तो अवश्य ही लोगों को चौरों से बहुत पीड़ा हो॥४११॥

सूक्ष्मतास्यात्तुव्रीहीणांसमर्घंस्वर्णरूप्यकम् ।
कांस्यंताम्रंचसंग्राह्यंषण्मासेलाभदायकम् ।।४१२।।

चावलों की कमी हो सोना चांदी सस्ते हों और कांसी तांबा संग्रह करने से छः मास में लाभ दे।।४१२।।

मिथुनेचयदाराहुः स्वोच्चस्थानवशात्तदा ।
घृतधान्यंसमर्घंस्यान्माणिक्यानांसमर्घता ।।४१३।।

यदि मिथुन का राहु हो तो उच्च का होने के कारण घी, धान्य, मूंगा आदि सस्ते हों।।४१३।।

सैंहिकेयोयदायातिभौमग्रहनिरीक्षितः ।
वृषराशौक्रमेणैवनिधानंलभतेजनः ।।४१४।।

राहु यदि वृष का हो और उसे मंगल देखता हो तो मनुष्यों को उचित है कि।।४१४।।

संग्रहः सर्वधान्यानांघृततैलंविशेषतः ।
कुंकुमंगंधद्रव्यंचकार्पासश्चगुडस्तथा ।।४१५।।
मासषट्कञ्चधृत्वैवंविक्रेयंसप्तमेपुनः ।
ज्ञेयश्चतुर्गुणोलाभः सत्यमेवहिनान्यथा ।।४१६।।

उस समय सब धान्यों का संग्रह करें। विशेष कर घी तेल रोली केशर इत्यादि सुगन्ध द्रव्य और गुड़ तथा कपास इनका संग्रह करके छः महीने बाद सातवें मास में बेचे तो चौगुणा लाभ होता है।। यह सत्य है झूँठ नहीं हैं।।४१५।।४१६।।

कांस्यंचलाक्षामंजिष्ठाशुंठीमरिचहिंगवः ।
एषांसंग्रहणंकार्यंषण्मासश्चाधिनिश्चितम् ।।४१७।।

कांसी-लाख-मजीठ, सोंठ, मिर्च, हींग इनके संग्रह से भी छः मास में लाभ होता है।।४१७।।

मेषराशौयदाराहुः संस्थितश्चन्द्रसूर्ययोः ।
दैवाद्ग्रहणसंयोगेदुर्भिक्षंभवतिध्रुवम् ॥४१८॥

यदि मेष का राहु हो और मेष पर ही चन्द्र सूर्य हों, और दैवयोग से सूर्यग्रहण होने का संयोग भी आ जाय तो निश्चय दुर्भिक्ष होता है॥४१८॥(इति)

(१०) अथ केतुचारः

रवावस्ताचलेप्राप्तेपश्चिमायांनिरीक्षते ।
यदावह्निशिखाकारास्तदाकेतूदयोवदेत् ॥४१९॥

(१०)"केतुचार विचार"-जिस समय सूर्य अस्ताचल को प्राप्त हो उस समय पश्चिम दिशा को देखना चाहिये। यदि जब आग की शिखा का आकार दीखे तो केतु का उदय जानना॥४१९॥

अश्विन्यामुदितः केतुर्हन्यादश्मकपालकम् ।
भरण्यांचकिरातेशंकृत्तिकायांकलिंगपम् ॥४२०॥

वह केतु यदि अश्विनी में उदय हो तो अश्मक देश के राजा का नाश हो। भरणी में किरात राजा का और कृत्तिका में कलिंग देश के राजा का नाश हो॥४२०॥

रोहिण्यांसूरसेनेशंमृगेचोशीनराधिपम् ।
आर्द्रायांजालणाधीशमश्मकेशंपुनर्वसौ ॥४२१॥

रोहिणी में सूरसेन के राजा का, मृगशिर में उशीनरके राजा का, आर्द्रा में जालना के राजा का और पुनर्वसु में अश्मक के राजा का नाश हो॥४२१॥

पुष्येचमगधाधीशंसार्पेकेरलयाधिपम् ।
मघायामंगनाथंचपूषायांपांड्यनायकम् ॥४२२॥

पुष्य में मगंधाधीश का श्लेषा में केरलाधिप का मघा में अंगनाथ का

पूषा में पांडय का नाश हो।।४२२।।

उज्जयिन्यांनृपंहन्यादुत्तराफाल्गुनीगतः ।
दण्डकाधिपतिंहस्तेचित्रायांकुरुभूपतिम् ।।४२३।।

उत्तराफाल्गुनी में उज्जैन के राजा का, हस्त में दण्डकाधिपका और चित्रा में कुरु राजा का नाश हो।।४२३।।

स्वात्यांकाश्मीरकम्बोजभूपतीनांविनाशकः ।
इक्ष्वाकुकोशलेशानांविशाखायांचघातकः ।।४२४।।

स्वाति में कश्मीर तथा कंबोज के राजाओं का और विशाखा में इक्ष्वाकु तथा कोशलेश का घात हो।।४२४।।

मैत्रेपौण्ड्रमहीनाथंसार्वभौमन्तथैंद्रभे ।
अन्ध्रमद्रकनाथंचमूलस्थोहन्तिनिश्चितम् ।।४२५।।

अनुराधा में पौंड्र राजा का, ज्येष्ठा में सम्राट् का और मूल में अन्ध्र तथा मद्रास के राजा का घात हो।।४२५।।

पूर्वाषाढाकाशिराजमुत्तराहंतिकैकतम् ।
बौधेशिबिपवेदीशंश्रवणेकैकयेश्वरम् ।।४२६।।

पूर्वाषाढ में काशीराज का, उत्तरा में कैकत, अभिजित में शिबपेश और श्रवण में कैकयेश्वर का नाश हो।।४२६।।

वासवेपञ्चजन्येशंवारुणेसिंहलेश्वरम् ।
पूर्वभायांमंगनाथंनैमिषेंशमुभागतौ ।।४२७।।

धनिष्ठा में पांचजन्य, शतभिषा में सिंहलेश्वर, पूर्वाभाद्रपद में अंगनाथ और उत्तराभाद्रपद में नैमिषेक्षत्र के अधिपति का नाश हो।।४२७।।

रेवत्यामुदितः केतुः किराताधिपघातकः ।
धूम्राकारसपुच्छश्चकेतुर्विश्वस्यपीडकः ।।४२८।।

और रेवती में केतु का उदय हो तो किरात देश के राजा का घात हो। यदि धूंआ के आकार का चोटल पूंछल केतु उदय हो तो वह संसार भर को पीड़ा देता है।।४२८।।

श्रावणेभाद्रमासेचकेतवोवारुणादश ।
जलवृष्टिकरालोकेतदाधान्यसमर्घता ।।४२९।।

"विशेष फल"-श्रावण और भादवें में वारुण नाम के दश केतु होते हैं। ये संसार में अच्छा जल वर्षाते हैं और अन्न सस्ता रहता है।।४२९।।

आश्विनेकार्तिकेतैस्फः सूर्यपुत्राश्चतुर्दश ।
कुर्युश्चतुष्पदेमृत्युंदुर्भिक्षंचैवनाशनम् ।।४३०।।

आश्विन और कार्तिक में तैस्फ नामक सूर्य के पुत्र चौदह केतु उदय होते हैं ये दुर्भिक्ष आदि से चौपायों का नाश करते हैं।।४३०।।

वह्निपुत्राश्चतुस्त्रिंशत्केतवोमार्गपौषयोः ।
अग्निदाहंचौरभयमनावृष्टिंदिशत्यमी ।।४३१।।

मगशिर और पौष में वह्निपुत्र ३४ केतु होते हैं ये अग्निदाह, चौर भय और अनावृष्टि करते हैं।।४३१।।

केतवोयमपुत्राः स्युर्माघफाल्गुनयोर्नव ।
धान्यंमहर्घदुर्भिक्षंकुर्युर्भूपमहारणम् ।।४३२।।

माघ फाल्गुन में यम के पुत्र नौ केतु दीखते हैं वे धान्य महँगा करके दुर्भिक्ष बना देते हैं और राजाओं में बड़ी लड़ाईयां होती है।।४३२।।

केतवोऽष्टादशसुताधनदस्यवसन्तके ।
लोकेसुखंमंगलानिसुभिक्षंकुर्युरुद्यताः ।।४३३।।

चैत्र और वैशाख में वरुण के पुत्र अठारह केतु होते हैं वे संसार में

सुख और मंगल कार्य करते हैं।।४३३।।

ज्येष्ठाषाढोदितावायोः पुत्राविंशतिकेतवः ।
सवातजलवर्षयितरुप्रासादभंगदाः ।।४३४।।

जेठ और आषाढमें वायु के पुत्र बीस केतु होते हैं वे पवन सहित वर्षा करते हैं जिससे वृक्ष और महलों की अटारियां टूट जाती है।।४३४।।

एवंपंचोत्तरशतंक्वचिदष्टोतरंशतम् ।
केचिदेकोत्तरशतंकेतूनांस्थानकत्रयात् ।।४३५।।

इस प्रकार यह १०५ केतु हैं कोई १०८ और कोई १०१ केतु बतलाते हैं।।४३५।।

केतूदयफलम्

एषांकदाफलमितिज्ञेय मृक्षंविलोकयेत् ।
महोत्पातहतेऋक्षेदेशेनावृष्टिसंभवः ।।४३६।।

इनका फल जाननेके लिये नक्षत्रका विचार करना चाहिये यदि इससे नक्षत्र हत हुआ हो तो उस देशमें उत्पात और अनावृष्टि होती है।।४३६।।

उल्कापातोदिशांदाहोभूकंपोब्रह्मवर्चसम् ।
दृष्ट्वाऋक्षंभवेद्यत्रतदृक्षंपीडितंभवेत् ।।४३७।।

इति वर्षप्रबोधे पूर्वभागः समाप्तः

उल्कापात-दिग्दाह-भूकंपादि देखकर नक्षत्र का विचार करे क्योंकि उस दिन जो नक्षत्र होगा वही पीडित होगा।।४३७।।

इति श्रीहनूमान शर्मा संग्रहीत हिन्दीटीकासहित वर्षप्रबोध के पूर्वभाग का द्वितीयस्थल समाप्त। पूर्वभाग समाप्त।

श्रीः

वर्षप्रबोधः

उत्तरभागः हिन्दीटीकासहितः

---

(१) अथ उत्पातनिरूपणम्

प्रकृतेश्चान्यथाभावउत्पातः सत्वनेकधा ।
सयत्रतदुर्भिक्षंदेशराज्यप्रजाक्षयः ।।१।।

अब वर्षप्रबोध का उत्तर भाग आरम्भ होता है।

(१)"उत्पात निरूपण"-प्रकृति में किसी प्रकार का फेर बदल हो वहीं उत्पात होता है और इस भांति अनेक प्रकार के उत्पात होते हैं। जहां ऐसे उत्पात हों वहां दुर्भिक्ष तथा देश, राज्य और प्रजा का नाश होता है।।१।।

देवानांवैकृतंभंगंचित्रेष्वायतनेषुच ।
ध्वजश्चोद्‌र्ध्वमुखोयत्रतत्रराष्ट्रस्यविप्लवः ।।२।।

देवमूर्तियां हँसें, रोवें या टूट जायँ अथवा गिर पड़ें। ध्वजा ऊर्ध्व मुख हो जाय तो देश में उपद्रव होता है।।२।।

जलस्थलपुरारण्येदृश्यन्तेऽयत्रजन्तवः ।
शिवाकाकादिकाक्रन्दः पुरमध्येपुरच्छिदे ।।३।।

जलजीव (मच्छी) आदि स्थल (सूखी रेत में) और स्थल के जीव जल में और शहरों के जंगल में अथवा जंगली जीव शहरों में दीख पड़े।

गावों में गीदड़ और कोएँ रोवें तो विध्वंस हों।।३।।

छत्रप्राकारसेनादिदाहाद्यैर्नृपतीन्पुनः ।।
अस्त्राणांज्वलनंकोशनिर्गमश्चपराजये ।।४।।

छत्र, परकोटा, सुवर्ण और अस्त्र यह अपने आप जल उठें तथा म्यान से तलवार निकल पड़े तो पराजय होती है।।४।।

अन्यायश्चदुराचारः पाखण्डाधिकताजने ।
सर्वमाकस्मिकञ्जातंवैकृतंदेशनाशनम् ।।५।।

मनुष्यों में अन्याय दुराचार पाखण्ड यह अकस्मात् अधिक हों तो देश का नाश होता है।।५।।

राजादिः कृषिजीवीवीचेद्विधर्मः पशुपालकः ।
देवताप्रतिमाभंगोलिंगिविप्रवधस्तथा ।।६।।

जो राजा होकर भी खेती करे ग्वालपना करे, देव मूर्ति टूट जाय और सन्यासी, ब्राह्मण मारा जाय तो यह भी उत्पात ही का कारण है।।६।।

सितरक्तंपीतकृष्णंसुरेन्द्रस्यशरासनम् ।
भवेद्विप्रादिवर्णानांचतुर्णांनाशनंक्रमात् ।।७।।

बिना वर्षा इन्द्रधनुष हों और वह सूर्य के सन्मुख न हो तो उसके रंग सजातियों का फल जानना। सफेद, लाल पीला, काला होने से क्रम से ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इनका नाश करता है।।७।।

अकालेपुष्पितावृक्षाः फलिताश्चान्यभूभुजे ।
अल्पेऽल्पंमहतिप्राज्यंदुर्निमित्तैः फलंवदेत् ।।८।।

वृक्षों में बिना समय फल फूल आवे अथवा बिलकुल ही कम या एकदम अधिक फल फूल आवें तो भी दुनिर्मित्त होता है।।८।।

अश्वत्थोदुम्बरवटप्लाक्षाः पुनरकालतः ।
विप्रक्षत्रियविटशूद्रवर्णानांनाशनंक्रमात् ।।९।।

पीपल, गूलर, वट और पिलखन यह बिना समय फलें तो क्रम से ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्रों का नाश होता है।।९।।

वृक्षेपत्रेफलेपुष्पेवृक्षपुष्पफलंदृश्यम् ।
जायतेचेत्तदालोकेदुर्भिक्षादिमहाभयम् ।।१०।।

वृक्ष के पत्ते में, फूल में और फल में वृक्ष का पत्ता फूल या फल उत्पन्न हो तो दुर्भिक्ष होता है और महामारी पड़ती है।।१०।।

गोधनिर्निशिसर्वत्रकलिर्वार्दर्दुराः शिखी ।
श्वेतकाकश्चगृध्रादिभ्रमणंदेशनाशनम् ।।११।।

गोधनी, कली, मीडक और मोर यह रात्रि में विचरे, तो देशनाश होता है अथवा सफेद काग और गीध आदि घरों में घुसें तो भी देशक्षय होता है।।११।।

एवमुत्पातसंयोगाज्ज्ञात्वाशास्त्रान्तरादपि ।
वर्षेशुभाशुभंदेशेज्ञेयंवर्षपरीक्षकैः ।।१२।।

इस प्रकार के उत्पातों के संयोग को अन्य शास्त्रों भी जान लेना चाहिये और संवत्सर का शुभाशुभ तथा वर्षा का ज्ञान कर लेना चाहिये।।१२।।

"उत्पातभेदाः।" भूमिकम्पेप्रजापीडानिर्घातेतु नृपक्षयः।
अनावृष्टिस्तुदिग्दाहेदुर्भिक्षंपांसुवर्षणे ।।१३।।

"उत्पातों के भेद* और विशेष फल"-भूकंप से प्रजा में पीड़ा हो, निर्घात से नृप क्षय हो, दिग्दाह से अनावृष्टि हो, पांसु (बालु) वर्षा से दुर्भिक्ष हो।।१३।।

---

* इनके लक्षण अन्त में बतलाये हैं।

क्षयकृत्पांसुवृष्टिश्चनीहारश्चभयंकरः ।
दिग्दाहोग्निभयंकुर्यान्निर्घातोनृपभीतिदः ।।१४।।

धूल की वर्षा से क्षय होता है, नीहार (कोहरा) भय करता है। दिग्दाह से अग्नि भय भी होता है, निर्घात (वज्रपात) से राजा को भय होता है।।१४।।

झंझावायुश्चण्डशब्दश्चौरभीतिप्रदायकः ।
भूकंपोदुःखदायीचपरिवेषश्चरोनसत् ।।१५।।

झझा वायु (खन खनाट करती हुई हवा) और घोर शब्द से चौर भय होता है। भूकंप दुःखदाई और परिवेश (कुण्डाला) बुरा होता है।।१५।।

ग्रहयुद्धेराजयुद्धंकेतौदृष्टेतथैवच ।
ग्रहणांतेमहावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ।।१६।।

ग्रहों के युद्ध से अथवा धूमकेतु के दीखने से राज युद्ध होता है और ग्रहण के अन्त में यदि महावर्षा हो तो सब दोष दूर हो जाते हैं।।१६।।

उल्कापाते श्रेष्ठनाशोद्रुमच्छिन्नेधनक्षयः ।
पाषाणवर्षणेज्ञेयासर्वधान्यमहर्घता ।।१७।।

बड़े ताराओं के टूटने से सेठों का नाश, तथा वृक्षों के उखड़ पड़ने से धन क्षय होता है। पाषाण वृष्टि अथवा उपल वृष्टि (ओले गिरने) से सब खेतियों का नाश होता है।।१७।।

विद्युत्पातेजलाभावः प्रजानाशोंऽधकारिता ।
ऋतूनांव्यत्ययेरोगः सर्वजन्तुषुजायते ।।१८।।

बिजली के उत्पात से जल का अभाव होता है, घोर अन्धकार से प्रजा का नाश होता है। ऋतुओं की विपरीतता (जाड़े में गर्मी और

गर्मी में ठंढ पड़ने) से सब जीवों में रोग फैलता है।।१८।।

जन्तूनांविकृतोत्पत्तीराजविघ्नकरीमता ।
विग्रहोजायतेघोरश्चन्द्रसूर्यविपर्यये ।।१९।।

जीवों की विपरीत उत्पत्ति होने से राजाओं में विघ्न होता है। और चन्द्र सूर्य के विपर्यय से घोर विग्रह होता है।।१९।।

ग्रहयुद्धेभवेद्युद्धंयुतौचैवमहर्घता ।
अकालेफलपुष्पाणिसस्यनाशकराणिच ।।२०।।

ग्रहों के युद्ध से युद्ध और युक्त होने से महँगाई होती है। अकाल में फल पुष्प होने से खेतियों का नाश होता है।।२०।।

यस्यराज्येचराष्ट्रेचदेवध्वंसः प्रजायते ।
सूर्येंद्वोः सर्वथाग्रासेसर्वस्यापिमहर्घता ।।२१।।

जिसके राज्य में अथवा राष्ट्र में देवता का विध्वंस (टूट फूट कट चूर) हो जाय अथवा सूर्य और चन्द्रमा का सर्वग्रास हो तो सब तरह की महँगाई होती है।।२१।।

भौमादिग्रहवक्रस्य चक्रे च प्राक्तनंफलम् ।।२२।।

भौमादि ग्रहोंके वक्री होनेसे भी पूर्वोक्त फल होता है।।२२।।

(२) अथ मंडलविचारमाह

कृत्तिकाभरणीपुष्यंद्विदैवंपूर्वफाल्गुनी ।
पूर्वाभाद्रपदंपैत्र्यंस्मृतमाग्नेयमंडलम् ।।२३।।

(२) "मण्डल विचार"–कृत्तिका, भरणी, पुष्य, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद और मघा यह "आग्नेय मण्डल' के नक्षत्र हैं।।२३।।

यद्यस्मिन्धूलिवर्षादिर्विकारः कोपिजायते ।
भूमिकंपोशनेः पातउल्कापातोन्धकारिता ।।२४।।

दर्शनंधूमकेतोश्चग्रहणंचंद्रसूर्ययोः ।
रक्तवृष्टिर्जलवृष्टिरन्यद्वाकिंचिदद्भुतम् ॥२५॥
तदाग्निमंडलात्प्राज्ञोजानीयाद्भाविलक्षणम् ।
नेत्ररोगमतीसारंदेशेग्निप्रबलोदयः ॥२६॥

इनमें से जिस नक्षत्र में धूलिवर्षा आदि कोई भी विकार पैदा हो अथवा भूकंप, वज्रपात, उल्कापात, अंधकार, धूमकेतु का दर्शन, चन्द्र सूर्य के ग्रहण, रक्तवृष्टि (लाल रंग की वर्षा), जल की वर्षा अथवा ऐसा ही कुछ अद्भुत दृश्य हो तो विद्वानों को उचित है कि अग्निमंडल से भावी फल का लक्षण जानना। इसमें नेत्ररोग अतिसार और प्रबल अग्नि का उदय हो॥२४॥२५॥२६॥

गवांदुग्धंघृताल्पत्वंद्रुमेपुष्पफलाल्पता ।
अर्थनाशंचचौरेभ्यः स्वल्पवृष्टिंसमादिशेत् ॥२७॥

गायों में दूध घी की कमी हो, वृक्षों में फल पुष्पों की कमी हो, चोरों से द्रव्य का नाश हो और वर्षा कम हो॥२७॥

क्षुधयापीडितालोकाभिक्षाखर्प्परधारिणः ।
सैंधवायमुनातीरघृताटंकजबाह्लिकाः॥२८॥
जालंधराश्चकाश्मीराः समंत्रंचोत्तरापथः ।
एतेदेशाविनश्यंतितस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥२९॥

इति आग्नेयमंडलम्

लोग भूख से पीड़ित होकर भिक्षा के लिये खप्परधारी (जोगी) हो जाँय। सिंधुदेश–यमुना किनारे के देश घृताटंक और वाह्लिक जालंधर–काश्मीर और उत्तर देश इन देशों का उन उत्पातों के देखने से नाश हो॥२८॥२९॥

मृगादित्याश्विनीहस्तात्रित्रास्वातिसमन्विताः ।
उत्तराफाल्गुनीवायोरिदंमंडलमुच्यते ॥३०॥

मृगशिर, पुनर्वसु, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति और उत्तराफाल्गुनी यह नक्षत्र "वायुमण्डल" के हैं॥३०॥

यद्येषुजायतेकिंचित्पूर्वोक्तोत्पातलक्षणम् ।
महावातास्तदावांतिमहद्भयमुपस्थितम् ॥३१॥

यदि इनमें पूर्वोक्त उत्पात लक्षण हों तो उस समय महावायु (बड़ी जोर की आंधी) चलती है और महाभय उपस्थित होता है॥३१॥

उन्नीताअपिपर्जन्यानमुञ्चंतितदाजलम् ।
विनाशोदेवविप्राणांनृपाणांविन्ध्यवासिनाम् ॥३२॥

जल से भरे हुए बादलों की घनघोर घटासे भी जल नहीं वर्षे और ब्राह्मणों का देवताओं का तथा विन्ध्यवासियों का विनाश होता है॥३२॥

प्राकारगिरिभृङ्गाणितोरणस्थलभूमिका ।
वायुवेगविधूतानिनानिनिपतंतिहि ॥३३॥

इति वायुमण्डलम्

शहरों के परकोटे, पहाड़ों के शिखर, मकानों के तोरण और वनों के वृक्ष यह वायु वेग से भग्न हो जाते हैं॥३३॥

आर्द्राश्लेषोत्तराभाद्रपदं पुष्यंचवारुणम् ।
पूर्वाषाढामूलमेतद्वारुणंमंडलंस्मृतम् ॥३४॥

आर्द्रा–श्लेषा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, शतभिषा, पूर्वाषाढ़ा और मूल यह "वारुण" (जल मंडल के नक्षत्र) हैं॥३४॥

एषूत्पातोदयेपूर्वगदितेस्यात्प्रजासुखम् ।
बहुक्षीरघृतागावोबहुपुष्फलाद्रुमाः ॥३५॥

इनमें पहले कहे हुए उत्पात हों तो प्रजा को सुख मिलता है। गायों के

दूध, घी, बहुत हों, वृक्षों के फल पुष्प अधिक हों।।३५।।

बहुधान्यामहीलोकेनैरुज्यबहुमंगलम् ।
धान्यानिचसमर्घाणिसुभिक्षंप्रबलंभवेत् ।।३६।।

पृथ्वी पर खेतियां अच्छी हों, निरोगता हो, बहुत भांति के मंगल हों, अन्न सस्ते हों और बड़ा सुभिक्ष हो।।३६।।

कीटकामूषकाः सर्पाः शलभामृगकर्कटाः ।
मारिःपिपीलिकाकामंस्थलदेशेप्रजायते ।।३७।।

कीड़े, मूषे, सर्प, टिड्डी, हरिण, केंकड़े, पिपीलिका और मारी यह स्थल देशों में बहुत हों।।३७।।

ज्येष्ठानुराधारोहिण्योधनिष्ठाश्रवणस्तथा ।
अभिजिदुत्तराषाढाशुभंमाहेन्द्रमंडलम् ।।३८।।

ज्येष्ठा, अनुराधा, रोहिणी, धनिष्ठा, श्रवण, अभिजित् और उत्तराषाढ यह नक्षत्र "महीमण्डल" (भूमंडल) के हैं।।३८।।

एषूत्पातोदयेलोकाः सर्वेमुदितमानसाः ।
संधिकुर्वंतिभूमीशाः सुभिक्षंमंगलोदयः ।।३९।।

इनमें यदि उपरोक्त उत्पात हों तो सब लोक बड़े प्रसन्न मन रहें। राजा लोग संधि (राजीपा) करें। सुभिक्ष हो और मंगल कार्यों का उदय हो।।३९।।

उल्कापातादयः सर्वेऽमीषुस्वस्वफलप्रदाः ।
वर्षाकालंविनाज्ञेयावर्षाकालेतुवृष्टिदाः ।।४०।।

उल्कापातादि वर्षाकाल के बिना भी अपने अपने फल देते हैं और वर्षा काल में तो अवश्य ही वर्षा करते हैं।।४०।।

माहेंद्रसप्तरात्रेणसद्योवारुणमंडलम् ।
आग्नेयमर्द्धमासेनफलंमासेनवायवम् ।।४१।।

माहेय (पृथ्वी) मंडल का फल सात रात्रि में, वारुण (जल) मंडल का फल तत्काल, अग्निमंडल का फल पन्द्रह दिन में और वायुमंडल का फल १ महीने में होता है।।४१।।

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंराज्ञांसंधिः परस्परम् ।
अंत्यमंडलयोर्ज्ञेयंतद्विपर्ययमाद्ययोः ।।४२।।

"विशेष फल" अन्त्य मण्डल (पृथ्वीमंडल) में सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता और राजाओं में परस्पर संधि होती है। और आद्य (अग्निमंडल) में इनसे विपरीत होता है।।४२।।

माहेंद्रेवारुणेचैवहृष्टाभवंतिधेनवः ।
उत्पाताः प्रलयंयांतिधरणीवर्द्धतेशिवैः ।।४३।।

माहेन्द्र और वारुण मंडल में गायें बड़ी हृष्ट पुष्ट होती है, उत्पात सब दूर हो जाते हैं और पृथ्वी पर कल्याण बढ़ते हैं।।४३।।

त्रिमासिकंतुचाग्नेयंवायव्यचद्विमासिकम् ।
मासमेकंचवारुण्यंमाहेंद्रंसप्तरात्रिकम् ।।४४।।

किसी का यह भी मत है कि आग्येमंडल का ३ मास में, वायव्य का दो मास में, वारुण का एक मास में और माहेंद्र का सात रात्रि में फल होता है।।४४।।

विवेकविलासे पुनः

मंडलेऽग्नेरष्टमासैर्द्वाभ्यांवाय .केपुनः ।
मासेनवारुणेसप्तरात्रान्माहेंद्रकेफलम् ।।४५।।

विवेक विलास में लिखा है कि—अग्निमंडल आठ महीने में, वायु मण्डल दो महीने में, वारुण एक महीने में और माहेंद्र सात रात्रि में, फल देता है।।४५।।

रुद्रदेवः प्राह

वायव्यंमासयुग्मेनमाहेंद्रंसप्तरात्रिकम् ।
आग्नेयमर्द्धमासेनवारुणंशीघ्रवारिदम् ।।४६।।

रुद्रदेव कहते हैं–कि वायव्य दो महीनों में, माहेंद्र सात रात में, आग्नेय १५ दिन में और वारुण शीघ्र ही फल देता है। (अथवा जल वर्षाता है)।।४६।।

वारुणाग्नेययोर्भौमानिलयोः फलमंदता ।
अन्योन्यमभिघातेनतद्विमृश्यवदेत्फलम् ।।४७।।

वारुण से आग्नेय और भौम से वायु का फल मंद होता है। और परस्पर के अभिघात से जो फल हो वह विचार कर कहना चाहिये।।४७।।

भूमिकंपरजोवर्षदिग्दाहाकालवर्षणम् ।
इत्याद्याकस्मिकंसर्वमुत्पातइतिकीर्त्यते ।।४८।।

भूकंप–धूलि–दिग्दाह (दिशाओं में आग जली हुई दीखे) और अकालवर्षा हो यह सब अकस्मात् होनेवाले उत्पात कहाते हैं।।४८।।

इत्यनीतिप्रजारोगरणाद्युत्पातजंफलम् ।
मंडलाख्यासमंप्रायोवह्निवाय्वादिकंतथा ।।४९।।

इस प्रकार अन्याय, रोग, यह रण उत्पातों से होनेवाले फल हैं। और मण्डल भी कहाते हैं। प्रायः यह वह्नि वायव्यादि होते हैं।।४९।।

आग्नेयेपीड्यतेयाम्यांवायव्यांपुनरुत्तराम् ।
वारुणेपश्चिमांनात्रपूर्वांमाहेंद्रमंडले ।।५०।।

आग्नेय मण्डल में दक्षिण दिशा में पीड़ा होती है। वायुमण्डल में उत्तर में, वारुणमें पश्चिम में और माहेंद्र में पूर्वमें पीड़ा होती है।।५०।।

(३) अथ वायुविचारमाह

पूर्वस्याअथवोदीच्याः पवनः शीघ्रवृष्टये ।
दक्षिणस्यावृष्टिनाशीपश्चिमायांविलंबकः ॥५१॥

(३) "पवन विचार" पूर्व अथवा उत्तर की पवन शीघ्र वृष्टि करती है। दक्षिण से वृष्टि रुकती है और पश्चिम की हवा से वर्षा में विलंब होता है॥५१॥

आग्नेयाविग्रहंवह्नेर्भयंवृष्टिर्विबाधनम् ।
नैर्ऋतः पवनोयावत्तावत्कुर्यान्महातपम् ॥५२॥

अग्निकोणकी से अग्निभय तथा जल की रुकावट और नैर्ऋत्यकी से महागर्मी होती है॥५२॥

वायव्यवायुः कुरुतेवृष्टिंपवनसंयुताम् ।
ततःपीडामत्कुणाद्याईतयोजीववर्षणम् ॥५३॥

वायव्य की वायु से पवन सहित वर्षा होती है, जिससे खटमल आदि उत्पन्न होकर ईति भय होता है॥५३॥

ऐशानः पवनोविश्वहितायजलवृष्टये ।
आनंदंनंदयेल्लोकोवायुचक्रमिदंमतम् ॥५४॥

ईशान की पवन से संसार का हित होता है, जल वृष्टि होती है और लोगों को आनन्द मिलता है॥५४॥

रुद्रोऽपि स्वकृतमेघमालायामाह

वायुधारणमेवेदंशृणुतत्त्वेनसुंदरि ।
सुभिक्षंपूर्ववातेनजायतेनात्रसंशयः ॥५५॥

महादेवजी अपनी बनाई मेघमाला में कहते हैं कि हे सुन्दरी! वायु धारण; तत्व से सुनो। पूर्व की वायु से निःसन्देह सुभिक्ष होता है॥५५॥

आग्नेय्याखंडवृष्टिश्चजायतेगिरिजात्मजे ।
दक्षिणईतिर्विज्ञेयानैर्ऋत्यांकुलतात्वहे ।।५६।।

अग्निकोण की से खण्डवृष्टि होती है, दक्षिणकी से ईति (चूहे टिड्डी अनावृष्टि आदि) होते हैं। नैर्ऋत्य की से आकुलता होती है।।५।।

वारुणेदिव्यधान्यंचवायव्यांतप्तसंभवः ।
उत्तराद्याशुभंज्ञेयमीशान्यांसर्वसंपदः ।।५७।।

इति सामान्यतोवायुचक्रविचारः

पश्चिम की पवन से अच्छी खेतियां, वायव्य की से ताप, उत्तरकी शुभ और ईशानकी पवन सब संपत्ति देनेवाली होती है।।५७।।

हेमंतेदक्षिणेवायुः शिशिरेनैर्ऋतः शुभः ।
वसंतेचोषणः श्रेष्ठफलदायीशरत्सुसः ।।५८।।

हेमंत में दक्षिण की, शिशिर में नैर्ऋत्य की और वसंत में उष्ण (गर्म) वायु, शरद में श्रेष्ठ फल देती है।।५८।।

शरत्कालेतुपूर्वस्याः समीरः फलनाशनः ।
वसंतेचौत्तरावायुः फलपुष्पाणिनाशयेत् ।।५९।।

शरद में पूर्व की वायु से फल मारे जाते हैं और वसंत में उत्तर की वायु से फल पुष्पों का नाश होता है।।५९।।

आग्नेय्यानकदापीष्टऐशानः सर्वदाशुभः ।
नैर्ऋतोविग्रहं रोगंदुर्भिक्षकुरुतेभयम् ।।६०।।

इति वातविशेषचक्रम्

आग्नेयी वायु सदा खराब और ईशान की सदा अच्छी होती है। नैर्ऋत्य की से रोग विग्रह और दुर्भिक्ष भय होता है।।६०।।

झंझावातंविनाकश्चिद्यदाप्राच्यादिकोऽनिलः ।
स्पष्टभावेनचेद्वातितदावृष्टिः स्थिराभवेत् ।।६१।।

झनझनाहट न हो तो पूर्व की वायु स्पष्ट भाव से चलती हुई निश्चय वर्षा करती है।।६१।।

श्रावणेमुख्यतः प्राच्यांनभस्येचोत्तरोऽनिलः ।
वृष्टिंदृढतरांकुर्याच्छेषमासेषुवारुणः ।।६२।।

इति स्थापकवातः

मुख्य तो श्रावण में पूर्व की और भादवें में उत्तर की पवन दृढ वर्षा करती है। और शेष महीनों में पश्चिमी हवा अच्छी है। यह स्थापक वायु है।।६२।।

चैत्रासितद्वितीयायांसर्वदिग्भ्रामकोऽनिलः ।
विनामेघंतदाभाद्रपदेवृष्टिस्तुभूयसी ।।६३।।

"चैत्र" कृष्ण द्वितीया को यदि सब दिशाओं में घूमती हुई हवा चले तो भादवे में विना बादलों के भी बहुत वर्षा हो।।६३।।

पूर्वस्याउत्तरस्याश्चवायुश्चैत्रेसितेतरे ।
तृतीयायांतदालोकेसभिक्षंप्रचुरंजलम् ।।६४।।

यदि चैत्र कृष्ण तीज को पूर्व अथवा उत्तर की पवन चले तो प्रचुर जल वृष्टि से अच्छा सुभिक्ष होता है।।६४।।

चतुर्थ्यांवृष्टियुग्वातस्तदादुर्भिक्षमादिशेत् ।
चैत्रेसितादिपंचम्यांताद्गेवफलंभवेत् ।।६५।।

चैत्र कृष्ण चतुर्थी को यदि वर्षा सहित वायु चले तो दुर्भिक्ष होता है। चैत्र शुक्ल पंचमी को भी ऐसी पवन चले तो ऐसा ही फल जानना।।६५।।

चैत्रद्वितीयादिचतुर्दिनेषुकृष्णेऽथपक्षेयदिपूर्ववातः ।
वर्षायुतोनैवशुभः सितेतुपूर्वोत्तरावायुरतीवशस्तः ।।६६।।

चैत्र कृष्ण २।३।४।५ को वर्षा सहित पूर्व वायु चले तो शुभ नहीं

होती है, किंतु शुक्ल पक्ष में पूर्वोत्तर की वायु अत्यन्त श्रेष्ठ होती है।।६६।।

चैत्रस्यशुक्लपंचम्यांवायुर्दिक्षिणपूर्वयोः ।
वृष्ट्यासहतदावर्षेधान्येत्रिगुणमूल्यता ।।६७।।

चैत्रशुक्ल पंचमी को दक्षिण पूर्व की वर्षा सहित वायु चले तो उस वर्ष में धान्य का तिगुना मूल्य हो जाता है।।६७।।

एवं च

चैत्रोऽयम्बहुरूपस्तुदक्षिणानिलसंयुतः ।
सर्वोविद्युत्समायुक्तोवृष्टेर्गर्भहितावहः ।।६८।।

यदि चैत्र में अनेक प्रकार की पवन चले और बिजली चमके तो श्रेष्ठ वर्षा हो।।६८।।

मूलमारभ्ययाम्यांतंक्रमाच्चैवविलोकयेत् ।
यावद्दक्षिणतोवायुस्तावद्वृष्टिप्रदायकः ।।६९।।

मूल से भरणी तक चैत्र को देखना चाहिये उसमें जब दक्षिण की पवन चले तब तक वर्षा हो।।६९।।

शुक्लाकृष्णापिवैशाखेऽष्टमीयद्वाचतुर्दशी ।
एषुचेद्दक्षिणोवातस्तदामेघमहोदयः ।।७०।।

वैशाख में शुक्ल या कृष्ण की आठें चौदस को दक्षिण की पवन चले तो मेघ उदय हो।।७०।।

राधेशुक्लतृतीयायांचिह्नैश्चीयतेऽनिलः ।
पूर्वास्यायदिवोदीच्याघनाघनस्तदाघनः ।।७१।।

वैशाख शुक्ल ३ को ध्वजादि चिह्नों से वायु का विचार करे, यदि पूर्व वा उत्तर की वायु चले तो मेघ आवे और वर्षा हो।।७१।।

दक्षिणोनैर्ऋतोवायुर्वृष्टेः स्यात्प्रतिघातकः ।
वारुणाद्वृष्टिरधिकापरधान्यस्यरोधनम् ।।७२।।

उसी दिन दक्षिण या नैर्ऋत्य की पवन चले तो वर्षा नहीं हो और पश्चिम की पवन चले तो अच्छी हो किन्तु जाड़े की खेतियां नष्ट हों।।७२।।

वैशाखशुक्लतुर्येहिसंध्यायामुत्तरानिलः ।
सुभिक्षायाथपंचम्यामैद्रोधान्यमहर्घंकृत् ।।७३।।

वैशाख शुक्ल ४ को उत्तर की हवा चले तो सुभिक्ष हो और पंचमी को पश्चिमी पवन चले तो तेजी हो।।७३।।

उदयास्तंगतोयावत्पूर्वोवायुर्यदाभवेत् ।
संगृह्णीयाच्चधान्यानिबहूनिसुलभान्यथ ।।७४।।

उदय और अस्त के समय पूर्व की पवन चले तो सस्ते नाज का प्रचुर संग्रह करना चाहिये।।७४।।

एवंशुद्धदशम्यांचेत्तदापिधान्यसंग्रहः ।
तथादेशेषुपूर्णायांवायुंसम्यग्विचारयेत् ।।७५।।

इसी प्रकार शुक्ल दशमी को भी उदयास्त में पवन चले तो धान्य संग्रह करना चाहिये। तथा देशों में पूर्ण वायु का भले प्रकार विचार करना चाहिये।।८५।।

प्रातश्चतुर्घटीमध्येपूर्वोवायुर्यदाभवेत् ।
सूर्यार्द्रासंगमेवाद्यदिनेमेघमहोदयः ।।७६।।

सूर्य, आर्द्रा नक्षत्र पर हो तब यदि प्रातःकाल के समय चार घड़ीके भीतर पूर्व की पवन चले तो मेघका उसी दिन उदय होता है।।७६।।

वृष्टिंद्वितीयेपिवायुर्वैटिकेपूर्वयायुतः ।
ज्ञेयाद्वितीयेदिवसेआर्द्रातपनसंगमे ।।७७।।

इसी भाँति दूसरे दिन भी पूर्व वायु हो तो अवश्य वर्षा होती है।।७७।।

पूर्णिमातः समारभ्ययावज्ज्येष्ठासिताष्टमी ।
एवमार्द्रादिसूर्यर्क्षनवकेवृष्टिरुच्यते ।।७८।।

वैशाखी पूर्णिमा से 'ज्येष्ठ' कृष्णाष्टमी तक आर्द्रा के सूर्य में नौ नक्षत्रों का योग हो अर्थात् आर्द्रा पर सूर्य हो और पूर्णिमा से अष्टमी तक आर्द्रादि नौ नक्षत्र हों तो अवश्य वर्षा होती है।।७८।।

सूर्यसोमेत्वमायोगेवायुर्वारुणदिग्भवः ।
यदासरत्सुविज्ञेयोवायुर्धान्यमहाफलम् ।।७९।।

सूर्य, चंद्र और अमावस्या का योग हो और पश्चिमी हवा चले तो अच्छा अन्न हो।।७९।।

नवमासान्यदापूर्वोवायुश्चरतिभूतले ।
स्वातौमौक्तिकनिष्पत्तिर्बहुधान्यादिमंगलम् ।।८०।।

यदि नौ मास तक बराबर पूर्वी पवन चले तो सीप में मोती और पृथ्वी पर धान्य तथा मंगल बहुत हों।।८०।।

ज्येष्ठमासेरविकरास्तपंतिप्रचुरोऽनिलः ।
लूकासमन्वितोवापिघनगर्भस्तदाशुभः ।।८१।।

जेठ मास में कड़ी धूप पड़े, हवा बहुत चले, लू लगे तो वर्षा का गर्भ शुभ होता है।।८१।।

ज्येष्ठमासेऽष्टमीकृष्णातथाकृष्णचतुर्दशी ।
दक्षिणानिलसंयुक्तः परतोवृष्टिहेतवे ।।८२।।

जेठ बदी आठै तथा चौदस को दक्षिणी पवन हो तो पीछे वर्षा होती है।।८२।।

ज्येष्ठस्ययदिपंचम्यांदक्षिणः पवनश्चरेत् ।
तदातिलास्तथातैलंघृतंक्रेयंतदाश्विने ॥८३॥

जेठ की पंचमी को दक्षिणी पवन चले तो तिल तेल घी यह आसोज में खरीदने चाहिये॥८३॥

यदुक्तंमेघमालायांगर्जितंश्रूयतेयदि ।
दक्षिणस्याभवेद्वायुराच्छन्नंचयदानभः ॥८४॥
धान्यानांतिलतैलानांसंग्रहः क्रियतेतदा ।
द्विगुणस्त्रिगुणोलाभः क्रमान्मासश्चतुष्टये ॥८५॥

उक्त मेघमाला में यदि गर्जना सुने, दक्षिणी पवन हो और आकाश बादलों से ढ़का हुआ हो तो धान्य तथा तिल तैलादि का संग्रह करने से चार मास में दुगुना तिगुना लाभ होता है॥८४॥८५॥

सिताऽष्टम्यांज्येष्ठमासेचतस्रोवायुधारणाः ।
मृदुवायुः१ शुनोवातः२ स्निग्धाभ्रः३ स्थगिताभ्रकः ॥८६॥

मृदु (कोमल पवन) शुन (शब्द युक्त हवा)–स्निग्ध (चिकनी हवा) और स्थगित (शनी हुई हवा) यह चार भाँति की पवन होती हैं। इसका ज्येष्ठ शुक्लाष्टमी को विचार करना चाहिये॥८६॥

यदिताएकरूपाः स्युः सुभिक्षंसुखकारिकाः ।
सांतरालाः शिवायैतास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥८७॥

यदि उस दिन यह चारों ही चलें तो सुखकारक सुभिक्ष होता है। और एक के पीछे एक चले तो चोर तथा अग्निभय होता है॥८७॥

ज्येष्ठस्यशुक्लैकादश्यांपूजांकृत्वासुशोभनाम् ।
शुभंमंगलंकंकृत्वापुष्पधूपैरलंकृतः ॥८८॥

ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को पूजना करना चाहिये और धूप दीपादि से

अलंकृत शुभ मंगल करना चाहिये।।८८।।

उच्चंस्थानेप्रतिष्ठाप्यदीर्घदण्डेमहाध्वजः ।
एवंकृत्वाप्रयत्नेनशोधयेत्कालनिर्णयम् ।।८९।।

और पीछे एक लम्बे दण्डवाली ध्वजा को किसी ऊँचे स्थान पर स्थापन करना चाहिये। और ऐसा करके यत्नपूर्वक उस समय का निर्णय करना चाहिये।।८९।।

एकोवातोयदावातियानिचिह्नानिवापुनः ।
तदात्रिचतुरोमासान्ध्रुवंवर्षतिवारिदः ।।९०।।

यदि उस ध्वजा के हिलने से चिह्नों में ४ दिन तक एक ही पवन चले तो तीन चार मास तक निश्चय वर्षा होती है।।९०।।

प्रथमंपश्चिमोवातश्चतुर्दिनानिवातिचेत् ।
अनावृष्टिंविजानीयाद्दुर्भिक्षंरौरवन्तदा ।।९१।।

यदि पहले पश्चिमी हवा ४ दिन चले तो अनावृष्टि जाननी और दुर्भिक्ष जानना।।९१।।

उत्तरोहयमार्गेणचतस्रोहंतिवादिशः ।
चत्वारोवार्षिकामासामेघावर्षंतिभूतले ।।९२।।

यदि चारों दिन उत्तर की हवा चले तो वर्षा के चारों महीनों में मेघ वर्षे।।९२।।

विपरीतोयदावातश्चतस्रोहंतिवादिशः ।
रविमार्गेपरिभ्रष्टोजानीयात्तस्यलक्षणम् ।।९३।।

यदि चारों दिनों में विपरीत वायु चले तो अशुभ लक्षण जानना।।९३।।

शीतकालेतदावृष्टिर्वर्षाकालेनविद्यते ।
अनयोर्वैपरीत्येचवृष्टिंवर्षासुनिर्दिशेत् ।।९४।।

उससे शीत काल में तो वर्षा हो किन्तु बरसात में नहीं हो। और इससे विपरीत वर्षा हो तो अच्छी जानना।।९४।।

वायव्यांपश्चिमायांचनैर्ऋत्यांवातिचक्रमात् ।
आषाढेश्रावणेक्षिप्रंद्वौमासौवृष्टिरुत्तमा ।।९५।।

यदि वायव्य पश्चिम और नैर्ऋत्य की वायु क्रम से चले तो आषाढ़ श्रावण में जल्दी वर्षा हो।।९५।।

पूर्वस्यांचतथेशान्यामाग्नेय्यांवातिचक्रमात् ।
भाद्रपदाश्विनोच्छिद्रातदन्तेवृष्टिरुत्तमा ।।९६।।

पूर्व ईशान तथा अग्नि पवन चले तो भादवा और आसोज के अन्त में वर्षा हो।।९६।।

अमायांचैवपूर्णायांज्येष्ठमासेदिवानिशम् ।
मेघैराच्छादितेव्योम्निवातोवहतिवारुणः ।।९७।।
अनावृष्टिस्तदादेश्याक्वचिद्वृष्टिस्तुभाग्यतः ।
मासौद्वौश्रावणाषाढौपूर्णेभाद्रपदाश्विनौ ।।९८।।

यदि जेठ की अमावस या पूर्णिमा को दिन रात मेघाच्छादन रहे और पश्चिमी पवन चले तो अनावृष्टि जानना। आषाढ श्रावण में कहीं कुछ भाग्य से वर्षा हो सकती है। नहीं तो भादों और आश्विन भी पूरे सूखे निकल सकते हैं।।९७।।९८।।

आषाढशुक्लपंचम्यांपश्चिमोयदिमारुतः ।
वर्षागर्जितसंयुक्तः शक्रचापेनभूषितः ।।९९।।

"आषाढ़"–शुक्ल पञ्चमी को यदि पश्चिमी पवन चले तो गर्जना सहित वर्षा हो तथा इन्द्रधनुष से भी शोभित हो तो।।९९।।

तदासंगृह्यतेधान्यंकार्तिकेतन्महर्घता ।
लाभायजायतेनूनंनान्यथाऋषिभाषितम् ।।१००।।

उस समय का धान्य का संग्रह करे क्योंकि कार्त्तिक में उसकी तेजी होती है। जिससे अच्छा लाभ रहता है यह ऋषि भाषण झूँठा नहीं है।।१००।।

आषाढशुक्लपक्षस्यद्वित्तीयायांनवर्षति ।
यदिमेघस्तदावृष्टिः श्रावणेजायतेध्रुवम् ।।१०१।।

आषाढ शुक्ल द्वितीया को मेघ तो हो किन्तु वर्षा न हो तो श्रावण में निश्चय वर्षता है।।१०१।।

तृतीयांपूर्ववायुः पूर्वगामीचवारिदः ।
घनामेघास्तदाभाद्रेवर्षंतिविपुलंजलम् ।।१०२।।

आषाढ़ शुक्ल ३ को पूर्व की वायु चले और पूर्वही से बादल जाय तो भादवे में बहुत वर्षा और गहरा जल होता है।।१०२।।

चतुर्थ्यांदक्षिणोवायुर्मेघः पूर्वेचगच्छति ।
आश्विनेचतदामासेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ।।१०३।।

चौथ को यदि दक्षिणी पवन चले तो पूर्व में बादल जाय तो आश्विन में निश्चय वर्षा होती है।।१०३।।

वृष्टेदिनचतुष्केऽस्मिन्वातेपूर्वोत्तरागते ।
अतिवृष्टिः सुभिक्षंचदुर्भिक्षंचतदन्यथा ।।१०४।।

यदि इन चारों दिनों में पूर्वोत्तर वायु चले तो अतिवृष्टि तथा सुभिक्ष हो अन्यथा दुर्भिक्ष हो।।१०४।।

सर्वरात्रयदाभ्राणिवातौपूर्वोत्तरौयदि ।
तस्मिन्वर्षेकणाः पुष्टाभवंतिभुविमंगलम् ।।१०५।।

इन दिनों में सब रात बादल रहें और पूर्वोत्तरं वायु चले तो उस वर्ष में अन्न बहुत मोटा होता है और पृथ्वी पर मांगलिक काम होते हैं।।१०५।।

यदिवानाभ्रलेशः स्याद्वातौपूर्वोत्तरौनहि ।
नववर्षतियदादेवोदुष्टकालंतदादिशेत् ॥१०६॥

यदि लेश मात्र भी बादल न हो और पूर्वोत्तर की पवन भी न हो तो मेघ नहीं वर्षे और अकाल पड़े॥१०६॥

यत्राभ्रेस्वल्पकेजातेमध्येवातेऽल्पवर्षणम् ।
यत्रमासविभागेचनिर्मलंदृश्यतेनभः ॥१०७॥
तत्रहानिश्चवृष्टेश्चविज्ञेयंगर्भपातनम् ।
यत्राभ्रपंचनाडीषुवातौपूर्वोत्तरौयदि ॥१०८॥
तत्रमासेभवेद् वृष्टिरित्येवंसर्वनिर्णयः ।
आषाढचांरात्रिकालेऽपिपवनः सर्वदिग्गतः ॥१०९॥

जब कम बादल हों और हवा भी कम चले तो मध्यम वर्षा हो। और महीने के अन्तर में निर्मल आकाश दीखे तो वर्षा की हानि तथा गर्भपात हो और पांचों नाड़ी में मेघ तथा पूर्वोत्तर की पवन चले तो पौष मास में अवश्य वर्षा हो तथा आषाढी पूर्णिमा को रात में सब दिशाओं की पवन चले तो ऐसा ही हो॥१०७॥१०८॥१०९॥

अभ्रैरवृष्टैरपिचपूर्णिमासुखदायिनी ।
आद्ययामेयदाभ्राणिवातौपूर्वोत्तरोयदि ॥११०॥
आद्यमासेतदावृष्टिर्वाञ्छितादधिकाक्षितौ ।
आषाढचांचनिवष्टायांनूनंभवति निःकणम् ॥१११॥

पूर्णिमा को बादल हों और अवृष्टि हो तो सुख होता है। उस दिन यदि पहले पहर में बादल हों और पूर्वोत्तर की पवन चले तो पहले महीने में आशा से भी अधिक वर्षा होती है और यदि आषाढ़ी टूट जाय तो कण नहीं होता॥११०॥१११॥

ग्रहणंवृक्षपाताद्यैर्मर्त्यनश्यतिपूर्णिमा ।
प्रथमाघटिकाः पंचआषाढः पंचश्रावणः ।।११२।।

पूर्णिमा के ह्रास से ग्रहण तथा वृक्ष पातादि होते हैं। (आषाढ़ शुक्ल की पूर्णिमा की रात को पांच पांच घड़ी के पांच भाग बनाकर उस रात को पांच भागों में विभाजित करे) प्रथम पांच घटी को आषाढ़, दूसरी पांच घटी को श्रावण समझे।।११२।।

पंचभाद्रपदोमास्तथापंचाश्विनः पुनः ।
यत्राभ्राकुलनाडीषुवातौपूर्वोत्तरौस्फुटम् ।।११३।।
तत्रमासेभवेद्वृष्टिर्वातैरपिशुभैः शुभः ।
येषुमासेषुयेदग्धागर्भाः पौषादिसंभवाः ।।११४।।

इसी प्रकार तीसरी पांच घड़ी को भादवा और चोथी पांच घड़ी को आसोज माने। इस प्रकार मानी हुई घटियों में जिस मास की पांच घड़ियों में बादल छाये हों और पूर्वोत्तर की स्पष्ट हवा चले तो उस मास में वर्षा होती है और शुभ वायु भी शुभ होता है। जिस मास में पौषादि संभावित गर्भ दग्ध हों तो नेष्ट होते हैं।।११३।।११४।

तन्मासपंचभागेषुरात्रौ चंद्रोऽतिनिर्मलः ।
पौषादिसंभवेगर्भेध्रुवमुत्पातसंभवः ।।११५।।

उस रात्रि में महीनों के पांचों भागों में चन्द्रमा अत्यन्त निर्मल रहे तो पौषादि के गर्भ में उत्पात होने की संभावना है।।११५।।

तेनाषाढीदिवारात्रौद्रष्टव्यावृष्टिहेतवे ।
यद्याषाढ्यामहोरात्रमग्रेवातैः शुभैर्युतम् ।।११६।।

अत एव आषाढ़ी पूर्णिमा को वृष्टि के हेतु दिन रात देखने चाहिये। यदि आषाढ़ी को रात दिन पवन चलती है तो शुभ है।।११६।।

तदागर्भाः शुभाज्ञेयाः शीतकालेपिधीमता ।
एकमेवदिनंप्रेक्ष्यंवर्षज्ञानायधीधनैः ॥११७॥

उससे शीतकाल में भी गर्भ शुभ होते हैं। साल भर के ज्ञान के लिये यह एक दिन विद्वानों को अवश्य विचारना चाहिये॥११७॥

चेदष्टम्यांशुभ्रमभ्रंवातैर्वर्षंभवेच्छुभम् ।
आषाढचांनिर्मलश्चंद्रः परिवेषयुतोऽथवा ॥११८॥
तदाजगत्समुद्धर्तुंशक्रेणापिनशक्यते ।
कुहूतः षोडशेचाह्निलक्षणंचिंतयेदिदम् ॥११९॥

जो आषाढ़ की अष्टमी को शुभ्र (सफेदी वाले) बादल हों और वायु सहित वर्षा हो तो शुभ होता है। आषाढ शुक्ल पूर्णिमा को निर्मल चन्द्रमा हो अथवा उससे परिवेष (घेरा) हो तो संसार का उद्धार करने में इन्द्र भी समर्थ नहीं हो सकता। अतः गत अमावस में सोलहवें दिन सब प्रकार के लक्षण विचारने चाहिये॥११८॥११९॥

अस्तंगच्छतितिग्मांशौतस्माद्वर्षंशुभाशुभम् ।
आषाढचांपूर्ववातेचसर्वधान्यामहीभवेत् ॥१२०॥

"आषाढ़ी पूर्णिमा"—को जिस समय सूर्य भगवान् अस्त होने को चले गये हों उस समय वर्ष का शुभाशुभ जानने को वायु परीक्षा करे। उस दिन यदि पूर्व की पवन चले तो सम्पूर्ण धान्य पृथ्वी पर हो॥१२०॥

आग्नेयवातेलोकाः स्युरुद्विग्नाश्चातिरोगतः ।
दक्षिणेपवनेराज्ञांमहायुद्धंपरस्परम् ॥१२१॥

आग्नेय की वायु चले तो लोगों में उद्वेग तथा रोग बहुत हों और दक्षिण की पवन चले तो राजाओं में परस्पर महायुद्ध हों॥१२१॥

नैर्ऋतेनिर्जलाभूमिर्धान्यसंग्रहकारणम् ।
वारुणेप्रबलावृष्टिर्धान्यनिष्पत्तिहेतवे ।।१२२।।

नैर्ऋत्य की पवन चले तो नीर का नाश हो और धान्य का संग्रह करने की आवश्यकता हो। पश्चिम की पवन चले तो बहुत जल वर्षे और उससे खेतियां बहुत उत्पन्न हों।।१२२।।

वायव्येमत्कुणात्पीडामशकाद्यास्तथेतयः ।
उत्तरेपवनेलोकागीतमंगलपूरिताः ।।१२३।।

वायव्य की पवन चले तो खटमल मच्छर आदि ईति हों। उत्तर की चले तो लोकों में गीत मंगल बहुत हों।।१२३।।

धान्यंधनंतथेशानेसुखंधान्यसमर्घता ।
इत्याषाढीवातचक्रमाषाढेघनशेखरम् ।।१२४।।

यदि आषाढी पूर्णिमा को ईशान की पवन चले तो धन धान्य का सुख मिले, अन्न सस्ता बिके यह आषाढ़ी वायुचक्र विचारणीय है।।१२४।।

गर्जतियदिवामेघोवातिचोत्तरः पवनः ।
दशमेतदानींभुविमेघमहोदयंकुर्यात् ।।१२५।।

"विशेषफल"– आषाढ़ी पूर्णिमा को मेघ गर्जे और उत्तर की पवन चले तो शुभ होता है।।१२५।।

अभ्रंविनाषाढपूर्णावातौपूर्वोत्तरौयदि ।
यत्रयामार्द्धकेतत्रमासेवृष्टिर्हिवाभवेत् ।।१२६।।

यदि आषाढ़ी पूर्णिमा को बादल न हों और पूर्व उत्तर की पवन चले तो जिस यामार्द्ध में ऐसा हो उसी मास में वर्षा हो (यामार्ध पहले कह आये हैं) ।।१२६।।

भवेत्पूर्वोत्तरौवातौनचान्नंनापिवर्षणम् ।
आषाढचांतर्हिविज्ञेयंदुर्भिक्षंलोकदुःखदम् ।।१२७।।

यदि आषाढ़ी को पूर्वोत्तर वायु भिन्न भिन्न रूप की हो अर्थात् वेगपूर्वक कभी पूर्व की कभी उत्तर की हो और बादल न हों तो न तो अन्न हो और न वर्षा हो किन्तु लोकदुखदाई दुर्भिक्ष हो।।१२७।।

मार्गमासेसिताष्टम्यांपूर्वोवातः सुभिक्षकृत् ।
अन्यतः पवनः कुर्याद्दुर्भिक्षंभाविवत्सरे ।।१२८।।

("श्रावण–भाद्रपद–आश्विन–और कार्त्तिक" की पवन का विचार ११० के श्लोक में पहले हो गया अब "मार्गशीर्ष" का विचार लिखते हैं, यदि मार्ग शुक्लाष्टमी को पूर्व की पवन चले तो सुभिक्ष करती है। और तरह की चले तो दुर्भिक्ष करती है।।१२८।।

एकादश्यांपौषकृष्णेदक्षिणः पवनोयदा ।
विद्युद्वादलसंयुक्तस्तदादुर्भिक्षकारकः ।।१२९।।

"पौष" कृष्ण एकादशी को दक्षिण की पवन चले और बिजली बादल संयुक्त हों तो दुर्भिक्ष करती है।।१२९।।

पौषस्यशुक्लपंचम्यांतुषारः पवनोयदि ।
तदागर्भस्यपीडास्याद्भाविवर्षहितावहः ।।१३०।।

पौष शुक्ल पंचमी को बर्फ की पवन हो तो आगामी वर्ष के हित में गर्भ पीड़ा रती है।।१३०।।

पंचम्यांव्योमखंडेपियदाचशीतलोऽनिलः ।
विद्युन्मेघसमायुक्तस्तदागर्भोदयोध्रुवम् ।।१३१।।

उसी पंचमी को आकाश में शीतल पवन चले और मेघ सहित बिजली चमके तो निश्चय ही गर्भ का उदय होता है।।१३१।।

माघेशुक्लप्रतिपदिवायुर्वादलसंयुतः ।
तैलादिसर्वसुरभीमहर्घंजायतेभुवि ।।१३२।।

"माघ" शुक्ल प्रतिपदा को बादल सहित वायु चले तो तैलादि सब

सुगन्ध पदार्थ महँगे हो।।१३२।।

माघस्यशुक्लपंचम्यांवृष्टियुक्तोत्तरानिलः ।
अनावृष्टिर्भाद्रपदेकुर्याद्धान्यमहर्घता ।।१३३।।

यदि माघ शुक्ल पंचमी को वृष्टि युक्त उत्तर की पवन हो तो भादवें में अनावृष्टि होकर अन्न महँगा हो।।१३३।।

शुक्लेमाघस्यसप्तम्यावारुण्यांविद्युदभ्रयुक् ।
ऐन्द्रोवातोथकौबेरोदिवाविंशत्सुभिक्षकृत् ।।१३४।।

माघ शुक्ल सप्तमीको पश्चिम में बादल तथा बिजली हो और पूर्व अथवा उत्तर की पवन हो तो बीस दिन में सुभिक्ष हों।।१३४।।

माघस्यनवमीकृष्णादशम्यैकादशीतथा ।
सवाताविद्युतायुक्ताः कथयन्तिजलंबहु ।।१३५।।

माघ कृष्ण नौमी दशमी एकादशी को वायु और बिजली हो तो बहुत जल होता है।।१३५।।

अमावस्यामहोरात्रंहिमोवातस्तुवृष्टिकृत् ।
पौर्णमास्यांभाद्रपदेकुर्यान्मेघमहोदयम् ।।१३६।।

अमावस्या को दिन रात में ठंढी पवन हो तो वर्षा करती है। और भाद्रपद की पूर्णिमा को वर्षा करती है।।१३६।।

फाल्गुनेऽतिरवोवायुर्वातिपत्राणिपातयन् ।
दक्षिणोतिमृदुश्चैत्रेमेघगर्भहितायसः ।।१३७।।

"फाल्गुन" में अत्यंत शब्द वाली वायु चलकर वृक्षों के पान गिरा दें। दक्षिण की कोमल चले तो चैत्र के मेघ के गर्भ को हित होती है।।१३७।।

हुताशन्यादीप्तिकाऐन्द्रःस्यादतिवृष्टये ।
औदीच्योधान्यनिष्पत्त्यैदुर्भिक्षंदक्षिणोनिलः ।।१३८।।

"होली की हवा"-यदि फाल्गुनी पूर्णिमा को होली के दीप्तिकाल (जल उठने के समय) पूर्व की पवन चले तो अतिवृष्टि होती है। उत्तर की चले तो धान्य उपजते हैं, दक्षिण की चले तो दुर्भिक्ष होता है।।१३८।।

वारुणोमध्यमंवर्षमुच्चैर्वातोभयंकरः ।
चतुर्दिक्षुमहद्वातेराज्ञांयुद्धंप्रजाक्षयः ।।१३९।।
इतिवर्षप्रबोधे उत्तरभागे प्रथमः स्थलः ।

पश्चिम की वायु चले तो मध्यम वर्ष होता है। ऊंची हवा चले तो भय करती है। चौतर्फा की हवा चले तो राजाओं में युद्ध और प्रजा का क्षय होता है।।१३९।।

इति हनूमान शर्मा संग्रहीत हिन्दीटीकासहित वर्षप्रबोध के उत्तरभाग का प्रथम स्थल समाप्त।

(१) अथ वृष्टिविचारमाह

अन्नंजगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्यचान्नमायत्तम् ।
यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृट्कालः प्रयत्नेन ।।१।।

(१)"अब वर्षा का विचार" लिखते हैं। अन्न ही जगत् का प्राण है और वही अन्न वर्षा के वशीभूत है अर्थात् वर्षा होने से ही अन्न हो सकता है अतएव वर्षाकाल की यत्न से परीक्षा करनी चाहिए।।१।।

दैवविदवहितचित्तोद्युनिशंयोगर्भलक्षणेभवति ।
तस्यमुनेरिववाणीनभवतिमिथ्याम्बुनिर्देशे ।।२।।

जो दैव का जाननेवाला रात दिन गर्भ के लक्षण जानने में मन लगाता है उसके वाक्य वर्षा के बताने में मुनियों की भाँति कभी झूँठ

नहीं होते।।२।।

गर्भलक्षणम्

मार्गशिरः सितपक्षप्रतिपत्प्रभृतिक्षपाकरेषाढाम् ।
पूर्ववासमुपगतेगर्भंवालक्षणेज्ञेयम् ।।३।।

"गर्भलक्षण"-मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा से जिस दिन चंद्रमा पूर्वाषाढ नक्षत्र में आवे उस दिन से ही सब गर्भों का लक्षण जान लेना चाहिये।।३।।

यन्नक्षत्रमुपगतेगर्भश्चन्द्रे भवेत्सचन्द्रवशात् ।
पञ्चनवतिदिनशतेतत्रैवप्रसवमायाति ।।४।।

चन्द्रमा के जिस नक्षत्र में प्राप्त होने से मेघ का गर्भ होता है उसी नक्षत्र से १९५ एक सौ पचानवे दिन में वह गर्भ प्रसवकाल को प्राप्त होता है अर्थात् मेह वर्षता है।।४।।

सितपक्षभवाः कृष्णेशुक्लेकृष्णाद्युसंभवारात्रौ ।
नक्तंप्रभवाश्चाहनिसन्ध्याजाताश्चसन्ध्यायाम् ।।५।।

शुक्ल पक्ष का पैदा हुआ गर्भ कृष्ण पक्ष में और कृष्ण पक्ष का शुक्ल पक्ष में एवं दिन का गर्भ रात में और रात का गर्भ दिन में और प्रातः काल का सायंकाल में तथा सायंकाल का गर्भ प्रातःकाल में प्रसव होता है।।५।।

क्रूरग्रहसंयुक्तेकर्काशनिमत्स्यवर्षदागर्भाः ।
शशिनिरवौवाशुभसंयुक्तेक्षितेभूरिवृष्टिकराः ।।६।।

यदि प्रसव काल के समय क्रूर ग्रह संयुक्त हो तो उस गर्भ से ओले अशनि और मच्छी आदि की वर्षा होती है और यदि चंद्र सूर्य शुभग्रहों से संयुक्त हो अथवा शुभनिरीक्षित हों तो अच्छी वर्षा होती है।।६।।

करकाधूमरिकापातोरजोवृष्टिः सधूमिका।
त्रिभिरेतैर्महोत्पातैः सद्योगर्भोविनश्यति ।।७।।

करक वृष्टि-धूम पात और सधूम रजोवृष्टि यह तीनो शीघ्र गर्भनाशक हैं।।७।।

गर्भः पुष्ट प्रसवेग्रहोपघातादिभिर्यदिनवृष्टिः ।
आत्मीयगर्भसमयेकरकामिश्रंददात्यंभः ।।८।।

जो पुष्ट गर्भ भी प्रसव काल में ग्रहों के उपाघातादि से न वर्षे तो आत्मीय गर्भ के समय ओलों से मिला हुआ जल वर्षे।।८।।

पञ्चनिमित्तैः शतयोजनंतदर्धार्धमेकहान्यातः ।
वर्षतिपञ्चसमन्ताद्रूपेणैवयोगर्भः ।।९।।

जो गर्भ पांच निमित्तों से पुष्ट होता है, वह सौ योजन तक फैलकर वर्षा करता है और यदि उसमें निमित्तों की न्यूनता हो तो पूर्ण वर्षा में भी अर्द्धार्द्ध न्यूनता होती है। अर्थात् एक निमित्त कम हो तो ५० योजन (२०० कोश) दो कम हों तो २५ योजन (१०० कोश) तीन कम हों १२।। योजन (५० कोश) और ४ निमित्त कम हों तो २० कोश तक जल वर्षता है।।९।।

द्रोणः पञ्चनिमित्तेगर्भेत्रीण्याढकानिपवनेन ।
षड्विद्युतानवाभ्रैः स्तनितेनद्वादशप्रसवे ।।१०।।

"जल का तौल'- यदि गर्भ में पांच निमित्त (पवन १ जल २ बिजली ३ गर्जना ४ और बादल ५) हों तो प्रसव काल में एक द्रोण (२०० पल) जल वर्षाता है। पवन निमित्तवाला गर्भ प्रसव तीन आँक (१५० पल) जल वर्षाता है। बिजली निमित्तक गर्भ छः आढक (३०० पल) जल वर्षाता है। मेष निमित्तक नौ आढक (४५० पल) और गर्जन निमित्तक १२ आँक (६०० पल) जल वर्षाता है (एक पल, ३ तोले २ मांसे ८।। रत्ती का होता है। आकाशी जल की तौल आज ही नहीं हुई हैं। पहले से ही होती आ रही है)।।१०।।

मृगशीर्षाद्यागर्भामन्दफलाः पौषशुक्लजाताश्च ।
पौषस्यकृष्णपक्षेविनिर्दिशेच्छ्रावणस्यसितम् ॥११॥

मृगशीर्षादिक के गर्भ और पौष शुक्ला के पैदा हुए गर्भ मंद फल युक्त होते हैं। पौष के कृष्ण पक्ष से श्रावण शुक्ल पक्ष बतलाना चाहिये॥११॥

माघसितोत्थागर्भाः श्रावणकृष्णेप्रसूतिमायांति ।
माघस्यकृष्णपक्षेविनिर्दिशेद्भाद्रपदशुक्लम् ॥१२॥

माघ से शुक्ल पक्ष का गर्भ श्रावण के कृष्णपक्ष में वर्षता है और माघ के कृष्ण पक्ष से भाद्रपद शुक्ल का ज्ञान होता है॥१२॥

फाल्गुनशुक्लसमुत्थाभाद्रपदस्यासितेविनिर्देश्याः ।
तस्यैवकृष्णपक्षोद्भूवास्तुयेतेऽश्वयुक्शुक्ले ॥१३॥

फाल्गुन शुक्ल में उठे हुए गर्भ भाद्रपद कृष्ण में वर्षते हैं। और फाल्गुन कृष्ण में उत्पन्न हुए गर्भ आश्विन शुक्ल में प्रसव होते हैं॥१३॥

चैत्रसितपक्षजाताः कृष्णेश्वयुजश्चवारिंदागर्भाः ।
चैत्रासितसंभूताः कार्तिकशुक्लेभिवर्षन्ति ॥१४॥

चैत्र शुक्ल के गर्भ आश्विन कृष्ण में और चैत्र कृष्ण के कार्तिक शुक्ल में वर्षते हैं॥१४॥

मार्गशीर्षेकृष्णपक्षेमघायांगर्भसंभवे ।
यद्वाकृष्णचतुर्दश्यांसविद्युन्मेघदर्शने ॥१५॥
आषाढेशुक्लपक्षेचचतुर्थ्यांवर्षतिध्रुवम् ।
मार्गकृष्णचतुर्थ्यादित्रयेऽश्लेषात्रयीक्रमात् ॥१६॥
गर्भितेष्वेषुऋक्षेषुमार्गेकृष्णफलंभवेत् ।
आषाढपूर्वफाल्गुनन्यांत्रिरात्रंवृष्टिसंभवः ॥१७॥

मार्गशीर्ष कृष्ण में मघा में या १४ में गर्भ हो और बिजली सहित बादल दीखे तो आषाढ शुक्ल चतुर्थी को निश्चय वर्षा होती है। मार्गशीर्ष कृष्ण चौथ, पांचें, छठ को या श्लेषा, मघा, पूफा को गर्भे तो मार्ग कृष्ण में फल मिलता है। उससे आषाढ में पूर्वफाल्गुनी से तीन रात वर्षा होती है।।१५ से १७।।

उत्तराहस्तचित्राचसप्तम्यादित्रयेयदा ।
मार्गशीर्षेगर्भिताचेदभ्रैर्वातैश्चविद्युतः ।।१८।।
आषाढे श्वेतपक्षेतुअष्टम्यांस्वातिभेतदा ।
त्रिरात्रंमेघवृष्टचास्याज्जलैरेकार्णवामही।।१९।।

मार्गशीर्ष में ७।८।९ को उ० ह० चि० होकर बादल बिजली और वायु से गर्भे तो आषाढ शुक्ल अष्टमी से अथवा स्वाति से तीन रात तक इतना जल वर्षे कि पृथ्वी पर एकार्णव हो जाय।।१८।।१९।।

दशम्यादित्रयेमार्गेकृष्णेचामावसीतिथौ ।
चित्रास्वातिविशाखासुसंजातेगर्भलक्षणे ।।२०।।
आषाढेशुक्लपक्षान्तस्तिथौतस्यांघनोदयः ।
तस्मिन्नेवचनक्षत्रेजायतेनात्रसंशयः ।।२१।।

मार्ग कृष्ण १०।११।१२ अथवा ३० तिथि और चित्रा स्वाति विशाखा में गर्भे तो आषाढ शुक्ल की उन्हीं तिथियों में और उन्हीं नक्षत्रों में मेघ होता है इसमें सन्देह नहीं।।२०।।२१।।

चैत्रेकृष्णद्वितीयायांनिरभ्रंचेन्नभोभवेत् ।
तदाभाद्रपदेमासेज्ञेयोमेघमहोदयः ।।२२।।

"गर्भ तथा वर्षाकारक अन्य योग"-चैत्र कृष्ण दोयज को आकाश में बादल न हों तो भादवें में मेघमहोदय जानना।।२२।।

चैत्रकृष्णद्वितीयायांमेघोवैप्रबलोयदा ।
जलंपततिचैत्रेचतदावृष्टिस्तुकार्त्तिके ।।२३।।

चैत्र कृष्ण द्वितीया को प्रबल बादल हों तो कार्तिक में अच्छी वर्षा होती है।।२३।।

चतुर्थ्यांकृष्णपक्षस्यवर्षादुर्भिक्षकारिणी ।
पंचम्यामसितेचैत्रेनृणांतद्दुर्दिनः शुभः ।।२४।।

कृष्णपक्ष की ४ को वर्षा हो तो दुर्भिक्ष हो और पंचमी को दुर्दिन हो तो शुभ है।।२४।।

चैत्रस्यकृष्णपंचम्यांहस्तनक्षत्रसंगमे ।
नविद्युद्गर्जिताभ्राणितदास्याद्वत्सरः शुभः ।।२५।।

चैत्र कृष्ण पंचमी को हस्त हो और बादल बिजली गर्जन न हो तो वर्ष शुभ होता है।।२६।।

त्रयोदशीचनवमीपंचमीकृष्णचैत्रगाः ।
एतास्तुविद्युतोगर्भसंभवोवृष्टिहानिकृत् ।।२६।।

चैत्र कृष्ण की तेरस, नौमी, पंचमी को बिजली का गर्भ वृष्टि की हानि करता है।।२६।।

चैत्रस्यकृष्णसप्तम्यामभ्रच्छन्नंयदानभः ।
रक्तवस्तुसमर्घंत्वंभवत्येवनसंशयः ।।२७।।

चैत्रकृष्ण सप्तमी को आकाश बादलों से घिरा हुआ हो तो लाल वस्तुयें बहुत हों।।२७।।

प्रतिपच्चैत्रशुक्लायांद्वितीया वा तृतीयका ।
चतुर्थीवृष्टियुक्ताचेच्चातुर्मास्यंतदाघनः ।।२८।।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चार दिन तक वर्षा हो तो चौमासा अच्छा हो।।२८।।

चैत्राद्यप्रतिपन्मेघः गर्जितंवर्षणंतथा ।
श्रावणे भाद्रमासेचतदावृष्टिर्नजायते ।।२९।।

चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को मेघ गर्जे तथा वर्षे तो श्रावण भादौं में वर्षा नहीं हो।।२९।।

पंचमीसप्तमीशुक्लाचैत्रीयाचत्रयोदशी ।
एतासुवादलंश्रेष्ठंतत्रवर्षातुदुःखकृत् ।।३०।।

चैत्र शुक्ल ५।७।१३ में वादल अच्छे और वर्षा नेष्ट है।।३०।।

चैत्रेमासेकृष्णपक्षेचतुर्दशीतथाष्टमी ।
तत्राभ्रमुत्तरोवायुः शुभायवत्सरे भवेत् ।।३१।।

चैत्र कृष्ण १४ या ८ को वादल तथा उत्तर की वायु हो तो वर्षा अच्छा होता है।।३१।।

चैत्रस्यशुक्लपक्षेतुत्रयोदश्यांरजोनिलः ।
अथवाधूमरीपातोमेघस्तत्रनवर्षति ।।३२।।

चैत्र शुक्ल १३ को धूलियुक्त पवन हो अथवा धूमरी बात हो तो मेघ नहीं वर्षे।।३२।।

चैत्रेदशम्यांशनिनामघायोगेयदाम्बुदः ।
वर्षेत्तदासर्ववर्षेधान्यस्यार्थोनजायते ।।३३।।

चैत्र शुक्ल दशमी को शनिवार मघा नक्षत्र हो और वर्षा हो तो उस वर्ष भर में धान्य की उत्पत्ति अच्छी नहीं हो।।३३।।

वैशाखकृष्णप्रतिपद्युद्गच्छेन्नभभास्करः ।
मेघैराच्छाद्यतेव्योम्निसंवत्सरहितायसः ।।३४।।

वैशाख कृष्ण १ को मेघाच्छादित सूर्य ऊगे तो संवत्सरका हित हो।।

शुक्लेकृष्णेचवैशाखेचतुर्दश्यष्टमीदिने ।
गर्जविद्युत्पयोवर्षावर्षानंदविधायकाः ।।३५।।

वैशाख शुक्ल वा कृष्ण की चौदस आठै का गाजे-बिजली हो और वर्षे तो आनंद हो।।३५।।

वैशाखकृष्णैकादश्यांमेघोवैप्रबलोभवेत् ।
तदाधान्यानिविक्रेयःकर्तव्यः कृषिकर्मणि ।।३६।।

वैशाख कृष्ण ११ को प्रबल मेघ हो तो खेती बोने के लिये धान्य बेच देना चाहिये।।३६।।

वैशाखशुक्लप्रतिपद्द्वितीयादिनद्वयेबादलकंशुभाय ।
तदातृतीयादिवसेपिचाभ्रंवृष्टिर्विशिष्टापरमंगरोगः ।।३७।।

वैशाख शुक्ल १।२।३ में बादल हों तो वर्षा विशेष हो परन्तु अंग रोग हो।।३७।।

वैशाखशुक्लदशमीदिनेचवादलंशुभम् ।
राधेश्विनीदिनेषष्ठ्यांरक्तवस्तुमहर्घता ।।३८।।

वैशाख शुक्ल १० को वादल शुभ होते हैं, वैशाख की छठ को अश्विनी हो तो लाल वस्तु महँगी हों।।३८।।

वैशाखसितपंचम्यांमेघवादलसंभवः ।
संग्रहस्सर्वधान्यानांलाभोभाद्रपदेभवेत् ।।३८।।

वैशाख शुक्ल ५ को मेघ बावल हों तो भादवें में वर्षा नहीं हो।।३८।।)

राधेशुक्लप्रतिपदिसप्तम्यादिदिनत्रये ।
बादलानांसमुदयेशीघ्रंवृष्टिंविनिर्दिशेत् ।।३९।।

वैशाख शुक्ल १।७।८।९ को बादल होने से शीघ्र वर्षा हो।।३९।।

एकादशीत्रयेशुक्लेदुर्भिक्षंवृष्टिवादलात् ।
राधेचपूर्णिमावृष्टिभाद्रेधान्यमहर्घकृत् ।।४०।।

एकादशी आदि ३ दिनों में बादल वा वृष्टि से दुर्भिक्ष होता है और पूर्णिमा को वर्षा होने से भादवें में खैंच होती है।।४०।।

पंचम्यामथसप्तम्यांनवम्येकादशीदिने ।
त्रयोदश्यांचवैशाखेवृष्टौलोकेसुखंभवेत् ।।४१।।

वैशाखकी ५।७।९।११।१३ को वर्षा हो तो लोकमें सुख हो।।४१।।

अष्टम्यांचचतुर्दश्यांज्येष्ठेशुक्लेतथासिते ।
कृष्णेदशम्यांवृष्टिः स्याद्भाद्रमासेतिवृष्टये ।।४२।।

ज्येष्ठ शुक्ल १४।८ तथा कृष्ण १० को वर्षा हो तो भादवे में अति वृष्टि हो।।४२।।

ज्येष्ठस्यदशमीरात्रौयदिचन्द्रोनदृश्यते ।
वर्षणंजायतेश्रेष्ठंस्वस्थासर्वामहीभवेत् ।।४३।।

जेठ की शुक्ल दशमी की रात में यदि चन्द्रमा न दीखे तो वर्षा अच्छी हो।।४३।।

ज्येष्ठस्यकृष्णैकादश्यांद्वादश्यांवाब्दगर्जितम् ।
विद्युत्पयोदवृष्टिश्चेद्वत्सरः स्यात्तदाशुभम् ।।४४।।

ज्येष्ठकृष्ण ११।१२ को मेघ गर्जे बिजली चमके और जल गिरे तो वर्ष शुभ होता है।।४४।।

ज्येष्ठाषाढसमुद्भूतेरोहिणीदिवसेनभः ।
साभ्रंवृष्टिविनाशायसमेघंवृष्टिवर्द्धनम् ।।४५।।

ज्येष्ठ आषाढ में रोहिणी के दिन बादल हों तो वर्षा का नाश हो और वर्षा हो तो वृद्धि हो।।४५।।

ज्येष्ठेमूलदिनेवृष्टिर्ज्येष्ठान्तेदिवसद्वये ।
दुर्भिक्षंकुरुतेश्रेष्ठाविद्युत्पांसुयुतानिलाः ।।४६।।

ज्येष्ठ के अंत के दो दिनों में ज्येष्ठा और मूल में वर्षा हो तो दुर्भिक्ष

हो और आंधी तथा बिजली हो तो श्रेष्ठ हो।।४६।।

ज्येष्ठमासेतथाषाढेयत्रतत्राब्दवर्षणम् ।
श्रावणेभाद्रमासेवातद्दिनेवृष्टिनिर्णयः ।।४७।।

ज्येष्ठ तथा आषाढ में जहां कहीं वर्षा हो तो श्रावण भादवें में भी उस दिन वर्षा हो।।४७।।

ज्येष्ठेशुक्लद्वितीयायांगर्भपातायगर्जितम् ।
शुक्लेतृतीयार्द्रायोगेवृष्टिर्दुर्भिक्षदर्शनी ।।४८।।

ज्येष्ठ सुदी २ को गर्जे तो गर्भ पात हो तीज को आर्द्रा हो तो दुर्भिक्ष हो।।४८।।

यदिज्येष्ठस्यपंचम्यांवृषार्केवृष्टिरुद्भवेत् ।
पूर्वाषाढादिनेवास्यान्मूलदृष्टंनदोषकृत् ।।४९।।

यदि ज्येष्ठ की ५ को वृष संक्रान्ति में वृष्टि हो या पूर्वाषाढ तथा मूल के दिन वर्षा हो तो ठीक है।।४९।।

ज्येष्ठस्यपूर्णिमायांतुमूलंप्रस्रवतेयदा ।
दिनषष्टिंव्यतिक्रम्यज्ञेयोमेघमहोदयः ।।५०।।

ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा को मेघ वर्षे तो ६० दिन पीछे अच्छी वर्षा हो।।५०।।

यदाश्रुतिधनिष्ठाहेनभवेज्जलवर्षणम् ।
ज्येष्ठानुज्ज्वलपक्षेतुनक्षत्रश्रवणादिके ।।५१।।

जो श्रवण धनिष्ठा में न वर्षे और ज्येष्ठ कृष्ण में श्रवणादि में न वर्षे तो।।५१।।

अवर्षणेनवर्षास्याद्वृष्टौतुविपुलंजलम् ।
चित्रास्वातिविशाखासुवादलंचतदाशुभम् ।।५२।।

अवर्षण से वर्षा हो और वर्षने से बहुत जल हो उस समय चि०

स्वा० वि० में बादल शुभ होते हैं।।५२।।

कृष्णाषाढचतुर्थ्यांचमेघैराच्छादितोरविः ।
मासत्रयव्यतीतेचतदामेघमहोदयः ।।५३।।

आषाढ कृष्ण चौथ को सूर्य बादलों से ढका हुआ हो तो तीन मास पीछे वर्षा हो।।५३।।

आषाढकृष्णतुर्यायामस्तेभास्करमण्डले ।
नवर्षतियदामेघस्तदाकष्टतरंजलम् ।।५४।।

आषाढ कृष्ण चौथ को सूर्यास्त के समय मेह न वर्षे तो जल का कष्ट हो।।५४।।

आषाढेकृष्णपक्षस्याष्टम्यांचन्द्रोदयक्षणे ।
मेघैराच्छादितंव्योमनीरपूर्णातदामही ।।५५।।

आषाढ कृष्णाष्टमी को चन्द्रोदय के समय आकाश में बहुत बादल हो तो वर्षा बहुत हो।।५५।।

आषाढेनवमीकृष्णाविद्युदम्भोदशेखरे ।
विक्रयः सर्वधान्यानांकर्षणेवैहितायच ।।५६।।

आषाढ कृष्ण नौमी को बादल बिजली हों तो खेती के निमित्त सब धान्य बेच देने चाहिये।।५६।।

आषाढकृष्णपक्षेचधनिष्ठाश्रवणंतथा ।
गर्जविद्युद्विहीनंस्याद्देशभंगस्तदादिशेत् ।।५७।।

आषाढ बदी में श्रवण, धनिष्ठा में बिना बिजली के गर्जे तो देश भंग हो।।५७।।

आषाढमासेरोहिण्यांविद्युद्वर्षाशुभायसा ।
स्वातियोगेपिचाषाढेतथैवफलमिष्यते ।।५८।।

आषाढ की रोहिणी में बिजली वर्षा शुभ हैं। स्वाति में भी वहीं फल

हैं।।५८।।

आषाढशुक्लप्रतिपत्त्रयेवर्षायदाभवेत् ।
एकोद्वादश च द्रोणः षोडशापिक्रमाज्जलम् ।।५९।।

आषाढ सुदी एकै-दोयज, तीज को वर्षा हो तो उससे क्रम से एक, बारह, सोलह द्रोण जल वर्षे।।५९।।

आषाढेशुक्लपंचम्यादिकेतिथिचतुष्टये ।
यावन्त्यभ्राणिवर्षासुतावन्मेघमहोदयः ।।६०।।

आषाढ सुदी ५ से चार दिनों में जितने बादल वर्षा हों उतना ही अधिक मेघ जानना।।६०।।

शुक्लाषाढनवम्यांचदशम्यांवर्षणंशुभम् ।
दुर्भिक्षंजायतेनूनंवातेवृष्टिंविनाकृते ।।६१।।

आषाढ शुक्ल ९।१० को वर्षा हो और बिना वर्षा पवन चले तो दुर्भिक्ष करे।।६१।।

आषाढस्याप्यमावस्यांनवम्यांशुक्लकृष्णयोः ।
उद्गच्छेच्चसहस्रांशुर्निर्मलोयदिदृश्यते ।।६२।।

आषाढी अभावस तथा शुक्ल कृष्ण की नौमी को उगता हुआ सूर्य निर्मल हो।।६२।।

मध्याह्नेवृष्टिरूपंस्यात्सूर्यस्यास्तंगमेतथा ।
अग्रेतोयंनपश्यामिवर्जयित्वामहानदीः ।।६३।।

और मध्याह्न में तथा सूर्यास्त समय में वृष्टि का रूपक हो तो आगे जल नहीं गिरे बड़ी नदियां भी सूख जायं।।६३।।

चतुर्थ्यांतुसिताषाढेविद्युतद्वर्षाश्चिगर्जितम् ।
तदाजलंसमुद्रेस्यात्पुस्तकेवाप्रदृश्यते ।।६४।।

आषाढ शुक्ल चौथ को बिजली वर्षा गर्जन हो तो जल समुद्र में दीखे

या पुस्तकों में।।६४।।

आषाढचांप्रथमेयामेबादलेनसुभिक्षता ।
मासमेकंजलंधान्यंस्तोकंलोकमहाभयम् ।।६५।।

आषाढी को पहली पहर में बादल हो तो सुभिक्ष नहीं हो, केवल एक मास मात्र जल धान्य हो राजभय भी हो।।६५।।

श्रावणस्यादिमेपक्षेअश्विन्यांमेघवृष्टितः ।
सर्वान्दोषान्निहंत्येवसुभिक्षंभुविजायते ।।६६।।

श्रावण कृष्ण में अश्विनी में वर्षा हो तो सब दोषों को दूर करके सुभिक्ष करती है।।६६।।

श्रावणेविपुलाविद्युद्गर्जितंचपुनर्घने ।
वृष्टिस्तदामनोभीष्टाकुरुतेवत्सरंशुभम् ।।६७।।

श्रावण में बहुत बिजलियाँ हों और मेघ गर्जना हो तो उस वर्ष में मनोभीष्ट वर्षा होती है।।६७।।

श्रावणेकृष्णपक्षेचेच्चतुर्थ्यामरुणोदये ।
वादलंवृष्टिरनिशंसर्वत्रसुखवृष्टिकृत् ।।६८।।

श्रावण कृष्ण चौथ को प्रातः काल सूर्योदय के समय से बादल वर्षा दिन भर रहे तो सर्वत्र सुवृष्टि हो।।६८।।

श्रावणेकृष्णपंचम्यांनिर्मलंगगनंशुभम् ।
तदाष्टादशयामान्तेघनस्तोयंव्यपोहति ।।६९।।

श्रावणकृष्ण पञ्चमी को आकाश निर्मल हो तो अठारह पहर के बाद जल वर्षे।।६९।।

अमावास्यांश्रावणस्ययदिवृष्टिर्घनाघनः ।
चराचरंतदाविश्वंसुखभाक्चचलाचलम् ।।७०।।

श्रावण की अमावस को यदि वर्षा तथा घने बादल हों तो चलाचल

के चराचर को सुख हो।।७०।।

चित्रास्वातिविशाखासुश्रावणेनजलंयदा ।
तदाकुल्यादिकंकृत्वानदीतीरेगृहंकुरु ।।७१।।

श्रावण के चित्रा स्वाति विशाखा में यदि जल न वर्षे तो कुल्ले करने मात्र के लिये भी नदी किनारे घर बांधना चाहिये।।७१।।

नभः प्रथमपंचम्यांयदिवृष्टः पयोधरः ।
तदाभूश्चतुरोमासान्भवेद्वारिसमाकुला ।।७२।।

श्रावण के कृष्ण पञ्चमी को यदि वर्षा हो तो चारों महीनों में जल वर्षे।।७२।।

श्रावणेशुक्लसप्तम्यामस्तंयातेदिवाकरे ।
नवर्षतियदामेघोजलाशांमुंचसर्वथा ।।७३।।

श्रावण शुक्ल सप्तमी को सूर्यास्त के समय मेह न वर्षे तो फिर सर्वथा जल की आशा छोड़ देना।।७३।।

अष्टम्यांश्रावणेशुक्लेप्रातर्वादलडम्बरम् ।
रविराच्छादितस्तेनपृथिव्येकार्णवाभवेत् ।।७४।।

श्रावण शुक्ल अष्टमी को प्रातः काल बादलों का आडंबर हो तो संपूर्ण पृथ्वी जलमयी हो।।७४।।

मेघैराच्छादितश्चन्द्रः पूर्णायांसमुदीरते ।
तदास्वस्थंजगत्सर्वराज्यसौख्यंघनोमहान् ।।७५।।

श्रावणी पूर्णिमा को चंद्रमा मेघों से ढँका हुआ हो तो सब जगत् स्वस्थ रहे और राज्य में घना सुख हो।।७५।।

श्रावणेकृष्णपक्षेवापूर्वाभाद्रपदासुच ।
चतुर्थ्यांमेघवृष्टिश्चतदामेघमहोदयः ।।७६।।

श्रावण कृष्ण में पूर्वाभाद्रपद में चौथ में मेघ वर्षे तो जल अच्छा

वर्षे।।७६।।

शुक्लाचतुर्दशीपूर्णाचतुर्थीपंचमीतथा ।
सप्तमीचेच्छ्रावणस्यवृष्टियुक्ताशुभंतदा ।।७७।।

श्रावण शुक्ल १४।१५।४।५।७ को वर्षा हो तो शुभ है।।७७।।

श्रावणेशुक्लसप्तम्यांस्वातियोगेजलंयदा ।
प्रजानंदः सुखंराज्येबहुभोगान्वितामही ।।७८।।

श्रावण शुक्ल ७ को स्वाति योग में जल वर्षे तो प्रजा में आनंद सौख्य हो और पृथ्वी बहुत भोगों से युक्त हो।।७८।।

एकादश्यांनभः कृष्णेयदिवर्षामनागपि ।
तदावर्षंशुभंभाविजायतेनात्रसंशयः ।।७९।।

श्रावण कृष्ण ११ को वर्षा हो तो आगामी वर्ष शुभ होता है।।७९।।

नभश्चतुर्दशीराकाचतुर्थीपंचमीतथा ।
सप्तमीवृष्टियुक्ताचेद्वर्षशुभंनचान्यथा ।।८०।।

श्रावण की १४।१५।४।५।७ वृष्टि युक्त हों तो निःसन्देह वर्षा अच्छा हो इसमें झूंठ नहीं।।८०।।

भाद्रमासेद्वितीयायांयदिचन्द्रोनदृश्यते ।
तदासपूर्णवर्षास्यादन्ननिष्पत्तिरुत्तमा ।।८१।।

भाद्रपद की शुक्ल दोयज को यदि चन्द्रमा न दीखे तो सम्पूर्ण वर्षा होकर अच्छी खेतियां हों।।८१।।

भाद्रेचशुक्लपंचम्यांजलंदत्तेनचेद्घनः ।
दैवकोपात्तदाज्ञेयोसज्जनोपिचदुर्जनः ।।८२।।

भाद्रपद शुक्ल पंचमी को बादल वर्षा न करें तो ईश्वर का कोप समझना। ऐसा अकाल पड़े कि सज्जन भी दुर्जन हो जायँ।।८२।।

सप्तम्यांभाद्रमासस्यनवर्षानचगर्जितम् ।
विद्युद्विद्योतनेनैवदैवकालस्यनाशकः ।।८३।।

भाद्रपद की सप्तमी को न वर्षा हों न गर्जे और न बिजली चमके तो देवकाल घातक होता है।।८३।।

नवम्यांभाद्रमासस्यवृष्टिर्दुष्कालमादिशेत् ।
एकादश्यांतुतस्यैवघनोधान्यसमर्घदः ।।८४।।

भादवे की नौमी की वृष्टि दुष्काल करती है। और एकादशी की अन्न समर्घ करती है।।८४।।

सिंहार्कदिवसेवृष्टिर्नशुभायनृणांस्मृता ।
दैवाज्जातेघनेपश्चाद्वदृष्टिर्दिनद्वयान्तरे ।।८५।।

सिंह संक्रान्ति के दिन वर्षा शुभ नहीं होती है। यदि उससे दो दिन पीछे हो तो।।८५।।

तदातद्दूषणंनास्तिमासमेकंप्रवर्षति ।
भाद्रेचतुर्दशीवृष्टिर्जनेरोगायजायते ।।८६।।

उसका दूषण दूर होकर एक मास वर्षता है। और भादवे की चौदश की वर्षा से रोग होता है।।८६।।

आश्विनस्यचतुर्थ्यांचिद्वादलान्यरुणोदये ।
तदाक्षेमायलोकानांवृष्टिः संजायते शुभा ।।८७।।

आश्विन की चौथ को सूर्योदय में बादल हों तो लोक में क्षेम तथा शुभ वर्षा हो।।८७।।

आश्विनस्यसितेपक्षेदशम्यांयदिवादलम् ।
विद्युद्वर्षाथवामाषतिलानांवैमहर्घता ।।८८।।

आश्विन शुक्ल दशमी को यदि बादल हों या बिजली वर्षा हो तो उड़द और तिल महँगे हों।।८८।।

सप्तम्याश्वयुजिमासेसितेऽष्टमीजलान्विता ।
सुभिक्षंतत्रचादेश्यंराजानः शांतविग्रहाः ।।८९।।

आश्विन शुक्ल ७।८ जल युक्त हों तो सुभिक्ष होता है और राजा लोग विग्रह से शांत होते हैं।।८९।।

एकादश्यांकार्त्तिकस्ययदिमेघः समीक्ष्यते ।
आषाढेत्रतदावृष्टिर्जायतेनात्रसंशयः ।।९०।।

कार्त्तिक की एकादशी को यदि बादल दीखें तो आषाढ में निश्चय वर्षा होती है।।९०।।

द्वितीयायांतृतीयायांकार्त्तिकेवृष्टिलक्षणम् ।
भाविवर्षेबहुजलंनचेत्तस्मिन्नवर्षणम् ।।९१।।

कार्त्तिक की २।३ को वर्षा का लक्षण हो तो अगले वर्ष में बहुत जल वर्षे अवर्षण नहीं हो।।९१।।

द्वादश्यांकार्तिकेरात्रौमार्गस्यदशमीदिने ।
पंचम्यांपौषमासस्यसप्तम्यांमाघमासके ।।९२।।
धाराधरोयदावृष्टिंकुरुतेवासुगर्जितम् ।
तदाचश्रावणेमासेसलिलंनैवदृश्यते ।।९३।।

कार्त्तिक की बारस की रात मृगशिर की दशमी का दिन पौष की पांचैं और माघ की सातैं को बादलों से वर्षा हो और मेघ गर्जे तो श्रावण में जल बिलकुल नहीं वर्षे।।९२।।९३।।

कार्त्तिकेचद्वितीयायांतृतीयानवमीदिने ।
एकादश्यांत्रयोदश्यामभ्राद्वृष्टिर्घनोमहान् ।।९४।।

कार्त्तिक की २।३।९।११।१३ को बादल होकर वर्षा हो तो वर्षा बहुत हो।।९४।।

कार्त्तिकेयदिसंक्रान्तेः पर्यन्तेदिवसद्वये ।
महावृष्टिस्तदावर्षेशुभाभाविनिवत्सरे ।।९५।।

कार्त्तिक की संक्रान्ति पर्यन्त के दो दिनों में महावर्षा हो तो भावी वर्ष शुभ हो।।९५।।

मार्गशीर्षप्रतिपदिन्नविद्युन्नैवगर्जितम् ।
नवृष्टिश्चेत्तदागर्भेकुशलंकुशलोदितम् ।।९६।।

मार्गशीर्ष की प्रतिपदा को न बिजली हो न गर्जना हो न वर्षा हों तो गर्भ में कुशल जानना।।९६।।

चतुर्थ्यामिथपंचम्यांमार्गशीर्षस्यबादलम् ।
तदाभाविनिवर्षेस्याद्वर्षापूर्णमहीतले ।।९७।।

मृगशिर की ४ या ५ को बादल हों तो भावी वर्ष में पृथ्वी जल से पूर्ण हो।।९७।।

मार्गशीर्षस्यसप्तम्यांनिर्मलंचेद्दिवानिशम् ।
धान्यंमहर्घवैशाखेसाभ्रतायांमहर्घता ।।९८।।

मगशिर की सातैं को दिन रात आकाश निर्मल रहे तो वैशाख में धान्य महँगा हो।।९८।।

मार्गस्यशुक्लद्वादश्यामसायामथवर्षणम् ।
तदावर्षशुभभाविभावनीयंसुभावनैः ।।९९।।

मार्ग शुक्ल दशमी अथवा अमावस को वर्षे तो भावी वर्ष की भावना शुभ हो।।९९।।

पौषेकृष्णदशम्यांचेद्रात्रौवर्षतिवारिदः ।
तदाभाद्रपदेमासिवृष्टिर्भवतिभूयसी ।।१००।।

पौष कृष्ण दशमी को रात में जल वर्षा हो तो भादवे में बहुत वर्षा हो।।१००।।

पौषेविद्युच्चमत्कारोगर्जिताभ्रादिसंभवः ।
जानीयान्निश्चितंतेनजगत्यांमेघदोहदः ।।१०१।।

पौष में बिजली चमके मेघ गर्जे बादल हों तो जगत् में निश्चय मेघ का दोहद (गर्भ रहा) जानना।।१०१।।

वृष्टेमेघेपौषषष्ठ्यांभाद्रेकृष्णेघनोदये ।
पौषशुक्लेमेघवृष्टौश्रावणेस्याच्चवर्षणम् ।।१०२।।

पौष की छठ को मेघ वर्षे तो भादवा वदी में मेघ हो। पौष शुक्ल में मेघ वर्षे तो श्रावण में वर्षा हो।।१०२।।

सप्तम्यादित्रयेपौषेशुक्लेविद्युच्चगर्जितम् ।
तदामेघस्यगर्भः स्यादचलेसुखसंपदे ।।१०३।।

पौष शुक्ल ७।८।९ को, बिजली तथा गर्जना हो तो मेघ के अंचल गर्भ रहा जानना।।१०३।।

एकादश्यांतथाषष्ठ्यांपूर्णायांदर्शकेथवा ।
नवृष्टिः स्यात्तदाषाढेघनप्रोक्तोघनाघनः ।।१०४।।

पौष की ११।६ या पूर्णिमा अमा को वर्षा न हो तो आषाढ़ में घन से घनी वर्षा हो।।१०४।।

पौषमासेश्वेतपक्षेऋक्षंशतभिषग्यदा ।
वाताभ्रविद्युत्पंचम्यांगर्भश्चैवप्रजायते ।।१०५।।

पौष शुक्ल पंचमी शतभिषा में यदि वायु बादल बिजली हो तो गर्भ होता है।।१०५।।

सचाषाढेकृष्णपक्षेचतुर्थ्यांवर्षतिध्रुवम् ।
द्रोणसंज्ञस्तत्रमेघः सप्तरात्रंप्रवर्षति ।।१०६।।

उससे आषाढ कृष्ण चौथ को निश्चय वर्षा होती है। और वह द्रोण मेघ सात रात वर्षता है।।१०६।।

सप्तम्यादित्रयेपौषेशुक्लपौष्णदिनत्रयम् ।
विद्युत्तुषारवाताभूर्हिमैर्गर्भसमुद्भवः ।।१०७।।

पौष शुक्ल ७।८।९ को रेवती अश्विनी भरणी में बिजली बर्फ वायु हो तो ठंड में भी गर्म रहे।।१०७।।

एकादशीपौषशुक्लेसहिमाविद्युतायुता ।
सजलारोहिणीयोगाच्छुभादेश्याविचक्षणैः ।।१०८।।

पौष शुक्ल एकादशी हिम सहित बिजली युक्त हो और रोहिणी सजल हो तो शुभ योग होता है।।१०८।।

पौर्णमासीद्वितीयाचविद्युतावाहिमान्विता ।
वर्षानिष्पत्तिरादेश्यामेघैश्छन्नैस्तथाम्बरे ।।१०९।।

पौषी पूर्णिमा वा द्वितीया को हिमयुक्त बिजली हो और बादलों से आकाश ढ़का हो तो वर्षा उत्पन्न होती है।।१०९।।

आषाढस्यत्वमावास्यांप्रबलंजलमादिशेत् ।
निष्पत्तिः सर्वधान्यानांप्रजानांनिरुपद्रवः ।।११०।।

आषाढ की अमावस को प्रबल जल गिरता है और सब धान्यों की उत्पत्ति एवं निरुपद्रव होता है।।११०।।

पौर्णमास्यांयदापौषेचन्द्रमानैवदृश्यते ।
उत्तरस्यांदक्षिणस्यांयदाविद्युत्प्रदर्शनम् ।।१११।।

पौष की पूर्णिमा को यदि चन्द्रमा न दीखे और उत्तर दक्षिण में बिजली दीखे।।१११।।

अभ्रच्छन्ननभोवापिमहावृष्टिन्तदादिशेत् ।
अमावास्यांश्रावणस्यनूनंभाविनिवत्सरे ।।११२।।

और आकाश मेघाच्छन्नभी हो तो श्रावणी अमावस को महा वर्षा हो।।११२।।

पौषस्यकृष्णसप्तम्यांस्वातियोगेजलंयदा ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंजायतेनात्रसंशयः ॥११३॥

पौष कृष्ण सप्तमी स्वाति योग में जल वर्षे तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य होता है॥११३॥

अभ्रच्छन्नेजलंस्वल्पंजलपातेमहाजलम् ।
त्रयोदशीत्रयेकृष्णेपौषेविद्युच्चगर्भदा ॥११४॥

उस दिन यदि केवल बादल हो तो कम वर्षा और जल वर्षे तो महा वर्षा हो। और पौष कृष्ण त्रयोदशी से तीन दिन तक बिजली हो तो गर्भ देती है॥११४॥

ऐन्द्रीविद्युदमावस्यांदर्शनंवाहिमस्यचेत् ।
अभ्रच्छन्ननभोवापिसुभिक्षंजायतेतदा ॥११५॥

अमावस को यदि बिजली पूर्व में चमके, कड़ी ठंड पड़े और बादल हों तो सुभिक्ष होता है॥११५॥

सप्तम्यादित्रयेमाघेशुक्लेवादलयोगतः ।
धनधान्यसमृद्धिः स्याद्विवाहाद्युत्सवोजने ॥११६॥

माघ में शुक्ल ७।८।९ को बादल हों तो धनधान्य समृद्धि हो और विवाहादि उत्सव हों॥११६॥

माघनवम्यांशुक्लेपरिवेषः शशिनिदृश्यतेऽवश्यम् ।
आषाढेवर्षतितदामेघमहोदयोभवति ॥११७॥

माघशुक्ल नौमी को चंद्रमा का परिवेष (मंडल) हो तो आषाढ़ में अवश्य वर्षा हो॥११७॥

माघेदशम्यांहिशुभायवर्षातद्वन्नवम्यांयदिचेदवर्षा ।
हर्षायतर्षीतिशयोनकश्चिद्वर्षागमेमेघमहोदयेन ॥११८॥

माघ शुक्ल दशमी को वर्षा हो तो हर्ष और नौमी को अवर्षा हो तो

तर्ष होता है। दोनों दिनों की वर्षा से मेघ वर्षता है।।११८।।

माघमासेचतुर्दश्यांप्रहरेयत्रवादलम् ।
वर्षाकालेतत्रमासेनवर्षतिपयोधरः ।।११९।।

माघ शुक्ल चौदश की जिस पहर में बादल हों, चौमास के आषाढादि उसी मास में सूखा पड़े।।११९।।

महासुभिक्षमादेश्यंराजानोनिरुपद्रवाः ।
सप्तमीनिर्मलीनेष्टाश्रेष्ठावृष्टिबलान्नतु ।।१२०।।

यदि सप्तमी निर्मल हो तो नेष्ट और वृष्टियुक्त हों तो श्रेष्ठ होती है तथा सुभिक्ष और निरुपद्रव होता है।।१२०।।

माघस्यशुक्लसप्तम्यांयदाभ्रंजायतेऽभितः ।
तदावृष्टिर्घनालोकेभविष्यतिनसंशयः ।।१२१।।

माघ शुक्ल सप्तमी को बादल हो तो संसार में घनी वर्षा होती है।।१२१।।

माघेचकृष्णसप्तम्यांस्वातियोगेभ्रगर्जितम् ।
हिमपातेचसंजातेसर्वधान्यप्रजासुखम् ।।१२२।।

माघ कृष्णा सप्तमी को स्वाति योग में बादल गर्जन और ठंड पड़े तो सब धान्य हों, प्रजा सुखी हो।।१२२।।

तथैवफाल्गुनेचैत्रेवैशाखेस्वातियोगजम् ।
विद्युदभ्रादिकंश्रेष्ठमाषाढेपिसुभिक्षकृत् ।।१२३।।

इसी भाँति फाल्गुन, चैत्र, वैशाख के स्वाति योग में बिजली बादल, आषाढ में सुभिक्ष करते हैं।।१२३।।

स्वातौनिशांशेप्रथमेभिवृष्टेसस्यानि सर्वाण्युपयान्तिवृद्धिम् ।
भागेद्वितीयेतिलमुद्गमाषाग्रैष्मं तृतीयेस्तिनशारदानि ।।१२४।।

स्वाति में रात्रि के प्रथमांश में वर्षा हो तो सब धान्यों की उत्पत्ति

और वृद्धि करती है। दूसरे भाग में हो तो तिल मूंग, उड़द करती है। और तीसरे भाग में हो तो ग्रीष्म के जौ, गेंहू आदि तो करती है किन्तु शरद के मक्का बाजरी आदि नहीं करती।।१२४।।

वृष्टेह्निभागेप्रथमेसुवृष्टिस्तद्वद्द्वितीयेतुषकीटसर्पाः ।
वृष्टिस्तु मध्यापरभागवृष्टेर्निश्छिद्रवृष्टिद्युनिशंप्रविष्टे।।१२५।।

उसी दिन यदि दिन के प्रथम भाग में वर्षा हो तो सुवृष्टि हो। दूसरे में हो तो बर्फ, कीड़े और सर्पादि हों, तीसरे में हो तो मध्यम वर्षा हो और दिन रात वर्षे तो निरंतर वर्षा हो।।१२५।।

समुत्तरेणताराचित्रायाः कीर्त्यतेह्यपावत्सः ।
तस्यासन्नेचन्द्रेस्वातीयोगः शिवोभवति ।।१२६।।

चित्रा नक्षत्र के समान सूत में ठीक उत्तर में एक अपांवत्स नामक तारा है, यदि चन्द्रमा उस तारा के समीप हो तो स्वाति में चन्द्रमा का योग शुभ होता है।।१२६।।

माघेकृष्णनवम्यांचमूलऋक्षदिनेथवा ।
विद्युन्मेघधनुर्योगेचाभ्रैर्नभसिसंवृते ।।१२७।।
एतस्माद्गर्भतोवृष्टिर्भाविवर्षेभिजायते ।
आषाढेवाभाद्रपदेदशमीदिवसेशुभा ।।१२८।।

माघ, कृष्ण, नौमी को अथवा मूल नक्षत्र में बिजली, मेघ और धनुष हो तथा आकाश बादलों से आवृत्त (ढ़का हुआ) हो तो उस गर्भ से भावी वर्ष में आषाढ अथवा भादवे की दशमी को शुभ वर्षा होती है।।१२७।।१२८।।

माघमासेचसप्तम्यांकृष्णेत्रयोदशीद्वये ।
पूर्वस्यामुन्नतेमेघे ादलैः संकुलपिखे ।।१२९।।

माघकृष्ण १३।१४ को पूर्व में बड़े बादल हों और आकाश ढ़का हुआ

हो तो।।१२९।।

बहूदककरावृष्टिराषाढेसप्तरात्रिकी ।
अमावास्यामभ्रयोगाद्भाद्रे वैपूर्णिमादिने ।।१३०।।

आषाढ़ में सात रात तब बहुत जल वर्षता है। अमावस को बादल हों तो भादवें में पूनम को वर्षता है।।१३०।।

नवृष्टिर्नगर्जारवोवादलेषुचतुर्थ्यांचगोधूमकादुर्लभाः स्युः ।
तदापंचमीवृष्टिहीनापिसाभ्रातदा भाद्रमासेमहान्वृष्टियोगः।।

माघकृष्ण चौथ को न वर्षा हो, न गर्जे और न बादल हों तो गेंहू दुर्लभ होते हैं और यदि पंचमी को वर्षा न हो केवल बादल ही हों तो भादवे में महा वर्षा होती है।।१३१।।

कार्पासस्यमहर्घताभुविभवेत्षष्ठीयदानिर्मला
सप्तम्यामपिचन्द्रनिर्मलतयाराज्ञांमहान्विग्रहः ।
अष्टम्यांयदिभास्करस्समुदितः प्रातः परं निर्मले
रौद्रेवृष्टिनिरोधकृन्नभसिचप्रायोल्पवर्षाकरः ।।१३२।।

यदि छठ निर्मल हो तो कपास महँगी हो, सातैं को चंद्र निर्मल हो तो राजाओं में महा विग्रह हो और यदि आठैं का सूर्योदय निर्मल हो तो वृष्टि रोक कर अल्प वर्षा करे।।१३२।।

सप्तम्यादित्रयेकृष्णेफाल्गुनेघनगर्जितम् ।
संग्रामाद्यप्रतिग्रामंधान्यानांचसमर्घता ।।१३३।।

फाल्गुन कृष्ण की सप्तमी से तीन दिनों में घन गर्जे तो संग्रामादि हों तथा धान्य सस्ते हों।।१३३।।

फाल्गुनेमासिवर्षावैजायतेचाष्टमीदिने ।
तदासुभिक्षमादेश्यंदेशेक्षेमंसुखंबहु ।।१३४।।

फाल्गुन की अष्टमी को वर्षा हो तो सुभिक्ष हो और देश में क्षेम सुख बहुत हो।।१३४।।

सप्तम्यादित्रयेसाभ्रेगर्भेकुशलनिश्चयः ।
अमावास्यांभाद्रपदेजलंसुलभमब्दतः ।।१३५।।

सप्तमी आदि तीन दिन बादल हों तो गर्भ में कुशल रहे और भाद्रपद की अमावस को जल वर्षे।।१३५।।

फाल्गुनेशुक्लसप्तम्यांपौर्णमास्यांतथादिने ।
निर्वातंगगनंमेघाविजलाविद्युदन्विताः ।।१३६।।
भविष्यद्वत्सरेतत्रसुभिक्षंक्षेममादिशेत् ।
भाद्रेसौकृष्णसप्तम्यांदर्शेगर्भः फलंजलम् ।।१३७।।

फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को तथा पूनम को बिना पवन आकाश में बिना जल के बादलों में बिजली हो तो भविष्य वर्ष में सुभिक्ष हो। और भादवें की कृष्ण सप्तमी अथवा अमावस को इस गर्भ का फल (जल) हो।।१३६।१३७।।

समयेचेद्धुताशन्याज्वलनस्यास्तिबादलम् ।
गोधूमकुंकुमापातान्महर्घंप्रोच्यतेतदा ।।१३८।।

यदि होली जलने के समय बादल हों तो गेहूँ की फसल में रोली लग जाने से महँगाई हों।।१३८।।

दशम्यैकादशीशुक्लेफाल्गुनेभ्रादिगर्भयुक् ।
तदाचतुर्थंपंचम्यामाश्विनेवृष्टिदायिनी ।।१३९।।

और फाल्गुन शुक्ल दशमी एकादशी को बादल आदि से गर्भ हो तो आश्विन की चौथ पांचै को वर्षा हो।।(इति) ।।१३९।।

(३) अथ विद्युल्लक्षणम्

प्राचीतत्क्षणमेवनक्तमपरा सन्ध्यात्र्यहाद्वाफलं
सप्ताहात्परिवेषरेणुपरिधाः कुर्वन्तिसद्योनचेत् ।

तद्वत्सूर्यकरेंद्रकार्मुकतडित्प्रत्यर्कमेघानिला
स्तस्मिन्नेवदिनेऽष्टमेऽथविहगाः सप्ताहपाकामृगाः।।१४०।।

(३)"वर्षाकारक बिजली का वर्णन"-(वर्षा के प्रसंग में जो संध्या-परिवेष-वायु-आदि आये हैं उनका यहां प्रमाण बतला कर बिजली का वर्णन करते हैं।) प्रातः संध्या का तत्काल फल होता है। सायंसन्ध्या वा रात्र का तीन दिन में-परिवेष, परिघ, रज का उसी दिन-(अथवा उस दिन न हो तो सात दिन में) सूर्य की किरणों का इन्द्रधनुष का बिजली का, प्रतिसूर्य तथा वायु का आठ दिन में-और पक्षियों का सप्ताह में फल होता है।।१४०।।

एकदीप्त्यायोजनंभातिसंध्याविद्युद्भासाषटप्रकाशीकरोति ।
पंचाब्दानांगर्जितंयातिशब्दोनास्तीयत्ताकाचिदुल्कानिपाते ।।

सन्ध्या का प्रकाश ४ कोश तक-मेघ की गर्जना २० कोश तक-और बिजली की चमक २४ कोश तक जाती है; किन्तु उल्कापात के योजनकों का कोई नाप नहीं किया जाता।।१४१।।

विद्युद्भ्रान्तिर्निखिलाकांतिः कलनामत्तायदापयोदाः।
उन्मत्ताइवदृष्टश्चन्द्रः किरणविहीनंभुविजलपूरम् ।।१४२।।

जिस समय बिजली घूमती है उस समय मेघ समस्त दीप्ति धारण करने से उन्मत्त की भांति मतवाला होकर चन्द्रमा की किरणों से पृथ्वी को हीन देखके उसे जल से पूरता है।।१४२।।

विद्युन्मालाकुलोभूत्वानभनष्टार्कइन्दुना ।
प्रावृट्कालोविजानीयाज्जनसौख्यान्नदायकः ।।१४३।।

जिस समय बिजलियों के चकामक से आकुल होकर आकाश सूर्य चन्द्र और तारागणों से हीन हो तो उस समय मनुष्यों को सुख और आनन्द देनेवाला वर्षा काल जानना।।१४३।।

यदातुविद्युतः श्रेष्ठाः शुभाशाप्रत्युपाश्रिताः ।
तदातुसर्वसस्यानांवृद्धिंब्रूयाद्विचक्षणः ।।१४४।।

"बिजली के चमकने का फल"-जिस समय शुभ दिशाओं में बिजली चमके उस समय सब प्रकार के धान्यों की वृद्धि होती है।।१४४।।

दिवताडिद्यदिचपिनाकिदिग्भवा ।
तदाक्षमाभवतिसमातिवारिणा ।।१४५।।

यदि दिन में ईशान कोने में बिजली चमके तो उस समय पृथ्वी जल से समान (बराबर) हो जाती है।।१४५।।

पौषशुक्लचतुर्दश्यांविद्युद्दर्शनमुत्तमम् ।
कृष्णपक्षेतथाषाढे भवेन्मेघमहोदयः ।।१४६।।

पौष सुदी चौदश को बिजली का चमकना अच्छा है। उससे आषाढ कृष्ण में बहुत मेह वर्षता है।।१४६।।

नभप्रदीपंप्रच्छाद्यगर्जेदैरावतान्वितः ।
विद्युत्कुमारिसंयोगाद्देवेन्द्रोगर्भकारकः ।।१४७।।

आकाश में सूर्य को बादलों से छिपाकर मेघ गर्जे और बिजली चमके तो मेघ का उदय होता है।।१४७।।

उत्तरस्यांयदाविद्युत्स्वर्णवर्णाप्रदीप्यते ।
साविद्युज्जलदाज्ञेयाशीघ्रंमेघमहोदय। ।।१४८।।

यदि उत्तर दिशा में सोना के वर्ण समान बिजली चमके तो वह बिजली जल देनेवाली होती है। उससे शीघ्र वर्षा होती है।।१४८।।

ऐंद्रींचजलदाविद्युदाग्नेयीजलनाशिनी ।
याम्यदिक्स्थातुयाविद्युद्घटाटोपाभयंकरी ।।१४९।।

पूर्व दिशा की बिजली जल देनेवाली होती है आग्नेयी जल शोषती है और दक्षिण दिशा की बिजली काले घटाटोपों से डरानेवाली होती है।।१४९।।

प्रभूतजलदाज्ञेयावारुणीसस्यसंपदे ।
नैर्ऋतिर्निर्मलाप्रोक्ताकौबेरीक्षिप्रवर्षिणी ।।१५०।।

पश्चिम दिशा की बिजली सस्य सम्पदा के लिये बहुत जल देती है और नैर्ऋत्य की निर्मल आकाश करती है तथा उत्तर की बिजली बहुत वर्षा देती है।।१५०।।

ऐशानीलोकशुभदाविद्युद्भेदाइतिस्मृताः ।
यत्रदेशेसुभिक्षंस्याद्विद्युत्तत्रैवगच्छति ।।१५१।।

ईशान की बिजली शुभदायक होती है। जिस देश में सुभिक्ष होने की सम्भावना हों बिजली वहीं जाती है।।१५१।।

दिक्षुभूतास्थितिर्गुप्तामेघानांमार्गदर्शनी ।
विद्युद्धीनानगर्जंतिनवर्षंतिजलंविना ।।१५२।।

यह बिजली दिशाओं में खड़ी होकर मेघों का मार्ग दिखाती है अथवा बादल बिजली बिना नहीं गर्जते और जल बिना मेघ नही वर्षता।।१५२।।

कपिलाविद्युदनिलंकुर्यात्पीतातुवृष्टये ।
लोहिताआतपायस्यात्सितादुर्भिक्षहेतवे ।।

यदि भूरी बिजली चमके तो पवन चले, पीले चमके तो बहुत वर्षा हो लाल चमके तो गर्मी अधिक करे और सफेद चमके तो अकाल पड़े।।इति।।

(४) अथ ग्रहयोगाद्वर्षाज्ञानम्

अवृष्टौनयुतौक्रूरैर्ज्ञशुक्रावेकराशिगौ ।
जीवदृष्टौविशेषेणमहावृष्टिस्तदाभवेत् ॥१५३॥

(४)"ग्रहों के संयोग से वर्षा कहते हैं।" (तात्कालिक योग क्रूर ग्रह सहित बुध शुक्र एक राशि पर आये हों तो वर्षा नहीं हो) और यदि उनको गुरु देखे तो बहुत वर्षा हो॥१५३॥

ज्ञजीवावेकराशिस्थौक्रूरदृष्टिविवर्जितौ ।
शुक्रदृष्टौविशेषेणकुर्वातिवृष्टिमुत्तमाम् ॥१५४॥

गोचर ग्रहों में बुध बृहस्पति एक राशि पर हों और उनको क्रूर ग्रह न देखें किन्तु शुक्र देखता हो तो उत्तम वर्षा करते हैं॥१५४॥

जीवशुक्रोयदायुक्तोक्रूरेणापिविलोकितौ ।
बुधदृष्टौमहावृष्टिंकुर्वातिजलयोगतः ॥१५५॥

गुरु शुक्र एक राशि पर हों क्रूर ग्रह तथा बुध देखता हो तो महावर्षा करते हैं॥१५५॥

गुरुर्बुधोदानवेन्द्रोएकराशिगतास्त्रयः ।
अदृष्टाः क्रूरखचरैर्महावृष्टिविधायकाः ॥१५६॥

बुध बृहस्पति शुक्र तीनों एक राशि के हों और क्रूर न देखें तो महावर्षा होती है॥१५६॥

यदाशुक्रश्चभौमश्चन्दश्चैकत्रराशिगः ।
तदावर्षतिपर्जन्योजीवदृष्टौनसंशयः ॥१५७॥

जब शुक्र शनि भौम एक राशि में हों और बृहस्पति देखे तो मेह वर्षता है॥१५७॥

शुक्रेचन्द्रमासयुक्तेभौमेवाचंद्रसंयुते ।
उद्बन्धनादिशः सर्वाजलयोगस्तदामहान् ॥१५८॥

शुक्र चन्द्रमा के साथ हो अथवा भौम चन्द्रमा के साथ हो तो महान् जलयोग होता है।।१५८।।

अग्रतोवास्थिताः सौम्याः क्रूराणांतुपरस्पराः ।
ददतेसलिलंभूरिनतोयंस्याद्विपर्यये ।।१५९।।

सौम्यग्रह आगे हों और क्रूर पीछे हों तो जल वर्षता है।।१५९।।

एकराशिगतोजीवः सूर्येणसहवर्षति ।
यावन्नास्तमनंयातियोगोद्वन्द्वज्ञजीवयोः ।।१६०।।

सूर्य के साथ एक राशि में बृहस्पति होने से वर्षा होती है। जब तक अस्त न हों तब तक बुध गुरु योग से वर्षा होती है।।१६०।।

उन्मार्गगमनंकृत्वायदाशुक्रंत्यजेद्बुधः ।
तदावर्षतिपर्जन्योदिनानिपंचसप्तवा ।।१६१।।

शुक्र वक्री होकर बुध के छोड़ दे तो पांच सात दिन वर्षा होती है।।१६१।।

कर्कटेतुप्रविशतेसूर्यंपश्येद्यदागुरुः ।
पादोनंपूर्णदृष्ट्यावातत्रकालेमहाजलम् ।।१६२।।

कर्क पर गये हुए सूर्य को गुरु पादोन वा पूरी दृष्टि से देखे तो बहुत जल वर्षता है।।१६२।।

उदयेस्तंगमेचेत्स्याज्जीवदृष्टोयदाग्रहः ।
पादोनंपूर्णदृष्ट्यावातदावर्षतिनान्यथा ।।१६३।।

जब ग्रह उदय या अस्त हो उसको गुरु देखे तो वर्षा होती है।।१६३।।

शनिशुक्रेऽल्पवृष्टिः स्यान्नसस्यानिभवन्तिच ।
वक्रोत्तीर्णाः शुभाः क्रूराजीवोवक्रगतः शुभः ।।१६४।।

शनि शुक्र एक राशिके हों तो कम वर्षा हो। क्रूर ग्रह वक्र से उत्तर कर शुभ होते हैं। किन्तु बृहस्पति वक्री हो तो तब अच्छा है।।१६४।।

अतिचारगताः क्रूराः स्वल्पवृष्टिविधायकाः ।
सौम्यायदावक्रगतास्तदावृष्टिविधायिनः ।।१६५।।

क्रूर ग्रह अतिचारी (बहुत गति वाले) हों तो कम वर्षा होती है। और सौम्य ग्रह जब वक्री हों तो वर्षा होती है।।१६५।।

सिंहेकन्यातुलायांचयास्यतेचयदागुरुः ।
एकादश्यांचयोगोयंवर्षत्येवमहाजलम् ।।१६६।।

सिंह कन्या और तुल में बृहस्पति जाय और ग्यारहवें में अन्य योग हो तो बहुत जल वर्षे।।१६६।।

शुक्रस्ययदिभौमेनयदिस्यात्सप्तसप्तकम् ।
वृष्टिमसितदाकालेतथैवशनिजीवयोः ।।१६७।।

शुक्र से मंगल सातवें हो और शनि से बृहस्पति सातवें हो तो महीनें में वर्षा होती है।।१६७।।

क्रूराणांसहसौम्यैश्चदिस्यात्सप्तसप्तकम् ।
अनावृष्टिस्तदाज्ञेयालोकपीडामहत्यपि ।।१६८।।

क्रूर ग्रहों सहित सौम्य ग्रह सातवीं सातवीं राशि पर हों तो अनावृष्टि तथा पीड़ा हो।।१६८।।

विशेष योगः

अश्विन्यादित्रयंचैवआद्रादिः पंचकं तथा ।
पूर्वाषाढादिचत्वारिचोत्तरारेवतीद्वयम् ।।१६९।।
उक्तानिशशिभान्यत्रप्रोच्यंतेसूर्यभान्यथ ।
रोहिणीचमृगश्चैवंपूर्वाफाल्गुनिकातथा ।।१७०।।

"विशेष योग"-अश्विनी आदि तीन और आर्द्रा आदि पांच

पूर्वाषाढादि चार और रेवती आदि दो इनको यहां चंद्र नक्षत्र कहे हैं। और रोहिणी मृगशिर पूर्वाफाल्गुनी आदि बाकी के सब नक्षत्र सूर्य नक्षत्र हैं।।१६९।।१७०।।

सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चन्द्रेचन्द्रेवर्षति ।
चान्द्रसूर्योभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट् ।।१७१।।

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो वह नक्षत्र तथा नित्य का जो नक्षत्र हो वह नक्षत्र इन दोनों का उपरोक्त विधि के अनुसार देखना। यदि सूर्य सूर्य के ही हों तो हवा चले। चन्द्र चन्द्र के हों तो वर्षा नहीं हो। और चन्द्र सूर्य दोनों का योग हो तो वर्षा हो। (यथा वर्ष काल में सूर्य मृगशिर पर हो और पंचांगस्थ नित्य का नक्षत्र आर्द्रादि पांच में हों तो वर्षा हो। इत्यादि)।।१७१।।

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणांविशाखात्रिनपुंसकम् ।
मूलाच्चतुर्दशंपुंसांनक्षत्राणिक्रमाद्बुधैः ।।१७२।।

आर्द्रा आदि दश नक्षत्रों को स्त्री-विशाखादि तीन को नपुंसक और मूलादि चौदह को पुरुष संज्ञक नक्षत्र मानकर इनसे वर्षा का विचार करे।।१७२।।

वायुर्नपुंसकेभेचस्त्रीणांभेचाभ्रदर्शनम् ।
स्त्रीणांपुरुषसंयोगेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ।।१७३।।

सूर्य और चंद्रमा जिस जिस नक्षत्र पर हों उनकी उपरोक्त संज्ञा देखकर विचार करे। यदि नपुंसक नक्षत्र हों तो पवन चले, स्त्री नक्षत्र हों तो बादल छाये रहैं-स्त्री नपुंसक हों तो कुछ बूंदा बांदी हो, पुरुष हों तो धूप रहे और स्त्री संज्ञक तथा पुरुष संज्ञक नक्षत्रों का योग हो तो निश्चय अच्छी वर्षा हो। (इति)।।१७३।।

(५) अथ प्रश्नद्वारा ज्ञानमाह

पृच्छालग्नेचतुर्थस्थैःशनिराहूयदापुनः ।
दुर्भिक्षंचमहाघोरंतत्रवर्षेध्रुवंभवेत् ॥१७४॥

(५) "अब प्रश्न से वर्षा कहते हैं।"-(कोई आशार्थी आकर वर्षा के लिये स्वस्थचित्त से प्रश्न करे तो तत्काल उस समय का लग्न लगाकर उसका विचार करे) यदि प्रश्न लग्न से चौथे घर में शनि राहु हों तो उस वर्ष में महा घोर दुर्भिक्ष हो॥१७४॥

चतुर्णामपिकेन्द्राणांमध्येयत्रशुभाग्रहाः ।
तस्यांदिशिचनिष्पत्तिः सुभिक्षंचप्रजायते ॥१७५॥

यदि उस समय चारों केन्द्रों में शुभ ग्रह हों तो जिस जिस केन्द्र में जो जो ग्रह हों उन उन ग्रहों की दिशा में धान्य की उत्पत्ति और सुभिक्ष जानना॥१७५॥

यस्यांदिशिशनिर्दृष्टः क्रूरश्चात्रग्रहेस्थितः ।
दिशितस्यांबुधैर्वाच्यंदुर्भिक्षेनात्रसंशयः ॥१७६॥

जिस दिशा में क्रूर ग्रह हों और उस पर शनि की भी दृष्टि हो तो पंडित लोग उस दिशा में निश्चय दुर्भिक्ष कहें॥१७६॥

पंचागुलिस्पर्शनेपियद्यंगुष्ठंजनः स्पृशेत् ।
तदाऽवृष्टिस्तुमहतीसावित्रीस्पर्शनेल्पिका ॥१७७॥

पूछनेवाला यदि पांच अंगुली पकड़ कर भी अंगूठे को पकड़े हुए प्रश्न करे तो अधिक वर्षा हो और कनिष्ठा को छुए तो कम वर्षा हो॥१७७॥

(६) अथ सद्योवृष्टिलक्षणम्

पूर्वस्यांयदिसंध्यायांमेघैराच्छादितंनभः ।
पर्वताः कृत्रिमैः कैश्चित्कैश्चित्कुञ्जरमूर्तिभिः ॥१७८॥

(६) "शीघ्र वर्षा होने का लक्षण"—यदि सायंकाल के समय पूर्व में

आकाश में बादलों की घटा चढ़े, उनमें कोई बादल पर्वत सरीखा और कोई हाथी जैसा दीखे।।१७८।।

नानाकृतिधरैश्चैवमातंगधवलैर्घनैः ।
पंचरात्रात्सप्तरात्रात्सद्योवृष्टिर्निगद्यते ।।१७९।।

अथवा कई बादल सफेद हाथी जैसे होकर कई भांति के बन जाँय तो पांच या सात रात में शीघ्र वर्षा होती है।।१७९।।

उत्तरस्यांचसंध्यांगिरिमालेवविस्तृतः ।
मेघस्तृतीययदिवसेवृष्ट्यातुष्टिकरोनृणाम् ।।१८०।।

सायंकाल में उत्तर दिशा में बादलों की पर्वत माला सी दीखे तो मनुष्यों के संतोष लायक तीन दिन में वर्षा होती है।।१८०।।

पश्चिमायान्तुसंध्यायांघनाः स्युः पर्वताइव ।
श्यामाभ्रेस्तंगतेभानौसद्योवर्षाभिलक्षणम् ।।१८१।।

संध्यासमय पश्चिम में बादलों के पहाड़ दीखें और सूर्यास्त के समय काली घटा हो तो शीघ्र वर्षा होती है।।१८१।।

दक्षिणस्यांयदामेघः सकोटीनारसंभवाः ।
त्रिपंचसप्तरात्रान्तः किंचिद्वृष्टिविधायकाः ।।१८२।।

दक्षिण दिशा में यदि कोट बाँधकर बादल खड़ें हों तो तीन पांच या सात रात में कुछ वर्षा कर सकते हैं।।१८२।।

आग्नेय्यांबहुतापायमेघाः स्वल्पजलप्रदाः ।
नैर्ऋत्यामीतिसंतापरोगवर्षाकराः स्मृताः ।।१८३।।

अग्नि कोण में बादल हों तो गर्मी अधिक और जल कम हों। तथा नैर्ऋत्य में हो तो संताप और रोगकारी वर्षा हो।।१८३।।

वातवृष्टिकराः सद्योवायव्यामुन्नताघनाः ।
ऐशान्यामशनिव्यक्तामेघाः सुखकराजलात् ।।१८४।।

वायव्य में यदि ऊँचे बादल हों तो शीघ्र वर्षता है और ईशान कोण में बादल हों तो बराबर वर्षा होती रहती है।।१८४।।

चतुर्थीपंचमीषष्ठीह्यमावस्याचसप्तमी ।
आषाढकृष्णतिथयः सद्योमेघायलक्षणैः ।।१८५।।

चौथ–पांच–छठ–सातैं और अमावस को आषाढ़ में घटा हो तो शीघ्र वर्षने के लक्षण हैं।।१८५।।

पूर्वस्यांबादलंधूम्रंसूर्यास्तेयातिकृष्णताम् ।
उत्तरस्यांमेघमालाप्रभातेविमलादिशः ।।१८६।।

यदि पूर्व में धुएं के आकार के बादल हों और सूर्यास्त के समय काले हो जायँ। तथा उत्तर में मेघमाला हो और प्रभात में विमल दिशा हों और।।१८६।।

मध्यकालेजनस्तापईदृशंमेघलक्षणम् ।
अर्द्धरात्रेगतेवृष्टिः प्रजातोषायजायते ।।१८७।।

दोपहर में मारे गर्मी के लोग तड़फड़ाते हों, यह मेघ के लक्षण हैं। जिस दिन यह बाते हों उस दिन आधी रात जाने तक लोगों को संतोष देनेवाली वर्षा अवश्य होती है।।१८७।।

भाद्रशुक्लेचतुर्थेह्लपंचमेसप्तमेष्टमे ।
पूर्णिमायांचगर्भेणसद्योमेघमहोदयः ।।१८८।।

भादवाँ सुदी चौथ–पांचै–सातैं–आठैं–पूनो के गर्भ से भी शीघ्र वर्षा होती है।।१८८।।

पंचभिः सप्तभिर्वास्याद्दिनैरेकार्णवामही ।
चतुर्थ्यामपिपंचम्यामाश्विनेशीघ्रगर्भता ।।१८९।।

पांच सात दिन में ही पृथ्वी का जल से एकार्णव हो जाता है और आश्विन की चौथ पांचै से भी शीघ्र गर्भता होती है।।१८९।।

दक्षिणः प्रबलोवातः सकृदेव प्रजायते ।
वारुणैश्चैवनक्षत्रैः शीघ्रंवर्षतिमाधवः ।।१९०।।

यदि दक्षिण की प्रबल पवन चले और पश्चिमी पवन भी हो तो शीघ्र वर्षा आती है।।१९०।।

धूम्रिताः स्युर्दिशः सर्वाः पूर्ववातेवहत्यपि ।
चतुर्थ्यामन्तरेमेघः सारांसिपरिपूरयेत् ।।१९१।।

पूर्व की पवन बहती हो और सब दिशाएँ धूऐं सरीखी हों तो चार पहर के भीतर तालाबों के भरने योग्य अच्छी वर्षा होती है।।१९१।।

उदयशिखरिसंस्थोदुर्निरीक्ष्योऽतिदीप्त्या
द्रुतकनकनिकायः स्निग्धवैदूर्यकान्तिः ।
तदहनिकुरुतेम्भस्तोयकालेविवस्वान्
प्रतिपदियदिवोच्चैः खंगतोतीवतीक्ष्णम् ।।१९२।।

हुए) हों या गलाये हुए सोने के समान हों अथवा वैडूर्य मणि के समान हों, चौमास में जिस दिन ऐसे सूर्य हों, उसी दिन मेघ वर्षता है। अथवा जिस दिन आकाश के बीच में पहुंच कर सूर्य अत्यंत तीक्ष्ण हो तो उस दिन वर्षा होती है।।१९२।।

रात्रोतारागलत्कारः प्रातश्चात्यरुणोरविः ।
अवृष्टोशक्रचापश्चसद्योवृष्टिस्तदाभवेत् ।।१९३।।

रात में तारे गिरें, प्रातःकाल में सूर्य लाल हों; बिना वर्षा इन्द्रधनुष हो तो शीघ्र वर्षा होती है अथवा तारे टूटें,बिजली सहित मेघ गर्जे तो वर्षाकाल समीप ही जानना।।१९३।।

धूम्रितानिबिडाः शैलाश्चर्मादिषुतथार्द्रता ।
प्रभातेपश्चिमायांचेदिन्द्रचापः प्रदृश्यते ।।१९४।।

वारुणैश्चैवनक्षत्रैः शीघ्रंवर्षतिमाधवः ।
गोमयेउत्कराः कीटाः परितप्यन्तिदारुणाः ॥१९५॥
चातकानांरवोवृष्टिः सद्योवैसूचयेज्जने ।

पर्वत धूएं के से होकर घनें इकट्ठे दीखें, चमड़े आदि में गीलापन हो। प्रातःकाल पश्चिम में इन्द्रधश्रुष हो और जलनाड़ी के नक्षत्र हों तो शीघ्र वर्षा होती है। गोबर में गुर्वीड़े अथवा और भांति के दारुण कीड़े हों। और पपीहे बोलें तो शीघ्र वर्षा होती है॥१९४॥१९५॥

सूर्योदयेश्रावणमासिगर्जेभ्रमन्तिनीरोपरिवापिमत्स्यः ।
घनस्तदाष्टादशयाममध्येकरोतिभूमिसलिलेनपूर्णाम् ॥१९६॥

श्रावण मास में जिस दिन सूर्योदय के समय मेघ गर्जे और पानी के ऊपर मछलियां बार बार इधर उधर घूमें तो उस समय अठारह पहर के भीतर भारी वर्षा होती है॥१९६॥

शुककपोतविलोचनसिन्नभोमधुनिभश्चयदाहिमदीधितिः ।
प्रतिशशीचयदादिविराजतेपततिवारितदानचिराद्दिवः॥१९७।

यदि चंद्रमा का रंग तोता और कबूतर की आंख के समान लाल हो अथवा सहद के समान हो या प्रतिशशि (दूसरा चंद्रमा) दीखे तो जल्दी मेघ वर्षता है॥१९७॥

स्तनितंनिशिविद्युतोदिवारुधिरनिभायदिदंडवत्स्थिताः ।
पवनः पुरतश्चशीतलोयदिसलिलस्यतदागमोभवेत् ॥१९८॥

रात को बादल गर्जे—दिन में लाल रंग की सीधी बिजली चमके और पूर्व दिशा की पवन चले तो शीघ्र वर्षा हो॥१९८॥

वल्लीनांगगनतलोन्मुखाःप्रवालाःस्नायन्येयदि जलपांसुभिर्विहंगाः ।
सेवन्तेयदिचसरीसृपास्तृणाग्राण्यासन्नोभवतिदाजलस्यपातः ॥१९९॥

वल्लियों (लता—बेलियों) के कोमल नये पत्ते आकाश की तरफ

ऊपर को मुँह करे, पक्षी जल से या धूलि से स्नान करें। और सर्पादि जीव घास की नोंक पर चढ़कर बैठें तो जल्दी जल आता है।।१९९।।

अतिवातश्चनिर्वातोह्यतिचोष्णमनुष्णता ।
अल्पाभ्रश्चनिरभ्रंचषडेतेवृष्टिलक्षणाः ।।२००।।

अत्यंत पवन चले अथवा बिल्कुल बंद हो जाय। अत्यंत गर्मी पड़े या ठंडक हो और बादल हों अथवा बिल्कुल साफ हो तो यह छः लक्षण भी शीघ्र वर्षा होने के हैं।।२००।।

यदाभाद्रपदेमासेप्रतिपद्दशमीतथा ।
सप्तमीपूर्णिमाचैवनवमीचयथाक्रमम् ।।२०१।।
मेघायदानदृश्यन्तेपश्चिमांदिशमाश्रिताः ।
तद्वद्वर्षतिसततंबहुनीराः पयोधराः ।।२०२।।

यदि भादवे में पड़वा, दशमी, सप्तमी, पूर्णिमा और नौमी को यथा क्रम से मेघ न दीखे और पश्चिम दिशा में हो तो बहुत वर्षा हो।।२०१।।२०२।।

संध्याकालेचयेमेघाः पर्वताकारसन्निभाः ।
आदित्यास्तंगतेतर्हिअहोरात्रेणवर्षति ।।२०३।।

यदि प्रातः संध्या में पर्वताकर घटा हो तो सूर्यास्त में दिन रात वर्षता है।।२०३।।

(७) अथ तात्कालिकलक्षणम्

विनोपघातेनपिपीलिकानामण्डोपसंक्रातिरहिव्यवायः ।
द्रुमाधिरोहश्चभुजंगमानांवृष्टेर्निमित्तानिगवांप्लुतंच ।।२०४।।

(७) "तत्काल वर्षा होने के लक्षण"–यदि बिना किसी उत्पात (बखेड़े) के चींटियां अपने अण्डों को उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जायं, सर्प पर सर्प चढ़ें या मैथुन करें। अथवा वृक्ष पर सर्प चढ़ें। और

गायें उछले कूदे अथवा ऊपर को मुँह करे तो उसी दिन वर्षा आती है।।२०४।।

मार्जाराभृशमवनिंनखैर्लिखन्तोलोहानांमलानिचयः सविस्रगन्धः ।
रथ्यायांशिशुनिचिताश्चसेतुबन्धाः संप्राप्तंजलमचिरान्निवेदयंति।।

बिल्लियां अपने पंजो से पृथ्वी को कुचरें, लोहे पर मैल जम जाय और उसमें कच्चे मांस के समान सुगंध आवे और बालक रास्तों में खेलते हुए धूल (रेत) आदि के पुल या बन्धे बांधे तो इन बातों से शीघ्र जल वर्षता है।।२०५।।

यदितित्तिरपत्रनिभंगगननंमुदिताः प्रवदन्तिचपक्षिगणाः ।
उदयास्तमयेसवितुर्द्युनिशंविसृजन्ति घनानचिरेणजलम्।।२०६।।

यदि प्रातःकाल अथवा सायंकाल के समय तीतर पंखी बादल हों। और मोर टिटहरी पपीहा आदि पक्षी आनन्दित होकर खूव कलरव करें (हू हल्ला मचावें) तो शीघ्र ही दिन रात मेघ वर्षता है।।२०६।।

यद्यमोघकिरणाः सहस्रगोरस्तभूधरकराइवोच्छ्रिताः।
भूसमंचरसतेयदांबुदस्तन्महद्भवतिवृष्टिलक्षणम् ।।२०७।।

यदि हजार किरणों वाले सूर्य के अस्त समय में अस्ताचल की किरणों के समान ऊँची और अमोघ किरणें विराजमान हों (दीखें) और मेघ पृथ्वी के नजदीक ही शब्द करे (गर्जना करे) तो इन बातों से वर्षा होने का बड़ा लक्षण जानना चाहिये।।२०७।।

प्रावृषिशीतकरोभृगुपुत्रात्सप्तमराशिगतः शुभदृष्टः ।
सूर्यसुतान्नवपंचमगोवासप्तमगश्चजलागमनाय ।।२०८।।

यदि चौमासे के दिनों में चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखे अथवा चन्द्रमा शुक्र से सातवीं राशि में या शनि से नौवीं पांचवीं सातवीं राशि में आवे

तो उस दिन जल वर्षता है।।२०८।। (इति)

(८) अथोपकरणनिरूपणम्

(गंधर्वनगर) कपिलंसस्यघातायमंजिष्ठाहरणं गवि ।
अव्यक्तवर्णंकुरुतेबलक्षोभंनसंशयः ।।२०९।।

(८) "वर्षा सम्बन्धी और बातों का ज्ञान"–(गंधर्व नगर) यह आकाश में किसी समय किसी रंग का–नगर जैसा दीखा करता है। यदि यह गंधर्व नगर भूरा दीखे तो खेतियों का नुकसान हों मंजीठ जैसा हो तो गायों में बीमारी करे और अप्रगट रंग का हो तो बल हरण करे।।२०९।।

गंधर्वनगरंस्निग्धंसप्राकारंसतोरणम् ।
सौम्यांदिशंसमाश्रित्यराज्ञस्तद्विजयंकरम् ।।२१०।।

गंधर्वनगर यदि चिकना हो और परकोटा तथा तोरण सहित पूर्व दिशा में हो तो वह राजा की विजय करता है।।२१०।।

(इन्द्रधनुष परिवेष)

इन्द्रायुधपरिवषोखेचरचारेचपूर्वकथितौ ।
दैवंतस्यामवलोकयवर्षतांववश्यमेवेति ।।२११।।

(इन्द्रधनुष और परिवेष) यह दोनों पीछे खेचर चार में आठवें श्लोक से तेरहवें श्लोक तक कह आयें हैं अतएव वर्षाविचारक विद्वानों को वहां अवश्य देख लेना चाहिये।।२११।।

(प्रतिसूर्य) प्रतिसूर्यकःप्रशस्तोदिवसकृद्दतुवर्णसप्रभस्निग्धः ।
वैदूर्यनिभःस्वच्छः शुक्लश्चक्षेमसौभिक्षः ।।२१२।।

(प्रतिसूर्य)–इसका भी वहां उल्लेख हुआ है किन्तु प्रसंगवश फिर लिखते हैं। जिस ऋतु में सूर्य का रंग जैसा हो उस ऋतु में प्रति सूर्य का रंग भी वैसा ही चिकना या वैडूर्य मणि की समान स्वच्छ और शुक्ल

वर्ण युक्त हो तो क्षेम तथा सुभिक्ष करता है।।२१२।।

(रज) कथयन्तिपार्थिवबधंरजसाघनतिमिरसं चयनिभेन ।
अभिभाव्यमानगिरिपुरतरवः सर्वा दिशश्छन्नाः ।।२१३।।

(रज-धूलि)—गहरे अन्धियारा के समूह की समान धूरि जब सब दिशाओं को ढ़क ले जिससे पर्वत पुर वृक्षादि न दीखें तो जानना कि राजा का नाश होगा। जैठ वैशाख में अधिक आंधी आवे या ऐसी धूलि वर्षा उत्तर पश्चिम् से अधिक आवें तो कई एक उसे वर्षा के हित में अच्छी कहते हैं।।२१३।।

केत्वाद्युदयविभुक्तंयदारजोभवतितीव्रभयदायि ।
शिशिरादन्यत्रर्तौफलमविकलमाहुराचार्याः ।।२१४।।

केतु उदय के पीछे जब धूलि उड़े तो अत्यंत तीव्र भयदायी होती है। आचार्यों का कथन है कि इसका फल शिशिर ऋतु में कुछ बिगाड़ नहीं करता अन्य ऋतुओं में होता है।।२१४।।

(निर्घात) पवनः पवनाभिहतोगगनादवनौयदा समापतति ।
भवतितदानिर्घातः सचपापोदीप्तविहगरुतः ।।२१५।।

(निर्घात) पवन से टकरा कर जब पृथ्वी पर गिरते है तब वही निर्घात होता है। अर्थात् जो अत्यंत जोर से कड़कड़ाहट का शब्द होता है वही निर्घात है। उस निर्घात के समय सूर्य की ओर को मुंह करके पक्षी रोवें तो पापकारी होता है।।२१५।।

(उल्का) दिविभुक्तशुभफलानांपततांरूपाणि यानितान्युल्काः।
धिष्ण्योल्काशनिविद्युत्तारा इतिपञ्चधाभिन्नाः ।।२१६।।

(उल्का) स्वर्ग में शुभ फल भोगकर पड़ने का जो रूप होता है वही उल्कापात है। किन्तु इनमें धिष्ण्या, उल्का, अशनि, बिजली, और तारा

यह पांच भेद हैं।।२१६।।

(दिग्दाह) दाहोदिशांराजभयायपीतोदेशस्य नाशायहुताशवर्णः ।
यश्चारुणः स्यादबसव्यवायुः सस्यस्यनाशंसकरोतिदृष्टः ।।२१७।।

इति वर्षप्रबोधे उत्तरभागे द्वितीयस्थलः समाप्तः ।

(दिग्दाह)-किसी २ समय दिशाओं में लाल लाल रंग की आग लगी हुई सी दीखा करती है उसको दिग्दाह कहते हैं। यह दिग्दाह पीले वर्ण का हो तो राजभय करता है। अग्नि के वर्ण का देश नाश करता है और लाल दिग्दाह दक्षिणी पवन सहित धान्य का नाश करता है। यदि आकाश अच्छा, तारा निर्मल और सुवर्ण समान दिग्दाह हो तो हितकारक होता है।।२१७।।

इति हनूमान शर्मासंग्रहीत हिन्दीटीकासहिता वर्षप्रबोध के उत्तरभाग का दूसरा स्थल समाप्त।

---

(१) अधिकमासनिर्णयः

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।
घटिकानांचतुष्केणपतत्यधिकमासकः ।।१।।

(१) "अधिमास का निर्णय"-गताथिमास के पीछे ३२ महीने १६ दिन ४ घड़ी बीतने पर अधिमास का सम्भव होता है।।१।।

शाकेबाणकरांककेविरहितेनन्देन्दुभिर्भाजिते ।
शेषेऽग्नौचमुधुश्रमाधवशिवेज्येष्ठश्रखेचाष्टके ।

आषाढोनृपतौनभश्चशरकेभाद्रश्चविश्वांकके
नेत्रेचाश्विनकोऽधिमासउदितोशेषेन्यकेस्यान्न हि ॥२॥

वर्तमान शके में नौ सो पचीस (९२५) घटाकर उन्नीस का भाग देने से ३ शेष रहें तो चैत्र, ११ शेष रहें तो वैशाख, शून्य अथवा ८ बचें तो ज्येष्ठ, १६ बचें तो आषाढ, ५ रहें तो श्रावण, १३ रहें तो भाद्रपद, और ३ बचें तो आश्विन अधिकमास जानना और उनसे अन्य बचे तो कोई भी अधिमास नहीं जानना॥२॥

असंक्रांतिमासोधिमासः स्फुटंस्याद्विसंक्रांतिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्त्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्तदावर्षमध्येधिमासद्वयंच ॥३॥

जिस मास में संक्रांति नहीं हो वह अधिमास होता है। और जिस मास में दो संक्रांति हों वह क्षय मास होता है। क्षयमास कार्तिक आदि तीन ही मास में होता है। और जिस वर्ष में क्षय मास होता है उसी वर्ष में अधिमास भी दो हो जाते हैं॥३॥

अथ अधिकमासफलम्

दुर्भिक्षंश्रावणेयुग्मेपृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः ।
भाद्रपाद्द्वितयेधान्यनिष्पत्तिः स्याद्यथेहितम् ॥४॥

"अधिमास फल"-जिस वर्ष में दो सावन हों तो दुर्भिक्ष होकर पृथ्वी पर प्रजा का क्षय होता है और दो भादवें हों तो हितकारक अच्छी खेतियां होती हैं॥४॥

आश्विनद्वितयेभूम्यांसैन्यचौररुजंभयम् ।
सुभिक्षंकेचनाप्याहुर्दुर्भिक्षंदक्षिणादिशि ॥५॥

दो आसोज हों तो पृथ्वी में सेना, चौर और रोगभय होता है। औरउस वर्ष में सुर्भिक्ष नहीं होता है, 'दक्षिण दिशा में दुर्भिक्ष होता है॥५॥

सुभिक्षंकार्त्तिकयुगेक्वचिद्दुःखंरणान्नृणाम् ।
मार्गशीर्षयुगेदेशेजायतेपरमंसुखम् ॥६॥

यदि दो कार्त्तिक हों तो सुभिक्ष होता है किन्तु राजाओं में कहीं २ युद्धादि के दुःख होते हैं। दो मृगशिर हों तो देश में परम सुख होता है॥६॥

पौषयुग्मेसुभिक्षंचमंगलंनृपतेर्जयः ।
राजदण्डपरोलोकोलोकेमतिविपर्ययः ॥७॥

पौष दो हों तो सुभिक्ष होता है, प्रजा में मंगल और राजाओं में जय होती है। किन्तु राजदंड से लोकमति का विपर्यय होता है॥७॥

माघद्वयेभुविक्षेमंराज्यानांचभयंतथा ।
सुभिक्षंफाल्गुनयुगेक्षत्त्रियाणांशिवंभवेत् ॥८॥

दो माघ हों तो पृथ्वी पर क्षेम और राजाओं को भय होता है। और दो फाल्गुन हों तो सुभिक्ष होता है तथा क्षत्रियों का कल्याण होता है॥८॥

चैत्रद्वयेशुभंधान्येवैश्यानामुदयोमहान् ।
वैशाखयुग्मेधान्यानांनिष्पत्तिशुभः क्वचित् ॥९॥

दो चेत्र हों तो खेती अच्छी होती है ओर वैश्यों की उन्नति होती है। दो वैशाख हों तो कहीं २ धान्यकी उत्पत्ति अशुभ होती है॥९॥

ज्येष्ठद्वयेनृपध्वंसोधान्यानिक्षितिसत्तमे ।
द्वयाषाढेव्यथाकिंचित्खण्डवृष्टिः क्वचित्पुनः ॥१०॥

दो जेठ हों तो राजध्वसं, धान्य की उत्पत्ति हो और दो आषाढ हों तो कुछ व्यथा तथा कहीं कुछ खण्ड वृष्टि हो॥१०॥

क्वचिद्द्विकार्तिकेदुःखद्विमाघेप्यशुभंमतम् ।
द्विफाल्गुनेवह्निभयमशुभंमाधवद्वये ॥११॥

किसी का यह भी मत है कि दो कात्तिक होने से दुःख, दो माघ होने से अशुभ, दो फाल्गुन होने से अग्निभय और दो वैशाख होने से अशुभ होता है॥११॥

अनेकयुगसाहस्र्यांदैवयोगात्प्रजायते ।
त्रयोदशदिनेपक्षस्तदासंहरतेजगत् ॥१२॥

(२) "तिथि क्षय वृद्धि फल"-दैवयोग से कई एक युगों में प्रजा का नाश करने के निमित्त तेरह दिन का पक्ष आता है। अर्थात् जिस पक्ष में तेरह तिथि हों वह पक्ष प्रजा में बीमारी महर्घता आदिक उपद्रव करता है॥१२॥

पंचमीश्रावणेहीनासप्तमीभाद्रपादके ॥
आश्विनेनवमीनेष्टापौर्णमासीचकार्तिके ॥१३॥

सावन में पांचै तिथि टूट जाय, भादवें में सातैं टूट जायँ और आसोज में नौमी तथा कार्त्तिक में पूनम टूटे तो नेष्ट है॥१३॥

भाद्रपदेपौषयुगेसितपक्षेपतत्तितिथिस्तस्याः ।
द्विगुणदिनैर्नृपमरणंयदिवादुर्भिक्षमतिरौद्रम् ॥१४॥

भादवे में और पौष में शुक्ल पक्ष की जितनी तिथि घटें उनसे दुगुने दिनों में राजा का मरण और अतिरौद्र दुर्भिक्ष होता है॥१४॥

यस्यमासेशुक्लपक्षेतृतीयावाचतुर्थिका ।
पतेत्तदामुद्गघृतंमहर्घंचभवेद्भुवि ॥१५॥

जिस मास की शुक्ल तृतीया वा चतुर्थी घटै तो मूंग घी महँगे हों॥१५॥

भाद्रपौषेतथामाघेविशेषेणमहर्घता ।
यन्मासेदशमीछेदस्तदाघृतमहर्घता ॥१६॥

भादवां पौष तथा माघ में जिस मास में दशमी टूटे उसी में घी की

विशेष महँगाई हों।।१६।।

श्वेतपक्षेप्रतिपदापंचमीवाचतुर्दशी ।
वर्द्धिताचेत्सुभिक्षायच्छिन्नादुर्भिक्षकारिका ।।१७।।

शुक्ल पक्ष में पडवा, पांचै चौदस ये बढ़ें तो सुभिक्ष और घटे तो दुर्भिक्ष होता है।।१७।।

चैत्राद्भाद्रपदंयावच्छुक्लपक्षेयदात्रुटिः ।
तदाक्वचिच्चोपपत्तिरल्पधान्योदयः क्वचित् ।।१८।।

चैत्र से लेकर भादवें तक शुक्ल ही शुक्ल पक्ष में जब तिथियां टूटें तो कहीं कुछ खेतियां हों और कहीं कुछ धान्य उत्पन्न हों।।१८।।

मार्गादिपंचमांसेषुशुक्लपक्षेतिथिक्षये ।
दौः स्थ्यंवाछत्रभंगोपिजायतेराजविग्रहः ।।१९।।

मार्गशीर्षादि पांच महीनों के शुक्ल पक्ष में तिथियां टूटें तो लोगों का स्वास्थ्य विगड़े राजाओं में विग्र हो और छत्रभंग भी हो।।१९।।

मार्गादिपंचमासेषुतिथिवृद्धिर्निरन्तरम् ।
कृष्णपक्षेतदासौख्यंप्रजामारिः प्रवर्तते ।।२०।।

यदि मगशिर आदि पांच महीनों में बराबर तिथियां बढ़ती ही चली जायँ तो स्वास्थ्य का अच्छा सुधार रहे किन्तु कृष्ण पक्ष में भारी भय हो।।२०।

श्रावणेशुक्लपक्षेचेद्यदाकश्चित्तिथिक्षयः ।
तदाकार्त्तिकमासेस्याच्छत्रभंगोपिजायते ।।२१।।

श्रावण शुक्ल में कोई भी तिथि टूटे तो कार्त्तिक भ छत्रभंग हो।।२१।।

श्रावणेकृष्णपक्षस्यप्रतिपद्दिवसेधृतौ ।
योगेधृतिः स्याद्धान्यस्यशेषयोगेषुविक्रयः ।।२२।।

श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को धृति योग हो तो धान्य का संग्रह करना चाहिये और यदि अन योग हो तो विक्रय करना चाहिये।।२२।।

(३) अथ मासे वारफलम्

चैत्रेचश्रावणेमासेपंचजीवोयदाभवेत् ।
दुर्भिक्षंरौरवंघोरंछत्रभंगंनसंशयः ।।२३।।

(३) "महीनों में वारों का फल"-चैत्र और श्रावण के महीने में पांच बृहस्पतिवार हों तो दुर्भिक्ष हो तथा छत्रभंग हो।।२३।।

पंचार्कवासरेरोगाः पंचभौमेभयंमहत् ।
दुर्भिक्षंपंचमंदेवुशेषावाराः शुभप्रदाः ।।२४।।

पांच रविवार हों तो रोग, मंगल हों तो महाभय, शनिवार हों तो दुर्भिक्ष और सोम शुक्र बुधवार हों तो शुभ होते हैं।।२४।।

एकमासेरवेर्वाराः पंचनस्युः शुभावहाः ।
चन्द्रजीवौयदापंचधान्यादीनांसमर्घता ।।२५।।

किसी भी एक महीनें में पांच रविवार हों तो शुभ नहीं होते हैं। सोम और गुरुवार पांच हों तो धान्य सस्ता होता है।।२५।।

मंगलेम्रियतेराजाप्रजावृद्धिस्तुभार्गवे ।
बुधेरसक्षयोभूम्यांदुर्भिक्षंतुशनैश्चरे ।।२६।।

पांच मंगलवार हों तो मुखिया मरें, पांच शुक्रवार हों तो प्रजावृद्धि हो। बुध हों तो रसक्षय हो और पांच शनिवार हों तो महँगाई हो।।२६।।

मासाद्यदिवसेसोमसुतवारोयदाभवेत् ।
धान्यंमहर्घंत्रीन्मासान्भावेवर्षेहिदुःखकृत् ।।२७।।

मास के प्रथम दिन में बुधवार हो तो तीन महीने अन्न महँगाई हो।।२७।।

पंचार्कयोगेवैशाखेवृष्टिगर्भविनाशकः ।
पंचभौमेभयंवह्नेर्वृष्टिरोधस्तुकुत्रचित् ॥२८॥

वैशाख में पांच रविवार हों तो वर्षा के गर्भ को बिगाड़ते हैं। और पांच मंगलवार हों तो अग्नि का भय हो तथा कहीं वर्षा में देरी हो॥२८॥

प्रतिपत्सर्वमासेषुबुधेदुर्भिक्षकारिणी ।
ज्येष्ठमासेविशेषेणवृष्टिभंगायजायते ॥२९॥

प्रत्येक मास की पडवा को बुधवार हो तो दुर्भिक्ष करता है, विशेष करके जेठ के महीने में बुरा है क्योंकि उससे वर्षा की हानि होती है॥२९॥

आषाढेकार्त्तिकेमासेफाल्गुनेपिचदैवतः ।
जायतेपंचभौमाश्चपंचमासास्तदाशुभाः ॥३०॥

आषाढ़–कार्त्तिक और फाल्गुन में पांच मंगलवार हों तो शुभ होते हैं॥३०॥

चैत्रशुक्लप्रतिपदिरवौवायुर्विशेषतः ।
अल्पवृष्टिफलंतुच्छमल्पधान्यंप्रजायते ॥३१॥

यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रविवार हो तो पवन अधिक चले और धान्य, वर्षा तथा फल कम हों॥३१॥

चन्द्रेबहुजलंधान्यंतृणानांबहुलोदयः ।
ईतयः सप्तधाभौमेपीड़ादुःखपराभवाः ॥३२॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को चन्द्रवार हो तो जल घास और वर्षा बहुत हो। यदि उस दिन मंगलवार हो तो सात भांति की ईति उत्पन्न हो अर्थात् (१) अत्यंत वर्षा हो (२) बिल्कुल ही न हो (३) टिड्डी दल आवें (४) मूषे अधिक हों (५) चिड़ी कमेड़ी कबूतर आदि पक्षी

अधिक हों (६) कातर गजाई हों (७) और रोली आदि लग जाय।।३२।।

बुधेचमध्यमेवर्षंसुभिक्षंतुगुरौभृगौ ।
शनौधान्यतृणरसाजलशोषः प्रजायते ।।३३।।

बुध हो तो मध्यम वर्ष हो, शुक्र और बृहस्पति हो तो सुभिक्ष हो और शनिवार हो तो रस घास और खेती का नाश तथा जल का, शोष हो।।३३।।

चैत्रेवैचाष्टमीमध्येसौम्योवाथभवेत्कुजः ।
विरूपवर्षंजानीहिनदीतीरेगृहंकुरु ।।३४।।

यदि चैत्र की अष्टमी को बुधवार या मंगलवार हो तो उस वर्ष को विरूप जानना। उसमें जल नहीं वर्षता है और नदी किनारे घर बांध लेना अच्छा है।।३४।।

वैशाखस्यचतुर्दश्यांवारौचेद्गुरुभार्गवौ ।
तदानिष्पद्यतेधान्यंविपुलंपृथिवीतले ।।३५।।

वैशाख की चौदश को यदि गुरु, शुक्रवार हो तो पृथ्वी पर बहुत अन्न होता है।।३५।।

ज्येष्ठप्रथमेपक्षेयातिथिः प्रथमाभवेत् ।
आगताकेनवारेणतमन्वेषययत्नतः ।।३६।।

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को कौन वार होगा इसका विचार करना चाहिये।।३६।।

भानुनापवनोवातिकुजोव्याधिकरोमतः ।
सोमपुत्रेणदुर्भिक्षंखण्डवृष्टिः प्रजायते ।।३७।।

यदि रविवार हो तो पवन चले, मंगल हो तो उदंगल करे, बुध हो तो खंड वृष्टि तथा महँगाई करे।।३७।।

गुरुभार्गवसोमानामेकोपियदिजायते ।
वर्षावधितदापृथ्वीधनधान्यसमाकुला ।।३८।।

सोम शुक्र बृहस्पति में से कोई हो तो चौमासे तक पृथ्वी पर बहुत ही धनधान्य इकट्ठे हो जायं।।३८।।

अथवादैवयोगेनशनिवारोभवेद्यदि ।
जलशोषः प्रजानाशश्छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।३९।।

यदि दैव योग से जेठी पड़वा को शनिवार हो तो जल शोष, प्रजा नाश एवं छत्रभंग हो।।३९।।

आषाढमासेसितपंचमीदिनेरव्यादिवारः क्रमशः फलानि ।
वृष्टिः सुवृष्टिर्ह्यतिवृष्टिरूर्ध्ववातः प्रवातः प्रलयः प्रणाशः।।

आषाढ शुक्ल पंचमी को सूर्यवार हो तो वृष्टि, सोम हो तो सुवृष्टि, मंगल हो तो अतिवृष्टि, बुध हो तो पवन, गुरु हो तो आंधी-तूफान, शुक्र हो तो भारी तूफान और शनिवार हो तो नाशकारक हवा सम्बन्धी और उत्पात हों।।४०।।

आषाढेषष्ठीदिवसेकृष्णपक्षेशनिर्यदा ।
तदागोधूमकाग्राह्याद्विगुणायस्तुकार्त्तिके ।।४१।।

आषाढ बदी छठ को शनिवार हो तो गेहूं इकट्ठे करने चाहिये। कार्त्तिक में दुगुना लाभ हो।।४१।।

आषाढस्याप्यमावस्यायदिसोमवतीभवेत् ।
सुभिक्षंकुरुतेवश्यंनक्षत्रेमृगसर्म्यके ।।४२।।

आषाढी अमावस सोमवारी हो और मृगशिर आदि सात नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हो तो अवश्य सस्ती होती है।।४२।।

श्रावणेकृष्णपक्षेचप्रतिपद्गुरुयोगतः ।
मुद्गामाषस्तिलास्तैलंमहर्घंशीघ्रमादिशेत् ।।४३।।

श्रावण बदी पड़वा गुरुवार हो तो मूंग उड़द तिल तेल यह जल्दी ही महँगे होते हैं।।४३।।

श्रावणेनवमीयुक्तः शनिः संतापकारकः ।
छत्रभंगंविजानीयादाश्विनांतेनसंशयः ।।४४।।

श्रावण की नौमी शनिवार हो तो संताप करती है और आश्विन के अन्त में छत्रभंग होता है।।४४।।

दशम्यांश्रावणेसिंहेरविः संक्रमतेशनौ ।
महीस्याज्जलदैः पूर्णातदास्याद्धान्यसंपदः ।।४५।।

श्रावण की दशमी को सूर्य संक्रान्ति के दिन शनिवार हो तो पृथ्वी पर जल की अधिकता और अन्न की वृद्धि हो।।४५।।

वैशाखकृष्णपक्षस्यपंचम्यांजायतेरविः ।
आगामिवर्षसंक्रान्तौतद्दिनेवृष्टिबाधकः ।।४६।।

वैशाख बदी पांचै रविवार हो तो आगामी वर्ष की संक्रान्ति के उस दिन वृष्टि को रोकता है।।४६।।

वैशाखशुक्लपंचम्यांशनिनार्द्राप्रसंगतः ।
सर्ववस्तुसमर्घस्याद्भाद्रेमेघमहोदयः ।।४७।।

वैशाख शुक्ल पंचमी शनिवार आर्द्रा नक्षत्र हो तो भादवें में वर्षा अच्छी हो और धान्य सस्ते हों।।४७।।

वैशाखमासे सितपंचमीसासूर्यादिवारैश्चिनुते फलानि ।
मंदाचवृष्टिस्त्वतिवृष्टियुद्धंवातंसुभिक्षं कलहान्ननाशम्।।

वैशाख शुक्ल पंचमी को सूर्यवार हो तो मंद वर्षा, सोम हो तो अति वृष्टि, मंगल हो तो युद्ध, बुध हो तो पवन, बृहस्पति हो तो सुभिक्ष शुक्र हो तो कलह और शनि हो तो अन्न नाश होता है।।४८।।

वैशाखेपंचभौमाश्चेद्भूयंसर्वत्रजायते ।
क्वचिन्नमेघवर्षास्याद्धान्यमार्हर्घमादिशेत् ।।४९।।

वैशाख में यदि पांच भौम हों तो सर्वत्र भय करते हैं और कहीं वर्षा नहीं होती है, तथा अन्न महँगा हो जाता है।।४९।।

वैशाखधवलाष्टम्यांशनिवारोभवेद्यदि ।
जलशोषंप्रजानाशंछत्रभंगंतदादिशेत् ।।५०।।

वैशाख शुक्लाष्टमी को शनिवार हो तो जल शोष, प्रजानाश और छत्रभंग होता है।।५०।।

अथ महर्घसमर्घज्ञानमाह

(४) तत्रादौ तदुपयुक्तं तिथिवारर्क्षजन्यफलम्

चैत्रेशुक्लपञ्चम्यामार्द्रायोगेयथोचितः ।
त्रिमास्यांधान्यसंक्षेपः श्रावणेजलदोदयः ।।५१।।

"अब तेजी मन्दी मालूम होना लिखते हैं।"

(४) "जिसमें पहले तेजी मंदी के उपयोगी तिथिवार नत्रत्रों का फल कहते हैं।" चैत्र शुक्ल पंचमी को यदि यथोचित आर्द्रा हो तो तीन मास धान्य संक्षेप रहे, श्रावण में वर्षा आवे।।५१।।

चैत्रेदशम्यांशनिनायुक्तावारेणचेन्मघा ।
तदाधान्यंसमर्घंस्याज्जातेमेघमहोदये ।।५२।।

चैत्र शुक्ल दशमी शनिवार मघा नक्षत्र हो तो धान्य सस्ते हों और वर्षा वर्षे।।५२।।

वैशाखेयदिसप्तम्यांधनिष्ठावा श्रुतिर्भवेत् ।
श्यामवस्तुमहर्घंस्यात्समर्घंधवलंतदा ।।५३।।

वैशाख की सप्तमी को धनिष्ठा अथवा श्रवण हों तो लोह, उड़द, काले वस्त्र, रंग आदि महँगे और चावल, चीनी, घी, रुई आदि सस्ते

हों।।५३।।

अक्षय्याख्यतृतीयांसुभिक्षायैवरोहिणी ।
कृत्तिकामध्यमंवर्षदुर्भिक्षंमृगशीर्षतः ।।५४।।

वैशाख शुक्ल ३ को रोहिणी हो तो सुभिक्ष कृत्तिका हो तो मध्य वर्ष और मृगशिर हो तो दुर्भिक्ष होता है।।५४।।

रोहिणीचोत्तरास्तिस्रोमघावारेवतीभवेत् ।
नवम्यांमण्डलेरादेतदाकष्टंमहद्भुवि ।।५५।।

वैशाख शुक्ल नौमी को रोहिणी, तीनों उत्तरा, मघा:वा रेवती हो तो पृथ्वी पर बहुत कष्ट होता है।।५५।।

अमावस्यांचवैशाखेरेवत्यांचसुभिक्षता ।
रोहिणीलोकदुःखायमध्यमाचाश्विनी स्मृता ।।५६।।

वैशाखी अमावस को रेवती हो तो सुभिक्ष रोहिणी हो तो लोक दुःख और आश्विनी हो तो मध्यम फल होता है।।५६।।

भरण्यांव्याधितोलोकः कृत्तिकायांजलेऽल्पता ।
चौरालुंठंतिमार्गेषुराज्ञांयुद्धंपरस्परम् ।।५७।।

वैशाखी अमावसको भरणी हो तो व्याधि हो कृत्तिका हो तो जल कम वर्षे, रास्तोंमें लुटेरे लूटते रहें, राजाओंमें परस्पर युद्ध हों।।५७।।

तृतीयायामक्षयायांरोहिणीगुरुणासह ।
सर्वधान्यस्यनिष्पत्तिर्भुविमंगलकर्मच ।।५८।।

अक्षय तृतीया को रोहिणी गुरुवार हो तो सब धान्य पैदा हो और मंगल हों।।५८।।

ज्येष्ठशुक्लतृतीयायांद्वितीयायांप्रजायते ।
नक्षत्रमार्द्रातद्वृष्टौमहादुर्भिक्षकारणम् ।।५९।।

ज्येष्ठ सुदी दोयज व तीज को आर्द्रा हो और उसमें वर्षा हो तो

दुर्भिक्ष करे।।५९।।

ज्येष्ठकृष्णदशम्यांचरेवतीसुखकारिणी ।
एकादश्यांखण्डवृष्टिर्द्वादश्यांसानुकष्टदा ।।६०।।

जेठ कृष्ण दशमी को रेवती हो तो सुख हो एकादशी में रेवती हो तो खण्ड वृष्टि हो और द्वादशी में रेवती हो तो कष्ट हो।।६०।।

शुक्लेज्येष्ठदशम्यांचशनिवारः प्रजायते ।
वृष्टिरोधोगवांनाशोमहाशोकाकुलाप्रजा ।।६१।।

ज्येष्ठ शुक्ल १० को शनिवार हो तो वृष्टि में रोक लगे, गायें मरें और प्रजा में शोक हो।।६१।।

यावतीभुक्तिराषाढेशुक्लायांप्रतिपद्दिने ।
पुनर्वस्वोश्चतुर्मास्यांवृष्टिः स्यात्तावतीस्फुटम् ।।६२।।

आषाढ शुक्ल प्रतिपदा में पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घडी भोगे उतनी ही वर्षा चौमासे में हो।।६२।।

आषाढेदशमीकृष्णासुभिक्षायचरोहिणी ।
एकादश्यांमध्यकालदुर्भिक्षद्वादशीभवेत् ।।६३।।

आषाढ कृष्ण १० को रोहिणी हो तो सुभिक्ष करती है। एकादशी में हो तो मध्यम और बारस में हो तो दुर्भिक्ष करती है।।६३।।

त्रयोदश्यांरोहिणीचेदुत्तमः पवनस्तदा ।
चतुर्दश्यांराजयुद्धंप्रजाशोकाकुलातदा ।।६४।।

त्रयोदशी में रोहिणी हो तो उत्तम पवन चले और चतुर्दशी में राजयुद्ध तथा प्रजा में शोक हो।।६४।।

आषाढशुक्लनवमीसानुराधाशनौयदा ।
क्वचिद्धान्यार्द्धनिष्पत्तिः क्वचिद्दुर्भिक्षकारिका ।।६५।।

आषाढ सुदी नौमी (भडुल्या नौमी) अनुराधा शनिवार युक्त हो तो

कहीं धान्य की कुछ उत्पत्ति और कहीं कुछ दुर्भिक्ष हो।।६५।।

आषाढेप्रथमेपक्षेप्रथमादितित्रये ।
श्रवणंवाधनिष्ठास्यात्तदान्नसंग्रहः शुभः ।।६६।।

आषाढ कृष्ण पड़वा, दोयज, तीज को श्रवण वा धनिष्ठा हो तो अन्न संग्रह करना शुभ है।।६६।।

आषाढेशनिरेवत्यामष्टम्यांसंगतोयदा ।
तदावृष्टिनिरोधेनकष्टमुत्कृष्टमादिशेत् ।।६७।।

आषाढ में अष्टमी को शनिवार रेवती नक्षत्र हो तो वर्षा के न होने से लोगों को उत्कृष्ट कष्ट हो।।६७।।

आषाढेकर्कसंक्रान्तौशनिवारोयदाभवेत् ।
तदादुर्भिक्षमादेश्यंधान्यस्यापिमहर्घता ।।६८।।

आषाढ में कर्क संक्रान्ति के दिन शनिवार हो तो धान्य महँगा हो और दुर्भिक्ष हो।।६८।।

चतुर्दश्यांतथाषाढेसोमवारप्रवर्तनात् ।
नधान्यंनतृणंलोकेकिंगवादेः प्रयोजनम् ।।६९।।

आषाढ में चौदश को सोमवार होने से न धान्य हो और न घास हो, अतः गवादिको के रखने का भी उस समय प्रयोजन नहीं।।६९।।

आषाढेप्रथमेपक्षेद्वितीयानवमीतिथौ ।
गुर्विदुशुक्रवाराः स्युः श्रेष्ठानेष्टोबुधः शनिः ।।७०।।

आषाढ कृष्ण द्वितीया तथा नौमी को गुरु, सोम, शुक्रवार हों तो श्रेष्ठ और बुध, शनिवार हों तो नेष्ट हैं।।७०।।

आषाढशुद्धैकादश्यांशन्यादित्यकुजैः समम् ।
संपूर्णस्तिथिभागश्चैत्तदादुर्भिक्षमादिशेत् ।।७१।।

आषाढ शुक्ल एकादशी को शनि, सूर्य, मंगलवार हों तो सम है

किन्तु यदि यह तिथि के सम्पूर्ण भाग में हो तो दुर्भिक्ष हो।।७१।।

आषाढपूर्णिमाषष्टिघटीमानायदाभवेत् ।
मासाद्वादशधान्यानांसुभिक्षंचसुखंजने ।।७२।।

आषाढी पूर्णिमा साठ घड़ी हो तो बारह महीने तक धान्य का सुभिक्ष रहे।।७२।।

त्रिंशद्घटीभिःषण्मासात्सुखंदुःखंततः परम् ।
चातुर्मास्यंपंचदशघटीमानेसुभिक्षता ।।७३।।

तीस घडी हो तो छः महीने सुख और पीछे दुःख रहे। और १५ घड़ी हो तो चौमासे भर सुभिक्ष रहे।।७३।।

न्यूनत्वेतुपंचदशघटीभ्योदुःखसंभवः ।
वातवादलसंयोगात्फलेन्यूनाधिकाश्रयः ।।७४।।

यदि पन्द्रह घडी से भी आषाढी पूनम कम हो तो दुःख की संभावना हो। वायु और बादल के संयोग से फलों में न्यूनाधिकता हो।।७४।।

मासाभिधाननक्षत्रंराकायांक्षीयतेयदि ।
महर्घत्वंतदानूनवृद्धोज्ञेयासमर्घता ।।७५।।

यदि पूर्णिमा को महीने का नक्षत्र (यथा आषाढ में पूर्वाषाढ, श्रावण में श्रवण, भाद्रपद में पूर्वाभाद्रपद और आश्विन में अश्विनी इत्यादि) टूट जायँ तो महँगाई और बढ़ जायँ तो सस्ती होती है।।७५।।

मासनामकनक्षत्रंराकायांनभवेद्यदा ।
महर्घंचतदावश्यंतत्तद्योगविशेषतः ।।७६।।

और यदि पूर्णिमा को मास नक्षत्र बिलकुल ही न हो तो उसके योग विशेष से अवश्य महर्घता होती है।।७६।।

ऋक्षवृद्धौरसाधिक्यंकणाधिक्यंचनिश्चितम् ।
योगाधिक्येरसच्छेदोदिनार्धप्रत्यहंस्फुटः ॥७७॥

योग यह है कि यदि नक्षत्र बढे तो रस अधिक हों और कण (अन्न) अधिक हों। और योग बढे तो रस क्षय हो॥७७॥

मृगादिपंचकेराकाधान्येमहर्घतावदेत् ।
मघाचतुष्टयेपूर्णाकुर्याद्धान्यसमर्घताम् ॥७८॥

पूर्णिमा को मृगादि पांच नक्षत्रों में महर्घता और मघादि चार में पूरी समर्घता हो॥७८॥

राकाचित्राष्टकेयुक्तादुर्भिक्षात्कष्टकारणी ।
श्रवणाद्रोहिणीयावन्नक्षत्रैः पूर्णिमाशुभा ॥७९॥

पूर्णिमा चित्रादि आठ में से किसी से युक्त हो तो दुर्भिक्ष कष्ट करती है। और श्रवण से रोहिणी तक के नक्षत्रों में से किसी से युक्त हो तो वह पूर्णिमा शुभ फल देती है॥७९॥

आर्द्राचतुष्टयेसूर्यवारेपूर्णार्थनाशिनी ।
मघाचतुष्टयेसोमेप्येषाधान्यमहर्घकृत् ॥८०॥

सूर्यवार और आर्द्रादि चार में से किसी से युक्त पूर्णिमा हो तो अर्थ नाश करती है। सोमवार तथा मघादि चार में से युक्त हो तो धान्य महँगा करती है॥८०॥

चित्राष्टकेभौमवारेपूर्णिमाव्याधिवर्द्धिनी ।
दुर्भिक्षायशनौशेषावारर्क्षेषुशुभावहा ॥८१॥

भौमवार तथा चित्रादि आठ में से युक्त हो तो वह पूनम व्याधि बढाती है। शनिवार युक्त हो तो दुर्भिक्ष और शेषवार तथा नक्षत्रों से युक्त हो तो शुभ होती है॥८१॥

कृत्तिका श्रावणेकृष्णैकादश्यांमध्यमाभवेत् ।
सुभिक्षंरोहिणीकुर्याद्दुर्भिक्षंमृगशीर्षतः ।।८२।।

श्रावण कृष्ण एकादशी को कृत्तिका हो तो मध्यम रोहिणी हों तो दुर्भिक्ष और मृगशीर्ष हो तो दुर्भिक्ष हो।।८२।।

द्वादश्यां श्रावणेकृष्णेमघाचेद्रात्रिगोचरा ।
तत्राभ्रेजलवृष्टौवाजलयोगस्तदामहान् ।।८३।।

श्रावण कृष्ण द्वादशी को रात में मघा हो और उसमें बादल तथा जल वृष्टि हो तो बड़ा जल योग होता है।।८३।।

श्रावणस्यत्रयोदश्यांरेवत्यांरवियोगतः ।
बहुधान्यविवस्तूनिजायन्तेबसुधातले ।।८४।।

श्रावण की तेरस को रेवती नक्षत्र रविवार हो तो बहुत धान्य और बहुत वस्तु हों।।८४।।

शनौश्रावणसप्तम्यांजलपूर्णावसुंधरा ।
श्रावणस्यचतुर्दश्यामार्द्रायामन्नसंग्रहः ।।८५।।

श्रावण की सप्तमी को शनिवार हो तो पृथ्वी जल पूर्ण हो। और श्रावण की चतुर्दशी को आर्द्रा हो तो अन्न संग्रह करने की आवश्यकता हो।।८५।।

श्रावणस्यत्वमावस्यांपुष्याश्लेषामघायदि ।
मध्यमंवर्षमादेश्यंवृष्टिर्नमहतीतदा ।।८६।।

श्रावण की अमावस को पुष्य आश्लेषा मघा हो तो मध्यम वर्ष जानना। क्योंकि उसमें बहुत वर्षा नहीं होती है।।८६।।

विशाखाद्यष्टकेदर्शेदुर्भिक्षंबहुधास्मृतम् ।
सुभिक्षमेकादशकेवारुणाद्येपुरोहितम् ।।८७।।

उसी अमावस को विशाखादि आठ नक्षत्रों में से हो तो दुर्भिक्ष और

शतभिषादि ग्यारहों में से हो तो सुभिक्ष जानना।।८७।।

अमावस्यांमध्यवर्षंभवेत्पुष्यचतुष्टये ।
शनिः सूर्यः कुजोदर्शेष्वनन्तरमरिष्टकृत् ।।८८।।

अमावस में पुष्यादि चार नक्षत्रों में से हो तो मध्यम वर्ष और शनि सूर्य मंगलवार से भी युक्त हो तो अनन्त, अरिष्टकारी अमावस होती है।।८८।।

पार्वणीयदिरौद्रास्यादादित्यः प्रतिपत्तिथौ ।
द्वितीयापुष्यसंयुक्ताजलंधान्यंतृणंनच ।।८९।।

अमावस और प्रतिपदा में आर्द्रा और रविवार हो और द्वितीया पुष्य युक्त हो तो अन्न जल घास नहीं हों।।८९।।

अमावस्यादिनेयोगः पुनर्वस्वादिपंचके ।
समर्घमथदुर्भिक्षमुत्तरादिचतुष्टये ।।९०।।

अमावस्या के दिन यदि पुनर्वसु आदि पांच में से हो तो समर्घ और उत्तरादि चार में से हो तो दुर्भिक्ष (महर्घ) जानना।।९०।।

विशाखाद्यष्टकेकष्टंवारुणादौजनेसुखम् ।
ऊचिरेकेचनाचार्यादर्शनक्षत्रजंफलम् ।।९१।।

विशाखादि आठ में कष्ट और शतभिषादि में मनुष्यों को सुख हो। यह नक्षत्र जनित अमावस फल कई एक आचार्य्यों ने कहा है।।९१।।

श्रावणेशुक्लसप्तम्यांस्वातियोगः सुभिक्षकृत् ।
श्रवणंपूर्णिमायांस्याद्धान्यैरानंदिताः प्रजाः ।।९२।।

श्रावण शुक्ल सप्तमी को स्वाति नक्षत्र हो तो शुभ होता है। श्रावणी पूर्णिमा को श्रवण हो तो इतना अन्न हो कि उससे प्रजा प्रसन्न हो जाय।।९२।।

प्रथमायांतिथौभाद्रेगुरौश्रवणसंयुते ।
अभंगंजायतेवर्षंधनधान्यादिसम्पदः ।।९३।।

भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा को बृहस्पतिवार तथा श्रवण हो तो वह वर्ष नहीं बिगड़ता है क्योंकि उसमें धन धान्यादि सम्पत्तियां हो जाती है।।९३।।

भाद्रपदासिताष्टम्यांरोहिणीशुभदायिनी ।
नवमीभाद्रशुक्लस्यरवौमूलेभयंकरी ।।९४।।

भाद्रपद कृष्णाष्टमी रोहिणी युक्त हो तो शुभ देती है। भादवा सुदी नौमी रविवार मूल नक्षत्र हो तो यह भयकारी है।।९४।।

एकादशीभाद्रशुक्लेमूलेदिनकृतायुता ।
मेघेनवत्सरेसौख्यंलोकव्याधिर्विबाधते ।।९५।।

भादवा सुदी ११ रविवार मूल नक्षत्र हो तो वर्ष मेह का सुख नहीं हो और लोगों को विशेष व्याधियों से बाधा हो।।९५।।

भाद्रेशुक्लद्वितीयायांद्वितीयवारयोगतः ।
धान्यनिष्पत्तिरतुलासंपदः स्युश्चतुष्पदे ।।९६।।

भादवा सुदी दोयज सोमवार हो तो बहुत धान्य उपजे और चौपायें बहुत बढें।।९६।।

शनौभाद्रपदेकृष्णाचतुर्थीयदिजायते ।
देशभंगश्चदुर्भिक्षंस्वस्थस्योदरपूरणम् ।।९७।।

भादवा बदी चौथ शनिवार हो तो देश भंग तथा दुर्भिक्ष हो और स्वस्थ पुरुष पेट भर सके।।९७।।

नवम्यांस्वातिसंयोगेभाद्रमासेसितेयदा ।
तदासुखमयीभूमिर्घृतधान्यसमन्विता ।।९८।।

भादवा सुदी नौमी को स्वाति हो तो पृथ्वी पर घी और अन्न बहुत

हों।।९८।।

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यांचिद्वाराजीवेन्दुभार्गवाः ।
उत्तराहस्तचित्राभिः सुभिक्षंनिश्चयात्तदा ।।९९।।

भादवा सुदी चौथ को गुरु शुक्र सोमवार हो और उत्तरा हस्त चित्रा से संयुक्त हो तो सुभिक्ष हो।।९९।।

भाद्रमासेतृतीयायांभौमेचोत्तरफाल्गुनी ।
तदावृष्टिकरोनैवप्रोन्नतोपिघनाघनः ।।१००।।

भादवा सुदी ३ मंगलवार उत्तराफाल्गुनी हो तो बड़े २ बादलों की घटा चढे तो भी वर्षा नहीं हों।।१००।।

भाद्रमासेत्वमावस्यांरवौघृतमहर्घता ।
धान्यंमहर्घंभौमज्ञेशनौतैलंविनिर्दिशेत् ।।१०१।।

भादवा की अमावस रविवारी हों तो घी महँगा हो। मंगल बुध हो तो धान्य महँगे हो शनिवारी हो तो तैल महंगा हो।।१०१।।

जनानांबहुलाः क्लेशाराजादुःखैः प्रपीडचते ।
अमावस्यादिनेसूर्यः सन्तापायार्थनाशनात् ।।१०२।।

अमावस को यदि रविवार हो तो सन्ताप, अर्थ नाश, क्लेश, और राजदुःख की पीड़ा हो।।१०२।।

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंवर्षायाः प्रबलोदयः ।
सस्योत्पत्तिः प्रजासौख्यंसोमवारेप्रवर्तते ।।१०३।।

सोमवारी अमावस हो तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य वर्षा का प्रबल उदय-धान्य की उत्पत्ति और प्रजा सुख हो।।१०३।।

राज्यभ्रंशोराजयुद्धंक्लेशानांचप्रवर्द्धनम् ।
उपघातोल्पवृष्टिश्चक्षयश्चार्थस्यभूमिजे ।।१०४।।

मंगलवारी हो तो राज्यभ्रंश, राजयुद्ध-क्लेशो की वृद्धि-उपघात-अल्पवृष्टि और द्रव्यों की हानि हो।।१०४।।

दुर्भिक्षंराज्यनाशश्चप्रजानांदुःखभाजनम् ।
स्थानत्यागोधान्यमल्पंबुधवारेप्रवर्तते ।।१०५।।

बुधवारी हो तो दुर्भिक्ष-राज्यनाश-प्रजा को दुःख-स्थानत्याग और कम धान्य हो।।१०५।।

सदावृष्टिः सुभिक्षंचकल्याणंदुःखनाशनम् ।
आरोग्यंचप्रजाः स्वस्थागुरुवारेसमादिशेत् ।।१०६।।

गुरुवारी अमावस हो तो सदा वृष्टि तथा सुभिक्ष हो कल्याण हों दुःख का नाश हो। आरोग्य रहे और प्रजा स्वस्थ हो।।१०६।।

भृशंजलोद्धतामेघाः कृषीणांभूर्युपद्रवाः ।
तस्करोपद्रवानित्यंशुक्रेणामावसीदिने ।।१०७।।

शुक्रवारी हो तो उद्धत मेघों से जलभ्रंश हो और खेती में बहुत उपद्रव हों। तथा चौरों के उपद्रव भी नित्य रहें।१०७।।

दुर्भिक्षंरौरवंघोरंमहादुःखंमहद्भयम् ।
पराङ्मुखाःपितुः पुत्राव्यसनंशनिवासरे ।।१०८।।

यदि शनिवारी अमावस हो तो घोर रौरव समान दुर्भिक्ष होकर महादुःख तथा महाभय हो पिता पुत्रों में पराङ्मुखता हो।।१०८।।

भाद्रपदेशुक्लषष्ठ्यामनुराधायदाभवेत् ।
नक्षत्रान्तरदोषेपिहीनेहीनत्वमाप्नुयात् ।।१०९।।

भादवा सुदी छठ को अनुराधा हो तो श्रेष्ठ और नहीं हो तो हानि हों।।१०९।।

आश्विनेप्रथमायांचेच्छुक्लायांशनिरागते ।
तदाधान्यंचविक्रेयंपुरस्तस्यमहर्घता ।।११०।।

आसोज सुदी पड़वा को शनिवार हो तो संग्रहित धान्य को बेच देना चाहिये॥११०॥

आश्विनेहितृतीयायांयदिभौमः शनैश्चरः ।
तदाग्निः प्रबलोभूम्यामन्नादीनांमहर्घता ॥१११॥

आश्विनी शुक्ल तीज को यदि मंगल वा शनिवार हो तो पृथ्वी पर प्रबल अग्नि के उत्पात हों और अन्नादि की महँगाई हो॥१११॥

चतुर्थ्यामाश्विनेसूर्येविक्रेतव्यंघृतंजनैः ।
संगृह्यंतेचधान्यानिपुरोलाभायतान्यपि ॥११२॥

आसोज सुदी चौथ को रविवार हो तो पहले का इकट्ठा किया हुआ घी और अन्न बेच देना चाहिये क्योंकि उसमें लाभ होता है॥११२॥

आश्विनेशुक्लसप्तम्यांसोमेहस्तसमागमे ।
गन्तव्यंमालवस्थानेनिर्जलाजलदायिनी ॥११३॥

आसोज सुदी सप्तमी सोमवार हस्त नक्षत्र हो तो मारवाड़ छोड़कर मालवे में चला जाना चाहिये क्योंकि वह निर्जलवालों को जल दे सकता है॥११३॥

सप्तम्यांशनियुक्तायांसितेपक्षेयदाश्विने ।
श्रवणंवाधनिष्ठाचेज्जगतोनाशकारणम् ॥११४॥

आसोज सुदी सप्तमी शनिवार श्रवण या धनिष्ठा युक्त हो तो जगत् के नाश का कारण हो॥११४॥

आश्विनेचबुधेष्टम्यांविधेयोघृतसंग्रहः ।
कार्त्तिकेविक्रयस्तस्यसंपदः स्युः पदेपदे ॥११५॥

आसोज की अष्टमी बुधवार हो तो घी इकट्ठा करके कार्त्तिक में बेचे तो पद पद पर सम्पदा मिलती है॥११५॥

नवम्यामाश्विनेशुक्लेकुजवारेणसंगतौ ।
मुहुःकार्पासचपलामाषादेः संग्रहोमतः ।।११६।।
द्विगुणस्तुभवेल्लाभोचैत्रमासेथविक्रये ।
आश्विनेदशमीभौमेभूम्यांव्याधिरबाधितः ।।११७।।

आसोज सुदी नौमी को मंगलवार हो तो बारंबार और जल्दी जल्दी कपासादि संग्रह करनी चाहिये उससे चैत्र में बेचने से दूना लाभ होता है। आसोज सुदी दशमी मंगलवार हो तो पृथ्वी में व्याधि उत्पन्न होती है।।११६।।११७।।

एकादश्यांशनौतस्मिंश्छत्रभंगोथवाभुवि ।
नगरग्रामभंगः स्याद्वैरिचौराद्युपद्रवः ।।११८।।

उसी एकादशी को शनिवार हो तो छत्रभंग तथा नगर और ग्रामादि का भंग और बैरी तथा चौरादि के उपद्रव होते हैं।।११८।।

तृतीयारोहिणीयोगेवारयोः शनिभौमयोः ।
तदाकार्पासिकंग्राह्यंफाल्गुनेलाभमादिशेत् ।।११९।।

आसोज में तीज में रोहिणी और शनि तथा मंगलवार हो तो कपास संग्रह करके फागुण में बेचने से लाभ होता है।।११९।।

आश्विनेकृष्णपंचम्यांरविवारः प्रवर्तते ।
माघमासेह्यमावस्यांमहर्घंनिश्चयाद्घृतम् ।।१२०।।

आसोज बदी पांचै रविवार हो तो माघ की अमावस पर घी निश्चय महँगा हो।।१२०।।

षष्ठ्यामथाश्विनेज्येष्ठादित्यमूलाभिसंगमे ।
संग्रहस्सर्वधान्यानांपंचमासिफलं लभेत् ।।१२१।।

यदि आश्विन की छठ रविवार और ज्येष्ठा तथा मूल से युक्त हो तो सब धान्य संग्रह करने से ५ मास में लाभ होता है।।१२१।।

आश्विनैकादशीकृष्णावारयोर्बुधसोमयोः ।
महिषीणांगवांमूल्यंमहत्संजायतेजने ॥१२२॥

आश्विन कृष्ण एकादशी को बुध या सोमवार हो तो गाय भैंस महँगी हो॥१२२॥

द्वादशीशनिनायुक्ताहस्तचित्रासमन्विता ।
तदायुगन्धरीग्राह्याचैत्रेवैत्रिगुणंफलम् ॥१२३॥

तथा बारस शनिवार हस्त चित्रा युक्त हो तो युगंधरी संग्रह करके चैत्र में बेचने से तिगुणा लाभ होता है॥१२३॥

आश्विनस्याप्यमावस्यांशनिवारोयदाभवेत् ।
मध्यमंवर्षमथवादुष्कालः खण्डमण्डले ॥१२४॥

आश्विन की अमावस को शनिवार हो तो मध्यम वर्ष हो और खंड मंडल में अकाल हो॥१२४॥

कार्त्तिकेप्रथमेपक्षेप्रथमाबुधसंयुता ।
जायतेमध्यमावृष्टिरनावृष्टिः क्वचिद्भवेत् ॥१२५॥

कार्त्तिक कृष्ण प्रतिपदा बुधवार हो तो वर्षा मध्यम हो और कहीं अनावृष्टि भी हो॥१२५॥

कार्त्तिकेसप्तमीशुक्लाशनौधान्यार्घनाशिनी ।
श्वेतवस्तुमहर्घंस्यात्त्रिमासिद्विगुणंफलम् ॥१२६॥

कार्त्तिक शुक्ल सप्तमी शनिवार हो तो धान्य की सस्ती दूर करे और सफेद वस्तु महँगी होकर तीन मास दुगुना लाभ दें॥१२६॥

कार्त्तिकेपंचमीरौद्रयोगेस्यात्तृणसंग्रहः ।
चतुष्पदेऽन्यथादुःखंजायतेअल्पवृष्टिजम् ॥१२७॥

कार्त्तिक की पंचमी को आर्द्रा हो तो घास का संग्रह लाभ दे। और अल्पवृष्टि से चौपायों को दुःख हो॥१२७॥

कार्त्तिकेदशमीकृष्णाशनौरोगकरीजने ।
रविः कृष्णत्रयोदश्यांयवगोधूममूल्यकृत् ॥१२८॥

कार्त्तिक कृष्ण दशमी रविवार हो तो रोग करे और कृष्ण त्रयोदशी को रविवार हो तो जौ गेहूँ मूल्यवान् (महँगे) हों॥१२८॥

कार्त्तिककृष्णदशमीशनौमेघसमन्विता ।
महर्घंघृतपूगादिचतुर्मासात्तुविक्रयः ॥१२९॥

कार्त्तिक कृष्ण दशमी शनिवार को मेघ हो तो घी सुपारी महँगे हों चार मास से बेचने से लाभ हो॥१२९॥

कार्त्तिकेचेदमावस्यांशनिश्चेदन्ननाशनः ।
भौमेभूम्यांमहावह्निरविर्युद्धायभूभुजाम् ॥१३०॥

कार्त्तिकी अमावस्या शनिवारी हो तो अन्न तेज हो। मंगलवारी हो तो महा अग्नि काण्ड और रविवारी हो तो राजाओं में युद्ध हो॥१३०॥

मार्गशीर्षेचतुर्थीचेन्मंगलोरेवतीदिने ।
प्रतिग्रामंवह्निभयंजगत्क्लेशव्यथाभयम् ॥१३१॥

मार्गशीर्ष की चौथ मंगलवार को रेवती हो तो प्रत्येक गाँव में आग का भय हो और जल का क्लेश तथा व्यथा और भय हो॥१३१॥

द्वादश्यांमार्गशीर्षस्यभौमवारेर्कसंक्रमे ।
भाविवर्षविनाशायग्रहणंशीतगोस्तथा ॥१३२॥

मार्गशीर्ष की बारस को मंगलवार के दिन सूर्य संक्रान्ति हो अथवा चन्द्रग्रहण हो तो भावी वर्ष में अकाल पड़ता है॥१३२॥

मार्गेनवम्यांरेवत्यांबुधोदुर्भिक्षकारकः ।
पंचमीगुरुणायोगात्पंचमासान्सुभिक्षदा ॥१३३॥

मार्गशीर्ष में नौमी को रेवती बुधवार हो तो दुर्भिक्ष करता है और पंचमी गुरुवार हो तो पांच महीने सुभिक्ष होता है॥१३३॥

मार्गशीर्षप्रतिपदिपुष्येयुक्तेचतुष्पदः ।
जलवृष्टचापरंवर्षंगर्भस्रावाद्विनश्यति ॥१३४॥

मार्गशीर्ष की प्रतिपदा को पुष्य हो तो चौपायों को दुःख हो और आगे के वर्ष का गर्भ नाश होने से वर्षा की कमी हो॥१३४॥

पुनर्वस्वोस्तथार्द्रायांतृतीयायांचसंगमे ।
धान्यंसमर्घमादेश्यंराजस्वास्थ्यंप्रजासुखम् ॥१३५॥

तथा तीज को पुनर्वसु और आर्द्रा हो तो धान्य सस्ता रहे। राज्य स्वस्थ रहे और प्रजा में सुख रहे॥१३५॥

मार्गशीर्षस्यपंचम्यांमघाद्यंपंचकंयदा ।
पुरोवर्षविनाशायजायतेजलरोधतः ॥१३६॥

मार्गशीर्ष की पंचमी को मघादि पांच नक्षत्रों में से कोई हो तो जलाभाव से आगे का वर्ष बिगड़े॥१३६॥

मार्गेनवम्यांचित्रायांधान्यंमहर्घमादिशेत् ।
कृष्णाचतुर्दशीस्वातिश्रवणेजलरोधिनी ॥१३७॥

मार्गशीर्ष की नौमी में चित्रा हो तो धान्य महँगा हो। कृष्णा चतुर्दशी में स्वाति वा श्रवण हो तो जल वृष्टि में रुकावट हो॥१३७॥

मार्गशीर्षस्यदशमीमूलेवारविणायुता ।
संग्राह्याश्चतिलास्तैलंज्येष्ठान्तेलाभदायकाः ॥१३८॥

मार्गशीर्ष की दशमी मूल और रविवारी हो तो तिल तेल इकट्ठे करने से ज्येष्ठ के अन्त में लाभ देते हैं॥१३८॥

मार्गेयदिस्यादादित्यएकादश्यांतिथौतदा ।
कार्पासादिकसूत्राणांग्राह्यंवैशाखलाभकृत् ॥१३९॥

मार्गशीर्ष की एकादशी को रविवार हो तो कपासादि सूत वैशाख में लाभ देते हैं।।१३९।।

अथवादैवयोगेनशनिवारस्यसंगमः ।
जलशोषः प्रजानाशश्छत्रभंगस्तदाभवेत् ।।१४०।।

अथवा दैवयोग से शनिवार हो तो जलशोष छत्रभंग प्रजानाश होता है।।१४०।।

पौषमासेशुक्लपक्षेचतुर्थीदिनवासरे ।
यदाशनिस्तदादौः स्थ्यंत्रिमासिस्यान्नसंशयः ।।१४१।।

पौष शुक्ल ४ रविवार या शनिवार हो तो ३ मास तक बीमारी बढे।।१४१।।

सप्तमीसोमवारेणपौषमासेयदाभवेत् ।
तदाचमहिषीवृंदंम्रियतेरोगपीडितम् ।।१४२।।

पौष की सप्तमी सोमवार हो तो रोग पीड़ा से बहुत भैंसे मरें।।१४२।।

यावन्नार्द्रांव्रजेत्सूर्यस्तावद्धान्यस्यसंग्रहः ।
शनिः पौषेनवम्यांचेत्पुरस्ताल्लाभकारणम् ।।१४३।।

पौष की नौमी को शनिवार हो तो जब तक सूर्य आर्द्रा में न जाय तब तक अन्न इकट्ठा करना चाहिये। आगे उसमें लाभ होता है।।१४३।।

एकादश्यांपौषशुक्लेकृत्तिकाभोगतः स्मृतः ।
रक्तवस्तुमहल्लाभः सधान्यात्प्रथमाम्बुदे ।।१४४।।

पौष शुक्ल एकादशी को कृत्तिका हो तो लाल वस्तुओं में बहुत लाभ हो तथा पहला मेघ वर्षने तक धान्य में भी लाभ हो।।१४४।।

पूर्वाषाढातथाज्येष्ठाऽमावस्यापौषमासके ।
वाराः शनिकुजादित्याभाविवर्षविनाशकाः ।।१४५।।

पौष की अमावस्या को पूर्वाषाढा तथा ज्येष्ठा हो और शनि कुज रविवार हो तो आगे के वर्ष की हानि हो।।१४५।।

पौषेमूलममावस्यांवृष्टयेलोकतुष्टये ।
शन्यादित्यकुजास्तस्यांबहुलाभायधान्यतः ।।१४६।।

पौष की अमावस्या को मूल हो और शनि रवि मंगल हों तो धान्य से बहुत लाभ हो।।१४६।।

पौषकृष्णप्रतिपदिरोहिण्याभोगसंभवे ।
सप्तमासाद्धान्यलाभश्छत्रभंगोथवाभवेत् ।।१४७।।

पौषकृष्ण प्रतिपदा में रोहिणी हो तो सात मास में धान्य महँगा हो अथवा छत्रभंग हो।।१४७।।

मघाद्यदिवसेवारेबुधोभवतिचेत्तदा ।
मासत्रयंमहर्घस्याद्भाविवर्षविनश्यति ।।१४८।।

माघ कृष्ण प्रतिपदा को बुधवार हो तो ३ मास महँगाई रहे और आगे के वर्ष की हानि हो।।१४८।।

माघशुक्लस्यप्रतिपद्द्वितीयावातृतीयका ।
त्रुटिताधान्यसंग्राहेलाभायवणिजांमता ।।१४९।।

माघ शुक्ल प्रतिपदा द्वितीया वा तृतीया का क्षय हो तो व्यापारियों को लाभ हों।।१४९।।

सप्तम्यांसोमवारः स्यान्माघेपक्षेसितेयदि ।
दुर्भिक्षंजायतेरौद्रंविग्रहोपिचभूभुजाम् ।।१५०।।

माघ शुक्ल सप्तमी सोमवार हो तो बड़ा दुर्भिक्ष हो, तथा राजाओं में विग्रह हो।।१५०।।

माघस्यशुक्लसप्तम्यांरविवारोभवेद्यदि ।
दुर्भिक्षंहिमहाघोरंविग्रहंचमहाभयम् ।।१५१।।

माघ शुक्ल सप्तमी रविवार हो तो महाघोर दुर्भिक्ष और भय हो।।१५१।।

माघमासप्रतिपदिशनिभोगः प्रशस्यते ।
सर्वथाधान्यनिष्पत्तिरारोग्यंदेशस्वस्थता ।।१५२।।

माघी पड़वा को शनिवार हो तो सब धान्यों की उत्पत्ति और देश स्वास्थ्य हो।।१५२।।

चतुर्थीमाघमासस्यशनिवारेणसंयुता ।
दुर्भिक्षंमृत्युचौराग्निभयंधान्यविनाशनम् ।।१५३।।

माघ की चौथ शनिवारी हो तो दुर्भिक्ष मृत्यु चौराग्निभय और धान्यनाश हो।।१५३।।

माघेशुक्लेप्रतिपदिवाराजीवेन्दुभार्गवाः ।
सुभिक्षायरणायार्कः कुजेस्युर्बहुईतयः ।।१५४।।

माघशुक्ल पडवा को गुरु शुक्र चंद्रवार हो तो सुभिक्ष हो रविवार हो तो युद्ध और मंगलवार हो तो ईतिभय हो।।१५४।।

माघेशुक्लेयदाष्टम्यांकृत्तिकायदिनोभवेत् ।
फाल्गुनेरोलिकापातः श्रावणेवानवर्षणम् ।।१५५।।

माघ शुक्लाष्टमी को यदि कृत्तिका न हो तो फागुण में रोली लगे और श्रावण में सूखा रहे।।१५५।।

माघेचशुक्लसप्तम्यांसोमवारेचरोहिणी ।
राज्ञांयुद्धंप्रजारोगेह्यथवावर्षमुत्तमम् ।।१५६।।

माघ सुदी सातैं सोमवार रोहिणी हो तो राजाओं में युद्ध प्रजा में रोग अथवा उत्तम वर्ष हो।।१५६।।

माघमासेचसप्तम्यांभरणीयदिजायते ।
रोगनाशस्तदालोकेवसुधाबहुधान्यभृत् ॥१५७॥

माघी सप्तमी को यदि भरणी हो तो संसार के रोग दूर हों और खेतियां बहुत उपजें॥१५७॥

फाल्गुनेकृष्णषष्ठीचेच्चित्रानक्षत्रसंयुता ।
त्रिभिर्मासैः सुभिक्षायस्वात्यादुर्भिक्षसाधनम् ॥१५८॥

फाल्गुन कृष्ण षष्ठी चित्रानक्षत्र से युक्त हो तो तीन मास सुभिक्ष और स्वाती हो तो दुर्भिक्ष हो॥१५८॥

फाल्गुनेचत्रयोदश्यांशुक्लायांयदिभार्गवः ।
ज्येष्ठेरोगायनूनंस्याद्भोगोमासत्रयेथवा ॥१५९॥

फाल्गुन शुक्ल १३ शुक्रवार हो तो जेठ में रोग पैदा होकर तीन मास रहे॥१५९॥

फाल्गुनेप्रथमेपक्षेवारुणंप्रतिपद्दिने ।
भोगानुसाराद्वर्षस्यस्वरूपंचनिरूपयेत् ॥१६०॥

फाल्गुन कृष्ण पड़वा को शतभिषा हो तो उसके भोगानुसार वर्ष स्वरूप जानना॥१६०॥

फाल्गुनेकृत्तिकायुक्तंसप्तम्यादिकपंचकम् ।
श्वेतपक्षेसुभिक्षायनार्द्राजलदवृष्टये ॥१६१॥

फाल्गुन शुक्ल की सातैं से पांच दिनों में कृत्तिका हो तो सुभिक्ष और आर्द्रा हो तो अवर्षण हो॥१६१॥

चैत्रस्यपौर्णमास्यांहिनिर्मलंगगनंशुभम् ।
तद्दिनेग्रहणंतारापातभूकम्पवृष्टयः ॥१६२॥
रजोवृष्टिः परीवेषोविद्युत्केतूदयादिना ।
उत्पातेनचसंग्राह्यंधान्यंधातुव्ययादितः ॥१६३॥

"बारह महीनों की पूर्णिमाओं का फल" चैत्र सुदी पूर्णिमा को आकाश निर्मल हो और उस दिन ग्रहण हो अथवा तारे टूटे भूकम्प हो या रजोवृष्टि, परिवेष, केतु उदय आदि कोई उत्पात हों तो बेचकर भी धान्य संग्रह किया जाय।।१६२।।१६३।।

विक्रयेसप्तमेमासेभाद्रेद्विगुणलाभदम् ।
वैशाख्यामीदृशेचिह्नेकार्पासस्यमहर्घता ।।१६४।।

और उसे सातवें महीनें में बेचा जाय तो दूना लाभ हो। ऐसे ही चिह्न वैशाख में भी हों तो कपास महँगी हो।।१६४।।

गोधूमूमुद्गमाषादेः संग्रहोलाभकारणम् ।
विक्रयाद्द्विगुणत्वेनमासेभाद्रपदेभवेत् ।।१६५।।

गेहूँ मूंग उड़द आदि संग्रह करने से भी लाभ हो उनको भादवे में बेचने से दूना लाभ हो।।१६५।।

ज्येष्ठपूर्णिमाऽनभ्राशुभायकथिताबुधैः ।
वृष्टचावापरिवेषेणतस्यांधान्यस्यसंग्रहः ।।१६६।।
तुर्यमासेथवापौषेलाभस्तस्यान्नविक्रयात् ।
आषाढीनिर्मलानेष्टावादलाच्छादिताशुभा ।।१६७।।

जेठी पूर्णिमा को बादल न हों तो शुभ हैं यदि उस दिन वर्षा या परिवेष हो तो धान्य संग्रह करके चौथे महीने या पौष में बेचने से लाभ होता है। और आषाढी पूर्णिमा निर्मल हो तो नेष्ट तथा बादलों से ढकी हुई हो तो शुभ होती है।।१६६।।१६७।।

नैर्मल्याद्धान्यसंग्राह्यंपंचमेमासिलाभदम् ।
श्रावणीनिर्मलाश्रेष्ठासाभ्रत्वेधान्यसंग्रह। ।।१६८।।

यदि आषाढी पून्यू निर्मल हो तो धान्य खरीदने से पांच मास में लाभ देता है और श्रावणी पूर्णिमा निर्मल हो तो अच्छी और बादल हों

तो बुरी होती है।।१६८।।

विक्रयाद्घृततैलादेर्लाभोमासेतृतीयके ।
पूर्णाभाद्रपदेशुभ्राशुभाधान्यस्यविक्रयात् ।।१६९।।

तीसरे महीने में घी तेल बेचने से लाभ होता है। भादवे की पूर्णिमा को शुभ्र बादल हो तो शुभ हो।।१६९।।

अश्विनीनिर्मलापूर्णाशुभायवादलोदये ।
धान्यस्यसंग्रहंकुर्याच्चैत्रेवैलाभदोमहान् ।।१७०।।

आश्विन की पूर्णिमा निर्मल हो तो शुभ और बादल हों तो धान्य-संग्रह से चैत्र में लाभ हो।।१७०।।

साभ्रायांमाघपूर्णायांधान्यसंग्रहइष्यते ।
विक्रेयः सप्तमेमासेतस्यलाभायसंभवेत् ।।१७१।।

"कार्तिक मार्गशीर्ष और पौष की पूनम का भी यही फल जानना चाहिये"-माघी पूर्णिमा को बादल हो तो धान्य संग्रह करके सात मास में बेचे तो लाभ हो।।१७१।।

फाल्गुनीपूर्णिमासाभ्रासवृष्टिर्वासगर्जिता ।
धान्यसंग्रहणान्मासेसप्तमेलाभदायिनी ।।१७२।।

फाल्गुनी पूर्णिमा को बादल वर्षा गर्जना हो तो सात मास में धान्य संग्रह से लाभ हो।।१७२।।

(५) अथ ग्रहसंयोगादर्घमहर्घज्ञानम्

कन्यामीनधनुः सिंहेष्वार्किभौमौचवक्रितौ ।
कुरुतोविभ्रमंलोकेनृपाणांक्षयकारकौ ।।१७३।।

"अब ग्रहों के योग से तेजी मन्दी कहते हैं।"-कन्या मीन धन राशि में शनि मंगल वक्री हों तो लोक विभ्रम और राजाओं का क्षय करें।।१७३।।

कृत्तिकारोहिणीसौम्यमघाचित्राविशाखिकाः ।
ज्येष्ठानुराधामूलानिपूर्वाषाढातथापुनः ।।१७४।।
एतेषांचैवऋक्षाणांभौमः शुक्रस्तथाशनिः ।
उत्तरस्यांयदायांतिमास्याषाढेविशेषतः ।।१७५।।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंमध्येचमध्यमंफलम् ।
दक्षिणेनयदायान्तिईतिरोगभयंभवेत् ।।१७६।।

कृ० रो० मृ० म० चि० वि० ज्य० ऽनु० मू० और पूर्वाषाढ इन नक्षत्रों पर भौम शुक्र शनि यह उत्तर में विशेष कर आषाढ में आवें तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य हो, बीच में रहें तो मध्यम और दक्षिण में चलें तो ईति रोग भय हो।।१७४ से १७६।।

चलत्यंगारकेवृष्टिरुदयेचबृहस्पतेः ।
शुक्रस्यास्तंगमेवृष्यिस्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे ।।१७७।।

यदि राशि छोड़कर दूसरी राशि पर मंगल चले तो वर्षा हो-बृहस्पति उदय हो तो भी वर्षा हो-शुक्र अस्त हो तब वर्षा हो और शनैश्चर के चलने अर्थात् एकराशि छोड़कर दूसरी पर जाने से अथवा उदय होने से और अस्त होने से तीनों से वर्षा हो।।१७७।।

मेषवृश्चिकयोर्मध्येयदातिष्ठतिभूसुतः ।
तदाधान्यंमहर्घंस्यान्मासद्वयमुदाहृतम् ।।१७८।।

मेष वृश्चिक मे बीच में यदि मंगल हो तो दो महीने तक धान्य महँगा हो।।१७८।।

रविराहुशनैश्चरभूमिसुताउदयंतिचमध्यमराशिगताः ।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा विलयंति महीपतिछत्रधराः।।१७९।।

रवि राहु शनि और मंगल मध्य राशि में उदय हों तो धनधान्य हिरण्य को महँगा करें और छत्रधारी राजा का नाश हो।।१७९।।

शनिर्मीनेगुरुः कर्केतुलायामपिमंगलः ।
यावच्चरतिलोकस्यतावत् कष्टपरंपरा ॥१८०॥

शनि मीन का गुरु कर्क का, और मंगल तुल का ये जब तक इन राशियों पर चलें तब तक लोगों को कष्ट होते हैं॥१८०॥

भौमस्याधोगुरुस्तिष्ठेद्गुर्वधोपिशनैश्चरः ।
ग्रहाणामुशलंज्ञेयमिदंजगदरिष्टकृत् ॥१८१॥

मंगल से नीचे गुरु और गुरु से नीचे शनि हों तो यह ग्रहों का मूशल जगत् को अरिष्टदायी है॥१८१॥

रविराशेः पुरोभौमोवृष्टिसृष्टिनिरोधकः ।
भौमाद्याश्चखलाश्चन्द्राच्चत्वारोवृष्टिनाशकाः ॥१८२॥

सूर्य राशि के आगे मंगल हो तो वृष्टि की सृष्टि का अवरोध करता है। और भौमादि क्रूर ग्रह चन्द्र से आगे हों तो भी वर्षा को रोकते हैं॥१८२॥

भौमवक्रेअनावृष्टिर्बुधवक्रेधनक्षयः ।
गुरुवक्रेस्थिरोरोगोशुक्रवक्रेसुखीप्रजा ॥१८३॥
शनिवक्रेजनेपीडाराहुः स्यादग्निकारकः ।
चतुर्ग्रहानवक्राः स्युर्योगोयंकथितोबुधैः ॥१८४॥

भौम वक्री हो तो अनावृष्टि हो, बुध वक्री हो तो धनक्षय हो, गुरु वक्री हो तो रोग स्थिर रहे, शुक्र वक्री हो तो प्रजा सुखी रहे, शनि वक्री हो तो मनुष्यों में पीड़ा हो और राहु हो तो अग्निभय हो। चार ग्रह वक्री होने का योग अच्छा नहीं॥१८३॥१८४॥

यत्रमासेग्रहाः सर्वेवक्रत्वंयांतिदैवतः ।
तन्मासेतिमहर्धंस्याद्धान्यंवाराजविग्रहः ॥१८५॥

यदि दैव योग से किसी महीने में सभी ग्रह वक्री हों तो उस महीने में धान्य आदि की अत्यन्त तेजी हो और राजाओं में विग्रह रहे।।१८५।।

यदितिष्ठतिभौमस्यक्षेत्रेकोपिग्रहस्तदा ।
षण्मासात्तुषधान्यानांजायतेचमहर्घता ।।१८६।।

यदि मंगल के घर में कोई भी ग्रह हो तो छः महीने तुष धान्य महँगे रहें।।१८६।।

शुक्रक्षेत्रेकुजेमासद्वयेनूनंमहर्घता ।
चन्द्रेचदिननाथेचसर्वरोगोऽशुभंतदा ।।१८७।।

शुक्र के क्षेत्र में मंगल हो तो २ मास महँगाई रहे, चन्द्र और सूर्य हों तो सब रोग हों, अशुभ हों।।१८७।।

शनौराहौसर्वधान्यंमहर्घराजविग्रहः ।
बुधक्षेत्रेरवौचन्द्रेविरोधः सर्वभूभुजाम् ।।१८८।।

शनि राहु हों तो सब धान्य महंगे हों, राजविग्रह हो। बुध के घर में सूर्य चन्द्र हों तो राजाओं में विरोध हो।।१८८।।

उत्पत्तिस्तुषधान्यानांपंचमासात्प्रजायते ।
शुक्रक्षेत्रेबुधेचंद्रेचन्द्रक्षेत्रेभृगोः सुते ।।१८९।।

शुक्र के घर में बुध, चन्द्र हों और चन्द्र के घर में शुक्र हो तो पांच मास में जौ, गेंहू अच्छे हों।।१८९।।

पाखण्डानांभवेद्वृद्धिर्धान्यानांचमहर्घता ।
रविक्षेत्रेभृगोः पुत्रेपशूनांचमहर्घता ।।१९०।।।

सूर्य के घर में शुक्र हो तो पाखण्ड की वृद्धि, अन्न की महँगाई और पशुओं की महर्घता हो।१।१९ ।।

शनिक्षेत्रेशनौदेशेघृतधान्यमहर्घता ।
चन्द्रभास्करयोः क्षेत्रेसुभिक्षंचंद्रसूर्ययोः ॥१९१॥

शनि के क्षेत्र में शनि हो तो घी, अन्न महँगे हो और चन्द्र सूर्य अपने घर में हों तो सुभिक्ष हो॥१११॥

पशुनाशोधान्यवृद्धिर्गुडादीनांमहर्घता ।
गुरुक्षेत्रेशनौराहौपशुनाशस्तृणक्षयः ॥१९२॥

तथा पशुओं का नाश, धान्य की वृद्धि और गुड़ शक्कर की महँगाई हो। यदि गुरु के घर में शनि राहु हों तो पशु नाश और तृण क्षय हो॥१९२॥

भौमेराज्ञांविरोधश्चबुधेवृष्टिस्तुभूयसी ।
भौमक्षेत्रेयदासन्तिराहुभौमार्कभार्गवाः ॥१९३॥
षण्मासाद्गुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता ।
मंदक्षेत्रेयदासन्तिगुरुमंदबुधास्तदा ॥१९४॥
चतुष्पदानांनाशश्चशंखस्यचमहर्घता ।
भौमक्षेत्रेभार्गवेचधान्यांनांचमहर्घता ॥१९५॥

मंगल हो तो राजाओं में विरोध, बुध हो तो बहुत वर्षा हो, यदि मंगल के घर में राहु, मंगल, सूर्य, शुक्र हों तो छः महीने गुड़, शक्कर, कपास और दूध महँगा हो। और यदि शनि के घर में गुरु शनि बुध हों तो चौपायों का नाश और शंखों की महँगाई हो। और मंगल के क्षेत्र में शुक्र हो तो धान्य महंगे हों॥१९३॥१९४॥१९५॥

शनिक्षेत्रेयदाभानुर्वस्त्राणांचमहर्घता ।
शुक्रेभौमेगुरुक्षेत्रेप्रजापीडाप्रजायते ॥१९६॥

शनि के घर में सूर्य हो तो वस्त्र महंगे हों, गुरु के घर में शुक्र भौम हों तो प्रजा पीड़ा हो॥१९६॥

चन्द्रोदयेकुजक्षेत्रेतुषधान्यस्यवृद्धये ।
चन्द्रोदयेभृगुक्षेत्रेशुक्लवस्तूदयोभवेत् ।।१९७।।

मंगल के घर में चन्द्रोदय हो तो तुष धान्य बढ़े। और शुक्र के घर में चन्द्रोदय हो तो सफेद वस्तु बढे।।१९७।।

रविक्षेत्रेतुलावृद्धिः शनिसोमभृगूदये ।
चन्द्रक्षेत्रेशुक्रचन्द्रबुधानामुदयोयदि ।।१९८।।
षण्मासेषुचदुर्भिक्षमतिवृष्टिः प्रजायते ।
उदितौचबुधक्षेत्रेयदिराहुशनैश्चरौ ।।१९९।।

सूर्य के घर में शनि सोम भृगूदय हो तो वृद्धि हो और चन्द्र क्षेत्र में शुक्र चन्द्र बुध का उदय हो तो अति वर्षा से छः महीने दुर्भिक्ष हों। यदि बुध के घर में शनि राहु उदय हों तो।।१९८।।१९९।।

पशुक्षयः प्रजापीडाधान्यानांचमहर्घता ।
शुक्रक्षेत्रेचसोमश्चसूर्यपुत्रोदयोयदा ।।२००।।

पशुक्षय, प्रजा में पीड़ा और धान्य महँगे हों। शुक्र के घर में सोम शनि उदय हों तो।।२००।।

राजयुद्धंचधान्यानांजायतेतिमहर्घता ।
यदोदयः शनिक्षेत्रेभौमभास्करयोर्भवेत् ।।२०१।।

राजाओं में युद्ध और अन्न की महँगाई हो। यदि शनिक्षेत्र भौम भास्कर उदय हों तो।।२०१।।

घृतादीनांतदावृद्धिर्गुडानांरक्तवाससाम् ।
यदासमुदयंयातिशनिक्षेत्रेशनैश्चरः ।।
तदास्यात्तृणकाष्ठानांलोहानांचमहर्घता ।।२०२।।

घी, गुड़ और लाल कपड़ों की वृद्धि हो। यदि शनि के घर में शनि उदय हो तो घास, काठ और लोहानि की महंगाई हो।।२०२।।

ग्रहयुद्धादि

यदाग्रहेणसौम्येनक्रूरेणापिचसंमुखः ।
विद्धः क्रूरः शुभोवापिदुर्भिक्षंतत्रनिश्चितम् ॥२०३॥

"ग्रह वेध तथा युद्धादि का फल'–यदि सौम्यग्रह से क्रूर ग्रह का सन्मुख वेध हो और क्रूर से शुभ का हो तो निश्चय दुर्भिक्ष होता है॥२०३॥

ग्रहयुद्धेभूपयुद्धंग्रहवक्रेषुविभ्रमाः ।
ग्रहवेधेभवेत्पीडाकथितातत्त्वदर्शिभिः ॥२०४॥

ग्रहों के युद्ध हों तो राजाओं में युद्ध हो, ग्रह वक्री हों तो देश विभ्रम हो। और ग्रहों के वेध हों तो पीड़ा हो॥२०४॥

ज्येष्ठमासेरवियुताग्रहाः पंचैकराशिगाः ।
श्रावणेमेघरोधायच्छत्रभंगायकुत्रचित् ॥२०५॥

जेठ के महीने में सूर्य के साथ पांच ग्रह एक राशि पर हों तो सावन में वर्षा की खैंच करे और कहीं छत्रभंग भी हो॥२०५॥

सप्तम्यांशनिभौभौचभवेतांवक्रगामिनौ ।
हाहाकारस्तदालोकेविशेषाद्दक्षिणापथे ॥२०६॥

यदि तुला राशि में शनि भौम वक्री हो तो लोक में विशेष कर दक्षिण में हाहाकार हो॥२०६॥

शनिः कुजोदेवगुरुर्यदिशुक्रगृहेत्रयम् ।
एकत्रगुरुशुक्रौवातदावृष्टीरणोथवा ॥२०७॥

शनि, भौम, गुरु, ग्रह तीनों शुक्र के घर में हों अथवा अन्यत्र तीनों एक जगह हों तो या तो वर्षा बहुत हों या युद्ध हो॥२०७॥

कार्त्तिकस्यनवम्यांचेद्ग्रहाः पंचैकराशिगाः ।
अकालेपिमहावृष्ट्यानधः पूर्णाः पयोधरैः ॥२०८॥

कार्त्तिक शुक्ल नवमी को यदि पांच ग्रह एक राशि में हों तो अकाल वर्षा (बिना चौमासे) में भी ऐसी महावर्षा हो कि नदियां पानी से खूब भरी हुई बहें।।२०८।।

मार्गशीर्षेग्रहाः पंचयदिस्युरेकराशिगाः ।
तदाजनेतिमारीस्यान्नृपस्यमरणंक्वचित् ।।२०९।।

यदि मगशिर में पांच ग्रह एक राशि में हों तो मनुष्यों में महामारी हो और कहीं राजा भी मरे।।२०९।।

अथ ग्रहवेधाद्वस्तुविशेषे मर्घसमर्घम्

सौम्यवेधेसमर्घत्वंक्रूरवेधेमहर्घता ।
देशःकालश्चवस्तूनिग्रहवेधेत्रिषुस्मृतः ।।२१०।

"अब ग्रहों के वेध से अनेक वस्तुओं की तेजी मंदी कहते हैं"

*'समरसार' आदि कई एक ग्रन्थों में 'सर्वतोभद्र' नामक चक्र का वर्णन किया गया है उस चक्र को लिखकर उसमें जिस समय की तेजी मंदी देखनी हो उसी समय के ग्रहों को (जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो उसी पर) स्थापन करके वध का विचार करे। जो नक्षत्र सौम्य ग्रहों से विद्ध होता है तो समर्घता और क्रूर ग्रहों से वेधा गया हो तो महर्घता होती है। देशकाल और वस्तु तीनों में ग्रह वेध का विचार करना चाहिये।।२१०।।

व्रीहिवाश्चचणकाहीरकाधातवस्तिलाः ।
कृत्तिकावेधतोमासानष्टयाम्यांदितोसुखम् ।।२११।।

चावल, जौ, चने, तिल और हीरा तथा सब धातु यह वस्तु कृत्तिकानक्षत्र के वेध से महँगी होती हैं और दक्षिण दिशा से असुख

---

* हमारा बनाया हुआ 'समरसार' श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई में छपा है उसमें यह चक्र बहुत ही स्पष्ट लिखा है। (अनुवादक)

होता है।।२११।।

रोहिण्याः सर्वधान्यानिसर्वेरसाश्चधातवः ।
जीर्णाः कंबलकाः प्राच्यामसुखंदिनसप्तकम् ।।२१२।।

यदि रोहिणी को क्रूर ग्रह वेधते हों तो सब धान्य, सब रस, सब धातु और पुरानी कंबल महंगी हों और पूर्व में सात दिन असौख्य हो।।२१२।।

मृगशीर्षेश्वमहिषीगावोलाक्षादिकोद्रवः ।
विविधानिजलान्नानिपीडाचषष्टिवासरान् ।।२१३।।

मृगशिर पर क्रूर वेध हो तो भैंस, गाय, लाख और कोंदू तथा कई प्रकार के जल के अन्न वस्तु आदि महँगे हों और साठ दिन पीड़ा बढ़े।।२१३।।

आर्द्रायांतैललवणसर्वक्षाररसादयः ।
श्रीखंडादिसुगंधीनिमासेस्यात्पश्चिमाऽसुखम् ।।२१४।।

आर्द्रा में तेल, लूण, सब तरह की खारी वस्तु तथा रसादिक और मलयागिरी चंदन आदि सुगंधित वस्तुएं महीने भर महंगी रहें और पश्चिम में असुख हो।।२१४।।

पुनर्वस्वोः स्वर्णसूतकार्पासश्चतथातिलः ।
कुसुम्भः श्यामकौशेयंमाषयुग्मोत्तरासुखम् ।।२१५।।

पुनर्वसु में सोना, सूत, कपास, तिल, कसूंभा और श्याम तथा गेरुएं रंग दो मास महँगे हों, उत्तर में असुख हो।।२१५।।

पुष्येस्वर्णघृतंरूप्यंशालिशोचलसर्षपाः ।
सर्जिकातैलहिंग्वादियाम्यपीडाष्टमासिकी ।।२१६।।

पुष्प में सोना, चांदी, घी, चावल, संचरलून, सरसों, साजी तेल और हींग महँगे हों तथा दक्षिण में आठ महीने की पीड़ा हो।।२१६।।

आश्लेषायांचमंजिष्ठागोधूमश्चमसूरिकाः ।
मरिचंकोद्रवाः शालिमासिकंपश्चिमासुखम् ॥२१७॥

आश्लेषा में मंजीठ, मसूर, गेंहू, मिर्च, कोंदू और शालि यह महँगे होते हैं और पश्चिम् में असुख होता है॥२१७॥

मघायांतिलतैलाज्यप्रवालचणकागुडाः ।
अतसीदक्षिणेदेशेविग्रहश्चाष्टमासिकः ॥२१८॥

मघा में तिल, तेल, घी, मूंग, चने, गुड़, अलसी महँगे हों, दक्षिण में विग्रह हो॥२१८॥

उफायांकंबलोर्णादियुगंधरीतिलास्तथा ।
रजतंवस्तुजातानियाम्यांपीडाष्टमासिकी ॥२१९॥

पूर्वाफाल्गुन में कंवल, ऊन, युगंधरी, तिल और चांदी महँगी हों, दक्षिण में पीड़ा हो॥२१९॥

उफायांमासमुद्गाद्यंतंदुलाः कोद्रवैः पुनः ।
सैंधवंलशुनंसर्जिमासेयुग्मोत्तरापथा ॥२२०॥

उत्तराफाल्गुनी में उड़द, मूंग, चावल, कोंदू, सींधानमक, लहसुन और साजी महँगे हों॥२२०॥

हस्तेश्रीखण्डकर्पूरदेवकाष्ठागरुस्तथा ।
रक्तचंदनकंदादिमासयुग्मोत्तराऽसुखम् ॥२२१॥

हस्त में चन्दन, कपूर, देवदारु अगर लाल चंदन और कंद आदि महँगे हों, उत्तर में असुख हो॥२२१॥

स्वर्णंरत्नंतुचित्रायांगुडमाषप्रवालकम् ।
अश्वादिवाहनंमासद्वयंपीडोत्तरादिशि ॥२२२॥

चित्रा में सोना, रत्न, गुड़, उड़द, मूंगा और घोड़े आदि महँगे हों, दो मास उत्तर में पीड़ा हो॥२२२॥

स्वातौपूगीमरिचंसर्षपतैलादिराजिकाहिंगुः ।
खर्जूरादिकपीडासप्तदिनान्युत्तरदेशे ॥२२३॥

स्वाति में सुपारी, मिर्च, सरसों तेल, हींग, राई और खजूर महँगे हों, ७ दिन उत्तर में पीड़ा हो॥२२३॥

विशाखायांयवाः शालिगोधूमामुद्गराजिका ।
मसूरान्नमकुष्टाचयाम्यपीडाष्टमासिकी ॥२२४॥

विशाखा में जौ, चावल, गेंहू, राई, मसूर और मकड़ा महँगे हों, दक्षिण में पीड़ा हो॥२२४॥

राधायांतुवरीसर्वद्विदलान्नंचतण्डुलाः ।
मकुष्टकाश्चणकाः प्राक्पीडादिनसप्तकम् ॥२२५॥

अनुराधा में तूअर आदि सब तरह की दाल के अन्न चावल मकोय औरं चने महँगे हो॥२२५॥

ज्येष्ठायांगुग्गुलंगुडंलाक्षाकर्पूरपारदाः ।
हिंगुश्चबहुकांस्यानिप्राक्पीडादिनसप्तकम् ॥२२६॥

ज्येष्ठा में गूगल, गुड़, लाख, कपूर, पारा, हींग और कांशी महँगी हो, पूर्व में पीड़ा हो॥२२६॥

मूलेश्वेतानिवस्तूनिरसधान्यादिसैंधवम् ।
कार्पासवलणाद्यंचमासिकंपश्चिमासुखम् ॥२२७॥

मूल में सफेद वस्तु, रस, धान्यादि, सेंधा नमक, कपास और नमक महँगे हों॥२२७॥

पूषायांजनतुषधान्यघृतंकंदमूलचूर्णादि ।
वेद्यंसशालिपश्चिमदिशिमासिकशुभमन्यदा ॥२२८॥

पूर्वाषाढ़ में जन तुष धान्य, घी, कंदमूल फल, चूर्ण और धान महँगा हो, पश्चिम में अशुभ हो॥२२८॥

उषायामश्ववृषभागजलोहादिधातवः ।
सर्वंचसारवस्त्वाद्यंप्राग्व्यथादिनसप्तकम् ॥२२९॥

उत्तराषाढ़ में घोड़े, बैल, हाथी, लोह, पीतल, तांबा और सब सार वस्तु महँगी हों॥२२९॥

द्राक्षाखर्जूरपूगैलामुद्गाजातिफलंहयाः ।
अभिजिद्वेधतः पूर्वायथावादिनसप्तकम् ॥२३०॥

अभिजित् के वेध से दाख, खजूर, सुपारी, मूंग, जायफल, असंगध यह महँगे हों॥२३०॥

श्रवणेशर्करादीनिपिप्पलीपूगमालिका ।
तुषधान्यानिवेधानिप्राक्शुभंसप्तवासरान् ॥२३१॥

श्रवण में शक्कर आदि मिठाईयां, पीपलि, सुपारी, तुष धान्य महँगे हों, पूर्व में शुभ हो॥२३१॥

धनिष्ठायांस्वर्णरूप्यधातवश्चविशेषतः ।
मणिमौक्तिकमन्नादिसप्ताहंपूर्वतः शुभम् ॥२३२॥

धनिष्ठा में सोना, चांदी, मणि, मोती महँगे हों, पूर्व में सात दिन शुभ हों॥२३२॥

तैलंकोद्रवमद्यादिधातकीपत्रमूलकम् ।
वलीशतभिषग्वेधंवारुण्यांमासिकंशुभम् ॥२३३॥

शतभिषा में तेल, कोदूं, मदिरा, पीपलि, मूली, वेलि महँगे हों, पश्चिम् में शुभ हो॥२३३॥

प्रियंगुमूलजात्यादिसर्वधान्यानिधातवः ।
सर्वौषधंदेवदारुयाम्यांपीडाष्टमासिकी ॥२३४॥

पूर्वाभाद्रपद में प्रियंगु–जायफल, धान्य, धातु और औषधियां महँगी हों, दक्षिण में पीड़ा हो॥२३४॥

उत्तराभाद्रपाद्वेध्यमथोभावेयमुच्यते ।
गुडः खण्डाः शर्कराचखलंतिलाश्चशालयः ॥२३५॥

उत्तराभाद्रपद में गुड़, शक्कर, खाण्ड, खली और तिल महँगे हों॥२३५॥

घृतंमणिमौक्तिकानिवारुण्यांमासिकंशुभम् ।
पौष्णेश्रीफलपूगादिमौक्तिकमणयोऽपिच ॥२३६॥

खेती में मणि, मोती, श्रीफल, सुपारी, यह महँगे हों और पश्चिम में शुभ हो॥२३६॥

अश्विन्यांव्रीहयोजूर्णंविखरोष्ट्रघृतादिकम् ।
सर्वाणिधान्यवस्त्राणिमासद्वयोत्तरातथा ॥२३७॥

अश्विनी में चावल जून (तृण) विशेष रूप के गधे (खच्चर) ऊँट, घी, सब धान्य महँगे हों, उत्तर में दो मास अशुभ हो॥२३७॥

भरण्यांतुषधान्यानियुगन्धरीचवेध्यते ।
मरिचाद्यौषंधसर्वंयाम्यांपीडाष्टमासिकी ॥२३८॥

और भरणी पर क्रूर ग्रहों का वेध हो तो जौ गेंहू, चावल, युगंधरी और सोंठ, मिर्च, पीपल आदि औषधियां यह महंगी हों और दक्षिण में पीड़ा हो। स्मरण रहे कि उपरोक्त नक्षत्रों को क्रूर ग्रह वेधेंगे, जब तो यह वस्तु महँगी होंगी और सौम्य ग्रह वेधेंगे तो यही उपरोक्त सब वस्तुएं सस्ती होंगी॥२३८॥ (इति)

(६) अथसंवत्सरस्यशुभाशुभसूचककारणान्याह

रक्तमुत्पलवर्णाभयद्याकांशनुकार्त्तिके ।
तदाशुभंभाविवर्षसन्ध्यायांतन्नशोभनम् ॥२३९॥

(६) अब संवत्सर वे अच्छे बुरे होने के और कारण बतलाते हैं।" यदि कार्तिक में लाल कमल के वर्ण जैसा आकाश हो तो भावी वर्ष

अच्छा हो किन्तु वह सन्ध्या में अच्छा नहीं।।२३९।।

तुषारपतनंमार्गेपौषहिमसमुद्भवः ।
माघमासेतिशीतंचफाल्गुनेदुर्दिनंशुभम् ।।२४०।।

मगशिर में ओले पड़ें तो अच्छे, पौष में बर्फ पड़े तो अच्छी माघ मास में सरदी पड़े तो अच्छी और फाल्गुन में भयानक दिन हों तो अच्छे हैं।।२४०।।

फाल्गुनेकालवातोपिचेत्रेकिंचित्पयोहितम् ।
वैशाखः पंचरूपंस्याज्ज्येष्ठोघर्मान्वितः शुभः ।।२४१।।

फागण में प्रचण्डवायु, चैत्र में बूंदा बांदी, वैशाख में पांच रूप और जेठ में अधिक गर्मी पड़े तो अच्छी है।।२४१।।

आषाढ़ेश्रावणेभाद्रआश्विनेलक्षणंचयत् ।
तदन्यभाज्ज्ञापनीयंसंवत्सरशुभाशुभम् ।।२४२।।

आषाढ़, श्रावण, भादवा और आश्विन इनमें जो लक्षण होने चाहिये सो अन्यत्र बतलाये हैं। इन सब लक्षणों से भावी वर्ष का शुभाशुभ जानना चाहिये।।२४२।।

आर्द्राज्येष्ठेनष्टचन्द्रेप्रथमायाः पुनर्वसुः ।
द्वितीयापुष्यसंयुक्ताजलंधान्यंतृणंनच ।।२४३।।

जेठ की अमावस को आर्द्रा, पडवा को पुनर्वसु और दोयज को पुष्य हो तो उस वर्ष में अन्न जल और घास कुछ नहीं हो।।२४३।।

कृष्णपक्षेश्रावणस्यैकादश्यांरोहिणीचभम् ।
यावद्घटीप्रमाणंस्यात्तावद्धान्यस्यविक्रयः ।।२४४।।

श्रावण कृष्ण एकादशी के रोहिणी नक्षत्र जितनी घड़ी हो उतने ही सेर अन्न उस वर्ष में कार्त्तिक पीछे बिके।।२४४।।

यस्मिन्नसंवत्सरेयावद्दशमीरविवासरः ।
घटीप्रमाणमालोक्यशिवेधान्यस्यविक्रयः ।।२४५।।

जिस वर्ष में शुक्ल पक्ष के दशमी रविवार कुल जितने घड़ी हों उतने ही सेर धान्य बिकता है।।२४५।।

द्विपञ्चाशद्युतेवर्षेदिवसानांशतत्रये ।
सुभिक्षंकेचिदप्याहुः परंदेशेषुविग्रहः ।।२४६।।

जिस वर्ष में तीनसौ बावन दिन हों उसको कई शुभ कहते हैं किन्तु देश में उपद्रव हो।।२४६।।

बाणेषुत्रिदिनेकालोमध्यमोद्विशरत्रिभिः ।
वर्षंखषट्त्रिभिः श्रेष्ठंसुभिक्षंतत्रनिश्चितम् ।।२४७।।

जिस वर्ष में ३५५ दिन हों वह मध्यम होता है। ३५७ दिन हों वह शुभ होता है और जिसमें पूरे ३६० दिन हों वह श्रेष्ठ होता है उसमें निश्चय सुभिक्ष हो।।२४७।।

अक्षय्यायांतृतीयायांसंध्यायांसप्तधान्यकम् ।
पुंजीकृत्यस्थापनीयंपृथक्कृत्वातरोरधः ।।२४८।।

"अक्षय तृतीया परीक्षा" आखातीज (वैशाक शुक्ल तीज) को संध्या के समय सातों धान्य लेकर एक वृक्ष के नीचे उनकी ढ़ेरी लगावे।।२४८।।

यदाविकीर्णंतद्धान्यंतद्वर्षेबहुजायते ।
यत्पुञ्जरूपंवातिष्ठेन्नैवनिष्पद्यतेपुनः ।।२४९।।

उस ढ़ेरी में से जो जो अन्न बिखर जायँ वे उस वर्ष में बहुत उत्पन्न हों। और जो ढ़ेरी रूप से ज्यों के त्यों धरे रहें वे उस वर्ष में नहीं उत्पन्न होते हैं।।२४९।।

अक्षय्यायांतृतीयायांप्रपूर्येद्भाण्डमम्बुना ।
रविंविलोकयेन्मध्येतत्स्वरूपंविमृश्यते ।।२५०।।

अक्षय तृतीया को एक बर्तन (थाली आदि) में जल भर कर उसमें सूर्य को देखे और उसके रूप का विचार करे।।२५०।।

रक्तेसूर्येविग्रहः स्यान्नीलेपीतेमहारुजः ।
श्वेतेसुभिक्षंजायेतधूसरेदुःखमूषकाः ।।२५१।।

यदि उसमें सूर्य लाल दीखे तो विग्रह हो, नीला अथवा पीला दीखे तो दुनिया में महारोग हो। सफेद दीखे तो सुभिक्ष हो और धूआँ का सा दीखे तो चूहों का दुःख हो।।२५१।।

अथाषाढीविचारमाह

आषाढ्यां समतुलिताधिवासितानामन्यद्युर्यदधिकताम्बुपैतिबीजम्।
तद्वृद्धिर्भवतिनजायतेयदूनंमंत्रोस्मिन्भवतितुलाभिमंत्रणाय।२५२।

"आषाढ़ी पूर्णिमा का विचार"–(उत्तराषाढ युक्त) आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन अधिवासित समस्त बीजों को (धान्यों को) जुदे जुदे बराबर पूरे तौलकर और उनको अभिमंत्रित करके एक रात भर रख छोड़े और फिर दूसरे दिन उस तुला (तराजू) को नीचे लिखे मंत्रों से अभिमंत्रित कर उन सब बीजों को फिर तोले। उनमें से जो जो बीज तौल में घटें वह उस वर्ष में नहीं हो और जो बढ़ें वे उस वर्ष में अधिक हों। इसी प्रकार देश–गाँव और मनुष्यों की भी परीक्षा की जाती है।।२५२।।

स्तोतव्यामंत्रयोगेनसत्यादेवीसरस्वती ।
दर्शयिष्यसियत्सत्यंसत्येसत्यव्रताह्यसि ।।२५३।।

सत्यात्मिका सरस्वती देवी की इस मंत्र से इस प्रकार स्तुति करनी चाहिये कि हे सरस्वती देवी! आप सच्चाई के सम्बन्ध में सच्चे

व्रतवाली है इसलिये जो सत्य हो सो आप दिखा दें। ऐसी स्तुति करने से जो सत्य होगा सो मालूम हो जायगा।।२५३।।

येनसत्येनचन्द्रार्कौमहाज्योतिर्गणास्तथा ।
उत्तिष्ठन्तीहपूर्वेणपश्चादस्तंव्रजन्ति च ।।२५४।।

उस तराजू से कहे कि जिस सत्य ने चन्द्र, सूर्य और तारागण पूर्व में उदय होकर पश्चिम् में अस्त होते हैं।।२५४।।

यत्सत्यंसर्वदेवेषुयत्सत्यंब्रह्मावादिषु ।
यत्सत्यंत्रिषुलोकेषुतत्सत्यमिहदृश्यताम् ।।२५५।।

और जो सत्य सब देवताओं में ब्रह्मवादियों में और तीनों लोक में है वही सत्य यहाँ दीखे।।२५५।।

ब्रह्मणोदुहितासित्वमादित्येतिप्रकीर्तिता ।
काश्यपीगोत्रतश्चैवनामतोविश्रुतातुला ।।२५६।।

हे तराजू! तू ब्रह्मा की पुत्री आदित्या है। काश्यपी गोत्रा है और तुला (तराजू वा ताखड़ी) नाम से विख्यात है। इन मंत्रों से उस तराजू को अभिमंत्रित कर वह बीज तोलने चाहिये।।२५६।।

क्षौमंचतुःसूत्रकसन्निबद्धंषडंगुलंशिक्यकवस्त्रमस्याः ।
सूत्रप्रमाणंचदशांगुलानिषडेवकक्षोभयशिक्यमध्ये ।।

"तराजू का स्वरूप"–तराजू ऐसी होनी चाहिये कि दोनों पलड़े छः छः अंगुल के विस्तार के हों। एकेक पल्ले के दश दश अंगुल की चार तनी (डोरी) हों और कक्षा (पकड़ने का चोटा–अर्थात् जिसको पकड़कर तौलते हैं वह) छः अंगुल हो। ऐसी ताखड़ी से वे बीज तोलने चाहिये।।२५७।।

याम्येसिक्येकाञ्चनं सन्निवेश्यंशेषंद्रव्यानुत्तरेम्बूनिचैवम् ।
तोयः कौप्यैः स्पन्दिभिः सारसैश्चवृष्टिर्हीनामध्यमाचोत्तमाच

तौलनेवाला पूर्वाभिमुख बैठकर सोना को तो दक्षिण के पलड़े से तोले और जल आदि शेष सब वस्तु उत्तर के पलड़े से तोले। कूराका तौल जल में बढ़े तो थोड़ी वर्षा, झरने का बड़े तो मध्यम, तलाव का बढ़े तो उत्तम और सबही जल बढ़े तो भारी वर्षा हो तथा कुछ भी न बढ़े तो वर्षा नहीं हो।।२५८।।

दन्तैर्नागागोहयाद्याश्चलोम्नाहेम्नाभूपाः सिक्थकेनद्विजाद्याः ।
तद्वद्देशावर्षमासादिशश्चशेषद्रव्याण्यात्मरूपिस्थतानि ।।२५९।।

हाथी दाँत के तौल से हाथियों का लोमों से गौ आदि का, सोने से राजाओं का और सिक्थ अर्थात् एक ग्रास भर अन्न से ब्राह्मणादि वर्णों का न्यूनाधिक्य होना जानना चाहिये। और इसी भाँति देश, वर्ष, मास, दिशा में तथा अन्य द्रव्यों की भी आत्मरूप पदार्थों के तौल से स्थिति मालूम करनी चाहिये।।२५९।।

हैमीप्रधाना रजतेन मध्या तयोरलाभेखदिरेण कार्या ।
विदुः पुमान्येनशरेणसावातुलाप्रमाणेन भवेद्वितस्तिः।।

यदि तराजू सोने की हो तो सबसे अच्छी, चांदी की हो तो मध्यम और दोनों न हों तो खैरी की करनी चाहिये अथवा जिस बाण से कोई बिंधा हो उसकी १२ अंगुल की दंडी बनानी चाहिये।।२६०।।

हीनस्य नाशोऽभ्यधिकश्चवृद्धिस्तुल्येनतुल्यंतुलिंनतुलायाम् ।
एतत्तुलाकोशरहस्यमुक्तंप्रजशयोगेपिनरोविदध्यात् ।।२६१।।

तुला में तुली हुई वस्तु में तौल में कम हों तो हानि–बढ़े तो वृद्धि और तुल्य (समान) हों तो सम हों। यह तुला कोश रहस्य में लिखा है। इसको रोहिणी योग में भी देखना चाहिये।।२६१।।

अथ कुसुमलताफल

फलकुसुमसंप्रवृद्धिंवनस्पतीनांविलोक्यविज्ञेयम् ।
सुलभत्वंद्रव्याणांनिष्पत्तिश्चापिसस्यानाम् ॥२६२॥

"अब पृथ्वी पर खड़े हुंए पुष्प, लता आदि से वर्षा का शुभाशुभ बतलाते हैं।" वृक्षों के फल फूलों की वृद्धि देखकर सब वस्तुओं की सुलभता और खेती की उत्पत्ति जानी जाती है॥२६२॥

शालेनकलमशालीरक्ताशोकेनरक्तशालिश्च ।
पाण्डूकः क्षीरिकयानीलाशोकेनशूकरकः ॥२६३॥

शाल वृक्ष के फल फूलों की वृद्धि से कलमशाली की वृद्धि होती है। लाल अशोक से लाल शाली–दूधी से पाण्डूक और नीले अशोक से शूकर धान्य की वृद्धि होती है॥२६३॥

न्यग्रोधेनतुयवकस्तिन्दुकवृद्धचाचषष्टिकोभवति ।
अश्वत्थेनज्ञेयानिष्पत्तिः सर्वसस्यानाम् ॥२६४॥

बड़ की वृद्धि से यवन तेंदू की वृद्धि से साठी, और पीपल की वृद्धि से तब खेतियां होती हैं॥२६४॥

जम्बूभिस्तिलमाषाः शिरीषवृद्धचाचकंगुनिष्पत्तिः ।
गोधूमाश्चमधूकैर्यववृद्धिः सप्तपर्णेन ॥२६५॥

जामन की वृद्धि से तिल और उड़द, सिरस की वृद्धि से कांगनी, महुए से गेंहू और सप्तपर्णा (सतपत्ती) से जौ की वृद्धि होती है॥२६५॥

अतिमुक्तककुन्दाभ्यांकार्पासः सर्षपाअसनैः ।
बदरीभिश्चकुलत्थान्चिरबिल्वेनादिशेन्मुद्गान् ॥२६६॥

अतिमुक्तक और कुन्द से कपास, असन से सरसौ, बैर से कुलथि और बेल की वृद्धि से मूंग अधिक होते हैं॥२६६॥

अतसीवेतसपुष्पैः पलाशकुसुमैश्चकोद्रवाज्ञेयाः ।
तिलकेनशंखमौक्तिकरजतान्यथाचेंगुदेनशणाः ।।२६७।।

बेंत के फूलों की वृद्धि से अलसी, पलास के फूलों से कोदों, तिलक के वृक्ष से शंख, मोती और चांदी और ईंगुदी की वृद्धि से सण की वृद्धि होती है।।२६७।।

करिणश्चहस्तिकरणैरादेश्यावाजिनोश्वकर्णेन ।
गावश्चपाटलाभिः कदलीभिरजाविकंभवति ।।२६८।।

लाल एरंड की वृद्धि से हाथियों की, अश्वकर्ण की वृद्धि से घोड़ों की, पाटल की वृद्धि से गायों की और केलों से भेड़, बकरी की वृद्धि होती है।।२६८।।

चम्पककुसुमैः कनकंविद्रुमसंपच्चबंधुजीवेन ।
कुरबकवृद्धचावज्रंवैदूर्यनन्दिकावर्तैः ।।२६९।।

चंपे के फूलों से सोने की, गुल दुपहरिये से मूंगे की, कुरवक से हीरे की और नन्दिकावर्त की वृद्धि से वैडूर्य मणि की वृद्धि होती है।।२६९।।

विन्द्याच्चसिन्दुवारेणमौक्तिकंकारुकान्कुसुम्भेन ।
रक्तोत्पलेनराजामंत्रीनीलोत्पलेनोक्तः ।।२७०।।

सिंधुवाल की वृद्धि से मोती, कंसूभे की वृद्धि से कारीगरों की, लाल कमल से राजाओं की और नीले कमलों से राज मंत्रियों की वृद्धि होती है।।२७०।।

श्रेष्ठीसुवर्णपुष्पैः पद्मैर्विप्राः पुरोहिताः कुमुदैः ।
सौगंधिकेनबलपतिरर्केणहिरण्यपरिवृद्धिः ।।२७१।।

सोने के फूलों से सेठों की, कमलों से ब्राह्मणों की, कुमुदों से राजपुरोहितों की, सुगन्धित पुष्पों से सेनापति की और आक की वृद्धि

से सोने की वृद्धि होती है।।२७१।।

आम्रैः क्षेमंभल्लातकैर्भयंपीलुभिस्तथारोग्यम् ।
खदिरशमीभ्यांदुर्भिक्षमर्जुनेशोभनावृष्टिः ।।२७२।।

आम की वृद्धि से कल्याण, भिलावे से आरोग्यता, खेजड़े से दुर्भिक्ष (इसकी फली सांगरे से सुभिक्ष) और अर्जुन की वृद्धि से वर्षा की वृद्धि होती है।।२७२।।

पिचुभन्दनागकुसुमैः सुभिक्षमथमारुतः कपित्थेन ।
निचुलेनावृष्टिभयं व्याधिभयं भवतिकुटजेन ।।२७३।।

नीम और नागकेसर के फूलों से सुभिक्ष, कैथ से पवन वेग, निचुल से वृष्टि भय, और कुटज की वृद्धि से रोग भय होता है।।२७३।।

दुर्वाकुशकुसुमाभ्यांभिक्षुर्वह्निश्चकोविदारेण ।
श्यामालताभिवृद्धचाबन्धक्योवृद्धिमायान्ति ।।२७४।।

दूर्वा और दर्भो की वृद्धि से पुष्पों की वृद्धि से ईख की कोविदार से अग्नि की और श्यामलता से व्यभिचारिणी स्त्रियों की वृद्धि होती है।।२७४।।

यस्मिन्कालेस्निग्धनिश्छिद्रपत्राः संदृश्यन्तेवृक्षगुल्मालताश्च ।
तस्मिन्वृष्टिः शोभनासंप्रदिष्यारूक्षैश्छिद्रै रल्पमंभः प्रदिष्टम्।।

जिस वर्ष में वृक्ष (बड़े पेड़) गुल्म (छोटे पेड़) वल्ली (बेलड़ी) और अन्य प्रकार की वनस्पतियां चिकने तथा छेद रहित पत्तों से युक्त हों तो उस वर्ष में उत्तम वर्षा होती है। और जो उनके पत्ते रूखे सूखे तथा छेदवाले हों तो कम वर्षा होती है। ऊपर लिखे मुताबिक प्रतिवर्ष निरीक्षण करके जांच करनी चाहिये।।२७५।।

काकागत

काकस्याण्डानिचत्वारिवारुणंप्रथमंस्मृतम् ।
तथाद्वितीयमाग्नेयंवायवीयंतृतीयकम् ।
चतुर्थंभूमिजंप्रोक्तमेषांफलमथोदितम् ।।२७६।।

"काग की चेष्टाओं से शुभाशुभ का ज्ञान"

काग के वारुण–आग्नेय–वायवीय और भूमिज यह चार अण्डे होते हैं।।२७६।।

क्षेमंसुभिक्षंसुखिताचधात्रीस्याद् भूमिजेण्डेमहती च वृष्टिः ।
पृथ्वीतथानंदतिसस्यमाढ्यंवर्षाविशेषेणजलाण्डतः स्यात्।।२७७।।

यदि भूमिज अण्डा हो तो क्षेम सुभिक्ष और पृथ्वी सुखी तथा आनन्द युक्त हो वर्षा श्रेष्ठ खेती अच्छी हो और वारुणी हो तो अधिक वर्षा हो।।२७७।।

जातानिधान्यानि समीरजाण्डे खादंतिकीटाः शलभाः शुकाश्च।
दुर्भिक्षमण्डेग्निभवेनिवेद्यंजानीहिमासाश्चतुरोपिचाण्डे ।।२७८।।

वायवीय अंडा हो तो खेती अच्छी हों किन्तु टिड्डी तोते खा जाँय और अग्नि संज्ञक हो तो दुर्भिक्ष पड़े। इस प्रकार चौमासे में अंडों के अनुसार फल कहे। आषाढ आदि चार महीनों में उपरोक्त चार भाँति के अंडे होते हैं।।२७८।।

काकालयः प्राग्दिशिभूरुहस्यसुभिक्षकृत्स्वल्पघनस्तथाग्नौ ।
मासद्वयंवृष्टिकरोतिपूर्वंततोनवृष्टिर्हिमयातएव ।।२७९।।

यदि काग का घोंसला वृक्ष में पूर्व की तरफ हो तो सुभिक्ष, अग्नि कोण की तरफ डालियों में हो तो कम वर्षा और दक्षिण में हो तो केवल दो मास मेह वर्षे।।२७९।।

मासद्वयेतीवघनः प्रतीच्यांनिष्पत्तिरन्नस्यतदोच्चभूम्याम् ।
ततोल्पवृष्टिर्यदिवाल्पवर्षासवातवृष्टिः पवनस्यकोणे॥२८०॥

पश्चिम की तरफ की डालियों में हो तो दो मास बहुत बादल रहें, ऊँची भूमि में अन्न अधिक हों और वायव्य में हों तो थोड़ी वर्षा हो अथवा पवन पानी दोनों हों॥२८०॥

पूर्वंनवृष्टिर्निऋतौपयोदाः पश्चाद्धनोलोकसरोगताच ।
स्यादुत्तरस्यांभवनेसुभिक्षमीशानभागेपिसुखंसुभिक्षम् ॥२८१॥

नैर्ऋत्य में हो तो पहले वर्षा न हो पीछे हो और रोग पैदा हो, उत्तर में हो तो सुभिक्ष हो और ईशान में घोंसला हो तो अच्छा संवत् हो॥२८१॥

वृक्षाग्रेतुमहावर्षावृक्षमध्येतुध्यमा ।
अधःस्थानेनैववर्षावृक्षेकाकालयाद्वदेत् ॥२८२॥

वृक्ष की चोटी पर घोंसला हो तो महावर्षा हो, बीच में हो तो मध्यम वर्षा हो और नीचे पेड़ ही में हो तो वर्षा नहीं हो॥२८२॥

वृक्षकोटरकेगेहप्रकारेकाकमालयम् ।
दुर्भिक्षंविग्रहोराज्ञांयाम्यांछत्रस्यपातनम् ॥२८३॥

यदि वृक्ष के कोटरे में काग का घर हो तो दुर्भिक्ष हो और राजाओं में विग्रह हो॥२८३॥

नदीतीरेकाकगृहेमेघप्रश्नेनवर्षणम् ।
पक्षौविधूनयन्काकोवृक्षाग्रेशीघ्रंमेघकृत् ॥२८४॥

नदी के किनारे घोंसला हो तो वर्षा नहीं हो और यदि काग पंख कँपाकर वृक्ष के आगे बैठा हो तो जल्दी वर्षा हो॥२८४॥

अन्यप्रयोग

ग्रामाद्बहिश्चनिर्गत्यस्वस्थानेमण्डलंलिखेत् ।
संपूज्यशकुनंवीक्ष्यकाकेंगितविनिर्णयः ॥२८५॥

"अब काग का कुछ और तंत्र कहते हैं"

काग की चेष्टाओं का निर्णय करने के लिये गाँव से बाहर जाकर एक अच्छी जगह में मंडल लिखे और (उसमें आगे बताई हुई विधि की क्रिया करके) पूजन करे॥२८५॥

कपिलानांशतंहत्वाब्राह्मणानांशतद्वयम् ।
तत्पापंपरिगृह्णासियदिमिथ्याबलिंहरेः ॥२८६॥

फिर काग से कहे कि सौ गाय और दौ सौ ब्राह्मणों के (भूखे मारने का) जो पाप होता है वह पाप तेरे को हमारी दी हुई बलि को मिथ्या हरण करने से होगा। अर्थात् तू सत्य फलदायी बलि को हरण करना॥२८६॥

शाल्योदनेनसाज्येनकृत्वापिंडचयंबुधः ।
संमार्जितेशुभेस्थानेस्थापयेन्मंत्रपूर्वकम् ॥२८७॥

यह कहकर चावलों के आटे में घी मिलाकर चार पिंड बनावे और पोते हुए शुभस्थान में उनको मंत्र पूर्वक स्थापन करे॥२८७॥

(मंत्रोयथा । ॐ तुंडब्रह्मणे सुराय । असुरेन्द्राय
हिरण्यपुण्डरीकायस्वाहा ॥१॥)
आह्वानमंत्र ॥ ॐ तिरितिमिरिटिकाकपिंडालये स्वाहा ।
पिंडाभिमंत्रणम् ॥२॥ देशकालपरीक्षार्थंवृषभंचाद्यपिंडके ।
द्वितीयेतुरंगन्यस्यतृतीयेहस्तिनंक्रमात् ॥२८८॥

और तुंडेति इससे आवाहन और तिरिति इससे अभिमंत्रण करे, फिर दो काल की परीक्षा के निमित्त पहले पिंड पर बैल का चिह्न, दूसरे

पर घोड़े का और तीसरे पर हाथी का चिह्न करे॥२८८॥

वर्षाज्ञानायसंस्थाप्यंप्रथमेपिंडकेजलम् ।
द्वितीयेमृत्तिकास्थाप्यातृतीयेंगारकः पुनः ॥२८९॥

और वर्ष के ज्ञान के लिये पहले पिंड पर जल दूसरे पर मिट्टी और तीसरे पर अंगारे रखे॥२८९॥

शीघ्रवर्षतिपानीयेमृत्तिकायास्तुपिंडके ।
पक्षान्तेनतुवृष्टिस्यादंगारेनास्तिवर्षणम् ॥२९०॥

यदि काग जल पिंड को स्पर्श करे तो शीघ्र वर्षा, मिट्टी वाले को करे तो पन्द्रह दिन पीछे और अंगार के स्पर्श करे तो वर्षा नहीं हो॥२९०॥ (इति)

अथ गर्वेंगितम्

गावोदीनापार्थिवस्याशिवायपादैर्भूमिंकुट्टयन्तश्चरोगाम् ।
मृत्युंकुर्वन्त्यश्रुपूर्णायताक्ष्यः पत्युर्भीतास्तस्करानाह्वयन्त्यः॥२९१॥

"अब गौके ईंगित (इशारे) अथवा चेष्टा करते हैं। "यदि गौ उदास हो तो राजा को भय हो, पैरों से भूमि को कूटे तो रोगोत्पत्ति हो, नेत्रों में आँसू भरे रहें तो मालिक की मृत्यु हो और भयभीत हो कर बड़ा शब्द करे तो चोर आवें॥२९१॥

अकारणंक्रोशतिचेदनर्थोभयायरात्रौवृषभः शिवाय ।
भृशंनिरुद्धोयदिमक्षिकाभिस्तदाशुवृष्टिः सरमात्मजैर्वा॥२९२॥

गौ बिना कारण बोले तो अनर्थ हो, रात को बोले तो भय हो, बैल बोले तो शुभ हो और यदि गायों को मक्खी अथवा श्वान बहुत घेरें तो शीघ्र वर्षा हो॥२९२॥

आगच्छंत्योवेश्महम्बारवेणसंसेवन्त्योगोष्ठवृद्धचै गवांगाः ।
आर्द्रांग्योयाहृष्टरोम्ण्यः प्रहृष्टाधन्या गावः स्युर्महिष्योपिचैवम्॥

यदि 'हम्बा' शब्द पुकारती हुई गौ घर में आवे और घर को सूंघे तो गायों की गोष्ठि बढ़े, यदि गाय का अंग जल से भीग रहा हो और रोमांच हों तथा गौ प्रसन्न हो तो शुभ होता है। यह बात महिषी (भैंस) में भी जानना चाहिये।।२९३।।

इत्येवंशकुनंविचार्यसुधियावाच्यंफलंवार्षिकं
यस्योद्बोधनतोलभेद्बहुधनंसर्वार्थसंसाधनम् ।
राजन्यैरपिमान्यतेसनिपुणः प्रोल्लासिभास्वद्गुणः
शास्त्रंयन्मनसिस्फुरत्यतिभयाच्छ्रीवर्षबोधाह्वयम् ।।२९४।।

इस प्रकार शकुनों का विचार करके बुद्धिमानों को संवत्सर का फल कहना चाहिये। क्योंकि इस विद्या के ज्ञान से बहुत धन और सर्वार्थसिद्धि होती है। जो इस वर्षप्रबोध को जानते हैं वे चतुर और राजमान्य होते हैं। और उसके श्रेष्ठगुण सर्वत्र विख्यात हो जाते हैं।।२९४।।

श्रीमत्तपागणविभुः प्रसृतप्रभावः प्रद्योततेविजयतां प्रभुनामसूरिः।
तत्पादपद्मतरणिर्विजयादिरत्नः स्वामीगणस्थमहसाविजितद्युरत्नः।
तच्छासनेजयतिविश्वविभासनेऽभूद्विद्वान्कृपाब्धिरतुलज्ञनिषेव्यमाणः
शिष्योस्यमेघविजयाह्वयवाडकोसौग्रंथः कृतः सुकृतलाभकृतेत्रतेन।

इन दोनों श्लोकों में वर्षप्रबोध के बनानेवाले का परिचय हैं।।२९५।।२९६।।

अनुष्टुभांसहस्राणित्रीणिसार्द्धानिमानिता ।
अथोयंवर्षबोधाख्योयावन्मेरुः प्रवर्तताम् ।।२९७।।

इन ग्रन्थ में सब साढ़े तीन हजार श्लोक थे किन्तु उनमें से उपयोगी विषय लेकर इनको संक्षेप कर दिया है। अब यह ग्रन्थ सुमेरु तक प्रवृत्त

हो ऐसी आशा है।।२९७।।

यत्पुनरुक्तमयुक्तंद्विरुक्तमिहतद्विशोधितुंयुक्तम् ।
बद्धांजलिनेतिमयाभ्यर्थसकलगीतार्थः ।।२९८।।

इस ग्रन्थ में जहाँ कहीं अयुक्त पुनरुक्ति अथवा द्विरुक्ति हुई हो उसको विद्वान् लोग ठीक कर लें, यह मेरी प्रार्थना है।।२९८।।

भाविवत्सरबोधायतस्यबालस्यशालिनः ।
कुरुतागुरुतांग्रंथोहितंबालस्यपालनात् ।।२९९।।

इति श्रीमहामहोपाध्यायमेघविजयमणिविरचितो वर्षप्रबोधः समाप्तः

यह ग्रंथ आगामी संवत्सर के शुभाशुभ ज्ञान के होने में उपयोगी समझकर बालकों के हित के निमित्त निर्माण किया गया है।।२९९।।

इति श्रीमल्लक्ष्मीनारायणात्मजहनुमानशर्मलिखित हिन्दीटीका सहित वर्षप्रबोध के उत्तर भाग का तीसरा स्थल समाप्त

समाप्तोयं ग्रन्थः

पुस्तकें मिलने के स्थान :-

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई-४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे-महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक-वाराणसी (उ. प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS